25967

धमयों

ति 'गी'

Gh. ulam Moham
Books s & Pub
M UMA BAZA
SRINAGAR

राजपा ... सन्ज, दिल्ली

मूल्य
पाँच रुपये

891.433
H 12 R

Accession Number........25967

Cost......... Class No..............

Rahasyamai by Haggard Rider

अनुवादक
रामनाथ 'सुमन'

Pratap College
SRINAGAR

Delhi, J. P. publishers [n.d.].

प्रथम संस्करण : जुलाई,
आवरण : रिफॉर्मा स्टूडियो, दि
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, दि
मुद्रक : युगान्तर प्रेस, दि

मुखबन्ध

इस कथा को संसार के सम्मुख उपस्थित करते हुए, जो दुस्साहसिक भ्रमण की दृष्टि से भी मनुष्यों द्वारा अभी तक किये गए अनुभवों में बड़ा अद्भुत एवं रहस्यमय प्रतीत होता है, मैं यह बताना आवश्यक समझता हूँ कि इसके साथ मेरा यथार्थ सम्बन्ध क्या है। मैं तुरन्त यह प्रकट कर दूं कि मैं इस असाधारण कथा का कहने वाला—कथाकार—नहीं हूँ, बल्कि संपादक मात्र हूँ। अब मैं यह बताना चाहता हूँ कि यह किस प्रकार मेरे हाथ लगी।

कई वर्ष पहले की बात है कि मैं (संपादक) एक विश्वविद्यालय में—जिसे इस कथा के लिए मैं केम्ब्रिज कह लेता हूँ—अपने एक मित्र के पास ठहरा हुआ था। एक दिन दो आदमियों के चेहरे देखकर मैं बड़ा प्रभावित हुआ जो सड़क पर एक दूसरे के हाथ में हाथ डाले, चले जा रहे थे। इनमें से एक तरुण व्यक्ति ऐसा था, जो मेरे अब तक देखे हुए आदमियों में सबसे सुन्दर कहा जा सकता है। वह बहुत लम्बा-चौड़ा था और उसके मुख पर ऐसी शक्ति और सुषमा थी जो मानो उसकी स्वाभाविक सम्पदा हो। उसका मुख बिल्कुल निर्दोष और सुन्दर था, और जब उसने पास से गुज़रती हुई एक महिला का अभिवादन करने के लिए अपने सिर से हैट उतारा तो मैंने देखा कि उसका सिर छोटे, घने, सुनहले [illegible]राले बालों से भरा हुआ है।

[illegible] भी अपने मित्र के साथ घूमने निकला था। मैंने मित्र से पूछा—"तुम [illegible]मी को देख रहे हो। ऐसा जान पड़ता है मानो अपोलो की मूर्ति सजीव [illegible] हो। कैसा सुन्दर युवक है!"

[illegible] उत्तर दिया—"हाँ, वह यूनिवर्सिटी में सबसे सुन्दर व्यक्ति है, और

स्वभाव से भी बहुत भला है। ये लोग उसे 'यूनानी देवता' कहते हैं। लेकिन जरा दूसरे को देखो, वह विंसी (यूनानी देवता नामधारी युवक का नाम) का अभिभावक है और यह माना जाता है कि उसे हर एक बात की जानकारी है। लोग उसे कारूँ (Charon) कहते हैं, पता नहीं क्यों ? उसके भद्दे चेहरे के कारण या परीक्षाओं के गम्भीर सागर में अपने संरक्षित युवक को सफलता-पूर्वक पार खे ले जाने के कारण—किसलिए, मैं नहीं जानता।"

मैंने उधर देखा और पहले से ज्यादा उम्र वाला वह व्यक्ति भी मुझे उतना ही दिलचस्प मालूम हुआ जितना उसके पार्श्व में चलने वाला मानवता का वह श्रेष्ठ उदाहरण था। उसकी उम्र चालीस के लगभग मालूम पड़ती थी और वह उतना ही कुरूप था जितना उसका साथी रूपवान् था। वह नाटा, खमदार टाँगों वाला, बैठी छाती का था और उसकी भुजाएं असाधारण रूप से लम्बी थीं। उसके बाल काले थे और आँखें छोटी थीं। उसके माथे पर भी बाल उग आये थे और गल-मुच्छे बालों तक फैले हुए थे; इससे उसके चेहरे का बहुत कम भाग दिखाई पड़ता था। उसे देखकर मुझे जोरों से गोरिल्ला की याद आती थी, फिर भी उसकी आँखों में एक प्रकार का आकर्षण और सौन्दर्य था। मुझे याद है कि मैंने मित्र से कहा था कि मैं उससे परिचय करना चाहूँगा।

मेरे मित्र ने कहा—"बहुत अच्छा। यह सरल काम है। मैं विंसी को जानता हूँ। आओ, अभी परिचय करा दूँ।" उसने परिचय करा दिया और हम कुछ देर खड़े-खड़े जुलू लोगों के विषय में बात करते रहे क्योंकि मैं हाल ही केप से लौटा था।

इसी समय एक तगड़ी स्त्री, जिसका नाम मुझे इस समय याद नहीं आ रहा है, वहाँ आई। उसके साथ एक सुन्दर खूबसूरत बालों वाली लड़की भी थी और श्री विंसी जो उनसे भलीभाँति परिचित थे, उनमें जा मिले और उनके साथ टहलते हुए चले गए। पर अधेड़ आदमी के चेहरे का रंग उन स्त्रियों को आते देखकर बदल गया और मुझे यह बहुत विचित्र बात लगी। मुझे बाद में मालूम हुआ कि इस अधेड़ आदमी का नाम होली है। वह बात करते-करते रुक गया, अपने साथी की ओर तिरस्कारपूर्ण दृष्टि डाली और मुझे सिर झुका कर अकेला ही एक तरफ़ चला गया। मुझे मालूम हुआ कि वह स्त्रियों से उतना ही डरता है जितना लोग पागल कुत्ते से डरते हैं। इसीलिए उस समय

दुम दबाकर वहाँ से खिसक गया। पर मैं यह नहीं कह सकता कि तरुण विंसी को भी स्त्री-सौन्दर्य के प्रति अरुचि थी। मुझे याद है कि मैंने हँसते हुए अपने मित्र से कहा था कि विंसी ऐसा व्यक्ति नहीं है कि कोई आदमी अपने साथ ब्याह करने वाली स्त्री से उसे मिलाये, क्योंकि उस मुलाकात का परिणाम यह हो सकता है कि स्त्री का प्रेम दूसरी ओर फिर जाय। निस्सन्देह वह बहुत सुदर्शन था और उसमें वह आत्म-चेतना और प्रवंचना भी न थी जो प्रायः सुन्दर आदमियों में पाई जाती है और जिसके कारण उसके साथी उसे नापसन्द करने लगते हैं।

उसी शाम को मैं वहाँ से चला आया और फिर मेरी मुलाकात उन दोनों से कभी नहीं हुई, न उनकी कोई खबर ही मुझे मिली। तब से मैंने आज तक न उन्हें देखा, न देखने की कोई संभावना ही है। किन्तु एक मास पूर्व मुझे एक पत्र और दो बंडल मिले जिनमें से एक में पाण्डुलिपि थी। पत्र खोलने पर देखा कि उसमें होरेस होली का हस्ताक्षर है, जो उस समय मुझे परिचित-सा नहीं मालूम पड़ा। पत्र निम्नलिखित था :

"—कालेज, कैम्ब्रिज।
मई १, १८—

"मेरे प्रिय मित्र,—हमारे बहुत मामूली परिचय को देखते हुए आपको मेरा यह पत्र पाकर आश्चर्य होगा। मैं समझता हूँ कि शुरू में ही मुझे आपको यह याद करा देना चाहिए कि कई साल पहले, हम एक बार मिले थे और उस समय केम्ब्रिज की एक सड़क पर मेरा और मेरे संरक्षित युवक लियो विंसी का आपसे परिचय कराया गया था। मैं यहाँ संक्षेप में और मतलब की बात करना चाहता हूँ। अभी हाल में मैंने मध्य अफ्रीकी सफर सम्बन्धी आपकी एक पुस्तक पढ़ी है। मैं मानता हूँ कि यह पुस्तक आंशिक रूप से सत्य है, और आंशिक रूप से कल्पना की उड़ान है। जो भी है पर इससे मुझे एक विचार सूझा है। साथ की पाण्डुलिपि पढ़ने से आपको मालूम होगा कि मैं और मेरा संरक्षित युवक, बल्कि गोद लिया पुत्र, लियो विंसी हाल ही में एक यथार्थ अफ्रीकी प्रवास से लौटे हैं। यह प्रवास आप द्वारा वर्णित सफर से कहीं अद्भुत है—यहाँ तक कि मुझे खुद इस पाण्डुलिपि को आपके पास भेजते हुए लज्जा-सी होती है कि कहीं आप इस कथा पर अविश्वास न करें। पाण्डुलिपि में आप देखेंगे कि हमने निश्चय कर लिया था कि

अपने जीते-जी इस कथा को प्रकाशित नहीं करेंगे। और जो नई परिस्थिति पैदा हो गई है वह न पैदा होती तो हम हर्गिज़ अपना इरादा न बदलते। आप इस पाण्डुलिपि को पढ़ने के बाद उस परिस्थिति का अनुमान स्वयं कर लेंगे। इस बार हम दोनों मध्य एशिया की ओर जा रहे हैं, जहाँ गूढ़ज्ञान—यदि वह संसार में कहीं मिल सकता है तो—मिल सकता है। हमारा अनुमान है कि हमारा यह प्रवास बहुत लम्बा होगा। शायद हमारा लौटना न भी हो। इन बदली हुई परिस्थितियों में यह सवाल उठता है कि जिस दृश्य के विश्वास को हम अतुल दिलचस्पी की चीज़ समझते हैं, क्या उसे सिर्फ इसलिए संसार के आगे न जाने देना उचित होगा कि उसका सम्बन्ध हमारे व्यक्तिगत जीवन से है या इसलिए कि लोग इस पर सन्देह एवं उपहास करेंगे? इस विषय में मेरा कुछ और मत है, लियो का कुछ और है। बड़ी बहस के बाद दोनों में यह समझौता हुआ है कि यह विवरण आपके पास भेज दिया जाय और आपको पूरा अधिकार दे दिया जाय कि आप ठीक समझें तो इसे प्रकाशित करें। सिर्फ एक ही शर्त है कि आप हमारे वास्तविक नाम-धाम को छिपा लेंगे, और कथा की सत्यता के लिए आवश्यक व्यक्तिगत परिचयात्मक बातों को छोड़ हमारे विषय में सब निजी सन्दर्भों को अप्रकाशित रखेंगे।

"और आगे मैं क्या कहूँ? मैं सचमुच नहीं जानता; केवल इतना ही एक वार पुनः कहना चाहता हूँ कि साथ की पाण्डुलिपि में हर घटना ठीक उसी प्रकार बयान की गई है जिस रूप में वह घटित हुई है। जहाँ तक 'श्री' या आयेशा का सवाल है मैं कुछ और लिखना नहीं चाहता। दिन-दिन हमारा अफसोस बढ़ता जाता है कि हमने उस अद्भुत महिला से और अधिक जानकारी प्राप्त करने के अवसर को क्यों खो दिया? वह कौन थी? वह किस प्रकार पहली बार कोर की गुफाओं में आई और उसका यथार्थ धर्म क्या था? हमने इन बातों का पता नहीं लगाया और अब अफसोस! हम कभी इन बातों को जान न सकेंगे—कम से कम आज तो नहीं जान सकते। ये और इस तरह के और भी अनेक प्रश्न मेरे मन में उठते हैं, पर अब उनके पूछने से क्या फायदा है?

"क्या आप मेरे इस कार्य को स्वीकार करेंगे? हम आपको पूरी स्वतन्त्रता देते हैं, और पुरस्कार में आपको संसार के सामने एक अत्यन्त आश्चर्यजनक इतिहास रखने का श्रेय प्राप्त होगा। यह कल्पित कथा नहीं है, जैसा कि इसके

विवरण से मालूम होगा। पाण्डुलिपि को पढ़िए (आपके लिए मैंने उसकी सुन्दर प्रतिलिपि कर दी है) और तब मुझे बताइए।

"विश्वास कीजिए, आपका सच्चा मित्र
ल० होरेस होली।"*

"पुनश्च—यदि आप इसके प्रकाशन का निश्चय करते हैं और इस रचना की बिक्री से कोई लाभ होता है तो आप उसका जो भी उपयोग चाहें कर सकते हैं किन्तु यदि हानि होती है तो मैं अपने कानूनी सलाहकार मेसर्स ज्याफ़री एण्ड जोर्डन को आदेश दे जाऊँगा कि वे इसकी पूर्ति कर दें। ठीकरा, यंत्र और दूसरे कागजात, जो आपको भेजे जा रहे हैं, आपके पास तब तक सुरक्षित रहेंगे जब तक हम उन्हें वापस न माँगें। —ल० ह० ह०।"

जैसी कल्पना भी की जा सकती है, यह पत्र पाकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, किन्तु जब मैंने पाण्डुलिपि (काम में फंसे रहने के कारण मैं उसे १५ दिन बाद ही खोल सका) देखी तो उससे भी अधिक आश्चर्य हुआ। पाठकों को भी ऐसा ही लगेगा। इसलिए मैंने तुरन्त उसे प्रकाशित करने का विचार कर लिया। मैंने इस आशय का पत्र भी श्री होली को लिख दिया, पर उनके कानूनी सलाहकारों ने मेरा पत्र मुझे लौटाते हुए सूचित किया कि हमारे मुवक्किल एवं लियो विंसी आपका पत्र मिलने के पूर्व ही तिब्बत के लिए प्रस्थान कर चुके हैं और इस समय उनका पता ज्ञात नहीं है।

बस, मुझे इतना ही कहना है। जहाँ तक विवरण का सवाल है, स्वयं पाठक उसकी जाँच कर लें। हम उसे ज्यों का त्यों दे रहे हैं; बहुत ही थोड़े संशोधन किए गए हैं और जहाँ ये संशोधन किए गए हैं वहाँ मुख्यतः अभिनेताओं को जनता की पहचान से बचाने के लिए ही किए गए हैं। निजी तौर पर मैंने निश्चय कर लिया है कि इस पर टिप्पणी न करूँगा। पहले मेरा विश्वास हो चला था कि अपने अनन्त वर्षों की महत्ता से आच्छादित एक नारी—जिस पर में [illegible]ता की छाया उसी प्रकार पड़ रही थी जैसे रात्रि के काले डैने—का यह इतिहास [illegible] एक ऐसा विराट् रूपक है जिसका अर्थ मैं पकड़ नहीं पाता। फिर मैंने

---

* [illegible] लेखक के अनुरोध के अनुसार यहाँ तथा समस्त कथा में उनका नाम बदल दिया गया है।

सोचा कि यह व्यावहारिक अमरता के संभाव्य परिणामों का चित्रण करने का एक ज़ोरदार प्रयत्न है—अमरता जो एक ऐसी नारी के प्राणतत्त्व को सूचित करती है जो अपनी शक्ति धरती से ग्रहण करती है और जिसके मानवीय अन्तर में तब भी वासनाएँ उठती और गिरती हैं जैसे उसके चतुर्दिक् फैले अमरणशील जगत् में समीर और ज्वार उठते और गिरते हैं। पर ज्यों-ज्यों मैं आगे पढ़ता गया, मैंने यह धारणा भी त्याग दी। मेरी समझ से इस कथा के चेहरे पर ही सत्य की छाप लगी हुई है; इसकी व्याख्या मैं दूसरों के ऊपर छोड़ता हूँ। इस छोटे मुखबन्ध के साथ, जो इस परिस्थिति में आवश्यक था, मैं आयेशा और कोर की गुफ़ाओं से संसार को परिचित करता हूँ।

—सम्पादक

पुनश्च—इस इतिहास को पुनः पढ़ने के बाद एक और बात का मेरे दिल पर ऐसा असर हुआ कि मैं उसकी ओर पाठक का ध्यान आकर्षित किए बिना नहीं रह सकता। हम लोगों को लियो का जो भी हाल-चाल दिया गया है उससे कदापि यह पता नहीं लगता कि उसके चरित्र में ऐसी कोई विशेषता थी जिसके कारण दुनिया की दृष्टि में आयेशा जैसी शक्तिमती बुद्धि वाली नारी का उसकी ओर आकर्षित होना स्वाभाविक जँचता। मेरे विचार में तो उसमें चित्ताकर्षण का कोई विशेष गुण न था। बल्कि हमारी तो कल्पना है कि सामान्य परिस्थितियों में कदाचित् होली ने श्री को अपनी ओर आकर्षित करने में अधिक सफलता पाई होती। क्या यह तो नहीं है कि दो अति मिल जाते हैं और उसके मन में प्रकाश एवं शक्ति के अत्याधिक्य ने ही भौतिक सम्पदा के मन्दिर में पूजा करने की प्रतिक्रिया उसके अन्दर पैदा की हो? क्या प्राचीन कालिक्रेटीज़ केवल एक सुन्दर पशु था जो केवल अपने आनुवंशिक यूनानी सौन्दर्य के लिए प्यार किया गया? या इसका ठीक कारण यह हो कि आयेशा ने, अपनी हमसे अधिक सूक्ष्म अवलोकन-शक्ति द्वारा लियो की आत्मा में महत्ता का बीज एवं छिपी चिनगारी देख ली हो और जान गई हो कि उसके जीवन-दान द्वारा, उसकी बुद्धि से सिञ्चित होकर, उसकी उपस्थिति की सूर्य-ज्योति के उद्भासित होकर वह फूल की भाँति खिल उठेगा और तारा की भाँति च[illegible] है? उठेगा तथा विश्व को प्रकाश एवं सुगंध से भर देगा?

तन्त्रता

यहाँ भी मैं उत्तर देने में असमर्थ हूँ और पाठक को उपस्थित त[illegible] चर्यजनक प्रकाश में स्वयं अपना विचार बनाने की स्वतन्त्रता देता हूँ। —राइ[illegible] कि इसके

अध्याय १

आगन्तुक

कुछ घटनाएँ ऐसी होती हैं कि उनकी हर एक परिस्थिति और तत्सम्बन्धी ब्यौरे की बातें स्मृति-पटल पर कुछ यों अंकित हो जाती हैं कि भुलाए नहीं भूलतीं। मैं जिस दृश्य का वर्णन करने वाला हूँ वह भी इसी प्रकार का है। वह आज भी मेरी आंखों के आगे इस प्रकार नाच रहा है जैसे कल ही घटित हुआ हो।

कोई बीस साल से ज्यादा हुए होंगे, जब ठीक इसी महीने में एक रात को मैं, लुडविग होरेस होली, कैम्ब्रिज के अपने कमरे में बैठा गणित का कोई सवाल हल करने में उलझा हुआ था—इस समय याद नहीं आता कि वह सवाल क्या था। एक सप्ताह बाद ही (फेलोशिप के लिए) मेरी परीक्षा होने वाली थी और मेरे शिक्षक तथा कालेज के लोगों को आमतौर से यह विश्वास था कि मैं उसमें विशेष नामवरी के साथ पास हो जाऊँगा। पर इस सवाल को करते हुए मैं परेशान हो रहा था। मैंने थककर किताब नीचे फेंक दी और अंगीठी के ताक़ के पास जाकर पाइप में तम्बाकू भरने लगा। इस मैंटिल-पीस पर एक शमा जल रही थी और उसके पीछे एक सँकरा पर लम्बा शीशा लगा हुआ था। ज्यों ही मैं पाइप जलाने के लिए झुका, मेरे चेहरे का प्रतिबिम्ब शीशे में पड़ा और उसकी ओर नजर किये मैं सोचता ही रह गया। जलाई हुई दियासलाई जलती रही, यहाँ तक कि मेरी उंगलियाँ जलने लगीं। मैंने मजबूर होकर उसे फेंक दिया किन्तु तब भी मैं उसी तरह खड़ा शीशे में अपने को देखता और सोचता रहा।

"ओह ! यह आशा तो की जा सकती है कि मैं दुनिया में अपने दिमाग़ की अन्त:शक्ति से कुछ कर दिखाऊँ पर बाहरी रूप द्वारा तो कुछ भी कर सकना मेरे लिए संभव न होगा !"—ज़ोर से मेरे मुँह से ये शब्द निकले।

बेशक ये बातें पाठकों के दिल में कुछ उलझन पैदा करेंगी, किन्तु असल में इन बातों से मेरा मतलब अपनी शारीरिक विकृतियों से है। बाईस साल की उम्र में अधिकांश व्यक्तियों पर यौवन का सम्मोहन छा जाता है पर दुःख है कि मैं वैसा का वैसा ही बना रहा। मुझे वह सौन्दर्य प्राप्त नहीं हुआ। नाटा क़द, गाँठदार शरीर, धँसी हुई छाती, लम्बे और मोटे हाथ, भारी चेहरा, भूरी तथा अन्दर घुसी आँखें, नीची, घनी और बालदार भौंहें;—पच्चीस साल पहले मेरी ऐसी ही शकल थी, और किञ्चित् परिवर्तन के साथ आज भी वही बात है। प्रकृति ने ही असाधारण कुरूपता की छाप मुझ पर लगा दी थी पर दूसरी ओर उसने मुझे असामान्य फौलादी ताक़त एवं अत्यधिक बौद्धिक शक्ति भी दी है। मैं इतना कुरूप था कि मेरे शक्ति-प्रदर्शनों पर मेरे कालेज के छैले सहपाठी गर्व करते हुए भी मेरे साथ घूमने-फिरने में शर्माते थे।

तब क्या यह आश्चर्य की बात है कि मैं सदा उदासीन और मानवद्रोही समझा जाता था ? क्या यह आश्चर्य की बात है कि मैं अकेला ही अपना काम करता था और अकेला ही सोचा करता था ? मेरा एक भी मित्र नहीं था। प्रकृति ने कदाचित् मुझे अकेला रहने के लिए ही बनाया था। केवल उसी के आँचल तले मुझे कुछ आराम मिलता था—वही मेरे आश्रय की गोद थी। औरतें मेरी सूरत से घृणा करती थीं। अभी एक ही सप्ताह हुआ होगा कि एक औरत ने, यह समझकर कि मैं सुन नहीं रहा हूँ, मुझे राक्षस कहा था और यह उपहास भी किया था कि मुझे देखकर उसे बन्दर से आदमी का विकास होने के सिद्धान्त में विश्वास हो गया है। जीवन में सिर्फ एक बार एक स्त्री ने मेरे प्रति अनुकूल होने का अभिनय किया था। मैंने उस पर अपने अन्तर के समस्त संचित प्रेम को उँडेल दिया था। पर जो धन मुझे मिलने वाला था, वह अन्यत्र चला गया और उसने भी मुझे छोड़ दिया। मैंने उसकी बड़ी विनती और नाज़बरदारी की। इसके पहले या बाद में मैंने किसीकी इतनी खुशामद कभी न की थी। मैं उसकी मधुर मुखश्री पर लट्टू हो गया था और उसे बहुत चाहता था। पर उसका भी दिल नहीं पसीजा और अन्त में एक दिन वह, मेरी विनती के

जवाब में, मुझे इस शीशे के पास ले गई और मेरे बगल में खड़ी हो गई।

"अब देखो। अगर मैं परी हूँ तो तुम क्या हो?" उसने कहा।

यह उस समय की बात है जब मैं सिर्फ बीस साल का था।

इसलिए मैं शीशे के सामने खड़ा ताकता रहा और अपने इकलेपन पर एक प्रकार का कठोर सन्तोष अनुभव करता रहा—क्योंकि न मेरे बाप थे, न माँ थी, न कोई भाई था; और जब मैं इस तरह शीशे की ओर देख रहा था, किसीने मेरा द्वार खटखटाया।

दरवाज़ा खोलने के पहले मैंने उस आवाज़ को कान लगाकर सुना, क्योंकि रात के बारह बज गये थे और मैं किसी अजनबी को अपने कमरे में बुलाने की मनोदशा में न था। कालेज में क्या संसार-भर में मेरा सिर्फ एक ही मित्र था—शायद वही हो!

इतने में दरवाज़े के बाहर के आदमी ने खाँसा, और मैं दरवाज़ा खोलने को बढ़ा क्योंकि मैं इस खाँसी को पहचानता था।

एक लम्बे आदमी ने, जिसकी उम्र कोई तीस साल रही होगी और जिसमें अब भी विलक्षण सौन्दर्य के लक्षण मौजूद थे, एक बड़े लोहे के सन्दूक के बोझ से लड़खड़ाते हुए, शीघ्रता के साथ अन्दर प्रवेश किया। इस सन्दूक के कुंडे को वह दाहिने हाथ से पकड़े हुए था। उसने सन्दूक को मेज़ पर रख दिया और ज़ोर से खाँसने लगा। उसे खाँसी का भयानक 'फिट' आ गया था। खाँसी इतने ज़ोर की थी कि खाँसते-खाँसते उसका चेहरा लाल हो गया। अन्त में वह थककर एक कुर्सी पर धम्म से बैठ गया और खून उगलने लगा। मैंने एक गिलास में थोड़ी ह्विस्की उँडेलकर उसे दी। वह पी गया; उसे कुछ आराम मालूम पड़ा यद्यपि यह 'आराम' भी ऐसा था जिसे 'बहुत बुरा' ही कहना चाहिए।

"तुमने इतनी देर तक मुझे बाहर सर्दी में खड़ा क्यों रखा?" कुछ चिड़चिड़ाकर वह बोला—"जानते तो हो कि सर्द हवा के झोंके मेरे लिए मौत हैं।"

Pratap College SRINAGAR

"मैं नहीं जानता था कि तुम हो। बहुत रात गये तुम आये हो।" मैंने उत्तर दिया।

"हाँ, और शायद यह मेरी अन्तिम भेंट है।" हँसने की एक भयानक चेष्टा के साथ वह बोला। "मैं जा रहा हूँ होली, मैं जा रहा हूँ। मैं कल्पना नहीं

करता कि कल का दिन देखना मेरे भाग्य में है।"

"वाहियात बकते हो!" मैंने कहा—"मुझे डाक्टर बुलाने के लिए जाने दो।"

उसने हाथ के इशारे से मुझे जाते हुए रोक लिया और बोला—"बात बुद्धिमानी की है पर मुझे किसी डाक्टर की ज़रूरत नहीं है। मैंने भी चिकित्सा-शास्त्र का अध्ययन किया है, और मैं उसके बारे में बहुत कुछ जानता हूँ। डाक्टर मेरी कोई मदद नहीं कर सकते। मेरा आखरी वक्त आ गया है। यही आश्चर्य है कि यह एक साल मैं कैसे जीवित रहा। अब जो कुछ मैं कहता हूँ उसे ध्यान देकर सुनो क्योंकि फिर उन बातों को मेरे द्वारा दोहराये जाने का मौक़ा तुम्हें न मिलेगा। दो साल से हम मित्र हैं, भला बताओ तो तुम मेरे बारे में क्या जानते हो?"

मैंने कहा—"बस इतना ही जानता हूँ कि आप धनिक व्यक्ति हैं और उस उम्र में कालेज में पढ़ने आये, जब लोग प्रायः उसे छोड़ जाते हैं। मैं जानता हूँ कि आपकी शादी हुई थी पर आपकी बीवी मर गई। मैं यह भी जानता हूँ कि संसार में आप ही मेरे सर्वोत्तम—क्या केवल एक ही—मित्र हैं।"

"और तुम यह नहीं जानते कि मेरे एक लड़का भी है?"

"नहीं।"

"मेरे एक लड़का है। वह पाँच वर्ष का होगा। उसी के पैदा होने में उसकी माँ मुझसे बिछुड़ गई। इसीलिए मैं कभी उसके मुख की ओर देखने का भी साहस नहीं कर सका। होली, यदि तुम स्वीकार करो, तो मैं तुम्हें उस लड़के का एकमात्र संरक्षक छोड़ जाऊँ।"

मैं प्रायः कुर्सी के बाहर उछलकर बोला—"मुझे?"

"हाँ, तुम्हें। मैं दो साल से तुम्हें व्यर्थ ही नहीं जाँच रहा हूँ। मुझे कुछ समय से यह मालूम हो गया था कि मैं ज्यादा दिन जीवित नहीं रहूँगा। और जब से मुझे यह मालूम हुआ तभी से मैं एक ऐसे आदमी की खोज कर रहा हूँ जिसे अपना लड़का और यह सन्दूक (सन्दूक पर थपकी देकर) सौंप जाऊँ। होली, तुम्हीं हो वह आदमी। क्योंकि तुम एक बीहड़ वृक्ष के समान हो जो ऊपर से खुरदुरा पर अन्दर से पक्का और मजबूत है।"

"सुनो! यह लड़का संसार के एक प्राचीनतम वंश का चिह्न है। मेरी

बात पर तुम हँसोगे पर किसी दिन तुम्हें मालूम हो जायगा कि मेरे पैंसठवें या छियासठवें पुरखा मिस्री देवता 'आइसिस' के पुजारी थे, यद्यपि खुद वह यूनानी वंश में पैदा हुए थे और 'कालिक्रेटीज़'[1] के नाम से मशहूर थे। उनके पिता एक यूनानी सरदार थे जिन्हें उन्नीसवें वंश के मेंडेशियन 'फेरो' हाक-होर ने प्रतिष्ठा दी थी। और उनके दादा या परदादा वही 'कालिक्रेटीज़' थे जिसका वर्णन इतिहासकार 'हेरोडोटस'[2] ने किया है। ईसा के जन्म के ३३९ साल पहले, जब फेरो लोगों का अन्तिम पतन हो रहा था, इन पुजारी 'कालिक्रेटीज़' ने अविवाहित रहने की अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी और राजवंश की एक मिस्री राजकुमारी को, जो उनको प्रेम करने लगी थी, लेकर मिस्र से भाग खड़े हुए। अफ्रीका के समुद्रतट पर, आज की डेलागोआ खाड़ी के पास या उत्तर में, उनका जहाज़ बर्बाद हो गया और सारी सम्पत्ति तथा साथी नष्ट या छिन्न-भिन्न हो गये। पर उनकी पत्नी और वह बच गये। वहाँ उन दोनों ने बड़ी-बड़ी तकलीफ़ें उठाईं पर अन्त में जंगली क़ौम की एक गोरी रानी ने, जो अद्भुत सुन्दरी थी, उन्हें शरण दी और उनकी खातिरदारी की। पर किसी विशेष परिस्थिति में—जिसका इस समय मैं वर्णन नहीं करना चाहता और जिसे तुम ज़िन्दा रहे तो स्वयं एक दिन इस सन्दूक की वस्तुओं से जान जाओगे—उस गोरी रानी ने मेरे पुरखा 'कालिक्रेटीज़' को मार डाला। उनकी पत्नी किसी तरह बचकर एथेंस भाग आईं। उस समय वह गर्भवती थीं और जब लड़का पैदा हुआ, उन्होंने उसका नाम 'टेसिस्थेनीज़' या 'शक्तिमान प्रतिहिंसक' रखा।

"पाँच सौ वर्ष या ज़्यादा समय बीत जाने पर यह वंश एथेंस से रोम

---

१. कालिक्रेटीज़ =शक्तिमान और सुन्दर अथवा अधिक उपयुक्त शक्ति-सुन्दर।

२. यहाँ मेरे मित्र ने जिस कालिक्रेटीज़ का जिक्र किया है, वह स्पार्टा का निवासी था। हेरोडोटस ने उसके सौंदर्य की बड़ी प्रशंसा की है। वह प्लेटा की लड़ाई में (२२ सितम्बर ४७९ ईसा पूर्व) मारा गया। इसी लड़ाई में प्लशियनों के नायकत्व में लेसीडियोनियनों और एथेनियनों ने ईरानियों को हराया था। इसमें तीन लाख ईरानी मौत के घाट उतर गये थे।

चला गया। क्यों और किस परिस्थिति में वह वहाँ गया, इसका कोई पता नहीं चल पाया है पर वहाँ उसने कदाचित् प्रतिशोध की ज्वाला जगाये रखने के लिए 'विण्डेक्स' (प्रतिशोधक) नाम ग्रहण किया। वहाँ भी वे पाँच सौ साल या उससे ज्यादा समय, ७७० ई० के आस-पास तक रहे। जब शार्लमेन ने लोम्बार्डी पर चढ़ाई की तब इस खानदान के लोग वहाँ रहते थे। ऐसा जान पड़ता है कि खानदान के मुखिया का इस महान् सम्राट् से सम्पर्क हो गया और वह उसके साथ आल्पस पर्वत पार कर ब्रिटेनी आये और वहीं बस गये। आठ पीढ़ियों के बाद, 'एडवर्ड दि कन्फेसर' के ज़माने में, यह खानदान इंगलैण्ड चला गया और 'विजेता' विलियम के समय बड़ी शक्ति एवं सम्मान का भाजन हुआ।

"तब से मुझ तक इस वंश का सिलसिला पूरे तौर पर बता सकता हूँ। इंग्लैण्ड की धरती पर इस वंश ने 'विंसी' नाम ग्रहण किया। उन्होंने कोई खास नाम नहीं पैदा किया, न समाज की आगे की पाँती में आये। कभी उन्होंने सैनिक का बाना धारण किया, कभी सौदागरी की ओर झुके पर किसी तरह अपनी इज्ज़त-आबरू को बनाये रखा। चार्ल्स द्वितीय से लेकर वर्तमान शताब्दी के आरम्भ तक वे व्यापार-व्यवसाय में लगे रहे। १७९० ई० के लगभग मेरे दादा ने मदिरा बनाने के काम में काफ़ी पैसा पैदा किया और फिर व्यवसाय से विश्राम ग्रहण किया। १८२१ ई० में उनका देहान्त हो गया। सारी सम्पत्ति मेरे पिता को मिली जिन्होंने ज़्यादातर धन उड़ा दिया। दस वर्ष बाद वह भी मर गये। मेरे लिये दो हजार पौण्ड सालाना की सम्पत्ति छोड़ गये। तब मैंने (सन्दूक की ओर इशारा करके) इसके लिए सफर किया जिसमें भयानक असफलता हुई। लौटते समय दक्षिण यूरोप होता हुआ मैं एथेंस पहुँचा। वहाँ अपनी प्यारी पत्नी से मेरी भेंट हुई जो मेरे यूनानी पूर्वज की भाँति ही परी या सुन्दरी कही जा सकती थी। वहाँ मैंने उसके साथ विधिवत् विवाह किया। वहीं एक साल बाद, मेरे पुत्र के जन्म के बाद, वह चल बसी।"

इतना कहकर वह थोड़ी देर के लिए ठहर गया और फिर अपना सिर हाथों पर रखकर कहने लगा :

"अपने विवाह के कारण मैं एक काम करना भूल गया; और अब

मैं उसे कर नहीं सकता। अब मेरे पास समय नहीं है होली ! अब मेरे पास समय नहीं है ! अगर तुम मेरी थाती को स्वीकार करते हो तो एक दिन सब कुछ मालूम हो जायगा। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद मैंने फिर इस ओर ध्यान देने की कोशिश की। पर इसके लिए यह जरूरी था, या कम से कम मैंने ऐसा ही ख्याल किया कि मैं पूर्वी भाषाओं, विशेषतः अरबी में पूर्ण अभिज्ञता प्राप्त करूँ। इसी अध्ययन की सुविधा के विचार से मैं यहाँ आया। पर बहुत जल्द मेरी बीमारी बढ़ गई और मुझे मालूम हो गया कि मेरा अन्तकाल आ पहुँचा है," और शायद अपने शब्दों पर बल देने के लिए वह फिर खाँसी के भयानक 'फ़िट' में पड़ गया।

मैंने उसे कुछ और ह्विस्की दी। कुछ देर विश्राम करने के बाद उसने फिर कहना शुरू किया :

"मैंने अपने लड़के 'लियो' को बहुत छुटपन से ही नहीं देखा है। मैं उसका मुँह देखना सहन ही नहीं कर सकता था। पर लोग कहते हैं कि वह एक तेज और सुन्दर लड़का है। इस लिफ़ाफ़े में (मेरे नाम का एक लिफ़ाफ़ा अपनी जेब से निकालकर) मैंने एक पत्र लिखकर रख दिया है जिससे तुमको मालूम हो जायगा कि मेरी इच्छा लियो को किस प्रकार की शिक्षा देने की है। वह कुछ विचित्र प्रकार की है। मैं किसी अजनबी को यह काम नहीं सौंप सकता। इसलिए मैं एक बार फिर तुमसे अनुरोध करता हूँ कि क्या तुम इसे स्वीकार करते हो ?

मैंने कहा—"पहले यह तो बताइए कि मुझे करना क्या होगा ?"

"तुमको मेरे पुत्र लियो को अपने पास बुलाकर तब तक साथ रखने की जिम्मेदारी लेनी होगी जब तक वह पच्चीस साल का नहीं हो जाता। लेकिन इससे मेरा यह मतलब नहीं है कि तुम उसे स्कूल भेजने के लिए अपने पास रखो। पच्चीसवीं वर्षगाँठ के समय तुम्हारी संरक्षकता समाप्त हो जायगी। और तब मैं जो चाबियाँ तुमको दे रहा हूँ (उसने उन्हें मेज़ पर रख दिया) उनसे इस लोहे के सन्दूक को खोल डालना। इसमें रखी चीज़ों को उसे दिखाना और कागज-पत्रों को पढ़ा देना और पूछना कि वह इसकी खोज में जाना चाहता है या नहीं। किन्तु उससे यह भी स्पष्ट कह देना कि उसे इस काम के लिए कोई मजबूर नहीं करता। अब शर्तों की बात भी सुन लो। मेरी वर्तमान आमदनी

दो हज़ार दो सौ पौण्ड सालाना है जिसका आधा तुमको ज़िन्दगी भर के लिए लिखे जाता हूँ अर्थात् संरक्षण स्वीकार करने पर एक हजार पौण्ड सालाना पुरस्कार तुमको मिलेगा, क्योंकि तुम्हें अपनी ज़िन्दगी इस काम में लगानी पड़ेगी। सौ पौण्ड सालाना लड़के के भोजनादि के व्यय के लिए। बाकी ग्यारह सौ पौण्ड सालाना तब तक जमा होता रहेगा जब तक लियो पच्चीस साल का नहीं हो जाता। यह इसलिए कि जिस खोज की चर्चा मैंने तुमसे की है उसमें वह लगना चाहे तो इस काम के लिए धन एकत्र रहे।"

मैंने पूछा—"और इसके पहले ही मैं मर गया तो ?"

"तब लड़के को 'कोर्ट आफ वार्ड्स' (चांसरी) के सुपुर्द कर जाना। हाँ, इतना ध्यान रखना कि तुम्हारी वसीयत में लोहे का सन्दूक लड़के को दे दिये जाने की बात ज़रूर रहे। होली, इन्कार न करो। विश्वास रखो, इससे तुम्हारा भी भला होगा। तुम दुनिया में मिलने-जुलने योग्य नहीं हो—ऐसा करोगे तो तुम्हारी कटुता और बढ़ेगी। चंद हफ्तों में ही तुम अपने कालेज के 'फैलो' बन जाओगे और वहाँ से तुम्हें जो कुछ मिलेगा तथा मैं तुम्हारे लिए जो कुछ छोड़े जा रहा हूँ उसके कारण विद्याभ्यास-पूर्ण अवकाश बिताने का पूरा सुभीता तुम्हें हो जायगा, और भी जो कुछ खेल-कूद तुम पसन्द करोगे, उसके लिए भी सुविधा हो जायगी।"

वह ठहरकर बड़ी उत्सुकतापूर्वक मेरी ओर देखने लगा। किन्तु मैं तब भी हिचकिचा रहा था। क्योंकि यह एक विचित्र प्रकार भी ज़िम्मेदारी थी।

"होली, मेरे लिए इसे स्वीकार करो। हम लोग अच्छे मित्र रहे हैं, और अब मेरे पास इतना समय नहीं है कि कोई दूसरी व्यवस्था कर सकूँ।"

मैंने कहा—"बहुत अच्छा ! यदि इस काग़ज़ में कोई ऐसी बात न हुई जो मुझे अपना मत बदलने को मजबूर करे, तो मैं इस काम को पूरा करूँगा।" और चाबियों के पास उसने जो लिफ़ाफ़ा मेज़ पर रख दिया था, उसे छूकर उसकी ओर मैंने संकेत किया।

"धन्यवाद होली ! धन्यवाद ! इसमें कोई ऐसी बात नहीं है। मेरे सामने ईश्वर की शपथ लो कि तुम लड़के के लिए पितृवत् रहोगे और मैंने जो निर्देश दिये हैं उनका पूरी तौर पर पालन करोगे।"

मैंने गम्भीरतापूर्वक कहा—"मैं शपथ लेता हूँ।"

"बहुत अच्छा ! पर याद रखना, मैं एक दिन तुमसे इस शपथ का हिसाब माँगूंगा क्योंकि मैं मृत एवं विस्मृत होते हुए भी जीता रहूँगा। होली, मृत्यु जैसी कोई चीज़ नहीं है; जिसे हम मृत्यु कहते हैं वह सिर्फ एक परिवर्तन है, और जैसा शायद तुम भविष्य में सीख पाओगे, मेरा विश्वास है कि यहाँ भी, कतिपय परिस्थितियों में, उस परिवर्तन को अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित किया जा सकता है।" इतना कहते-कहते उसे फिर खाँसी का भयानक दौरा आ गया।

उसने आगे कहा—"अच्छा, अब मैं जाता हूँ। यह सन्दूक तुम्हारे पास है। और मेरा वसीयतनामा मेरे अन्य कागज़ों में मिल जायगा। इस वसीयतनामे के अनुसार ही लड़का तुमको सुपुर्द कर दिया जायगा। होली, तुम्हें अच्छा मेहनताना मिलेगा, और मैं जानता हूँ कि तुम ईमानदार हो, किन्तु यदि तुमने मेरी थाती के प्रति विश्वासघात किया तो मेरा भूत तुम्हें लगेगा।"

मैंने कुछ नहीं कहा क्योंकि मैं इतना चकित हो गया था कि बोलना सम्भव नहीं था।

उसने शमा उठा ली और अपना मुँह शीशे में देखा। निश्चय ही वह एक खूबसूरत चेहरा था जिसे बीमारी ने विकृत कर दिया था। वह बोला—"कीड़ों के लिए खाद्य ! सोचने में कैसा विचित्र लगता है कि चंद घण्टों के अन्दर ही मैं लकड़ा कर ठंडा हो जाऊँगा; सफर खतम और यह छोटा खेल पूरा हो जायगा। हाय अफ़सोस ! जीवन जीने लायक नहीं है—सिवाय उस स्थिति के जब कोई प्रेम करता हो—कम से कम मेरा जीवन जीने लायक नहीं था किन्तु यदि पुत्र लियो में साहस और निष्ठा रही तो शायद उसका जीवन मेरे जैसा न होगा। खैर, मेरे मित्र ! अब मैं विदा होता हूँ। सलाम।" और आकस्मिक प्रेमोच्छ्वास के साथ उसने अपनी बाँहें मेरी गर्दन में डाल दीं; मेरा माथा चूमा और जाने के लिये मुड़ गया।

मैं बोला—"विंसी, इधर देखो। अगर तुम इतने बीमार हो, जितना समझते हो तो अच्छा होगा कि मैं जाकर डाक्टर बुला लाऊं।"

उसने बड़ी संजीदगी के साथ कहा—"नहीं, नहीं। वादा करो कि ऐसा नहीं करोगे। मैं मरने के करीब हूँ और एक विषदन्त चूहे की भाँति मैं एकान्त में मरना चाहता हूँ।"

मैंने उत्तर दिया—"मैं विश्वास नहीं करता कि तुम कोई ऐसा काम कर बैठोगे।"

वह मुस्कराया और सिर्फ़ इतना कहकर कि 'याद रखना', चला गया।

जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं बैठ गया और अपनी आँखें मलकर आश्चर्य करने लगा कि मैं कोई सपना तो नहीं देख रहा हूँ। किन्तु चूंकि इसकी जाँच सम्भव नहीं थी इसलिए मैंने इन बातों को अपने दिल से भुला देना ही ठीक समझा और यह सोचने लगा कि विसी जरूर शराब पीता रहा होगा। मैं जानता था कि वह बीमार है और बहुत बीमार रहा है पर इतना नहीं कि वह आज रात भर भी न जियेगा। अगर मृत्यु उसके इतने निकट होती तो वह इतना भारी सन्दूक लेकर यहाँ तक आने योग्य निश्चय ही न रह गया होता। सोचने पर कहानी मुझे बिल्कुल अविश्वसनीय प्रतीत होती थी। उस समय मैं इतना बड़ा या अनुभवी नहीं था कि जान सकता कि दुनिया में कितनी ही ऐसी बातें होती रहती हैं जिन्हें मामूली इन्सान असम्भव समझता है। इस तथ्य को मैं थोड़े ही दिन से समझने लगा हूँ। उस समय मैं सोचता था कि क्या यह संभव है कि एक आदमी ने अपने पाँच वर्ष के लड़के का वचपन से कभी मुँह ही न देखा हो? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। क्या यह सम्भव है कि वह इतने यथार्थ रूप में अपनी मौत की बात पहले से कह दे? नहीं! क्या यह हो सकता है कि वह अपने वंश का पता ईसा की तीन शताब्दी पूर्व तक लगा ले या एकाएक अपने एक कालेज के मित्र को अपने लड़के का एकमात्र संरक्षक और आधी सम्पत्ति का स्वामी बना जाय? निश्चय ही, यह सब सम्भव नहीं है। स्पष्ट है कि विसी या तो नशे में था या पागल हो गया था। ऐसा नहीं तो इसका और क्या मतलब है? पर इस मुहरवन्द लोहे के सन्दूक में क्या है?

इन बातों ने मुझे इतना चकित और परेशान कर दिया कि मैं उसके सम्बन्ध में और कुछ सोचने लायक न रहा और निश्चय किया कि इन बातों का विचार छोड़कर मुझे सो जाना चाहिए। इसलिए चावियों को और उस लिफाफे को, जो विसी मेरे लिए छोड़ गया था, मैंने अपने बैग में रख दिया और उस लोहे के सन्दूक को एक बड़े बक्स में रख कर छिपा दिया। इसके वाद मैं पलंग पर जाकर लेट गया और शीघ्र ही गहरी नींद में डूब गया।

पर मुझे सोने के कुछ ही देर बाद ऐसा जान पड़ा जैसे किसीने पुकारा

हो। मैं उठकर बैठ गया और अपनी आँखें मलने लगा। काफ़ी दिन चढ़ आया था—बल्कि आठ बज गए थे।

"जॉन, क्या बात है?" मैंने उस नौकर से पूछा जो विसी की और मेरी हाजरी में रहा करता था। "तुम तो इतने डरे जान पड़ते हो जैसे तुमने कोई भूत देखा हो!"

उसने उत्तर दिया—"हाँ, साहब, बात कुछ ऐसी ही है। मैंने एक मुरदे को बुरी हालत में देखा है। मैं सदा की तरह विसी साहब को बुलाने गया तो देखता क्या हूँ कि वह मरे पड़े हैं।"

अध्याय २

दिवस जात नहिं लागहिं बारा

जैसा कि उचित ही था, इस प्रकार विसी की अचानक मृत्यु से कालेज में एक हलचल-सी मच गई। किन्तु चूंकि सबको मालूम था कि वह बहुत दिनों से बीमार चला आ रहा था और डाक्टर ने भी मृत्यु के बारे में एक सन्तोष-जनक प्रमाण-पत्र दे दिया इसलिए कुछ विशेष जांच-पड़ताल नहीं हुई। यों भी उस ज़माने में किसीकी आकस्मिक मृत्यु पर आज की तरह पूछ-ताछ नहीं हुआ करती थी। और चूंकि किसीने मुझसे नहीं पूछा इसलिए मैंने भी रात की मुलाक़ात और बातचीत के बारे में किसीसे इसके सिवा और कुछ न कहा कि सदा की भाँति कल रात को भी वह मेरे कमरे में आया था। मृत्यु-कर्म के दिन लन्दन से उसका वकील आया, उसकी अरथी के साथ कब्र तक गया, और लौटते समय विसी के कागज-पत्र और असबाब वगैरा, सिवाय उस सन्दूक के जो विसी मुझे पहिले ही सौंप गया था, वह लेता गया।

इसके एक सप्ताह बाद तक फिर मुझे इस विषय में कुछ मालूम न हुआ। मेरा ध्यान भी कुछ दूसरी बातों में लग गया। मेरी परीक्षा बिल्कुल नज़दीक थी, इसलिए न मैं अन्तिम क्रिया-कर्म में सम्मिलित हो सका, न वकील से ही

भेंट कर सका। अन्त में मेरी परीक्षा समाप्त हो गयी और मैं कमरे में लौटकर एक आराम-कुर्सी पर लेट गया। मुझे सन्तोष था कि मैंने बहुत अच्छे परचे किए हैं।

अभी तक मेरा सारा ध्यान परीक्षा में केन्द्रित था पर उससे फुर्सत मिलते ही मेरा ध्यान विंसी की मृत्यु वाली रात की ओर गया और मैं अपने मन में सोचने लगा कि उसका मतलब क्या था, मैं ताज्जुब कर रहा था कि इस बारे में कुछ और खबर मुझे क्यों नहीं मिली? और कोई खबर नहीं मिली तो उस विचित्र लोहे के सन्दूक के साथ मुझे अब क्या करना चाहिए। मैं बैठा-बैठा बराबर सोचता रहा, यहाँ तक कि इस विषय में मेरी बेचैनी बहुत बढ़ गई। उसका आधी रात का वह रहस्यमय आगमन, शीघ्र ही होने वाली मृत्यु की भविष्यद्वाणी, मेरे द्वारा ली गई गम्भीर शपथ, जिसका दूसरी दुनिया में मुझसे हिसाब लेने की बात विंसी ने कही थी। एक-एक करके सब बातें याद आने लगीं। तब क्या उसने आत्म-हत्या की? मुझे कुछ ऐसा ही मालूम पड़ा। और वह खोज क्या है जिसके बारे में उसने कहा था? परिस्थितियां बिल्कुल अपार्थिव थीं, इतनी कि मैं डर गया, यद्यपि मैं इतना डरपोक नहीं हूँ कि स्वाभाविकता को लांघने वाली किसी बात से घबरा जाऊँ। मेरे मन में आया कि इन बातों से मेरा सम्बन्ध न होता तो ही अच्छा था। और आज भी जब उस घटना को बीस साल से ज्यादा का समय बीत चुका है, मैं और ज्यादा चाहता हूँ कि इससे मेरा पीछा छूटे।

जब मैं इस तरह बैठा विचारों में डूबा हुआ था, किसीने मेरा दरवाज़ा खटखटाया। एक चिट्ठी, बड़े नीले लिफाफे में, मेरे पास लायी गयी। मैं तुरन्त समझ गया कि यह किसी वकील के यहाँ से आयी होगी और मन में प्रेरणा ने कहा कि हो न हो इसका सम्बन्ध मेरी धरोहर से है। चिट्ठी में, जो अब तक मेरे पास रखी हुई है, लिखा था :

"महाशय,—मेरा मुवक्किल, स्व० एम० एल० विंसी, जिसकी इस मास की नवीं तारीख को, केम्ब्रिज के······कालेज में मृत्यु हो गई, एक वसीयतनामा छोड़ गया है जिसकी नकल हम इस चिट्ठी के साथ आपकी सेवा में भेज रहे हैं। इस वसीयतनामा को कार्यान्वित करने का भार हमारे ऊपर डाला गया है। इसे देखने से आपको मालूम होगा कि इसके अनुसार आप आजीवन स्व०

विंसी के आधे धन के अधिकारी हैं—इस बन्धन के साथ कि आप उनके एकमात्र पुत्र पंचवर्षीय लियो विंसी की संरक्षता स्वीकार करेंगे। यदि हमने स्वयं इस वसीयतनामे को विंसी के साक्षात् एवं स्पष्ट लिखित आदेशानुसार न लिखा होता और उन्होंने हमको इस बात का विश्वास न दिला दिया होता कि जो कुछ वह कर रहे हैं, खूब समझ-बूझकर कह रहे हैं तो हम यही कहते कि हमें इस वसीयतनामे की शर्तें अद्भुत और असामान्य प्रतीत होती हैं; इसलिए इस बारे में स्पष्ट निर्देश के लिए हमें अदालत की शरण लेनी चाहिए। परन्तु हम जानते हैं कि इस वसीयत का कर्ता एक ऊँची श्रेणी का विवेकवान् एवं सभ्य व्यक्ति था और यह भी कि उसका कोई ऐसा निकट का सम्बन्धी न था जिसकी रक्षा में वह अपने लड़के को छोड़ जाता, इसलिए हमने अदालत तक जाना उचित नहीं समझा।

हम आपके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आप जिस प्रकार कहें उस प्रकार हम लड़के तथा आपके हिस्से की रक़म आपकी सेवा में भेज दें।

हम हैं, आपने प्रति निष्ठावान,

ज्याफ्रे एण्ड जोर्डन

श्री होरेस ल० होली महाशय"

मैंने चिट्ठी नीचे रख दी और वसीयतनामे पर अपनी निगाह दौड़ायी। वह बिल्कुल कानूनी भाषा में लिखा हुआ था इसलिए स्पष्ट मेरी समझ में न आया। किन्तु अपने काम की इतनी बात तो समझ गया कि मेरे मित्र ने मरने के पूर्व उस रात को जो कुछ मुझसे कहा था, वही सब इसमें लिखा हुआ है। तब यह सब सच्चा है! मुझे लड़के को अपने संरक्षण में लेना ही पड़ेगा। एकाएक मुझे विंसी के उस पत्र की याद आयी जो वह सन्दूक के साथ मुझे दे गया था। मैं उसे निकाल लाया और खोलकर पढ़ने लगा। इसमें वे ही सब बातें लिखी थीं जो उसने बातचीत में मुझे बतायी थीं—अर्थात् किस प्रकार लियो की पच्चीसवीं वर्षगांठ पर सन्दूक खोला जायगा, लड़के को किस तरह की शिक्षा दी जायगी। उसकी शिक्षा में यूनानी भाषा, उच्च गणित और अरबी का ज्ञान आवश्यक बताया गया था। पत्र के अन्त में पुनश्च करके इतनी बात और लिखी थी कि यदि लड़का पच्चीस साल की उम्र पाने के पहले ही मर जाय, यद्यपि पत्र-लेखक का विश्वास है कि ऐसा नहीं होगा, तो मुझे ही सन्दूक खोल

लेना चाहिए और यदि उचित प्रतीत हो तो उसमें दी गयी सूचनाओं के अनुसार मुझे आगे की कार्रवाई खुद करनी चाहिए। अगर मुझे वैसा करना उचित न प्रतीत हो तो सारी चीज़ों को नष्ट कर देना चाहिए और किसी भी स्थिति में किसी अजनबी के हाथ में उनको नहीं देना चाहिए।

चूंकि इस पत्र से मुझे कोई नई बात नहीं मालूम हुई और न इसमें कोई ऐसी आपत्तिजनक बात ही लिखी थी कि मुझे अपने स्वर्गीय मित्र से किए वादे की पूर्ति में कोई बाधा जान पड़ती, इसलिए अब एक ही रास्ता रह गया था कि मैं सर्वश्री ज्याफ्रे एण्ड जोर्डन को थाती का उत्तरदायित्व ग्रहण करने के संबंध में अपनी रज़ामन्दी का पत्र लिख दूं और उन्हें सूचित कर दूं कि दस दिन में मैं लियो की संरक्षता शुरू करने को तैयार हूँ। इस प्रकार का पत्र लिखकर भेज देने के बाद मैं अपने कालेज के अधिकारियों के पास गया और इस कहानी की उतनी बातें उनको बता दीं जितनी मुझे वाञ्छनीय प्रतीत हुईं। बड़ी कठिनाई से मैं उन लोगों को इस बात के लिए राज़ी कर सका कि फैलोशिप मिलने की हालत में, और मुझे उसकी प्राप्ति के विषय में कोई सन्देह न था। मैं लियो को अपने साथ रखूँ, यह रियायत भी मुझे इस शर्त पर प्राप्त हुई कि मैं कालेज के कमरों को छोड़कर किसी दूसरी जगह जाकर रहूँ। मैंने उनकी शर्त स्वीकार कर ली क्योंकि मुझे पूरा विश्वास था कि मैं उस परीक्षा में अवश्य पास हो जाऊँगा और दूसरा मकान भी ले सकूंगा।

मैंने ऐसा ही किया और काफी दौड़-धूप के बाद, कालेज के द्वार के पास ही मुझे एक बहुत अच्छा मकान मिल गया। अब दूसरी बात एक नर्स—धात्री की खोज करके उसे रखने की थी। इसके लिए मैंने इरादा कर लिया था कि किसी औरत को नहीं रखूंगा कि वह लड़के के मामले में मुझी पर स्वामित्व जमावे और मेरे प्रति उसके प्यार को स्वयं चुरा ले। फिर लड़का इतना बड़ा था कि बिना स्त्री-सहायिका के काम चल सकता था। इसलिए मैं एक अच्छे पुरुष नौकर की खोज में लग गया। कुछ कठिनाई के बाद मुझे गोल चेहरे का एक युवक, इस काम के लिए, मिल गया। वह देखने में भला मालूम होता था और चूंकि एक बड़े और बाल-बच्चों वाले कुटुम्ब का था इसलिए बच्चों के रंग-ढंग की उसे अच्छी जानकारी थी। आने पर उसने मास्टर लियो की ज़िम्मेदारी लेने की अपनी तत्परता भी प्रकट की। मैंने उसे रख लिया। इसके बाद उस

लोहे के सन्दूक को स्वयं ले जाकर शहर में मैं अपने बैंकरों के पास जमा करा आया। फिर बच्चों की व्यवस्था और स्वास्थ्य पर मैंने कुछ किताबें खरीदीं; पहले उन्हें खुद पढ़ा; फिर उस नौकर 'जाब' को सुनाईं। फिर लड़के के आगमन की प्रतीक्षा करने लगा।

आखिरकार वह लड़का, एक बूढ़ी नर्स के साथ आया जो उससे विदा होते समय फूट-फूटकर रोयी। निश्चय ही लड़का बहुत सुन्दर था। मैं समझता हूँ कि मैंने उसके पहले या बाद में ऐसा सुन्दर दूसरा लड़का नहीं देखा। उसकी आँखें भूरी थीं; माथा चौड़ा था और उस छोटी उम्र में भी उसका मुँह बिल्लौर में अंकित मूर्ति के समान चमकता था। पर उसकी सबसे आकर्षक चीज़ उसके बाल थे। वे दमकते सोने के रंग के और घुँघराले थे और उसके सुगठित सिर पर खूबसूरती के साथ फैले हुए थे। जब उसकी नर्स उसे मेरे पास छोड़कर जाने लगी तो वह रोने लगा। मैं उस दृश्य को कभी भूल नहीं सकूँगा। वह एक ओर खड़ा था और खिड़की से आती सूर्य-रश्मियाँ उसके सुनहले बालों से खेल रहीं थीं। वह एक हाथ से अपनी आँखें मींचकर रो रहा था और दूसरी से हम लोगों की ओर देख रहा था। मैं कुर्सी पर बैठा अपना हाथ फैलाकर उसे अपने पास बुला रहा था और उधर जाब एक कोने से बच्चों को लुभाने वाली तरह-तरह की चिड़ियों-जैसी आवाज़ें कर रहा था, इस ख्याल से कि उनका बच्चे के मन पर अच्छा असर पड़ेगा। इसके साथ ही भद्दी सूरत के एक लकड़ी के घोड़े को भी वह आगे-पीछे फिरा रहा था। कुछ देर तक यही होता रहा। उसके बाद वह बच्चा अपनी दोनों बाहें फैलाकर मेरी ओर दौड़ा।

उसने कहा—"मैं तुम्हें पसन्द करता हूँ। तुम बदसूरत हो, पर तुम अच्छे हो।"

दस मिनट बाद वह सन्तोषपूर्वक रोटी के बड़े-बड़े टुकड़े मक्खन के साथ खा रहा था। जाब उन रोटियों पर मुरब्बा देने लगा पर मैंने पुस्तकों में पढ़ी हुई बातों की याद दिलाकर उसे मना कर दिया।

जैसी कि मुझे पहले से ही आशा थी, मैं फेलोशिप पा गया। बहुत थोड़े ही समय में लियो सारे कालेज का प्यारा बन गया। और अनेक प्रतिबन्धों के होते हुए भी वह भीतर-बाहर सर्वत्र आ-जा सकता था—उसके लिए सब नियम ढीले कर दिये गये थे। और उसके लिए कहीं कोई रोक-टोक न थी। जहाँ

Pratap College

वह जाता लोग उसे कुछ न कुछ उपहार देते ही थे पर एक आदमी के विषय में मेरी राय बहुत प्रतिकूल थी। वह आदमी सारी यूनिवर्सिटी में सब से रूखा था और बच्चों की सूरत से उसे घृणा थी। बहुत दिन हुए, वह मर गया। पर उस समय उसकी इस रूक्षता के कारण मैं यह पसन्द नहीं करता था कि लियो उसके पास जाय। फिर भी जब जाब बीमार पड़ गया तो मुझे पता चला कि कई बार वह रूखा, सिद्धान्त-विहीन आदमी लड़के को बहकाकर अपने कमरे में ले जाता और उसे तरह-तरह की चीजें खाने को देता था और चलते समय उससे वादा करा लेता था कि यह बात वह किसीको न बतायेगा। एक बार जाब ने इसी बात पर उसे खूब लताड़ा और कहा कि इस उम्र में, जब ठीक रास्ते पर चलकर वह किसी बच्चे का दादा बन सकता था, ऐसा करते उसे शर्म आनी चाहिए। इस पर झगड़ा हो गया।

पर मेरे पास उन आनन्ददायक दिनों का वर्णन करने के लिए स्थान नहीं है जिनके साथ जुड़ी सुखद स्मृतियाँ अब भी मेरे मन पर छायी हुई हैं। एक-एक करके वे सुखमय वर्ष बीतते गये और ज्यों-ज्यों वे बीतते गये, हम दोनों एक-दूसरे के अधिकाधिक प्रिय होते गये। शायद ही कोई अपने पुत्रों को इतना प्यार करता होगा जितना मैं लियो को करता हूँ और लियो भी निरन्तर जिस गहराई से मुझे प्यार करता रहा है वैसा प्यार शायद ही किसी पिता को अपने पुत्र से मिला होगा।

शिशु से वह बालक हुआ और बालक से बढ़कर नवयुवक बन गया। ज्यों-ज्यों वह सुखद समय बीतता गया, वह बढ़ता और विकसित होता गया। इस विकास के साथ उसका शारीरिक एवं मानसिक सौन्दर्य भी बढ़ता गया। जब वह पन्द्रह साल का हुआ तो लोगों ने उसका नाम 'सुन्दर' रखा और मुझे 'पशु' कहने लगे। हम लोग जब साथ-साथ घूमने जाते तब भी हमें लोग 'सुन्दर' और 'पशु' ही कहते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि रास्ते में एक आदमी मुझे 'पशु' कहकर गाने लगा ; इस पर लियो क्रुद्ध हो गया और यद्यपि वह आदमी उससे दूना था, फिर भी उसने उसकी काफ़ी पिटाई की। मैं आगे बढ़ता गया, और बहाना किया, जैसे मैंने कुछ सुना ही न हो। पर जब मामला तूल पकड़ गया तब मैं लौटकर 'लियो' को विजयी होने के लिए बढ़ावा देने लगा। जब लियो कुछ और बड़ा हो गया तो कालेज के पूर्व स्नातक छात्रों ने हमारे नये नाम

रखे। वे लियो को 'यूनानी देवता' और मुझे 'यमदूत' कहने लगे। अपने इस नाम के बारे में मैं इतना ही कहकर आगे बढ़ूँगा कि मैं कभी खूबसूरत नहीं रहा और उम्र बढ़ने के साथ भी मेरे रूप-रंग में कोई अन्तर नहीं आया। जहाँ तक लियो की उपाधि की बात है उसके औचित्य में कोई सन्देह नहीं किया जा सकता था। २१ साल का लियो 'अपोलो'[1] की मूर्ति के समान दिखता था। चेहरे-मोहरे में उसकी बराबरी करने योग्य किसी आदमी को मैंने कभी न देखा और न अपनी इस विशेषता के प्रति इतना बेखबर ही दूसरा कोई आदमी मुझे दिखाई पड़ा।

जहाँ तक उसके मानसिक विकास का सवाल है वह मेधावी और तीव्र बुद्धि का था किन्तु विद्वान् वा विशेषज्ञ नहीं था। हाँ, वह सुस्त नहीं था। मैंने शिक्षा के विषय में उसके पिता के आदेशों का पूरी तरह पालन किया और उसका फल भी सन्तोषजनक रहा—विशेषतः यूनानी और अरबी भाषा के विषय में। मैंने उसके अध्ययन में सहायता करने के लिए खुद अरबी सीखी पर पाँच साल के बाद वह उतनी ही जान गया जितनी मैं जानता था—बल्कि इस विषय में उसका ज्ञान उस शिक्षक के बराबर हो चला जिसने उसे और मुझे दोनों को अरबी सिखाई थी। मैं सदा से ही एक अच्छा शिकारी रहा हूँ—यह मेरे जीवन का एकमात्र शौक है और हर साल पतझड़ में हम दोनों कभी शिकार खेलने, कभी मछलियाँ पकड़ने के लिए बाहर जाते—कभी स्काटलैण्ड, कभी नार्वे। एक बार तो हम रूस भी गए थे। मैं एक अच्छा निशानेबाज हूँ पर इस क्षेत्र में भी वह मुझसे बढ़ गया।

जब लियो अठारह साल का हुआ तो मैं अपने कालेज के उन्हीं पुराने कमरों में जाकर रहने लगा और उसे भी इसी कालेज में भरती करा दिया। २१ साल की उम्र में उसने एक डिग्री (उपाधि) भी प्राप्त कर ली। यद्यपि यह कोई बहुत बड़ी उपाधि न थी पर अच्छी सम्मानित उपाधि थी। इस उम्र में मैंने उसकी कहानी की कुछ बातें उसे बताईं और आगे आने वाली भेद की बातें भी कहीं। स्वभावतः उसे इन बातों के प्रति बड़ी उत्सुकता हुई किन्तु मैंने उसे समझा दिया कि फ़िलहाल तो उसकी उत्सुकता को सन्तुष्ट नहीं किया जा सकता। इसके

---

१. यूनानियों के सूर्य-देवता

बाद, समय बिताने की दृष्टि से मैंने उसे कानून के अध्ययन में लगाया। वह पढ़ता तो कैम्ब्रिज में ही था पर भोज के लिए लन्दन जाता रहता था।

लियो के बारे में मुझे एक ही चिन्ता थी। प्रत्येक तरुणी जो उससे मिलती और यदि प्रत्येक नहीं तो उससे मिलने वाली अधिकांश तरुणियाँ उससे प्रेम करने पर ज़ोर देती थीं। इससे बहुत-सी कठिनाइयाँ पैदा हुईं जिनके बारे में यहाँ मैं कुछ लिखना नहीं चाहता, यद्यपि उनके कारण उस समय तो काफ़ी तकलीफ़ हो गई थी। मैं यहाँ इससे ज्यादा कुछ कहना नहीं चाहता कि सब मिलाकर लियो का आचरण काफ़ी अच्छा था।

इसी तरह समय बीतता गया, यहाँ तक कि लियो की पचीसवीं वर्षगाँठ आ पहुँची—वह तिथि जब कि यह अद्‌भुत, बल्कि कुछ पहलुओं से भयंकर, कहानी सचमुच शुरू होती है।

अध्याय ३

अमेनार्त्ता के पुष्पपात्र का ठीकरा

लियो की पचीसवीं वर्षगाँठ के एक दिन पहले हम दोनों लन्दन गए और उस रहस्यमय सन्दूक को बैंक से, जहाँ वह बीस साल पहले रखी गई थी, निकलवाया। मुझे याद है कि वही क्लर्क उसे निकालकर लाया जो रखने के समय उसे ले गया था। उसे अच्छी तरह याद था कि सन्दूक को कहाँ छिपाकर रखा गया है। उसने कहा कि अगर उसे यह बात याद न होती तो सन्दूक को खोज निकालने में दिक्कत होती क्योंकि वह चारों ओर मकड़ियों के जालों से घिर गया था।

शाम तक हम दोनों अपना कीमती बोझ लिये कैम्ब्रिज लौट आये और सो रहे। तड़के ही लियो मेरे कमरे में आया और प्रस्ताव किया कि हमें तुरन्त काम में लग जाना चाहिए। उसकी इस तरह की जल्दबाज़ी मुझे अच्छी न लगी और मैंने कहा—बीस साल इस सन्दूक ने प्रतीक्षा की है इसलिए यह

नाश्ते तक और प्रतीक्षा कर सकता है। ६ बजे हमने नाश्ता किया, उस समय मैं अपने विचारों में ऐसा डूबा हुआ था कि लियो की चाय में चीनी की जगह मैंने कुछ दूसरी चीज़ डाल दी। जाब भी ऐसा घबराया हुआ था कि उसके हाथ से प्याला टूटते-टूटते बचा; उसकी मुठिया फिर भी टूट ही गई।

खैर, आखिरकार, नाश्ते के बाद, मेज़ साफ़ कर दी गई और मेरी आज्ञा से जाब ने उस सन्दूक को लाकर मेज़ पर, डरते-डरते रखा और कमरे से बाहर जाने लगा।

मैंने उससे कहा—"एक मिनट ठहरो। अगर मि० लियो को आपत्ति न हो तो मैं गवाह रूप में एक स्वतन्त्र आदमी का यहाँ रहना पसन्द करूँगा, ऐसे आदमी का, जिस पर विश्वास किया जा सकता हो कि जब तक उसे कहा न जायगा वह इसके विषय में अपना मुँह बन्द रखेगा।"

लियो ने कहा—"काका होरेस! मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" लियो प्रायः मुझे काका ही कहता था, यद्यपि कभी-कभी बुड्ढा साथी या कुछ दूसरे नामों से भी पुकारता था।

मैंने कहा—"अच्छा जाब! अब दरवाज़ा बन्द कर दो और मेरा अपना बक्स उठा लाओ।"

उसने आज्ञा का पालन किया। मैंने अपना बक्स खोलकर उन चाबियों को निकाला जिन्हें लियो के पिता विंसी ने उस मृत्यु-रात्रि को मुझे दिया था। कुल तीन चाबियाँ थीं। इनमें सबसे बड़ी तो आधुनिक चाबियों जैसी ही थी। दूसरी बहुत ही पुरानी थी और तीसरी ऐसी थी कि हमने वैसी कभी न देखी थी। यह ठोस चाँदी की बनी एक डण्डी सी थी जिसमें दानेदार मुँह कटे हुए थे और वह एक भद्दी रेलवे की चाबी जैसी दिखती थी।

"अब, क्या तुम दोनों तैयार हो?" मैंने कुछ इस ढंग से कहा जैसे किसी खान में आग लगाने जा रहे हों। कोई जवाब न मिलने पर मैंने बड़ी चाबी उठाई, उसमें कुछ तेल लगाया और एक दो बार प्रयत्न करने में उसे ताले के सूराख में डालने में समर्थ हुआ। मेरा हाथ काँप रहा था। पर चाबी घुमाने से ताला खुल गया।

लियो ने झुककर ढकने को ऊपर खींचा। उसे काफ़ी ताक़त लगानी पड़ी क्योंकि कुलाबों में जंग लग गया था। ढक्कन हटाने के बाद उसके अन्दर धूल से

भरी एक दूसरी सन्दूकची दिखाई पड़ी जिसे बड़े सन्दूक से बाहर निकालने में कोई विशेष कठिनाई न हुई। हमने सालों से पड़ी धूल को कपड़े के ब्रुश से पोंछकर साफ़ किया।

यह सन्दूकची आबनूस या और किसी काली लकड़ी की बनी हुई मालूम पड़ती थी और इसके चारों तरफ़ लोहे के बन्द जड़े हुए थे। सन्दूकची बहुत पुरानी रही होगी क्योंकि यद्यपि वह मोटी दलदार लकड़ी की बनी हुई थी पर अपनी लम्बी उम्र के कारण जगह-जगह चर्राकर फट रही थी।

"अब इसे देखना चाहिए।" कहते हुए मैंने उसमें दूसरी चाबी लगाई।

जाव और लियो दोनों झुककर श्वासहीन उत्कण्ठा से उसे देख रहे थे। मैंने चाबी घुमाई, ढक्कन उठाया और आश्चर्य से चिल्ला पड़ा। क्योंकि उस सन्दूकची के अन्दर एक शानदार चाँदी का कास्केट था। वह कोई आठ इंच ऊँचा और बारह इंच वर्गाकार था। बिना किसी सन्देह के वह किसी मिस्री कारीगर के हाथ का बना हुआ था क्योंकि उसके पाये 'स्फिक' की शक्ल के थे और उसके गुम्बददार ढक्कन पर भी एक स्फिक की मूर्ति थी। यद्यपि कास्केट पुराना होने के कारण कुछ मलिन पड़ गया था फिर भी काफ़ी अच्छी हालत में था।

मैंने बाहर निकाल कर उसे टेबुल पर रख दिया और उस विचित्र-सी दिखने वाली चाँदी की चाबी से उसे खोला। ढक्कन उठाने पर देखा कि ऊपर भूरे रंग का बुरादा-सा भरा हुआ है। तीन इंच तक बुरादा हटाने के बाद एक पत्र निकला जो आधुनिक ढंग के लिफ़ाफ़े में रखा हुआ था और जिस पर मेरे स्व० मित्र विंसी के हाथ से लिखे ये शब्द थे :—

"मेरे पुत्र लियो को—यदि वह इस कास्केट को खोलने के लिए जीवित रहे।"

मैंने पत्र लियो को दे दिया। उसने लिफाफे पर एक नज़र डाली और फिर उसे मेज़ पर रख दिया और मुझे इशारा किया कि मैं कास्केट की जाँच का अपना काम जारी रखूं।

दूसरी चीज जो मेरे हाथ लगी, सावधानी से लपेटा हुआ एक कागज था। मैंने इसे खोलकर देखा और यह देखकर कि वह भी विंसी के ही हाथ का लिखा हुआ है और उस पर 'पुष्पपात्र के ठीकरे पर लिखे यूनानी लेख का अनुवाद'

शीर्षक दिया हुआ है, मैंने उसे भी पहले पत्र के पास ही मेज पर रख दिया। इसके बाद एक बहुत पुराना लिपटा काग़ज़ निकला जो अपनी लम्बी आयु के कारण पीला पड़ गया था और फटने लगा था। मैंने इसे भी खोलकर देखा। यह भी उसी मूल यूनानी अभिलेख का कृष्णवर्ण लैटिन में अनुवाद था जो शैली और लिखावट से मुझे सोलहवीं सदी के आरम्भ का जान पड़ा।

इस परचे के नीचे कोई कड़ी और भारी चीज़ पीले रंग के कपड़े में लपेटी हुई रखी थी। मैंने उसे निकाला। सावधानी से और धीरे-धीरे कपड़े की तह खोली। इसमें एक बड़ा-सा पर बहुत पुराना मैले पीले रंग का एक ठीकरा निकला। मेरी समझ से यह औसत आकार के किसी मामूली दोहरी मुठिये के अखोरे का हिस्सा रहा होगा। यह नाप में साढ़े दस इंच लम्बा, सात इंच चौड़ा और लगभग चौथाई इंच मोटा रहा होगा। इसके उस उन्नतोदर भाग पर जो सन्दूक के पेंदे की ओर था, यूनानी लिपि में कुछ लिखा हुआ था। यह लेख जहाँ तहाँ मिट चला था, फिर भी उसका अधिकांश पूरी तरह पढ़ा जाने योग्य था। यह लेख अत्यधिक सावधानी से वैसी ही नरकट की कलम से लिखा हुआ प्रतीत होता था जिससे प्राचीन काल के लोग प्रायः लिखा करते थे। यहाँ मुझे यह भी बता देना चाहिए कि किसी पुराने ज़माने में इस अद्भुत ठीकरे के टूटकर दो टुकड़े हो गए होंगे जिन्हें सीमेंट जैसे किसी मसाले से जोड़ा गया था। इसके अन्दर की ओर भी बहुत से अभिलेख थे जो विभिन्न युगों में विभिन्न हाथों द्वारा लिखे गए थे। इन सब अभिलेखों के विषय में मैं आगे बताऊँगा।

सब के नीचे हाथी दाँत की एक तख़्ती निकली जिस पर लियो की यूनानी माँ की तस्वीर बनी हुई थी। वह काली आँखों वाली एक सुन्दर रमणी थी। इस तख़्ती के पीछे गरीब विंसी की लिखावट में लिखा था—"मेरी प्यारी पत्नी।"

इससे एक छोटा अण्डाकार यंत्र निकला जिस पर प्रतीक रूप में एक चित्र बना था। प्रतीकों का जो पाठ हमने बाद में निकाला वह था—"सुतेन सी रा।" अनुवाद करने पर इसका अर्थ होगा—"रा अथवा सूर्य का राजपुत्र।"

"बस, अब और कुछ नहीं है।" मैंने कहा।

"बहुत अच्छा" कहकर लियो ने माँ के चित्र वाली तख़्ती को, जिसे वह प्रेमभरी दृष्टि से देख रहा था, मेज पर रख दिया और बोला—"अब हमें चिट्ठी

पढ़नी चाहिए।" उसने तुरन्त मुहर तोड़ डाली और चिट्ठी निकालकर ज़ोर से पढ़ने लगा :

"मेरे पुत्र लियो,—जिस समय तुम इस चिट्ठी को खोलोगे—अगर तुम ऐसा करने के लिए जीवित रहे—उस समय तुम पूर्ण यौवन को प्राप्त कर चुके होगे और मुझे मरे हुए बहुत दिन गुज़र गए होंगे, यहाँ तक कि जो लोग भी मुझे जानते रहे होंगे, पूर्णतया भूल चुके होंगे। पर इस पत्र को पढ़ते समय याद रखना कि मैं सदा तुम्हारे साथ रहा हूँ और शायद आगे भी रहूँगा। इस समय भी इस कलम और कागज़ द्वारा मैं मृत्यु की खाई के उस पार अपने हाथ तुम्हारे पास तक बढ़ा रहा हूँ और मेरी वाणी समाधि के मौन को भंग कर तुम से बोल रही है। यद्यपि मैं मर गया हूँ और तुम्हारे मन में मेरी कोई स्मृति शेष नहीं है फिर भी जब तुम इस पत्र को पढ़ रहे हो, मैं तुम्हारे पास मौजूद हूँ। तुम्हारे जन्म से आज तक शायद ही कभी मैंने तुम्हारा मुँह देखा हो। इसके लिए मुझे क्षमा कर देना। तुम्हारे जीवन ने एक ऐसे जीवन का अन्त कर दिया जिसे मैं उससे कहीं ज़्यादा प्यार करता था जितना स्त्रियाँ अक्सर प्यार की जाती हैं, और आज तक मेरी वह कटुता बनी हुई है। अगर मैं जीता रहता तो कालान्तर में इस मूर्खताभरी भावना पर नियन्त्रण कर लेता किन्तु नियति मुझे जीने नहीं देगी। मेरी शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मेरी सहनशक्ति से कहीं अधिक है और मेरी इच्छा है कि तुम्हारी भावी जीवन-विधि के बारे में छोटी-मोटी व्यवस्था पूर्ण कर लेने पर, मैं उसका अन्त कर दूं। अगर मैं कोई ग़लती कर रहा होऊँ तो ईश्वर मुझे क्षमा कर दें। अब एक साल से ज़्यादा मैं किसी तरह नहीं जी सकता।"

"तो उसने आत्मघात किया ? मेरा कुछ ऐसा ही ख्याल था।" मैं बीच में बोल उठा।

लियो, बिना कुछ जवाब दिये, आगे पढ़ता गया—"अब मैं अपने बारे में ज़्यादा कहना नहीं चाहता। जो कुछ कहना है उस पर तुम्हारा अधिकार है, मेरा नहीं, क्योंकि तुम्हें जीना है; मैं तो मर चुका हूँ और इतना विस्मृत हो चुका हूँ, जैसे कभी था ही नहीं। शायद होली (मेरा मित्र जिसने स्वीकार किया तो मैं तुम्हें उसके सुपुर्द कर जाऊँगा) ने तुम्हारी जाति की असाधारण प्राचीनता के विषय में तुम्हें कुछ बताया होगा। इस कास्केट में जो चीजें तुम्हें

मिलेंगी उनसे यह बात अच्छी तरह साबित हो जायगी। इस ठीकरे पर जो विचित्र कथा तुम्हारी किसी प्राचीन सुदूर पूर्वजा ने लिख रखी है उसे मेरे पिता ने, अपनी मृत्युशय्या पर पड़े हुए, मुझे बताया था। उसका मेरी कल्पना पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने मुझे वशीभूत कर लिया। जब मैं केवल १९ साल का था मैंने इस कथा के सत्य की खोज करने का संकल्प किया, जैसा कि एलिज़ाबेथ के ज़माने में मेरे एक पूर्वज ने किया था और दुःख उठाया था। इस संकल्प के कारण जो मुसीबतें मुझे झेलनी पड़ीं उन्हें मैं कहना नहीं चाहता लेकिन मैंने अपनी आँखों से जो कुछ देखा है उसे लिखता हूँ। अफ्रीका के तट पर, जहाँ ज़ेम्बेसी नदी समुद्र में गिरती है, एक ऐसा भूभाग है, जिसका हाल अब तक लोगों को नहीं मालूम हो सका है। इस क्षेत्र में कुछ उत्तर की ओर हटकर एक पठार है जिसके सिरे पर एक शृंग, देखने में हबशी के सिर के समान, खड़ा है, जैसा कि अभिलेख में लिखा है। मैं वहाँ जहाज़ से उतरा। मुझे वहीं का एक निवासी मिल गया जिसे किसी अपराध पर वहाँ के लोगों ने अपनी जाति से बाहर निकाल दिया था। उसने मुझे बताया कि अन्दर की ओर बहुत से ऐसे बड़े-बड़े पहाड़ हैं जो प्याले के आकार के हैं और बहुतेरी गुफाएँ हैं जिनके चारों ओर दलदल फैले हुए हैं। उससे मुझे यह भी मालूम हुआ कि वहाँ के लोग एक अरबी उपभाषा बोलते हैं और उन पर एक परम सुन्दरी गोरी राज करती है जिसे वे लोग शायद ही कभी देख पाते हों पर जिसमें जीवित एवं मृत सब वस्तुओं पर नियन्त्रण रखने की शक्ति है। इसके दो दिन के बाद वह आदमी भयानक दलदली ज्वर से मर गया। मेरे पास खाने-पीने की सामग्री समाप्त हो चली थी और मुझ में एक ऐसी बीमारी के लक्षण भी दिखने लगे थे जिसने बाद में मुझे पस्त ही कर दिया, इसलिए मैं अपने जहाज़ पर वापस आ गया।

"इसके बाद मुझ पर क्या-क्या मुसीबतें आईं, उनको मैं इस समय नहीं कहना चाहता। मेडागास्कर तट पर मेरा जहाज़ बर्बाद हो गया। कई महीने बाद एक अँग्रेजी जहाज़ ने कृपा करके मुझे अदन पहुँचा दिया। अदन से मैं इंग्लैण्ड की ओर यह विचार करके रवाना हुआ कि संभव हो तो वहाँ पूरी तैयारी करके मैं पुनः खोज में अफ्रीका जाऊँ। इंग्लैण्ड जाते हुए, रास्ते में मैं यूनान ठहर गया और जैसा कि यूनानी कहावत है 'प्रेम सर्वविजयी है', वहाँ

मेरी भेंट तुम्हारी प्यारी माँ से हुई। मैंने उससे विवाह कर लिया। वहाँ तुम पैदा हुए और वह मर गई। मुझे बीमारी ने जकड़ लिया और मैं मरने को यहां आया। पर आशा के विपरीत आशा करता ही रहा और अरबी भाषा सीखने लगा। इरादा यह था कि यदि चंगा हो गया तो अफ्रीका के उस रहस्य का पता लगाने की चेष्टा करूँगा जो शताब्दियों से परम्परागत मेरे कुटुम्ब में सुरक्षित रहा है। पर मैं स्वस्थ न हो सका, इसलिए जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है वह कहानी खत्म हो गई।

"पर मेरे पुत्र, तुम्हारे लिए कथा का अन्त नहीं हुआ है, और तुमको मैं अपने श्रम के परिणाम-स्वरूप ये चीजें सौंपे जा रहा हूँ। साथ ही इस कथा के स्रोत के आनुवंशिक प्रमाण भी दिये जा रहा हूँ। मैंने ऐसी व्यवस्था की है कि ये चीज़ें तब तक तुम्हारे हाथ न पड़ें जब तक तुम ऐसी अवस्था न प्राप्त कर लो कि खुद निश्चय कर सको कि तुम संसार के इस सबसे बड़े रहस्य की खोज करोगे या एक औरत के पागल दिमाग़ से निकली निरर्थक कहानीमात्र समझकर इसे छोड़ दोगे।

"मैं इसे गढ़ा हुआ किस्सा नहीं समझता; मेरा विश्वास है कि यदि पुनः खोजा जाय तो एक ऐसा स्थान अवश्य है जहाँ संसार की जीवन्त प्राण-शक्तियाँ दृश्य रूप में उपस्थित हैं। जब जीवन का अस्तित्व है तब उसे अनिश्चित काल तक बनाये रखने के साधन का भी अस्तित्व क्यों न होगा? पर मैं इस विषय में तुम्हारे मन में पहले से ही कोई विचार नहीं बैठाना चाहता। तुम खुद पढ़ो और निर्णय करो। यदि तुम इस खोज का भार उठाना चाहोगे तो मैंने ऐसी व्यवस्था कर दी है कि तुम्हें साधनों की कमी न होगी। इसके विरुद्ध यदि तुम इस निर्णय पर पहुँचते हो कि यह सब मनगढ़न्त है तो मैं कहूँगा कि तुम उस ठीकरे और अभिलेखों को नष्ट कर देना और इस प्रकार हमारी जाति से बखेड़े की जड़ को सदा के लिए दूर कर देना। शायद यही सबसे ज़्यादा बुद्धिमानी की बात होगी। जो अज्ञात है उसे अक्सर भयंकर समझा जाता है। मनुष्य के प्राकृतिक मूढ़विश्वासों के कारण ऐसा नहीं है बल्कि इसलिए है कि वह प्रायः भयंकर ही होता है। जो उन विशाल एवं गुप्त शक्तियों से छेड़छाड़ करेगा जो संसार को जीवनमय करती हैं वह उनका शिकार भी हो सकता है। किन्तु यदि लक्ष्य सिद्ध हो गया और तुम काल एवं दुःख को पराजित कर परीक्षा से चिर-

सुन्दर और चिरयुवा होकर लौटे एवं शरीर तथा बुद्धि के प्राकृतिक ह्रास से ऊपर उठ गए तब भी कौन कह सकता है कि उस भयानक परिवर्तन से तुम सुखी ही होगे ? मेरे पुत्र, स्वयं चुनो और जो शक्ति सम्पूर्ण वस्तुओं का शासन करती है और जो कहती है 'तुम इतनी दूर तक जाने पाओगे और इतनी दूर तक जानने पाओगे' वह तुम्हारे अपने और संसार के लिए कल्याणकारी निर्णय करने की प्रेरणा तुम्हें दे। यदि तुम सफल हुए तो संचित अनुभव की पवित्र शक्ति से निश्चय ही एक दिन दुनिया पर राज्य करोगे।—विदा !"

इस प्रकार वह पत्र, जिस पर न हस्ताक्षर था, न कोई तिथि थी, एकाएक समाप्त हो गया।

चिट्ठी को मेज़ पर रखकर हाँफते हुए लियो ने कहा—"काका होली ! आप इससे क्या समझे ? हम लोग एक रहस्य की खोज में थे और निश्चय ही एक रहस्य हमें मिल गया है।"

कुछ चिढ़कर मैंने कहा—"मैं क्या समझता हूँ ? मैं यहीं समझता हूँ कि बेचारे तुम्हारे बाप का सिर फिर गया था। यह मैं बीस साल पहले, उस रात को ही समझ गया था, जब वह मेरे कमरे में आये थे। तुम देख रहे हो उसने खुद अपनी मौत जल्द बुला ली। यह सब बिल्कुल वाहियात है।"

"बिलकुक ठीक, महाशय !" जाब ने गम्भीरतापूर्वक कहा। जाब यथार्थ जगत् का यथार्थ नमूना था।

"जो भी हो, हमें देखना चाहिए कि वह ठीकरा क्या कहता है।"—लियो ने अपने पिता के हाथ से लिखे अनुवाद को हाथ में लेते हुए कहा और पढ़ना शुरू कर दिया :

"मैं अमीनार्त्ता, मिश्र के फेरोओं के राजवंश की कन्या, और उस 'आइसिस' के पुजारी केलिक्रेटीज़ (शक्ति-सुन्दर) की पत्नी जिसकी कृपा की भीख देवता माँगते हैं और दानव भी जिसकी आज्ञा मानते हैं, मरते समय, अपने छोटे-से पुत्र टेसिस्थेनीज़ (शक्तिमान प्रतिशोधक) को लिखती हूँ—मैं तेरे पिता के साथ जिसने मेरे प्रेम में पड़कर (विवाह न करने का) अपना प्रण तोड़ दिया था, नेक्तानवीस* के समय में मिश्र से भगी थी। हम लोग समुद्री मार्ग से दक्षिण

***नेक्तानवीस=नेख्तनेफ़ या नेक्तानेबो द्वितीय; मिश्र देशीय अन्तिम फेरो जो ३३९ ई० पूर्व में ओचस से एथियोपिया भाग गया था।**

की ओर भगे थे। हम चौबीस महीनों तक लीबिया (अफ्रीका) के उस तट पर चक्कर काटते रहे जो उगते सूर्य के सामने पड़ता है और जहाँ एक नदी के पास एक पहाड़ की चोटी है जिसकी शकल एथियोपिया-निवासी के सिर-जैसी है। एक शक्तिमान नदी के मुहाने से चार दिन तक हम पानी पर तैरते रहे; कुछ साथी डूब गए, कुछ बीमारी से मर गए। लेकिन हम दोनों को जंगली लोग पकड़कर सुनसान मैदानों और दलदलों को पार कराते हुए ऐसी जगह ले गए जहाँ समुद्री पक्षियों से आकाश घिरा हुआ था। हम लोग दस दिन तक चलने के बाद एक खोखले पहाड़ के पास पहुँचे जिसे देखने से मालूम होता था कि कभी यहाँ कोई बड़ा नगर बसा रहा होगा, जो बाद को नष्टहो गया। वहाँ ऐसी बहुत-सी गुफाएँ हैं जिनका अन्त कहाँ होता है, इसे कोई आदमी नहीं जानता। वे हमें अपनी रानी के पास ले गए जो अजनबियों के सिर पर पात्र रखती है। वह बड़ी जादूगरनी है और उसे सब चीज़ों का ज्ञान है। वह अपनी विद्या के ज़ोर से अमर तथा अक्षय सौन्दर्य की अधिकारिणी हो गई थी। वह तेरे पिता पर मोहित हो गई और उसने चाहा कि मुझे मारकर तेरे पिता से विवाह कर ले किन्तु तेरा पिता मुझे बहुत प्यार करता था और उससे डरता था इसलिए उससे शादी करने को तैयार नहीं था। आखिरकार वह रानी हम दोनों को अपने जादू के जोर से बड़े-बड़े भयानक और बीहड़ रास्तों से घुमाती एक बड़े गड्ढे के पास ले गई जिसके मुँह में एक वृद्ध तत्त्ववेत्ता मरा हुआ पड़ा था। उसने हमें घूमता हुआ जीवन-स्तंभ दिखाया जो कभी नहीं मरता, और जिसकी आवाज़ ऐसी है जैसी बिजली की कड़कड़ाहट और जिससे अग्नि की लपटें निकलती हैं। वह जाकर लपटों के बीच खड़ी हो गई और बिना किसी हानि के अछूती बाहर निकल आई बल्कि और ज्यादा सुन्दर हो गई। तब उसने तेरे बाप से कहा—"अगर तू मेरी बात मानकर इस औरत को क़त्ल कर दे और मेरा हो जाये तो मैं तुझे भी अपनी ही तरह अमर बना दूँगी।" वह मुझे खुद इसलिए नहीं मार सकती थी कि मेरे पास भी मेरी जाति वालों का जादू था जो अब तक उसके प्रभाव से मेरी रक्षा कर रहा था। मेरे पति ने उसकी बातें सुनकर अपने हाथ से अपनी आँखें मूँद लीं ताकी उसका सौन्दर्य आँखों से ओझल हो जाय। इस पर वह बहुत क्रुद्ध हुई और अपने जादू से उन्हें मार

डाला। मारने को तो मार डाला पर पीछे वह बहुत रोई और रोती हुई उनके मृत शरीर को वहाँ से उठा ले गई। डर के मारे उसने मुझे उस नदी के मुहाने तक पहुँचवा दिया जहाँ प्रायः जहाज़ आया-जाया करते थे। आखिर जहाज़ पर मैं वहाँ से समुद्र की यात्रा पर रवाना हुई। यात्रा के बीच तू पैदा हुआ। इधर-उधर बहुत भटकने के बाद मैं एथेंस पहुँची। मेरे पुत्र टेसिस्थेनीज़! अब मैं तुझसे कहती हूँ कि उस औरत को खोज निकाल, उससे जीवन का रहस्य जान, और अगर कोई उपाय निकाल सके तो उसे क़त्ल कर दे, अपने पिता कालिक्रेटीज़ के लिए! अगर तू डर गया या असफल हुआ तो मैं तेरे बाद आने वाली अपने वंश की प्रत्येक सन्तान से यही करने को तब तक कहती रहूँगी जब तक तुम में से कोई वीर पुरुष ऐसा न निकल आये जो उस आग में नहाकर फेरोआओं के स्थान पर बैठे। मैं जिन बातों के बारे में कह रही हूँ, वे विश्वास करने योग्य नहीं प्रतीत होतीं, फिर भी मैंने उन्हें स्वयं देखा है, और मैं झूठ नहीं बोलती।"

जाब ने, जो इस विचित्र लेख को हक्का-बक्का होकर सुन रहा था, कराहते हुए कहा—"ईश्वर इसके लिए उसे क्षमा कर दे।"

जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं कुछ नहीं बोला क्योंकि मेरी पहली धारणा यह हुई कि अपने पागलपन में मेरे मित्र ने यह सारी कथा गढ़ डाली है, यद्यपि यह भी सोचता था कि ऐसी कहानी गढ़ लेना किसी के बूते के बाहर है। यह ऐसी मौलिक थी। अपने सन्देहों के निवारण के लिए मैंने ठीकरे को उठा लिया और उस पर की बड़े अक्षरों वाली यूनानी लिपि को पढ़ने लगा। जब हमने इसका विचार किया कि वह लेख मिश्र में पैदा हुए व्यक्ति की कलम से लिखा गया है तब यह मानना पड़ा कि वह अपने समय की बड़ी अच्छी यूनानी में लिखा गया था।

मिलाने पर मैंने देखा कि अंग्रेजी अनुवाद बिल्कुल शुद्ध है।

इस यूनानी लेख के अलावा ठीकरे के दूसरी ओर, सिरे पर, एक 'कारटूश' (अण्डाकार घेरा) बना था जिसमें मिश्री फेरोआओं के नाम और उपाधियाँ लिखी थीं। लेकिन यह कहना कठिन है कि यह 'कारटूश' वास्तव में कालिक्रेटीज़ का

ही रहा होगा[1]। हो सकता है कि यह फेरो राजवंश के किसी ऐसे व्यक्ति से सम्बन्धित हो जिसकी कन्या अमीनार्त्ता रही हो। इतना ही नहीं, बल्कि उसके नीचे स्फिंक के सिर और कन्धे की तस्वीर लाल रंग से बनी हुई थी जिस पर दो पंख लगे हुए थे। ये पंख महत्ता एवं शक्ति के चिह्न हैं जो यद्यपि देवों के शवों में प्रायः पाये जाते हैं पर कभी स्फिक के साथ नहीं देखे गए।

ठीकरे की सतह के दाहिनी ओर, दायें-बायें लाल रंग में कुछ पंक्तियाँ और थीं जिनके नीचे नीली रोशनाई में हस्ताक्षर था। इन पंक्तियों को भी हम नीचे देते हैं :

इस पृथ्वी, आकाश एवं समुद्र में
अनेक विचित्र वस्तुएँ मौजूद हैं।
इस मार्ग पर
डोरोथिया विसी,

बिल्कुल आश्चर्य-चकित अवस्था में मैंने ठीकरे को उलट दिया। उस तरफ़ ऊपर से नीचे तक यूनानी, लैटिन तथा अंग्रेजी में बहुत से वाक्य लिखे थे तथा कितने ही हस्ताक्षर बने हुए थे। पहला लेख और हस्ताक्षर मोटी यूनानी लिपि में टेसिस्थेनीज़ का था जिसके नाम ऊपर वाली चिट्ठी उसकी माँ ने लिखी थी। इसमें लिखा था—"मैं नहीं जा सका—मेरे पुत्र कलिक्रेटीज़ को।"

इस कलिक्रेटीज़ ने (जिसका नाम यूनानी पद्धति के अनुसार अपने दादा पर पड़ा था), जान पड़ता है, खोज में जाने की कुछ कोशिश की थी। इसका लेख बहुत धूमिल पड़ गया था और मुश्किल से ही पढ़ा जाता था। जो पढ़ा जा सका, उसका मतलब इतना ही है—"देवताओं के प्रतिकूल होने से मेरी यात्रा न हो सकी। कलिक्रेटीज़ से उसके पुत्र को।"

---

१. यदि कारटूश सच्चा है तो वह कलिक्रेटीज का नहीं हो सकता। कालिक्रेटीज एक पुजारी था जिसे कारटूश प्राप्त करने का अधिकार नहीं था। यह अधिकार केवल मिश्री राजवंश को है। यह बात दूसरी है कि उसने अंडाकार फलक पर अपना नाम आदि खुदवा लिया हो।

यह दूसरा अभिलेख ऊपर से नीचे की ओर, न कि दाहिने बायें लिखा हुआ था और इन दोनों प्राचीन अभिलेखों के बीच की जगह में, आधुनिक अक्षरों में लियो के दादा लाओनेल विंसी के हस्ताक्षर थे। इसकी दाहिनी ओर लिखा था—'जे० बी० वी०। उसके नीचे अनेक यूनानी हस्ताक्षर थे जिनके साथ 'मेरे पुत्र को' शब्द बार-बार लिखा गया था। इससे जान पड़ता है कि अभिलेख एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को, एक धर्मादेश के रूप में, सौंपा जाता रहा है।

यूनानी हस्ताक्षरों के बाद जो पढ़ा जा सका वह था—"रोमे ए० यू० सी०।" जिससे मालूम होता है कि कुटुम्ब रोम में रहने चला गया। इसके बाद का कुछ हिस्सा चिटख जाने से वह अंश पढ़ा नहीं जा सका। इसके बाद लैटिन अक्षरों में बारह हस्ताक्षर थे और तीन के अलावा हरएक हस्ताक्षर के अन्त में, 'विंडेक्स' (प्रतिशोधक) शब्द जुड़ा हुआ था जिससे यह पता लगता था कि रोम जाने के बाद इस वंश का यही नाम पड़ गया था। यह शब्द यूनानी टेसिस्थेनीज़ से मिलता-जुलता है और दोनों का मतलब एक ही है—'बदला लेने वाला।' शायद यह 'विंडेक्स' शब्द ही विकृत होते-होते आधुनिक 'विंसी' बन गया होगा। कैसे आश्चर्य की बात है कि ईसा के भी पहले किसी मिश्री द्वारा अपने वंश को सौंपी गई प्रतिशोध की यह परम्परा एक अंग्रेज कुटुम्ब के नाम के साथ सम्बद्ध हो गई।

ठीकरे पर लिखे अनेक रोमन नामों का जिक्र इतिहास तथा पुराने विवरणों में पाया जाता है। जैसे :

माइसिव्स विण्डेक्स
सेक्स मेंरीव्स मारवल्व्स
सी० फिडाइव्स, सी० एफ० विण्डेक्स

और

लेवेरिया पाम्पियाना, कानिविक्स मैक्रिनी विण्डाइसिस

अन्तिम नाम निश्चय ही किसी रोमन महिला का है।

ठीकरे पर के सम्पूर्ण लातीनी (लैटिन) नाम नीचे दिये जाते हैं :

सी० सेसिलिव्स विण्डेक्स
एम० एमिलिव्स विण्डेक्स
सेक्स मेरिव्स मारवल्व्स

क्यू० सोसिव्स प्रिसिव्स सेनोरीयो विण्डेक्स
एल० वलेरिव्स कोमिनिव्स विण्डेक्स
सेक्स ओरासिलिव्स एम० एफ०
एल० अतीव्स विण्डेक्स
माइसिव्स विण्डेक्स
सी० फिडाइव्स सी० एफ० विण्डेक्स
लेबेरिया पाम्पियाना, कानिविक्स मैक्निी विण्डाइसिस
मेनीलिया लूसीलिया कानिविक्स मार्वेली विण्डाइसिस

रोमन नामों के बाद कई सदियों का अन्तर आता है। अब कोई यह नहीं जान सकता कि उस अन्धकार युग में इस लेखादेश की क्या स्थिति रही और कुटुम्ब में उसकी रक्षा का क्या उपाय होता रहा। पाठकों को याद होगा कि मेरे मित्र विंसी ने मुझ से कहा था कि उसके रोमन पूर्वज अन्त में जाकर लोम्बार्डी में बस गए थे और जब शार्लमेन ने उस पर आक्रमण किया तो उसके साथ आल्पस पर्वत को पारकर अपना घर उन्होंने ब्रिटेनी में बनाया और वहाँ से 'एडवर्ड दि कनफेसर' के राज्यकाल में इंग्लैंड में आ बसे। मैं नहीं बता सकता कि उसे ये बातें कैसे मालूम हुईं क्योंकि इन अभिलेखों में कहीं लोम्बार्डी या शार्लमैन का कोई जिक्र नहीं है, यद्यपि एक जगह ब्रिटेनी का हवाला ज़रूर दिया गया है।

इन नामों के बाद खून से या किसी प्रकार के लाल रंग से एक-दूसरे को काटती हुई दो तलवारें बनी थीं और एक सुन्दर मोनोग्राम (डी. वी.) लाल तथा नीले रंगों में था। शायद यह उसी डोरोथिया विंसी द्वारा निर्मित है जिसका ज़िक्र पहले आ चुका है। इसकी बाईं ओर नाम के आरम्भिक अक्षर ए. बी. लिखे हैं और उनके बाद १८०० सन् दिया हुआ है।

इसके बाद सबसे विचित्र लेख मिला। यह तलवारों के ऊपर काले अक्षरों में लिखा हुआ था और उस पर १४४५ का समय दिया हुआ था।

इसके बाद काले अक्षरों वाली पुरानी अंग्रेज़ी में उसका जो अनुवाद एक कागज़ में मिला उसका अर्थ यह है :

"यह ठीकरा, जो बहुत रहस्यमय और अद्भुत है, प्राचीन काल में मेरे पूर्वज आर्मोरिका से ब्रिटेनी लाए थे। जब यह ठीकरा यहाँ के पवित्र लोगों को

दिखाया गया तो उन्होंने मेरे पिता को इसे तुरन्त तोड़ डालने की सलाह दी और कहा कि यह शैतानों ने अपने जादू से बनाया है। इस पर मेरे बाप ने इसे तोड़कर दो टुकड़े कर दिये किन्तु मैं, जान डिविंसी ने इन टुकड़ों को बचा लिया और उन्हें जोड़कर एक कर दिया। आज पवित्र कुमारी सेण्ट मेरी के भोज के बाद का सोमवार है और सन् १४४५ है।"

इसके बाद एक को छोड़ अन्तिम लेख एलिज़ाबेथ के काल का है और उस पर १५६४ का सन् पड़ा हुआ है :—"यह विचित्र कथा है, और इसी के कारण मेरे पिता की जान गई क्योंकि अफ्रीका के पूर्वी तट पर उस स्थान की खोज में जब वह गए थे, लोरेंजो मार्क्विज़ से कुछ दूर पर उनकी जहाज़ डूब गया और वह वहीं खत्म हो गये।—जान विंसी।"

इसके बाद अन्तिम लेख था जिसकी लेख-शैली से मालूम होता था कि वंश के किसी प्रतिनिधि द्वारा १८वीं सदी के मध्य में लिखा गया है और शेक्सपियर के 'हेमलेट' नाटक की प्रसिद्ध पंक्तियों का विकृत रूप है :—"आकाश और पृथ्वी में उससे अधिक वस्तुएँ हैं जितने की कल्पना तुम्हारे दर्शन में की गई है, होरेशियो !"

इसके बाद सिर्फ एक और कागज़ परीक्षा के लिए बच गया था। यह वस्तुतः अमीनार्त्ता के आदेश वाले उस अभिलेख का मध्ययुगीन लैटिन में अनुवाद था जो उस समय के विद्वान् 'एडमण्डस डिप्राटो' (एडमण्ड प्रैट) द्वारा १४६५ में किया गया था। एडमण्ड प्रैट ने एक्ज़ेटर कालेज आक्सफोर्ड से धार्मिक कानून की डिग्री प्राप्त की थी और उस ग्रोसीन के शिष्य थे जो इंग्लैंड में यूनानी की शिक्षा देने वाले प्रथम विद्वान् थे। यह अनुवाद जान विंसी ने कदाचित् स्वयं आक्सफोर्ड जाकर उनसे कराया था।

इस प्रकार प्राप्त एवं पठनीय सम्पूर्ण सामग्री को पढ़ एवं जाँच लेने के बाद मैंने कहा—"यह सारी कथा का सार है। लियो, अब तुम अपनी राय क़ायम कर सकते हो। मैं तो अपनी राय बना चुका हूँ।"

उसने शीघ्रता से पूछा—"आपकी राय क्या है ?"

"मेरी राय यह है कि यह ठीकरा बिल्कुल असली है और चाहे यह कैसा ही विचित्र प्रतीत हो, तुम्हारे वंश में वह ईसा के पूर्व की चार शताब्दियों से चला आ रहा है। इस पर के लेखों से यह बात भलीभाँति सिद्ध हो जाती है

Pratap College
SRINAGAR

इसलिए वह कितना ही असम्भव क्यों न मालूम हो, उसे मानना ही पड़ेगा। ठीकरे पर जो कुछ लिखा हुआ है उसे तुम्हारी सुदूर पूर्वजा मिश्री राजकुमारी ने स्वयं लिखा होगा या उसके आदेश से किसी दूसरे ने लिखा होगा। किन्तु मुझे इसमें भी कुछ सन्देह नहीं है कि जिस समय उसने इसे लिखा या लिखवाया पति की हत्या तथा अनेक प्रकार की विपदाओं के कारण उसका दिमाग़ ठीक हालत में न था।"

लियो ने पूछा—"लेकिन जो मेरे बाप स्वयं देख-सुन आये, उसे आप क्या कहेंगे?"

"महज़ संयोग! अफ्रीका तट पर ऐसे कितने ही शृंग हैं जो देखने में आदमी के सिर के समान मालूम पड़ते हैं। वहाँ बहुतेरे ऐसे लोग हैं जो संकर अरबी बोलते हैं। दलदल भी वहाँ बहुत हैं। फिर लियो, मैं बहुत दुःख के साथ यह कहता हूँ कि जब तुम्हारे पिता ने वह चिट्ठी लिखी तो उनका दिमाग़ सही नहीं था। वह बड़ी मुसीबत उठा चुके थे और यह कहानी उनकी कल्पना में बस गई थी, फिर वह बड़े ही कल्पनाशील प्राणी थे। जो भी हो, मेरा विश्वास है कि जिस रूप में कहानी हमारे तक पहुँची है बिल्कुल वाहियात है। मैं जानता हूँ कि प्रकृति में अनेक विचित्र शक्तियाँ ऐसी हैं जिन्हें हम बहुत कम देख पाते हैं और जब देख भी पाते हैं तो उन्हें समझ नहीं पाते। पर जब तक मैं स्वयं अपनी आँखों से न देख लूं, और इसकी कोई संभावना नहीं है, तब तक नहीं मान सकता कि मृत्यु को, थोड़े समय के लिए भी, दूर हटाने का साधन मौजूद है या यह कि अफ्रीका के दलदलों के बीच एक गोरी जादूगरनी रहती है। यह सब खामख्याली है मेरे बच्चे, बिल्कुल खामख्याली! जाब तुम क्या कहते हो?"

"साहब, मैं कहता हूँ कि यह झूठ है, और अगर यह सच भी है तो मैं आशा करता हूँ कि श्री लियो इस बखेड़े में नहीं पड़ेंगे क्योंकि इससे कोई फायदा न होगा।"

लियो ने बड़ी शान्ति के साथ कहा—"शायद आप दोनों सही कहते हैं। मैं अपनी कोई राय प्रकट नहीं करता। पर मैं इतना ही कहता हूँ कि एक बार मैं इसको खुद देखकर सदा के लिए एक निर्णय कर देना चाहता हूँ। अगर आप मेरा साथ न देंगे तो मैं अकेले ही जाऊँगा।"

मैंने नवयुवक की तरफ देखा और उसके चेहरे को देखकर समझ गया कि

वह जो कुछ कह रहा है उसे करके रहेगा। जब लियो कुछ कहता था और उसे करने का भी निश्चय कर लेता था तब वह एक खास तरह का मुँह बना लिया करता था। बचपन से ही उसकी यह आदत थी। लियो को कहीं अकेले जाने देने का मेरा इरादा नहीं था—उसकी दृष्टि से नहीं तो अपनी ही दृष्टि से सही। मैं उसे बहुत चाहने लगा था। मेरा स्नेह या सम्बन्ध ज्यादा लोगों से नहीं था। इस विषय में परिस्थितियाँ सदा मेरे प्रतिकूल रहीं। स्त्री-पुरुष सभी मुझसे दूर भागते हैं, कम से कम मेरा ख्याल है कि मुझसे दूर भागते हैं। दोनों बातों का मतलब तो एक ही है। वे सोचते हैं कि मेरा डरावना भद्दा रूप मेरे चरित्र की कुंजी है। लोगों को मेरे साथ इस तरह का व्यवहार का मौका न मिले, इसलिए मैं खुद ही समाज से दूर हट गया हूँ और ऐसी सुविधाओं से मैंने अपने को अलग कर लिया है जिससे कमोबेश घनिष्ठ सम्बन्धों की स्थापना होती है। इसलिए मेरा सारा संसार लियो तक ही रह गया था—मेरे लिए वही भाई, बेटा तथा मित्र, सब कुछ था और जब तक वह मुझसे खुद किनाराकशी न कर ले जहाँ भी वह जाय मुझे भी जाना ही चाहिये था। पर मैं नहीं चाहता था कि उसको इस का पता लग जाय कि उसका मेरे ऊपर इतना अधिकार हो गया है, इसलिए मैं गौरवपूर्ण आत्मसमर्पण के लिए कोई बहाना ढूंढ़ने लगा।

उसने अपनी बात दोहराई—"हाँ, चाचा! मैं ज़रूर जाऊँगा अगर मुझे घूमता हुआ 'जीवन-स्तम्भ' न भी मिला तो मुझे अव्वल दर्जे का शिकार करने का मौका तो हाथ लगेगा ही।"

बस यही मेरा अवसर था, और मैंने उसका लाभ उठाया।

मैंने कहा—"शिकार? वाह, मैंने तो इसका ख्याल ही नहीं किया था। उस जंगली देश में ज़रूर बड़े-बड़े शिकार होंगे। सदा ही मेरी इच्छा रही है कि मरने के पहले मैं जंगली भैंसे का शिकार ज़रूर करूँ। बेटा! तुम जानते ही हो कि इस खोज में मेरा विश्वास नहीं है, पर मैं बड़े शिकारों में ज़रूर विश्वास रखता हूँ, इसलिए अगर सब कुछ सोचने-विचारने के बाद तुमने जाना ही तय किया तो मैं भी छुट्टी ले लूंगा और तुम्हारे साथ चलूंगा।"

लियो ने कहा—"मैं जानता था कि आप ऐसा अवसर न छोड़ेंगे। पर रुपये का क्या होगा? काफ़ी रक़म की ज़रूरत पड़ेगी।"

मैंने उत्तर दिया—"उसके लिए तुम्हें चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं है।

तुम्हारी आमदनी की काफी रक़म हर साल एकत्र होती रही है। फिर तुम्हारे पिता मेरे लिए जो कुछ छोड़ गए थे उसमें से भी लगभग दो तिहाई मैंने बचा लिया है क्योंकि उसे मैं तुम्हारी थाती समझता रहा हूँ। इस तरह बहुत काफी रक़म जमा है।"

"तब फिर क्या? हमें अपना माल-असबाब बाँध लेना चाहिए और शहर में जाकर अपनी बन्दूकों की खबर लेनी चाहिए। हाँ, जाब क्या तुम भी साथ चलना चाहोगे? यही वक्त है कि तुम्हें भी दुनिया को देखना शुरू कर देना चाहिए।"

"साहब! मुझे दूसरे देशों को देखने का ज्यादा शौक तो नहीं है पर जब आप दोनों जा रहे हैं तो आप की खिदमत करने के लिए भी, साथ में, कोई चाहिए ही। और २० साल तक आप लोगों की सेवा के बाद ऐसे समय पीछे रह जाने वाला आदमी मैं नहीं हूँ।"

मैंने कहा—"बहुत ठीक जाब! तुम्हें कोई अद्भुत बात तो देखने को न मिलेगी पर अच्छे शिकार का मौका जरूर मिलेगा। हाँ, एक बात यह है कि मैं नहीं चाहता कि तुम दोनों उस वाहियात बात के बारे में एक शब्द भी किसी दूसरे से कहो।" और मैंने ठीकरे की ओर इशारा कर दिया—"अगर किसी को यह मालूम हुआ और मुझे कुछ हो गया तो मेरे निकट-सम्बन्धी मेरे पागल होने का बहाना लेकर मेरी वसीयत पर झगड़ा खड़ा कर देंगे और सारे कैम्ब्रिज में मेरी हँसी होगी।"

उस दिन के तीन महीने बाद हम लोग जहाज़ से समुद्र के रास्ते जंजीबार के लिए रवाना हो गए।

अध्याय ४

भयंकर तूफ़ान

जहाँ बैठकर अभी तक की कहानी कही गई है उससे यह दृश्य कितना भिन्न है। यहाँ न कालेज के वे शान्त कमरे हैं, न वायु-विकम्पित अंग्रेजी वृक्ष हैं, न काँव-काँव करने वाले काक हैं, न आलमारियों में लगी वे परिचित पुस्तकें हैं। उनकी जगह दूर तक फैले और अफ्रीकी पूर्णचन्द्र की रजत् किरणों से चमकते हुए महान् शान्त सागर का दृश्य है। मंद वायु आकर हमारे जहाज़ के महत् पाल को भर देती है और उस जल पर हमें खींचे लिये जा रही है जो हमारे जलयान को दोनों ओर से रगड़ता और छलछल शब्द करता संगीत रूप में मुखरित हो उठता है। ज्यादातर आदमी सो रहे हैं क्योंकि आधी रात हो गई है, किन्तु हमारा हट्टा-कट्टा अरब मल्लाह, मोहम्मद, बिना आँखें झपकाये, डाँड के पास खड़ा, तारों को देख-देखकर (उनसे दिशा का ज्ञान करता) जहाज़ चला रहा है। तीन-चार मील दूर एक हलकी धुँधली रेखा दिखाई देती है। यह मध्य अफ्रीका का पूर्वीतट है। हम लोग उत्तरी पूर्वी मानसून के सामने दक्षिण की ओर बढ़े जा रहे हैं। यह स्थान मुख्य भूखण्ड तथा उस स्वर्णाद्रि के बीच में है जो इस खतरनाक और भयानक तट को सैकड़ों मील तक घेरे हुए है। निस्तब्ध निशीथ—इतनी निस्तब्ध कि कोई कान में भी कहे तो वह सारे जहाज़ में प्रतिध्वनित हो उठे। इतनी कि सुदूर देश की शान्त वाणी भी लहरों पर तैरती हमारे पास गूंजती है।

डाँडा लिये हुए वह अरब हाथ उठाकर एक शब्द कहता है: "सिम्बा!" (सिंह, शेर)।

हम सब बैठ जाते हैं और सुनते हैं। दूर से शब्द फिर आता है—एक शान्त महिमा-मण्डित शब्द जो हम सबकी मज्जा तक में सिहर उत्पन्न करता है।

मैंने कहा—"अगर कप्तान का अन्दाज़ गलत नहीं है, जिसकी बहुत सम्भावना है, तो मैं समझता हूँ कि कल दस बजे तक हम उस आदमी के सिर जैसी दिखने वाली रहस्यमय चट्टान पक पहुँच जायँगे और शिकार करना शुरू कर देंगे।"

पाइप को मुँह से अलग कर किंचित् हँसते हुए लियो ने हमारे कथन में संशोधन किया—"और उस उजड़े नगर तथा जीवन-ज्वाला की खोज आरम्भ कर देंगे।"

मैंने उत्तर दिया—"वाहियात ! आज तीसरे पहर तुम उस डाँड वाले से अरबी छाँट रहे थे। उसने तुम्हें क्या कहा ? वह गुलामों के अपने व्यापार के सिलसिले में न जाने कितने दिनों से इस भाग की यात्रा करता रहा है; अपनी आधी ज़िन्दगी उसने इसी कार्य में बिताई है और एक बार तो उस सिरनुमा चट्टान पर भी जा चुका है। पर क्या उसने इस उजड़े नगर अथवा गुफाओं की बात कभी सुनी है ?"

लियो ने जवाब दिया—"नहीं। वह कहता है कि उसके पीछे सब तरफ़ दलदल ही दलदल हैं और सारा भूभाग सर्पों, विशेषतः अजगरों तथा जंगली जानवरों से भरा हुआ है। कोई आदमी वहाँ नहीं रहता। पर दलदल की पट्टिका तो सारे पूर्वी अफ्रीकी तट के पीछे फैली हुई है। इसलिए उसकी बात का कोई विशेष तात्पर्य नहीं।"

मैंने कहा—"हाँ, उसका तात्पर्य है। उसका तात्पर्य है मलेरिया। तुम देखते हो, ये लोग इस देश के बारे में क्या राय रखते हैं। इनमें से एक भी हमारा साथ नहीं देगा। वे समझते हैं कि हम पागल हैं। और मैं समझता हूँ कि वे ठीक समझते हैं। अगर हम बचकर फिर इंग्लैण्ड पहुँच गए तो मुझे आश्चर्य होगा। मेरी उम्र में इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। पर लियो ! तुम्हारे लिए और जाब के लिए, मैं चिन्तित हूँ। मेरे बच्चे ! यह सब शेखचिल्ली जैसी बातें हैं।"

"ठीक है, काका होरेस ! जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं एक बार वहाँ जाने की कोशिश ज़रूर करूँगा ! लेकिन देखिए; वह बादल-सा क्या नज़र आता है ?" और उसने हमसे कुछ मील दूर तारक-मण्डित आकाश में उठते एक काले टुकड़े की ओर संकेत किया।

"जाकर उस मल्लाह से पूछो।"

लियो उठा, उसने अपनी बाहें फैलाइं और चला गया। थोड़ी देर में लौट आया।

"वह कहता है कि यह तूफान है पर वह हमारे बगल से होकर निकल जायगा।"

इसी समय जाब आ गया। भूरे फलालैन की शिकारी पोशाक में वह बड़ा चुस्त और पूरा अंग्रेज़ दिखता था। पर उसके मुँह पर किंचित् परेशानी की छाया थी, पर जब से वह इस विचित्र समुद्र की यात्रा पर रवाना हुआ था, तभी से हम उसके चेहरे पर यह परेशानी देख रहे थे।

सिर के पिछले भाग की ओर झुकी, अपनी धूप की टोपी को छूते हुए उसने कहा—"अगर आपकी राय हो तो मैं उस छोटी ह्वेल नौका में जाकर सो रहूँ, क्योंकि सब खाद्य सामग्री एवं माल-असबाब तो उसमें है ही, हमारी बन्दूकें भी उसी में हैं। मुझे इन काले आदमियों (उसने झुककर धीरे से कहा) की निगाहें ठीक नहीं मालूम पड़तीं। रंग-ढंग से वे चोर मालूम पड़ते हैं। मान लीजिए कि रात को इनमें से कुछ आँख बचाकर उसमें चले जाते हैं और रस्सी काटकर चुपके से उसे खे ले जाते हैं, तो हम लोग यों ही मर जायँगे।"

यह नौका या ह्वेलबोट हम लोगों के लिए खास तौर से स्काटलैण्ड के डण्डीनगर में बनाई गई थी। हम लोग इसे अपने साथ लाये थे, क्योंकि हमें मालूम था कि यहाँ का तट छोटी-छोटी घुमावदार छिछली खाड़ियों से पूर्ण है जहाँ जहाज़ नहीं जा सकते और हम लोगों को किनारे तक पहुँचने के लिए हलकी नाव की ज़रूरत पड़ेगी। यह एक सुन्दर नौका थी, ३० फुट लम्बी। इसके पेंदे में ताम्रपत्र जड़ा हुआ था और कमरे ऐसे बने थे कि उनमें ज़रा भी पानी न जा सकता था। जहाज के कप्तान ने भी हमसे कह दिया था कि जब हम उस शृंग के पास पहुँचेंगे—जिसे वह अच्छी तरह जानता था और उसके कहने से मालूम होता था कि वह वैसा ही बना हुआ है जैसा लियो के पिता ने बताया था और जैसा कि ठीकरे में लिखा था—तो यह जहाज़ छिछले पानी के कारण किनारे तक न जा सकेगा। इसलिए हम लोगों ने सुबह के तीन घण्टे—जब सूर्योदय के साथ ही हवा बिल्कुल थम गई थी—अपना अधिकांश सामान ह्वेलबोट में पहुँचा देने में खर्च किये थे और बन्दूकें, गोली-बारूद तथा अन्य सुरक्षित सामग्रियाँ जल से अप्रभावित कमरों में रख दी थीं, ताकि ज्योंही कथित शृंग दिखे हमें सिर्फ़ छोटी नाव में उतरना और उसे किनारे तक ले जाना ही रह जाय। इस सावधानी का एक दूसरा कारण यह भी था कि

अक्सर अरब कप्तान अपनी असावधानी या पहचान की भूल के कारण निर्दिष्ट स्थान से आगे चले जाते हैं और पाल से खेये जाने वाले जहाज़ के लिए पुनः उस स्थान पर तब तक लौटना कठिन होता है जब तक उधर की हवा न चले। इसलिए किसी भी क्षण शृंग की ओर चल पड़ने के लिए हमें अपनी नौका तैयार रखनी ही थी।

मैंने कहा—"हाँ जाब, कदाचित् ऐसा करना ठीक होगा। पर देखो, नाव में काफ़ी कम्बल रखे हुए हैं, उनसे अपने को ढक लेना और चाँदनी से दूर रहना नहीं तो उससे पागल या अन्धे हो जाओगे।"

"हुज़ूर ! अगर ऐसा हो गया तो कौन-सी बुरी बात होगी। दिमाग़ तो इन काले अरबों की गन्दगी से यों ही पागल हो रहा है। इनके शरीर से ऐसी बदबू निकलती है कि उसे बर्दाश्त करना कठिन है।

यह सहज ही समझा जा सकता है कि जाब इन काली चमड़ी वाले बन्धुओं के रंग-ढंग का प्रशंसक नहीं था।

हम लोगों ने नाव को रस्सी खींचकर बिल्कुल नज़दीक कर लिया और जाब आलुओं की बोरी की तरह उसमें टपक पड़ा। तब हम लोग लौटकर पुनः डेक पर बैठ गए और तम्बाकू पीने तथा गप-शप करते रहे। रात इतनी सुहावनी थी और हम लोगों का हृदय एक न एक प्रकार की दमित उत्कण्ठा से ऐसा भरा हुआ था कि हम लोगों की इच्छा अन्दर कमरों में जाने की नहीं हुई। इस तरह हम लोग लगभग एक घण्टा तक बैठे रहे। इसके बाद शायद दोनों औंधा गए क्योंकि बाद की इतनी ही बात मुझे याद आ रही है कि लियो निद्रालु स्वर में कह रहा था कि वह सिरनुमा शृंग भैंसे के शिकार के लिए कोई बुरा स्थान न होगा, बशर्ते कि आपने उसकी सींगों को पकड़ लिया या उसके हलक़ में अपनी गोली घुसेड़ने में सफल हुए। मतलब इसी तरह की वाहियात बातें।

मुझे इसके सिवा और कुछ याद नहीं पड़ता। मैं सो गया। एकाएक हवा का भयंकर गर्जन सुनाई पड़ा। जगकर सब मल्लाह भय से चिल्ला रहे थे और समुद्र का पानी उछल-उछलकर हमें कोड़े जैसा लगता था। कुछ आदमी मस्तूल से पाल को नीचा करने लगे पर वह मस्तूल जाम हो गया था और नीचे उतरता ही न था। मैं घबराहट में एक रस्से को पकड़कर लटक गया। आकाश

कोयले सा काला हो रहा था पर चांद अब तक हमारे सिर पर चमक रहा था और उस अँधियारी को दूर कर रहा था। जहाज के नीचे २० फुट या उससे भी ऊँची लहर, जिस पर सफेद भाग था, हमारी ओर उठी चली आ रही थी। चन्द्रकिरणों ने उसके भाग को कैसे सुन्दर रंग में रंग दिया था। स्याही के रंग वाले आकाश के नीचे भयंकर लहरें उठ रही थीं और उनके पीछे भयंकर तूफान तीव्र गति से बढ़ा चला आ रहा था। मैं देख रहा था कि ह्वेलबोट की काली शकल हरहराती हुई लहरों के ऊपर हवा में उठी जा रही है। इसके बाद पानी का एक गहरा धक्का, घूर्णित उत्तप्त भाग का तीव्र वेग। मैं अपनी जान बचाने के लिए रस्सी से लिपटा, हवा में यों फड़फड़ा रहा था जैसे तूफान में पड़ा हुआ कोई भण्डा होऊँ।

हम लोग जहाज़ के पिछले भाग से टकरा रहे थे। लहरों ने हमें चारों तरफ़ से छा लिया।

लहर चली गई। मुझे ऐसा मालूम पड़ा जैसे मैं बहुत देर तक पानी में ही रहा—यद्यपि यह सब कुछ ही क्षणों में समाप्त हो गया। मैंने इधर-उधर देखने की कोशिश की। पाल फटकर एक ओर आकाश में ऐसा फड़फड़ा रहा था जैसे कोई बड़ा घायल पक्षी तड़प रहा हो। एक क्षण के लिए आपेक्षिक शान्ति का अनुभव हुआ। और उस समय मैंने जाब को भय से चिल्लाते हुए सुना—"इधर नाव पर आ जाइए।"

यद्यपि मैं बहुत घबराया और आधा पानी में डूबा हुआ था पर तब भी मुझ में नाव पर दौड़कर जाने की समझ बाकी थी। मैं अनुभव कर रहा था कि जहाज़ मेरे नीचे डूबा जा रहा है। उसमें पानी भर गया था। उसके एक ओर हमारी नाव रस्सी से बँधी झोंके खा रही थी। मैंने अरब मल्लाह मोहम्मद को कूदकर नाव पर जाते हुए देखा और तब मैं भी जान पर खेलकर रस्से से नाव की ओर झूला और पागल की तरह कूद गया। जाब ने हमारी एक बाँह पकड़ ली, फिर भी मैं लड़खड़ाकर नाव के पेंदे में गिर पड़ा। इसके बाद जहाज़ समुद्र-गर्भ में समा गया। मोहम्मद ने अपना छुरा निकालकर तुरन्त उस रस्सी को काट दिया जिससे नाव जहाज़ के साथ बँधी हुई थी। अब क्षण भर में तूफ़ान ने हमारी नाव को उस स्थान पर कर दिया जहाँ जहाज़ था।

मैं चिल्लाया—"हे ईश्वर ! लियो कहाँ है ? लियो ! लियो !"

जाब ने चिल्लाकर मेरे कान में कहा—"वह (डूब) गया साहिब ! ईश्वर उसकी रक्षा करे।" यद्यपि उसने बड़े ज़ोर से चिल्लाकर यह बात कही थी, पर तूफ़ान इतना भयानक था कि ज़ोर से कही बात भी सुनाई न देती थी। मैं बड़ी मुश्किल से उसकी बात सुन सका।

मैं मारे शोक के अपने हाथों को पीटने लगा। लियो डूब गया और मैं उसके शोक में रोने के लिए जीता बच गया !

जाब चिल्लाया—"सँभलो ! देखो ! फिर लहर आ रही है।"

मैंने उधर देखा ; एक दूसरी भारी लहर हमारी ओर चली आ रही थी। मुझे विश्वास-सा हो चला कि यह मुझे डुबाकर रहेगी। एक विचित्र सम्मोहन के साथ मैं उसके भयानक आगमन को देख रहा था। तूफानी झोंकों में चन्द्रमा प्रायः छिप चला था पर एकाध किरण उस सर्वभक्षी लहर के शिखर पर अब भी पड़ रही थी। उस पर कोई टूटी-फूटी काली सी चीज़ नज़र आ रही थी। लहर आ गई और नाव पानी से भर उठी पर वह नाव एयरटाइट कमरों की बनी थी—ईश्वर भला करे उसका जिसने यह आविष्कार किया—इसलिए लहरों पर तैरने वाले हँस की भाँति ऊपर उठ गई। झाग एवं दूसरी चीज़ों के साथ वह काला पदार्थ मेरी ओर बहता आ रहा था। मैंने अपना दाहिना हाथ पानी की तरफ़ उसे दूर हटा देने के लिए बढ़ाया पर मेरा हाथ एक दूसरी कलाई पर पड़ा जिसे मेरी अँगुलियों ने दृढ़ता के साथ पकड़ लिया। यद्यपि मैं बहुत बलवान आदमी हूँ और मेरे हाथ बहुत मजबूत हैं पर उस तिरते हुए शरीर के बोझ से ऐसा जान पड़ा जैसे मेरे कंधे अपने जोड़ से अलग हो गए हों। अगर लहर का ज़ोर दो-तीन सैकेण्ड और उसी तरह बना रहता तो या तो वह मेरे हाथ से छूटकर बह गया होता या मैं स्वयं भी खिचकर उसी के साथ समुद्र में चला गया होता। पर लहर चली गई थी और हमें घुटनों तक पानी में छोड़ गई थी।

जाब चिल्लाया—"उलीचो, उलीचो।" और कहने के साथ ही वह अपने काम में जुट गया पर मैं तुरन्त वैसा न कर सका क्योंकि जैसे ही चाँद छिप गया और चारों ओर अँधेरा हो गया, चाँद की अन्तिम हलकी किरण उस आदमी के मुख पर पड़ी जिसे मैंने पकड़ा था और जो नाव के पेंदे में आधा सोया आधा उतराया हुआ था।

यह लियो था। लहर लियो को मुर्दा या जिन्दा, मृत्यु के जबड़े से छीनकर लौटा गई थी।

जाब पुनः चिल्लाया—"उलीचो ! उलीचो ! नहीं तो हम सब डूबेंगे।"

मैंने एक बड़ा मुठियादार टिन-पात्र उठा लिया और हम तीन आदमी मिलकर, अपनी प्राण-रक्षा के लिए, नाव से पानी उलीचने लगे। भयानक तूफ़ान अब भी हमारे सिर पर और इधर-उधर गरज रहा था और हमारी नाव उसमें इधर-उधर नाच रही थी। आँधी के झोंके और पानी की दंशनशीला चादरें हमें अँधा बना रही थीं और हमें परेशान कर रही थीं, पर इन सब के बीच भी एक भयानक निराशा के कारण हम दानवी-शक्ति और स्फूर्ति से पानी उलीच रहे थे। निराशा भी उद्दीप्त कर सकती है ! एक मिनट ! तीन मिनट ! छः मिनट ! नाव हलकी होने लगी और किसी नई लहर का आक्रमण नहीं हुआ। और पाँच मिनट बीते और हमारी नाव पानी से बिल्कुल खाली हो गई। पर एकाएक तूफान के ज़ोर-शोर के बीच भी एक धीमी पर गहरी आवाज़ सुनाई पड़ी। हे ईश्वर ! यह उत्तंग लहरों की वाणी थी !

ठीक उसी समय चंद्रमा पुनः चमकने लगा। इस बार वह तूफान-मार्ग से पीछे की ओर से चमक रहा था। दूर-दूर तक समुद्र की फटी छाती को उसकी किरणों के तीर छेदने लगे। हमसे आधी मील दूर झाग की एक रजत-रेखा दौड़ती दिखाई पड़ी, उसके बाद मुँह खोले हुए कालिमा का लघु-क्षेत्र था, फिर एक दूसरी रजत-रेखा थी। ये उत्तुंग, चट्टानों से टकराती लहरें थीं और ज्यों-ज्यों हम बत्तख की भाँति तिरते हुए बढ़ते गए, उनकी आवाज़ स्पष्ट और स्पष्ट-तर होती गई। दूर वे लहरें घूर्णित एवं उबलती-सी ऊपर श्वेत झाग के फौआरे छोड़ रही थीं और नरक के चमकते हुए दाँतों की भाँति उनकी चूड़ा चमक रही थी।

मैंने अरबी में चिल्लाकर कहा—"मोहम्मद ! तुम पतवार पकड़ो। हमें इनसे निकलना ही है।" यह कहकर मैंने एक डाँड उठा ली और उससे खेने लगा और जाब को भी वैसा ही करने का इशारा किया। दूसरे क्षण नाव निकटतर होती हुई झाग-रेखा की ओर तीव्रगति से बढ़ने लगी। हमारे सामने की लहर दायें-बायें पड़ने वाली लहर से कुछ क्षीण थी। मैंने घूमकर उसकी ओर इशारा किया।

मैं चिल्लाया : "मोहम्मद ! जान बचाने के लिए खेओ।" मोहम्मद एक होशियार मल्लाह था और समुद्र के इस भयायक तट के खतरों से भलीभाँति परिचित था। उसने पतवार को खूब ज़ोर से पकड़कर अपनी पूरी ताक़त से उसे फेरा और झुककर झागदार विनाश की ओर इस तरह घूरकर देखने लगा जैसे उसकी आँखें सिर के बाहर निकली पड़ रही हों। अगर हम पचास गज़ दूर की उत्तुंग लहरों के बीच पड़ जाते तो डूबना निश्चित था। इसलिए मोहम्मद ने बड़ा जोर लगाकर नाव को मोड़ा; नाव कुछ मुड़ी पर उतना काफ़ी नहीं था। मैंने जाब को भी जुट जाने और पानी काटने को कहा और मैं भी लग गया। तब जाकर नाव ठीक हुई।

हे ईश्वर ! अब हम लहरों के बीच में थे। हृदय को टुकड़े-टुकड़े कर देने वाली उत्कण्ठा के कुछ ऐसे क्षण बीते, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। मुझे इतना ही याद है कि चारों ओर फेन का गर्जता सागर था, जिसमें यहाँ-वहाँ सर्वत्र सामुद्रिक समाधियों से निकलकर बदला लेने को आये हुए प्रेतों की भाँति उत्तुंग तरंगें उठ रही थीं। एक बार तो हम सब भँवर में पड़कर चक्कर खाने लगे पर चाहे संयोगवश हो या मोहम्मद की चतुरता से, हमारी नाव फिर सीधी हो गई। फिर एक भयानक लहर आई—दानवाकार ! हम इसके बीच में थे या इसके ऊपर, कह नहीं सकता, अधिक सम्भावना यही है कि बीच में रहे होंगे। एक क्षण बाद अरब मारे खुशी के चीख उठा। हम क्रुद्ध लहरों की दंत-पंक्ति जैसी रेखाओं से निकलकर समुद्र के मुहाने के अपेक्षाकृत शान्त सतह पर पहुँच गए थे।

पर नाव में पुनः पानी भर गया था और आध मील दूरी पर ही उत्तुंग लहरों की दूसरी पंक्ति नज़र आ रही थी। फिर हम ज़ोरों से पानी उलीचने में जुट गए। सौभाग्य से अब तूफान निकल गया था और चाँद खिलखिला रहा था और चारों ओर उसका प्रकाश फैल गया था। उसके प्रकाश में एक चट्टानी कगारा आध मील समुद्र में निकला हुआ दिखाई पड़ रहा था। इसीलिए ये लहरें बराबर मिलती रहीं। वे उस कगार के पादतल में चोट खा-खाकर उबल उठती थीं। वह कगार एक विचित्र शृंग पर जा कर खतम हो गया था, जो मुश्किल से एक मील दूर रहा होगा। ज्योंही हम लोगों ने उलीचकर नाव का सब पानी निकाल दिया कि लियो ने आँखें खोल दीं और कहा कि उसके बिस्तरे

का बिछौना नीचे गिर गया है और शायद प्रार्थना के लिए गिरजाघर जाने का समय हो गया होगा। मुझे उसके होश में आने से काफ़ी राहत मिली। मैंने उसे आँखें बन्द कर चुपचाप पड़े रहने को कहा ; वास्तविक परिस्थिति न जानने के कारण उसने तुरन्त वैसा ही किया। प्रार्थना की बात ने मेरे मन में अपने कैम्ब्रिज के आरामदेह कमरों की याद और एक हूक पैदा कर दी। मैंने उन्हें छोड़ने की मूर्खता क्यों की ? उस रात के बाद यह ख्याल अक्सर मेरे मन में उठता रहा है और हर बार उसका ज़ोर बढ़ता ही गया है।

अब हम फिर लहरों की ओर बढ़ रहे थे पर अब नाव की चाल धीमी हो गई थी क्योंकि हवा बन्द हो चली थी और अब सिर्फ ज्वार की सहायता से हम आगे जा रहे थे।

एक मिनट बीतते न बीतते हम फिर लहरों से घिर गए। अरब चिल्लाया—'या अल्लाह !' मेरे मुँह से भी कोई पवित्र उद्‌गार निकला; जाब के मुँह से जो कुछ निकला उसे पवित्र नहीं कह सकते। प्रभु की कृपा से हम उनके बीच से निकल गए और अन्तिम मंज़िल तक यही अनुभव, कुछ कम तीक्ष्णता के साथ, बार-बार होते रहे। मोहम्मद की कुशलता और नौका के एयर-टाइट कमरों ने हमारी प्राण-रक्षा की। ५ मिनट में ये सब आपदाएँ पार हो गईं और हम लोग काफ़ी तेज़ी से उस भूखण्ड की ओर जा रहे थे जिसका वर्णन मैं पहले ही कर चुका हूँ।

हम ज्वार की सहायता से आगे बढ़ते गए, यहाँ तक कि मंजिल के समीप पहुँच गए। तब एकाएक नाव की गति बिल्कुल धीमी हो गई। अब हम मुर्दा पानी में थे, उसमें कोई गति न थी। तूफ़ान समाप्त हो गया था और अपने पीछे एक शान्त, स्वच्छ-स्नात आकाश छोड़ गया था। उस भूखण्ड ने गम्भीर समुद्र में हस्तक्षेप करके ज्वार को ठंडा कर दिया था। हम लोग शान्तिपूर्वक तिरते रहे। और चाँद के डूबने के पूर्व ही नाव को पानी से बिल्कुल खाली कर दिया।

लियो गहरी नींद में सो रहा था और मैंने उसे जगाना विवेकयुक्त नहीं समझा। यह ठीक है कि वह गीले कपड़ों में पड़ा हुआ था पर अब रात इतनी काफ़ी गर्म थी कि मैंने सोचा, इससे उस जैसे दृढ़ शरीर के आदमी को कोई

हानि नहीं पहुँचेगी। फिर तुरन्त बदलने के लिए सूखे कपड़े भी हमारे पास नहीं थे।

अब चन्द्रमा डूब रहा था और हमें पानी पर तिरने और इस प्रकार साँस लेने को छोड़े जा रहा था जैसे विपदा में पड़ी किसी औरत की छाती उछल रही हो। अब हमारे पास इतनी फुर्सत थी कि अभी जो कुछ हम झेल चुके थे उसके विषय में विचार करते। जाब नाव के सिरे पर बैठ गया, मैं लियो के पास। पर मोहम्मद पतवार के पास ही रहा।

चन्द्रमा बड़ी सुन्दरता के साथ धीरे-धीरे डूब रहा था। वह क्षितिज की गहराई में विदा हो रहा था और लम्बे घूंघट-सी परछाइयाँ आकाश पर घिरती जा रही थीं। इस घूंघट के पीछे से तारे दिखाई पड़ रहे थे। शीघ्र ही पूर्व दिशा की सुषमा में वे भी धूमिल पड़ते गए और आकाश के पुनर्जनित नील विस्तार पर उषा के आगमन की सूचना फैलती गई। समुद्र शान्त, अधिकाधिक शान्त होता गया—उसी हलके कोहरे की भांति शान्त जो उसकी छाती पर फैला हुआ था और उसकी सम्पूर्ण पीड़ा को जिसने ढक लिया था, ठीक उसी भाँति जैसे हमारे तूफानी जीवन में निद्रा के गजरे हमारे वेदना-दग्ध हृदय को ढक लेते हैं और कुछ देर तक के लिए हमारे दुःख तिरोहित हो जाते हैं। पूर्व से पश्चिम तक समुद्रों पर, पर्वत-शृंगों पर अपने स्तनों से शुभ्र ज्योति का अमृत प्रवाहित करतीं उषा की परियाँ आकाश में दौड़ रही थीं। वे अन्धकार के परदे से बाहर आकर नाच रही थीं; वे शान्त समुद्र, तट-रेखा तथा उसके पार दलदलों के ऊपर नाच रही थीं; वे पहाड़ों पर छाती जा रही थीं; सुख की नींद में सोये और दुःख की दुनिया में जागने वाले लोगों पर, सारे जगत् पर छा रही थीं।

यह सुन्दर दृश्य था पर उसमें किंचित् उदासी की छाया थी; कदाचित् वह सौन्दर्य के आधिक्य के कारण थी। उठता हुआ बाल सूर्य! अस्तंगत सूर्य! ये मानवता तथा उससे सम्बन्धित जगत् की सम्पूर्ण वस्तुओं के प्रकार के प्रतीक हैं। उस प्रातःकाल ये बातें अद्भुत-शक्ति के साथ मेरे मन में घूम गईं। आज जो सूर्य हम लोगों के लिए उगा था वही गत संध्या को हमारे अठारह सह-यात्रियों को छोड़कर डूबा था! हमारे परिचित उन अठारह के हित वह सदा के लिए डूब गया था।

उनके साथ जहाज भी चला गया ! वे मृत्यु के महान् सागर पर चट्टानों एवं सेवारों के बीच टकराने के लिए छोड़ दिये गए थे ! और हम चार बच गए थे !

अध्याय ५

एथियोपियन मस्तक-सा वह शृङ्ग

अन्त में चक्रवर्ती सूर्य के बन्दीजनों एवं अग्रगामी सैनिकों ने अपना काम किया ; अन्धकार को खोज-खोजकर भगा दिया । तब वह समुद्र के पर्यंक से अपनी सम्पूर्ण सुषमा एवं गौरव के साथ उठे और भूमण्डल को ऊष्मा एवं प्रकाश से भर दिया । मैं नौका में बैठा जलतरंगों के ऊपर उनका उदय देख रहा था । यह दृश्य मैं तब तक देखता रहा जब तक प्रकाश में दूर-दूर के स्थान न नजर आने लगे । नौका के ज़रा घूमते ही दूर वह विचित्र शकल का शृंग दिखाई पड़ा जिसके लिए हमने इतना खतरा उठाया था । नाव के घूमने से सूर्योदय के उस सुन्दर दृश्य और मेरे बीच यह चोटी आ पड़ी थी । मैं यद्यपि कुछ खोया-खोया-सा था फिर भी पहाड़ी की ओर देखता ही रहा । पीछे उठते प्रकाश-पिण्ड के कारण वह अधिक स्पष्ट होती गई । तब मैंने देखा कि वह शृंग कोई अस्सी फुट ऊँचा और आधार पर एक सौ पचास फुट लम्बा है और ठीक एक हबशी (नीग्रो) के मस्तक एवं चेहरे के समान बना हुआ है । उस चेहरे पर एक भयानक राक्षसी-वृत्ति थी । इसमें ज़रा भी सन्देह की बात न थी, मेरे सामने उसके मोटे ओठ, उभरे गाल तथा चपटी एवं दबी नाक पीछे से आते प्रकाश के कारण बिल्कुल स्पष्ट दिखाई दे रहे थे । वही गोल खोपड़ी थी जो शायद हजारों वर्ष की वर्षा एवं वायु के थपेड़ों द्वारा इस रूप को प्राप्त हुई थी । उपमा को पूरी तरह सार्थक करने के लिए उसके सिर पर हबशियों के बाल के समान घास भी उग आई थी । सचमुच यह विचित्र ही मूर्ति थी—इतनी विचित्र कि मैंने सोचा, यह प्रकृति की कारीगरी नहीं है बल्कि प्रसिद्ध मिश्री

स्फिक्स के ढंग पर किसी विस्मृत जाति ने पहाड़ी को तराश कर यह स्मारक गढ़ा होगा—शायद किन्हीं शत्रुओं को बन्दरगाह में पैर रखने से रोकने के लिए। दुर्भाग्यवश हम यह पता नहीं लगा सके कि यह बात ठीक है वा नहीं क्योंकि समुद्र वा जमीन दोनों ओर से उस पहाड़ी तक पहुँचना संभव नहीं था और हमें और भी काम थे। पर बाद में हमने जो कुछ देखा उसके प्रकाश में आज मेरा विश्वास है कि यह मानव-निर्मित ही है। जो हो यह मानव-प्रतिमा युगानुयुग से परिवर्तनशील समुद्र के पार खड़ी, है और जब दो हज़ार वर्ष या उससे भी पहले मिश्री राजकुमारी तथा लियो के प्राचीन पूर्वज कालिक्रेटीज़ की पत्नी अमीनार्त्ता यहाँ आई होगी तो उसने भी इस शैतानी मूर्त्ति को देखा था, और मुझे ज़रा भी सन्देह नहीं कि अभी हजारों साल तक ऐसी ही बनी रहेगी।

जाब नाव के सिरे पर बैठा हुआ धूप ले रहा था और बड़ा परेशान नज़र आ रहा था। मैंने उस ज्वालामय मूर्ति की ओर इशारा करके उससे पूछा : "तुम, इसके बारे में क्या ख्याल करते हो?"

जाब ने पहली बार उसकी तरफ़ देखते हुए कहा—"अरे साहब! वह! जान पड़ता है कि शैतान ने स्वयं पहाड़ी पर बैठकर अपनी मूर्ति गढ़ी है।"

मैं हँस पड़ा और मेरी हँसी के कारण लियो की नींद खुल गई।

उसने कहा—"अरे यह क्या? मेरा बदन इतना कड़ा क्यों हो रहा है? जहाज़ कहाँ गया? कृपया मुझे थोड़ी ब्रांडी दीजिए।"

मैंने कहा—"बेटे! ईश्वर को धन्यवाद दो कि इससे ज्यादा नहीं लकड़ाये। जहाज़ डूब गया, हम चार को छोड़ और सब लोग डूब गए और खुद तुम्हारी ज़िन्दगी भी आश्चर्यजनक रूप से बच गई। इसके बाद जाब उधर ब्रांडी खोजने लगा और इधर मैंने लियो को सारी घटना बता दी।

उसने धीरे से कहा—"ईश्वर धन्य है कि इसके बीच हम बचे रह गए।"

तब तक ब्रांडी आ गई और हम सबने उसका स्वागत किया। सूर्य भी शक्तिमान होता जा रहा था और हमारी ठिठुरी हड्डियों को गर्म करने लगा। क्योंकि पाँच घण्टे से बराबर हम गीले वस्त्रों में थे।

ब्रांडी की बोतल एक ओर रखते हुए लियो ने कहा—"क्यों वही लेखोक्त

शृंग है न ? ठीक हब्शी के मस्तक-सा बना हुआ है।"

"हाँ, वही है।" मैंने कहा।

'तब तो सब बातें सच्ची जान पड़ती हैं।" उसने उत्तर दिया।

मैंने उत्तर दिया—"इतने से तो यह सिद्ध नहीं होता। मैं जानता हूँ कि यह मस्तक-शृंग यहाँ था। तुम्हारे पिता ने इसे देखा। यह भी संभव है कि यह वह मस्तक न हो जिसका जिक्र मूल लेख में है। और अगर है भी तो इससे कुछ सिद्ध नहीं होता।"

बड़ी शान के साथ मुस्कराते हुए लियो ने कहा—"काका होरेस ! आप तो नास्तिक यहूदी हैं। जो जीवित रहेंगे वे देखेंगे !"

मैंने कहा—"बिल्कुल ठीक। पर अब शायद तुम देख सकते हो कि हम बालुका तट के उधर नदी के मुख में प्रवेश कर रहे हैं। जाव, डाँड ले लो। हम लोग खेंयेंगे और आगे देखेंगे कि कहीं कोई उतरने लायक स्थान है या नहीं।"

नदी के जिस मुहाने में हम प्रवेश कर रहे थे वह देखने में विशेष चौड़ा नहीं प्रतीत होता था। हाँ, यह जरूर था कि इधर-उधर छाये कोहरे के कारण सब कुछ और दूर तक हम स्पष्ट न देख सकते थे। इस नदी के मुहाने पर पूर्वी अफ्रीका की अन्य नदियों के कायदे की तरह ही बहुत-सी बालू तथा अन्य चीजें एकत्र थीं। इसके कारण जब तक हवा मुहाने से उलटी दिशा में न चल रही हो तब तक किसी नाव के लिए थोड़ा भी टिक सकना संभव न था। लेकिन सब कठिनाइयाँ दूर हो गईं और अनुकूल तेज हवा के कारण, थोड़ी मेहनत से लगभग बीस मिनट में ही, हम बन्दरगाह में पहुँच गए।

इस समय तक सूर्य के नीचे, कोहरा दूर हो चुका था और गर्मी इतनी बढ़ गई थी कि उसमें सुख-बोध नहीं होता था। यहाँ नदी का मुहाना आध मील चौड़ा हो गया था और किनारे दलदलों से पूर्ण थे। उन पर मगर यों लेटे हुए थे जैसे लकड़ी के लट्ठे पड़े हों। हम जहाँ थे वहाँ से लगभग एक मील दूर, कठोर भूमि का एक टुकड़ा नजर आ रहा था। हम नाव को उसी दिशा में खे ले चले। अगले १५ मिनट में हम वहाँ पहुँच गए। उस स्थान पर एक सुन्दर, छायादार, चौड़े एवं प्रकाशमान पत्तों तथा मगनोलिया के ढंग के फूलों से भरा वृक्ष था। उसके तने में हमने नाव बाँध दी। इतना करने के बाद हमने कपड़े

Library
Pratap College

उतारे, नहाया और अपने कपड़े तथा नाव के अन्य पदार्थ धूप में सूखने के लिए फैला दिये जो बहुत जल्द सूख गए। इसके बाद हमने पेड़ों की छाया में बैठकर भोजन किया, और हमने पहले ही सब सामान जहाज़ से नौका में पहुँचा देने की जो सावधानी बरती थी उसके लिए खुद अपने को ही धन्यवाद दिया। भोजन के बाद सूख गए कपड़ों को पहनकर हम लोगों ने सन्तोष की साँस ली। थोड़ी थकावट और कहीं-कहीं छिल जाने के अलावा हम लोगों को भयानक तूफ़ान से, जिसने हमारे और सब साथियों की जान ले ली थी, और कोई हानि नहीं पहुँची थी। यह ठीक है कि लियो आधा डूब चुका था पर पचीस वर्ष के उस जैसे बलवान अखाड़िये के लिए यह कोई बड़ी बात न थी।

भोजन के बाद हमने उस स्थान का निरीक्षण किया। वह स्थान, जहाँ हम ठहरे थे, कोई २०० गज़ चौड़ा और ५०० गज़ लम्बा सूखा भूखण्ड था, जिसके एक ओर नदी और बाकी तीन तरफ, जहाँ तक दृष्टि जाती थी, दलदल ही दलदल दिखाई पड़ते थे। यह ठोस भूखण्ड दलदली जमीन और नदी की सतह से लगभग २५ फुट ऊँचा रहा होगा और आदमियों के हाथ से बनाया गया मालूम होता था।

"यह तो कोई घाट-सा बना हुआ प्रतीत होता है", लियो ने विश्वासपूर्वक कहा।

मैंने कहा—"क्या बकते हो ? कौन ऐसा मूर्ख रहा होगा जिसने इस देश में भयानक दलदलों के बीच घाट बनवाया होगा—इस देश में, जहाँ सिर्फ़ जंगली लोग हो सकते हैं, वे भी अगर हों तो।"

"शायद सदा यहाँ दलदल न रहा हो और न यहाँ के निवासी सदा जंगली ही रहे हों", लियो ने रुखाई के साथ कहा और ढलवाँ किनारे की ओर देखने लगा। इस समय हम लोग नदी के पास खड़े थे।

"उधर देखिए"—लियो ने एक तरफ़ अँगुली से दिखाते हुए कहा, जहाँ एक मैगनोलिया का वृक्ष कल रात के तूफान में उखड़कर गिर पड़ा था। वह वृक्ष एक टीले के नदी तट से मिले ढालू छोर पर उगा था और गिरने पर उसकी जड़ें बहुत-सी मिट्टी लेकर ऊपर उठ गईं थीं। "क्या इसमें पत्थर का काम नहीं है ? अगर यह पत्थर नहीं है, तो वैसी ही कोई चीज़ है।"

"फिर वही मूर्खता !" मैंने फिर कहा। पर इसके साथ हम आगे बढ़कर

उस स्थान पर पहुँच गए और ऊपर उठी जड़ों तथा नदी-कूल के बीच खड़े हो गए।

"अब कहिए ?" उसने कहा।

इस बार मैंने कुछ उत्तर नहीं दिया; केवल मुँह से सीटी बजाता रहा, क्योंकि जड़ के उखड़ने से मिट्टी हट गई थी और बड़े-बड़े प्रस्तर-खण्डों का पुश्ता बना हुआ दिखाई दे रहा था। ये प्रस्तर-खण्ड पीले सीमेण्ट जैसे किसी मसाले से जुड़े हुए थे जो इतना सख्त था कि शिकारी छुरी की नोक उसमें जरा भी न धँस पाती थी। फिर इतनी ही बात न थी। मिट्टी में कोई चीज़ गड़ी बाहर उभरी दिखाई दे रही थी। मैंने अपने हाथ से भुरभुरी मिट्टी हटा दी तो एक बड़ा भारी गोलाकार पत्थर का नाल निकल आया जिसका व्यास एक फुट या ज़्यादा रहा होगा। उसकी मोटाई तीन इंच के लगभग थी। इस आविष्कार ने पूरी तरह मेरा मुँह बन्द कर दिया।

"इससे तो पता चलता है कि यहाँ किसी ज़माने में ऐसा घाट रहा होगा जहाँ आकर बड़े-बड़े जहाज़ लंगर डालते रहे होंगे। क्यों काका होरेस ! ठीक है न ?" लियो प्रमुदित होकर बोला।

मैंने इस बार फिर 'मूर्खतापूर्ण' कहना चाहा किन्तु वह शब्द मेरे गले में ही अटक गया क्योंकि वह जीर्ण प्रस्तर-गोलक स्वयं अपनी कहानी कह रहा था कि किसी प्राचीन काल में यह पत्थर की दीवार किसी पक्के घाट का अंश रही होगी, जहाँ जहाज लंगर डालते रहे होंगे। और कदाचित् वह नगर, जिसका यह बन्दरगाह था, इन्हीं दलदलों के नीचे दबा पड़ा था।

"ऐसा मालूम होने लगा है कि उस कहानी में कुछ सचाई जरूर है, काका होरेंस", लियो ने प्रफुल्ल होकर कहा। मैं उस हब्शी के मस्तक जैसे रहस्यमय शृंग और उतने ही रहस्यमय इस पत्थर के काम को देखता और सोचता रहा; कोई सीधा उत्तर मैंने नहीं दिया।

मैंने कहा—"अफ्रीका जैसे देश का प्राचीनकाल की मृत एवं विस्मृत सभ्यताओं के अवशेषों से पूर्ण होना निश्चित है। कोई मिश्री सभ्यता की आयु नहीं जानता और बहुत संभव है कि उससे शाखाएँ भी निकली हों। फिर प्राचीनकाल में बेबिलोनिया, फोनेशिया तथा ईरान एवं अन्य देशों के लोग भी सभ्य थे, और यहूदियों के बारे में तो कुछ कहना ही व्यर्थ है जिनकी खोज में

आज का हर इन्सान दिखाई पड़ता है। यह संभव है कि उन लोगों के, या उनमें से किसी एक के, उपनिवेश या व्यापारिक केन्द्र यहाँ रहे हों। उन ईरानी भूगर्भ में दबे पड़े शहरों की याद करो जिन्हें किल्वा[1] में व्यापारिक राजदूत ने दिखाया था।"

"बिल्कुल ठीक", लियो ने कहा—"पर पहले तो आप यह बात नहीं कहते थे।"

"अच्छा तो अब क्या करना चाहिये ?" उस बात से ध्यान दूसरी ओर हटाते हुए मैंने कहा।

चूँकि किसी ने मेरी बात का उत्तर नहीं दिया, हम लोग दलदल के किनारे की ओर बढ़े और उस पर निगाह डाली। उसके ओर-छोर का पता ही न चलता था और जल-पक्षियों के झुण्ड अपने स्थानों से उड़कर जब आकाश में छा जाते थे तो वह पूरी तरह ढक जाता था और दिखाई न पड़ता था। दूसरी बात यह कि ज्यों-ज्यों सूर्य आकाश में ऊँचा उठता गया, दलदलों के तल तथा गंदे एवं बंधे पानी के गड्ढों से उठने वाली विषैली गैस के बादल आसमान पर छाते गए।

मैंने अपने तीन साथियों से, जो परेशानी के साथ, इस दृश्य को देख रहे थे, कहा—"अब दो बातें मेरे सामने साफ़ हो गई हैं। पहली बात तो यह कि (दलदलों को अंगुली से दिखाते हुए) हम उसके पार नहीं जा सकते। और दूसरी बात यह कि अगर हम यहाँ ठहरेंगे तो बुख़ार से मर जायेंगे।"

"यह तो घास के ढेर की तरह स्पष्ट है।" जाब बोला।

---

१. जंजीबार से प्रायः ४०० मील दक्षिण, अफ्रीका के पूर्वी तट पर, किल्वा के निकट एक चट्टान है जो कुछ दिन पूर्व लहरों से धुलकर दिखने लगी है। इस चट्टान के ऊर्ध्व तल पर बहुत-सी ईरानी कब्रें हैं जो कम से कम ७०० वर्ष पुरानी हैं। उन पर तिथियां पड़ी हुई हैं जो अब तक पढ़ी जाती हैं। इन कब्रों के नीचे वाली तह पर एक नगर का ध्वंसावशेष है। और नीचे दूसरे अधिक पुराने किसी नगर के ध्वंसावशेष हैं। उसके बाद तीसरी तह के नीचे उससे भी पुराने नगर के अंश बिखरे पड़े हैं। सबसे नीचे वाले नगर के ध्वंसावशेष से चमकदार मृत्पात्र निकले हैं।

तब हमारे सामने दो ही रास्ते हैं। एक तो यह कि हम लोग अपनी नाव से किसी दूसरे बन्दर को रवाना हो जायं। वह भी काफ़ी खतरे से भरी बात है। दूसरा यह कि हम नाव को अन्दर नदी में खेते चलें और देखें कि कहाँ पहुँचते हैं।"

लियो ने मुँह बनाकर कहा—"मैं नहीं जानता कि आप क्या करेंगे पर मैं तो उस नदी पर ही और आगे बढ़ूंगा।"

जाब अपनी आँख की पुतलियों को फेरकर बुदबुदाने लगा और अरब मल्लाह ने 'या अल्लाह !' कहकर लम्बी साँस ली। मैंने मिठास के साथ इतना ही कहा कि जब 'इधर कुआँ, उधर खाई' वाला मामला है तब हम चाहे जिधर जायं बात एक ही है। पर दरअसल मैं भी लियो की ही भांति नदी पर आगे बढ़ने के लिए उत्सुक था। उस विराट् मस्तक शृंग तथा पत्थर के घाट ने मेरी उत्कंठा को इस सीमा तक बढ़ा दिया था कि मैं मन में उसके लिए लज्जित था। उस उत्कण्ठा की पूर्ति के लिए मैं कोई भी कीमत देने को तैयार हो गया था। इसलिए हमने सावधानी से मस्तूल इत्यादि ठीक-ठाक करके, और अपनी राइफलें लेकर यात्रा शुरू कर दी। सौभाग्य से समुद्र की ओर से हवा भी उधर को ही चल रही थी। इसलिए हमने पाल भी बाँध दिया। बाद को हमें मालूम हुआ कि यहाँ सूर्योदय के बाद कुछ घंटों तक हवा इसी प्रकार समुद्र से नदी की ओर चलती है और शाम को नदी से तट की ओर।

अनुकूल वायु का लाभ उठाकर हम हँसी-खुशी से तीन-चार घण्टे तक नदी के ऊपर बढ़ते गए। रास्ते में दरियाई घोड़े, झुण्ड के झुण्ड नदी से निकलकर २०-२५ गज़ की दूरी पर हम लोगों की ओर देख-देखकर डकारने लगे, जिसे सुनकर केवल जाब ही नहीं, मैं भी डर गया। हमने इन्हें पहली ही बार देखा था और उनकी उत्सुकता से मैंने अन्दाज़ लगाया कि उन्होंने भी शायद पहली बार ही गोरे आदमियों को देखा होगा। मुझे तो एक-दो बार यह भी ख्याल आ गया कि कहीं ये हमारी नाव पर न चढ़ दौड़ें। लियो उन पर बन्दूक चलाना चाहता था पर परिणाम के भय से मैंने उसे वैसा नहीं करने दिया। हमने दलदली तट पर सैकड़ों घड़ियालों को देखा जो मज़े से धूप ले रहे थे। जल-मुर्गाबियों की तो कोई गिनती ही न थी। हमने उनमें से कुछ का शिकार भी किया। इनमें एक विचित्र प्रकार का जंगली हंस भी था जिसे हमने पहली बार

ही देखा था। इसलिए मैं नहीं जानता था कि यह 'शिकार' है या कोई खास जाति का पक्षी है जिसे जीव-अन्वेषक सुरक्षित रखना चाहेंगे।

दोपहर तक सूर्य प्रखर हो गया जिसके कारण दलदलों से इतनी बदबू-भरी भाप उठने लगी कि हमें अपनी रक्षा के लिए पर्याप्त मात्रा में कुनैन खानी पड़ी। कुछ देर बाद हवा बंद हो गई, और चूंकि ऐसी गरमी में, धारा के विरुद्ध, भरी नाव को ले जाना असंभव था इसलिए हम लोग एक स्थान पर बेंत के पेड़ों की छाया में ठहर गए जो नदी के किनारे बीच-बीच में उगे हुए थे। और जब तक सूर्यास्त का समय नहीं हुआ और यह मुसीबत जाती न रही, हम वहीं विश्राम करते रहे।

अपने आगे एक अच्छा खुला स्थान देखकर हम रात को वहाँ ठहरने के लिए नाव को आगे बढ़ा ही रहे थे कि एक सुन्दर हिरन, जिसके बड़े-बड़े सींग और सफेद धारी थी, पानी पीने के लिए नदी के किनारे आया। चूंकि हम लोग उससे पचास गज़ की दूरी पर बेंतों के झुरमुट की आड़ में थे, उसने हमें नहीं देखा। सबसे पहले लियो की नज़र उसकी ओर गई और चूंकि महीनों से वह शिकार की कल्पना में डूबा रहा था और अच्छा शिकारी था, तुरन्त शरीर कड़ाकर बैठ गया। मैंने जब बात समझी तो राइफल उसके हाथ में पकड़ा दी और अपनी अपने हाथ में ले ली।

मैंने कहा—"हाँ, अब। होशियारी से; निशाना न चूके।"

उसने उपेक्षापूर्वक उत्तर दिया—"चूकना! भला यह हो सकता है कि मैं चाहूँ और चूक जाऊं?"

उसने अपनी राइफल ऊँची की। उधर हिरन ने भरपेट पानी पीने के बाद अपना सिर ऊपर उठाया और नदी के उस पार देखने लगा। सूर्यास्त के आकाश के नीचे वह जरा कुछ ऊँचाई पर खड़ा हुआ था। यह ऊँचाई दलदलों के बीच से चली गई थी और शिकार के लिए अच्छे रास्ते का काम दे सकती थी। हिरन बहुत सुन्दर था और मेरा ख्याल है कि अगर मैं सौ वर्ष तक भी जिऊँ तो उस एकान्त पर अत्यन्त आकर्षक दृश्य को कभी न भूल सकूंगा। वह मेरे स्मृतिपट पर अंकित हो गया है। दाहिने-बायें एकान्त मृत्यु को जन्म देने वाले दलदल फैले हुए थे। जहां तक नज़र जाती थी, उनका सिलसिला अटूट दिखाई देता था। सिर्फ़ कहीं-कहीं पर काले और गन्दे पानी के गड्ढे ज़रूर नज़र आते

थे जो अस्त होते हुए सूर्य की लाल-लाल किरणों में शीशे की तरह चमक रहे थे। हमारे आगे-पीछे गतिहीन नदी का दृश्य दूर तक फैला हुआ था जिसमें कहीं-कहीं नरकट इत्यादि की झाड़ियाँ उगी हुई दिखाई देती थीं, जिनके सिरों पर संध्या की लम्बी किरणें खेल रही थीं। मन्द पवन के साथ परछाइयाँ उभरती आ रही थीं। पश्चिम में डूबते सूर्य का विशाल रक्तिम गोलक दिखाई पड़ रहा था; वह वाष्पमय क्षितिज में विलीन होता जा रहा था; नाना प्रकार के पंक्तिबद्ध पक्षी आकाश में चक्कर काटते और चहचहाते थे और वहाँ हम तीन आधुनिक अंग्रेज, एक आधुनिक नौका में बैठे इस असीम निर्जन के प्रति विद्रूप जैसे लगते थे; और हमारे सामने लोहित आकाश के नीचे वह सुन्दर हिरन खड़ा था।

सन्न ! वह चौकड़ी भरता भागा जा रहा है। लियो का निशाना खाली गया। सन्न ! पुनः उसी के नीचे एक गोली और ! पर वह तीर-सा जा रहा है। १०० गज से ज्यादा निकल गया होगा। तो फिर एक निशाना मेरा भी। "क्या तुम्हारी आँख बहक गई लियो ?"

"जाइए भी ! आपने मुझे घबरा दिया", लियो बुदबुदाया पर दूसरे ही क्षण मेरी गोली से हिरन के गिरते ही उसका सुन्दर मुख इस प्रकार चमक उठा जैसे कोई दीपक जल उठा हो; उसने कहा—"माफ़ कीजिएगा। आपका निशाना खूब है। मेरे तो चूक गए थे ! मेरी बधाई !"

हम नाव से कूदकर हिरन के पास पहुँचे जिसकी रीढ़ को गोली पार कर गई थी और जो बिल्कुल पत्थर की भाँति निर्जीव पड़ा था। उसको साफ़ करने और टुकड़े करने में पंद्रह मिनट लग गए और जितना गोश्त हम ढोकर ला सकते थे, ले आये। अब नाव को उस चौड़ी खुली जगह तक ले जाने के लिए बहुत थोड़ी रोशनी शेष रह गई थी। अँधेरा होते-होते हमने वहाँ पहुँचकर किनारे से ६० गज दूर लंगर डाल दिया, क्योंकि हम तट पर उतरने का साहस न कर सकते थे; अंधेरे में पता नहीं चलता था कि वहाँ सूखी जमीन है या दलदल है। दलदल से निकलने वाली विषैली गैस में जाने से नदी में रहना कुछ अच्छा ही था। इसलिए हमने एक लालटेन जला ली, इसी की रोशनी में भोजन बनाया और किया तथा सोने के लिए लेट गए। परन्तु शीघ्र ही मालूम हो गया कि सोना असम्भव है क्योंकि लालटेन की रोशनी के कारण या गोरे

आदमियों की अनभ्यस्त गंध के कारण, जो पिछले हज़ार वर्ष में उन्हें काहे को मिली होगी, मतलब हम नहीं जानते किस कारण से, हज़ार-हज़ार रक्त-पिपासु बड़े-बड़े डंकदार मच्छरों ने हम पर धावा बोल दिया। मैंने इतने बड़े और भयावनी शक्ल के मच्छरों के बारे में न कभी पढ़ा था, न उन्हें देखा था। बादलों के झुण्ड की तरह वे आते थे, इर्द-गिर्द भुनभुनाते थे, काटते थे। उन्होंने इतना काटा कि हम लगभग पागल हो गए। तम्बाकू का धुवाँ उन्हें और प्रसन्न, उत्तेजित तथा क्रियाशील करता था। अन्त में विवश होकर हमने ऊपर से नीचे तक कम्बल लपेट लिये; फिर भी बदन की खुजलाहट न गई। इसी समय उस भयानक सन्नाटे में बिजली की कड़क की तरह एक शेर की, फिर दूसरे शेर की गर्ज सुनाई पड़ी। वे हमसे ६० गज़ दूर नरकट की झाड़ियों में चल रहे थे।

कम्बल से ज़रा-सा सिर निकालकर लियो बोला—"अच्छा ही हुआ जो हम किनारे पर नहीं ठहरे। हाय हाय! एक मच्छर ने मेरी नाक पर काट खाया"—और फिर उसका सिर कम्बल की ओट में छिप गया।

थोड़ी देर में चाँद निकल आया और तट पर से रह-रहकर आती हुई शेरों की गरज के बावजूद अपने को सुरक्षित समझ हम ऊँघने लगे।

मुझे ठीक याद नहीं कि क्यों मैंने कम्बल के मित्रतापूर्ण आवरण से अपना सिर बाहर निकाला, शायद इसलिए कि कम्बल ओढ़ने पर भी उनके डंक चुभ रहे थे। जो भी कारण रहा हो, पर मेरे वैसा करते ही जाब ने डरी हुई आवाज़ में फुसफुसाकर मेरे कान में कहा:

"हाय री किस्मत! ज़रा उधर देखिए, उधर!

हम लोगों ने तुरन्त उधर मुँह फेरकर चाँद की रोशनी में देखा। किनारे पर दो बड़े एवं बराबर बढ़ते हुए गोलक पानी में छप-छप करते जा रहे थे और उन दोनों गोलकों के बीच में दो काली चीज़ें चलती नज़र आ रही थीं।

मैंने पूछा—"यह क्या है?"

जाब ने कुढ़ते-से भयग्रस्त स्वर में कहा: "जनाब, ये वही शेर हैं और वे हमारी ओर चले आ रहे हैं।"

मैंने फिर ध्यान से देखा—जाब की बात की सचाई में कोई सन्देह नहीं था; मुझे उनकी भयावनी आँखों की चमक दिखाई पड़ रही थी। कदाचित्

ताज़े मारे गए हिरन के गोश्त या हम लोगों की गंध ने उन्हें इस ओर आकर्षित किया होगा पर वे भूखे दरिन्दे हमारी ओर बढ़े आ रहे थे।

लियो ने पहले से ही राइफ़ल हाथ में ले ली थी। मैंने उसे तब तक ठहरने के लिए कहा जब तक वे पास न आ जायँ। इस बीच मैंने अपनी राइफ़ल भी सँभाल ली। हमसे कोई पन्द्रह फुट की दूरी पर किनारे पर पानी एकदम छिछला था, मुश्किल से पंद्रह इंच गहरा। पहले उनमें से एक शेरनी वहाँ पहुँची। वहाँ पहुँचकर उसने अपना बदन हिलाया और गरजी। उसी समय लियो ने गोली चलाई। गोली खुले मुँह के रास्ते यात्रा करती गले के पिछले भाग को छेदकर बाहर निकल गई और वह वहीं धम्म से गिरकर ठंडी हो गई। उसके दो कदम पीछे पूरा विकसित नर—शेर—था। उसने ज्योंही अपने अगले दोनों पैर पानी में रखे कि विचित्र बात हुई। पानी में कुछ खलबली हुई। एक भयानक, क्रुद्ध गर्ज के साथ तड़पकर, किसी चीज को अपने साथ घसीटता हुआ, शेर जमीन की ओर उछला।

मोहम्मद चिल्लाया—"अल्लाह! मगर ने शेर की टांग पकड़ रखी है।" बात ठीक थी। हम शेर के चमकदार दाँतों, लम्बे थूथन तथा उसके पीछे लगी काली चीज़ को स्पष्ट देख रहे थे।

इसके बाद एक असाधारण दृश्य देखने में आया। शेर किसी तरह तट पर पहुँच गया और मगर आधा खड़ा, आधा पानी पर तैरता उसकी पिछली टाँग मुँह में दबाये हुए था। शेर इतनी ज़ोर से गरजा कि उसकी आवाज़ से सारा वातावरण काँप गया और फिर एक भयानक क्रोधभरी चीख़ के साथ पलटकर उसने मगर के सिर पर ज़ोर का थप्पड़ लगाया। घड़ियाल की एक आँख बाहर निकल पड़ी और उसकी पकड़ ढीली हो गई; फिर भी वह आगे बढ़ा। इस पर शेर ने उसका गला पकड़कर दबाया। अब दोनों में कुश्तमकुश्ती होने लगी। बार-बार वे एक दूसरे के ऊपर लोटने लगे। भयानक लड़ाई हो रही थी। उनकी गति को ठीक तरह से देखना कठिन था; पर जब कुछ देर बाद उन पर रोशनी पड़ी तो हमने स्पष्ट देखा कि पासा पलट गया है। घड़ियाल का सारा सिर लहू-लोहान हो रहा था, मांस नुच गया था पर मगर अपने फौलादी जबड़ों में शेर के कूल्हे को पकड़े हुए था और झकझोर-झकझोर कर उसे मार रहा था। घायल शेर, अपनी पीड़ा में चीख़-चीख़कर पागल की भाँति अपने पंजों और

दांतों से दुश्मन को काट और झिंझोड़ रहा था। शेर ने अपने भयानक पंजों से मगर के गले की मुलायम चमड़ी को काटकर यों खोल दिया जैसे कोई थैले को काटकर खोल दे।

और तब एकाएक सब कुछ समाप्त हो गया। शेर का सिर मगर की पीठ पर लुढक गया और जोर से चीखकर वह ठंडा हो गया। मगर एक मिनट तक गतिहीन पड़ा रहा, फिर अपनी तरफ़ धीरे से उलट गया पर उसके जबड़े अब भी शेर की लाश में गड़े हुए थे। बाद में हमने देखा कि वे इतने गढ़ गए थे कि शेर करीब-करीब दो टुकड़े हो गया था।

यह आरम्भ से अन्त तक एक अद्भुत पर भयानक दृश्य था और मैं समझता हूँ कि बहुत ही कम लोगों ने इस प्रकार की लड़ाई देखी होगी। यों उस लड़ाई की समाप्ति हुई।

इसके बाद हमने मोहम्मद को पहरे पर बैठा दिया और शेष रात्रि में, मच्छर हमें जितना सोने दे सकते थे, सोये।

अध्याय ६

अद्भुत आलिंगन

दूसरे दिन बड़े तड़के हम उठे; जो कुछ प्रातःकृत्य उस परिस्थिति में करना संभव था, किया और यात्रा के लिए तैयार हो गए। जब काफ़ी उजाला हो गया और हमें एक दूसरे के चेहरे दिखाई पड़ने लगे तो मुझे यह देखकर हँसी आ गई कि जाब का पहले से ही मोटा चेहरा मच्छरों के काटने से फूलकर दुगना हो गया था। लियो की हालत भी ज़्यादा अच्छी न थी। तीनों में मैं ही कुछ बचा हुआ था क्योंकि मेरा बदन बहुत कड़ा और बालों से भरा हुआ था। इसके अलावा इंग्लैंड से चलने के बाद मैंने अपनी दाढ़ी भी खूब बढ़ने दी थी; उधर जाब और लियो दोनों सफाचट थे। खुली और बेरोक-टोक जगह पाकर उनके चेहरों को मच्छरों ने खूब चोंथा था। पर अल्लाह का कट्टर भक्त समझ-

कर मोहम्मद को मच्छरों ने बिल्कुल ही छोड़ दिया था। मैं उस समय और बाद में भी सोचता रहा कि क्या अच्छा होता कि हम में भी उस अरब की गन्ध होती।

फूले हुए ओठ हमें जितना हँसने दे सकते थे, उतना हम हँसते रहे, यहाँ तक कि सूर्य की रोशनी फैलने लगी और समुद्र की ओर से आने वाली प्रातः-वायु के कारण दलदलों पर छाये कोहरे के पुँज दूर होने लगे। हमने दोनों शेरों और मगर का भलीभांति निरीक्षण कर और पाल चढ़ाकर अपनी यात्रा शुरू कर दी। उक्त जानवरों की खाल हम ले लेना चाहते थे पर खलियाने का साधन न होने से हमने उन्हें वहीं छोड़ दिया। दोपहर के समय हवा बन्द हो गई किन्तु तब तक, सौभाग्य-वश हम सुभीते की एक सूखी भूमि के पास पहुँच गए थे। वहाँ उतरकर हमने आग जलाई और दो जंगली बत्तखों का तथा दरियाई हिरन का कुछ मांस पकाकर खाया। हिरन के शेष मांस के टुकड़े करके सूखने के लिए फैला दिये गए। इस भली सूखी भूमि पर हम दूसरे दिन सुबह तक ठहरे। रात उसी तरह मच्छरों से लड़ाई करते बीती पर कोई दूसरी कठिनाई नहीं हुई। अगला और उसके बाद का दिन भी इसी प्रकार, बिना किसी उल्लेखनीय घटना के बीत गया। इस बीच हमने एक बहुत सुन्दर बिना सींग के हिरन का शिकार किया। और अनेक रंगों के सोसन तथा कमलिनी के फूल देखे जो नीले रंग के, देखने में बड़े ही सुन्दर लगते थे पर कदाचित् कोई ऐसा फूल होगा जिसकी पंखुरियों को कीड़ों ने न काट दिया हो।

हमारी यात्रा के पाँचवें दिन, जब हम अन्दाजन समुद्र से एक सौ पैंतीस से लेकर १४० मील तक चल चुके होंगे, एक उल्लेखनीय बात हुई। उस दिन हवा ग्यारह बजे दिन को ही बन्द हो गई। हमने नाव को ठेलकर ले जाने की कोशिश की पर शीघ्र ही थककर हमें ऐसे स्थान पर रुक जाना पड़ा जहाँ इस नदी में ५० फुट चौड़ी कोई दूसरी नदी आकर मिली थी। पास ही कुछ वृक्ष उगे हुए थे—इस सारे देश में केवल नदी तट पर ही वृक्ष दिखाई देते थे—उनकी छाया में हमने विश्राम किया। चूँकि यहाँ ज़मीन सूखी थी इसलिए हम लोगों ने नदी के किनारे-किनारे कुछ दूर घूमघामकर चिड़ियों का शिकार किया। पचास ही गज आगे जाकर देखने पर हमें मालूम हो गया कि ह्वेलबोट में आगे जाना संभव नहीं है, क्योंकि जहाँ हम ज़मीन पर उतरे थे उससे दो सौ

गज़ आगे ही पानी बहुत छिछला हो गया था। मुश्किल से छः इंच गहरा। तट की भूमि भी कीचड़ से भरी हुई थी।

लौटकर हम दूसरी नदी के किनारे-किनारे कुछ दूर चले। शीघ्र ही हम इस नतीजे पर पहुँच गए कि यह नदी नहीं कोई प्राचीन नहर है, जैसी जंजीबार तट पर मोम्बासा के आगे है, जो ताना नदी को ओज़ी से इस प्रकार मिलाती है कि ताना आने वाले जहाज़ ओज़ी से गुज़रते हुए समुद्र तक जा सकें और ताना के मुहाने पर जमी बालू के टीले से दूर रह सकें। यह नहर संसार के इतिहास के किसी प्राचीन युग में आदमियों द्वारा बनाई गई होगी। अभी तक खुदी मिट्टी ऊँचे किनारों के रूप में मौजूद थी। इसकी चौड़ाई और गहराई प्रायः एक-सी थी। उसमें प्रवाह बिल्कुल न था, या था तो बहुत कम। बीच-बीच में सेवार वगैरा उग आए थे। अब जब मालूम हो गया कि नदी से आगे बढ़ना संभव नहीं तब हमारे लिए दो ही बातें रह गईं, कि या तो हम नहर से आगे बढ़ने की कोशिश करें या फिर समुद्र की ओर लौट चलें। जहाँ हम थे वहाँ नहीं ठहर सकते थे क्योंकि वहाँ रहने पर निश्चित था कि धूप हमें उबाल देती और मच्छर तब तक काटते रहते जब तक हम उस उजाड़ दलदल में ज्वरग्रस्त होकर काल कवलित न हो जाते।

मैंने कहा—"मेरे विचार से यही अच्छा होगा कि हम नहर से ही आगे बढ़ें।" लोगों ने अपने-अपने ढंग पर इसकी स्वीकृति दी। लियो का जवाब ऐसा था मानो यह दुनिया का सर्वोत्तम मज़ाक है; जाब ने जो कहा सम्मानपूर्ण खिझलाहट के साथ कहा और मोहम्मद ने नबी को सिर झुकाकर अपनी बात कही।

इसलिए ज्यों ही सूर्य कुछ नीचा हुआ, वैसे ही हम चल खड़े हुए। अनुकूल हवा से लाभ उठाने की अब कोई आशा न रही थी। हम नाव को खेकर ले चले। लगभग एक घण्टे तक, बड़ी मेहनत से हम नाव खेते रहे, पर आगे सिवार इतती घनी हो गई कि नाव का खेना असंभव हो गया। तब हम तीनों मिलकर किनारे पर चलते हुए रस्सियों से नाव को खींचते हुए बढ़े। लियो नाव पर बैठा मोहम्मद की तलवार से सिवारों को काटता रहा। दो घण्टे इस तरह चलने के बाद शाम हो गई। तब हमने कुछ घण्टे के लिए नाव रोक दी और मच्छरों का आनन्द प्राप्त करते हुए विश्राम किया। पर आधी रात के समय हम फिर

चल पड़े क्योंकि उस समय कुछ ठण्डक हो गई थी। उषःकाल में हम फिर रुके और तीन घण्टे तक विश्राम करते रहे। उसके बाद पुनः यात्रा आरम्भ हुई और हम दस बजे तक चलते रहे। उसके बाद भयानक तूफ़ान आया, ज़ोरों की आँधी चली; बिजलियाँ कड़कने लगीं और मूसलाधार वर्षा आरम्भ हो गई। अगले छः घण्टे हमने करीब-करीब पानी के अन्दर ही बिताये।

मैं समझता हूँ कि अगले चार दिनों की यात्रा का वर्णन विस्तार से करने की कोई ज़रूरत नहीं है। इतना ही कहना काफ़ी होगा कि वह मेरे जीवन का सबसे दुःखद समय था और निरन्तर श्रम, गरमी, कष्ट तथा मच्छरों के पीड़न से पूर्ण था। सारे रास्ते में दलदल ही दलदल मिला पर हम नित्य कुनैन, रेचक औषधियों के सेवन तथा कठोर परिश्रम के कारण ज्वर एवं मृत्यु से बचे रहे। तीसरे दिन हमें दूर दलदलों से उठती भाप के बीच एक गोल पहाड़ी दिखाई पड़ी और चौथे दिन रात को जब हमने एक स्थान पर अपना पड़ाव डाला तो वह वहां से २५-३० मील दूर मालूम पड़ती थी।

अब तक हम थककर चूर-चूर हो गए थे और हमारे हाथों में छाले पड़ गए थे। हमें लगता था कि अब हम एक गज़ भी नाव को खींचकर आगे नहीं ले जा सकते और हमें इस भयानक दलदली निर्जन में चुपचाप पड़ रहना चाहिए और मृत्यु की प्रतीक्षा करनी चाहिए। बड़ी भयानक परिस्थिति थी और कदाचित् ही कोई गोरा आदमी ऐसी स्थिति में पड़ेगा। मैं नाव पर सोने के लिए पड़ रहा—यह गहरी थकावट का सोना था। मैं अपनी मूर्खता पर पछताने लगा कि ऐसी यात्रा में क्यों शामिल हुआ, जिसका परिणाम इस डरावनी भूमि में मर जाना है। मैं यही सोचता हुआ ऊँघने लगा कि दो-तीन महीने बाद नाव एवं उस पर के अभागे यात्रियों की क्या दशा होगी। नाव तूफ़ान में नष्ट हो जाएगी और यहाँ की सेवार, गन्दी हवा, दलदली गैस से निकलने वाले यमदूत हमारी हड्डियों को अपने जबड़ों से चबा जाएँगे।

सपने में तूफानी लहरें सचमुच मेरी हड्डियों से टकराती जान पड़ीं। उनमें उतराते हुए मेरी खोपड़ी मोहम्मद की खोपड़ी से टकरा रही थी। यहां तक कि मोहम्मद की खोपड़ी अपने मेरुदण्ड पर तनकर खड़ी हो गई और अपने आँख के खोखले गड्ढों से घूर-घूरकर मेरी ओर देखने लगी और दाँत पीसकर कहने लगी कि इसी ईसाई कुत्ते ने एक आस्तिक मुसलमान की अन्तिम निद्रा भंग की

है। इस भयानक सपने से एकाएक मेरी आँखें खुल गईं पर सपने से जागकर भी जो कुछ मैंने देखा उससे और भी भयभीत हो गया, क्योंकि दो बड़ी-बड़ी आँखें उस कोहरे से भरे अंधेरे में मेरी ओर देख रही थीं। मैंने बड़ी मुश्किल से अपने पाँव पर खड़ा होने की कोशिश की, पर भय एवं घबराहट से मैं बार-बार चीख उठा जिससे दूसरे साथी भी भय एवं नींद से लड़खड़ाते हुए उठ खड़े हुए। इसी समय एकाएक ठंडे इस्पात की चमक दिखाई पड़ी और एक चौड़ा बरछा मेरे गले के सामने आकर लग गया और उसके पीछे दूसरे बरछे भी निर्दयतापूर्वक चमक उठे।

किसी ने अरबी या अरबी मिली-जुली भाषा में कहा—"खबरदार ! तुम कौन हो जो तैरकर यहाँ आए हो ? बोलो, नहीं तो अपनी मौत आई समझो।" और बरछा मेरे गले से बिल्कुल सट गया। मेरे सारे बदन में ठण्डी कँपकँपी आ गई।

मैंने अपनी अच्छी से अच्छी अरबी में कहा—"हम यात्री हैं और संयोगवश इधर आ निकले हैं।" जान पड़ता है, उसने मेरी बात समझ ली क्योंकि इतना सुनकर उसने अपना सिर दूसरी ओर फेरा और अपने पीछे खड़े एक लम्बे आदमी से कहा—"पिता, मार दें ?"

गहरी आवाज़ में किसी ने पूछा—"इन आदमियों का रंग क्या है ?"

"गोरे हैं।"

उत्तर मिला—"तो इन्हें न मारो, क्योंकि चार दिन हुए उस 'अवश्य-माननीया' ने कहला भेजा था कि गोरे आदमी आ रहे हैं। अगर वे आवें तो उन्हें न मारना। इन्हें अवश्य-माननीया रानी के पास ले चलो और इनके पास जो कुछ सामान है वह भी इनके साथ ही जाएगा।"

उस आदमी ने मुझे रास्ता बताते और कुछ स्वयं खींचते हुए कहा—"आओ।" मैंने देखा कि वैसा ही उसके साथियों ने मेरे अन्य सहयोगियों के साथ किया।

किनारे पर लगभग पचास आदमियों का दल जमा था। जो कुछ रोशनी वहाँ थी उसमें मैंने देखा कि सबके हाथ में बड़े-बड़े बरछे थे। वे सब आदमी लम्बे, गठीले और हलके रंग के थे और उनकी कमर में लिपटी तेंदुए की खाल के सिवा उनका सारा बदन नंगा था।

लियो और जाब दोनों ढकेलकर मेरे पास कर दिये गए।

"अरे ! यह क्या मामला है ?" लियो ने आँखें मलते हुए पूछा।

जाब बोला—"हे भगवान् ! यह सब कैसा विलक्षण है।" इसी समय कुछ हुल्लड़ हुआ और मोहम्मद भी ठोकर खाता हुआ मेरे पास आ पहुँचा। उसके पीछे बरछा ताने हुए एक आदमी आया।

मोहम्मद चिल्लाया—"अल्लाह ! अल्लाह !" और यह समझकर कि उस आदमी से उसकी जान नहीं बचती, ज़ोर से बोला—"मुझे बचाओ ! मुझे बचाओ !"

एक आवाज़ आई—"पिता, यह काला आदमी है। काले आदमी के बारे में 'अवश्य-माननीया' की क्या आज्ञा है ?"

"उसके लिए उन्होंने कुछ नहीं कहा, पर उसे कत्ल न करो। मेरे बेटे ! इधर आओ !"

इस पर वह आदमी बढ़कर उस लम्बी छाया के पास पहुँचा। उसने झुककर उसके कान में कुछ कहा।

"हाँ, हाँ।" दूसरे ने उत्तर दिया।

छाया से आवाज़ आई—"क्या तीनों गोरे यहाँ हैं ?"

"हाँ, वे इधर हैं।"

Library
Pratap College
SRINAGAR

"तो फिर जो कुछ उनके लिए तैयार है, यहाँ लाओ और अपने आदमियों से कह दो कि उस उतराती वस्तु से सब सामान उतार लें।"

उसके आज्ञा करते ही कुछ आदमी अपने कन्धों पर परदेदार डोलियाँ लिये हुए आये। हर डोली के साथ चार उठाने वाले और दो अतिरिक्त आदमी थे। हमें इशारा किया गया कि इनमें चढ़ना है।

लियो ने कहा—"चलो बहुत अच्छा हुआ। इतने दिनों तक स्वयं अपना बोझा लेकर चलने के बाद अपने को ढोने वाले तो मिले।"

लियो सदा चीज़ों के उत्फुल्ल पक्ष को ग्रहण करता था।

जब मैंने देख लिया कि और कोई चारा नहीं है तब दूसरों को चढ़ता देख मैं भी अपनी डोली में जा कूदा। मैंने अपनी डोली को बहुत आरामदेह पाया। यह घास के तंतुओं से बुने कपड़े की बनी हुई थी जो शरीर की प्रत्येक गति के साथ फैलती और झुकती थी और ऊपर तथा नीचे की ओर उसमें बांस बँधा

हुआ था जिससे सिर और कंधे को सहारा मिलता था।

मेरे डोली में बैठने के बाद कहार लोग उदासी भरे स्वर में गाते तथा डुलाते चल पड़े। आधे घण्टे तक चुपचाप पड़ा हुआ, मैं उस उल्लेखनीय अनुभव के बारे में सोचता रहा जो इन दिनों हो रहा था। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि यदि यहाँ से मैं जल्द छूटकर केम्ब्रिज के अपने दोस्तों के बीच पहुँच जाऊँ और उनको ये बातें सुनाऊँ तो क्या वे मेरा विश्वास करेंगे ? यूनिवर्सिटी तक के बँधे जीवन में आदमी की कल्पना निर्जीव हो जाती है, जैसी मेरी भी थी, पर इधर के अनुभवों ने मेरे विचार का क्षितिज बहुत विस्तृत कर दिया है। इस प्रकार मैं पड़ा-पड़ा आश्चर्य करता और सोचता रहा कि इस यात्रा का अन्त क्या होगा ? और सोचते-सोचते, अन्त में मैं सो गया।

जहाज़ के डूबने के बाद शायद यह मेरी पहली ही वास्तविक नींद थी। मैं सात-आठ घण्टे से कम न सोया हूँगा क्योंकि दिन काफ़ी चढ़ आया था। अब भी हम प्रायः ४ मील प्रति घण्टे की चाल से चले जा रहे थे। डोली के परदे के बाहर झाँककर मैंने देखा कि शाश्वत दलदलों का क्षेत्र समाप्त हो चुका था और अब हम घास से भरी कुछ ऊँची ज़मीन पर प्यालेनुमा पहाड़ी की दिशा में जा रहे थे। मैं नहीं कह सकता कि यह वही पहाड़ी थी जिसे हमने नहर से देखा था या दूसरी थी; क्योंकि जैसा मुझे बाद में मालूम हुआ, ये लोग ऐसे मामलों में कोई जानकारी नहीं देते थे। इसके बाद मैंने उन आदमियों पर निगाह डाली जो हमें ले जा रहे थे। वे बड़े सुगठित थे और उनमें से शायद ही कोई ६ फुट से कम लम्बा रहा होगा। उनका रंग पीलापन लिये हुए था। उनकी शकल-सूरत पूर्वी अफ्रीका के 'सोमाली' लोगों से मिलती-जुलती थी। उनके काले बाल गुच्छों या पट्टों में कंधों तक लटक रहे थे। उनकी बनावट गारुड़ीय—गृद्धवत्—और काफ़ी खूबसूरत थी; विशेषतः उनके दाँत बड़े पंक्तिबद्ध तथा सुन्दर थे। पर उनके सौन्दर्य के बावजूद सब मिलाकर मुझे ऐसा लगा कि उनसे अधिक निर्दय चेहरे मैंने कभी न देखे थे। उनके चेहरों पर ठंडी, उदासी भरी निर्दयता की छाप थी जिसे देखकर मुझे बड़ी घृणा होती थी, यहाँ तक कि अपनी सघनता में वह अपार्थिव मालूम पड़ती थी।

दूसरी बात मैंने यह देखी कि वे कभी हँसते नहीं थे। कभी-कभी वे उदासी से भरा वह गाना गाते थे जिसका जिक्र मैं पहले कर चुका हूँ। पर जब वे गाते

न थे तो फिर बिल्कुल मौन रहते थे और उनके भयानक चेहरों को प्रकाशित करने वाला हास्य कभी दिखाई न देता था। पता नहीं वे किस जाति के थे ? उनकी भाषा विकृत और संकर अरबी थी, फिर भी मेरा निश्चित मत था कि वे अरब नहीं थे क्योंकि उनका रंग बहुत काला, बल्कि पीला था। मैं नहीं जानता कि क्यों उनको देखकर मुझे ऐसा भय उत्पन्न होता था कि मुझे स्वयं अपने पर शर्म आती थी। जब मैं इस प्रकार आश्चर्य कर रहा था, दूसरी पालकी मेरे बगल में आ लगी। उसमें एक बुड्ढा बैठा था। मैं तुरन्त समझ गया कि यही वह छायामूर्ति है जो किनारे पर पीछे खड़ा था और जिसे 'पिता' कहकर सम्बोधित किया जाता था। वह अद्भुत प्रकार का आदमी था। उसकी सफेद दाढ़ी इतनी लम्बी थी कि उसके किनारे इधर-उधर पालकी को छू रहे थे; नाक झुकी हुई थी और आँखें ऐसी चमकती थीं जैसे वे आदमी की नहीं साँप की आँखें हों। उसके सारे चेहरे पर विवेक एवं गंभीर विनोद की ऐसी छाप थी जिसका वर्णन करना सम्भव नहीं।

"अजनबी, क्या तुम जग रहे हो ?" उसने गहरे पर मन्द स्वर में पूछा।

"हाँ, मेरे पिता", मैंने शिष्टतापूर्वक इस ख्याल से उत्तर दिया कि इस आदमी को जितना भी अनुकूल बना सकूं, बनाऊँ।

उसने अपनी सुन्दर सफेद दाढ़ी पर हाथ फेरा और मुस्कराया।

"मेरे अजनबी बेटे ! जान पड़ता है कि तुम जिस देश से आये हो, उसमें हमारी भाषा कुछ न कुछ बोली जाती है और वहाँ बच्चों को शिष्टाचार की बातें खूब सिखाई जाती हैं। अब बताओ तुम इस देश में कैसे आये, जहाँ मनुष्य की कल्पना में किसी विदेशी के चरण कभी नहीं आये ? क्या तुम और तुम्हारे साथी अपने जीवन से ऊब गए हैं ?"

मैंने निर्भयतापूर्वक जवाब दिया—"हम नई-नई बातें देखने आये हैं। पुरानी चीजों को देखते-देखते हमारा मन ऊब गया था। हम समुद्र की राह से अज्ञात वस्तुओं को जानने के लिए आये हैं। हम एक वीर जाति के हैं जो मौत से नहीं डरती। मेरे परमादरणीय पिता ! यदि मृत्यु के पूर्व हमें कुछ नई बातें मालूम हो जायँ तो हमें मौत की परवा नहीं।"

बूढ़े ने कहा—"हाँ, हाँ, यह सच हो सकता है ; तुम्हारी बातों को काटना जल्दबाजी होगी; वर्ना मैं कहता कि मेरे पुत्र, तुम झूठ बोल रहे हो। किन्तु मैं

कह सकता हूँ कि कदाचित् 'अवश्य-माननीया' इस विषय में तुम्हारी इच्छा पूरी कर दें ।"

मैंने उत्सुकतापूर्वक पूछा—"यह 'अवश्य-माननीया' कौन हैं ?"

बूढ़े ने कहारों की ओर देखा और कुछ इस अन्दाज़ से मुस्कराया कि मेरे बदन का खून हृदय में पहुँच गया :

"मेरे अजनबी पुत्र ! अगर उनकी इच्छा हुई कि तुम्हें ज़िन्दा इस शरीर में देखें तो तुम्हें यह बात जल्द ही मालूम हो जायगी ।"

मैंने पूछा—"ज़िन्दा ? मेरे प्यारे पिता ! इससे आपका क्या मतलब है ?"

पर बुड्ढा सिर्फ़ भयानक हँसी हँसता रहा और उसने मेरी इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया ।

'मैंने पूछा—"मेरे पिता के आदमियों की जाति का क्या नाम है ?"

"मेरी जाति का नाम 'अमाहज़र' यानी 'पहाड़ के आदमी' है ।"

"और अगर पुत्र पूछे, कि मेरे पिता का क्या नाम है ?"

"मेरा नाम बिल्लाली है ।"

"मेरे पिता ! हम कहाँ जा रहे हैं ?"

"यह तुम्हें स्वयं ही मालूम हो जायगा ।" और उसने कहारों को कुछ इशारा किया जिससे वे तुरन्त दौड़ चले, यहाँ तक कि पिता की डोली उस डोली के पास पहुँच गई जिसमें जाब एक पैर डोली के बाहर निकाले सो रहा था । जान पड़ता है, जाब से उसे कुछ विशेष मालूम न हुआ होगा, क्योंकि मैंने देखा कि बूढ़े की डोली लियो की डोली की ओर बढ़ गई ।

इसके बाद कोई नई बात नहीं हुई और पालकी के सुखद झूलने में मैं पुनः सो गया । मैं भयानक रूप से थका हुआ था । जब मेरी नींद खुली तो मैंने देखा, कि किसी ज्वालामुखी के मुख से निकले द्रव से बनी चट्टानों के बीच से हम जा रहे हैं और रास्ते के दोनों ओर जमी मिट्टी पर सुन्दर और फूलों से भरे पौधे उगे हुए हैं ।

यह राह थोड़ी दूर आगे मुड़ गई और मेरी आँखों के आगे एक सुन्दर दृश्य फैला दिखाई पड़ा । हमारे सामने ४ से ६ मील लम्बा मैदान था जो रोमन अखाड़े की तरह गोलाई लिये हुए था । इस भूमि के किनारे चट्टानी तथा

झाड़ियों से भरे थे परन्तु इसका मध्य भाग बहुत ही उपजाऊ, हरित भूमि से पूर्ण था। उसमें बड़े-बड़े सघन वृक्ष थे तथा बल खाते झरने बह रहे थे। इसमें बकरियाँ और अन्य चौपाये चर रहे थे परन्तु मुझे उनमें कोई भेड़ न दिखाई दी। शुरू में तो इस मैदान को देखकर मैं कुछ भी न समझ सका कि यह क्या है, पर बाद में मुझे यह बात सूझी कि यह किसी पुराने समाप्त ज्वालामुखी का दहाना रहा होगा जो कालान्तर में झील के रूप में परिवर्तित हो गया। बाद में किसी प्रकार झील का पानी निकाल दिया गया होगा। आगे मैंने जो कुछ देखा और अनुभव किया उससे भी मेरे इस विचार की पुष्टि ही हुई।

मुझे बड़ी परेशानी इस बात से हो रही थी कि यद्यपि जगह-जगह बकरियों और चौपायों को आदमी चरा रहे थे, पर उनकी कोई बस्ती हमें कहीं दिखाई न दे रही थी। तब वे सब रहते कहाँ हैं? शीघ्र ही मेरी उत्सुकता की पूर्ति होने वाली थी। हमारी डोलियाँ बाईं ओर मुड़कर इस मैदान के किनारे-किनारे एक पंक्ति में चलती हुई, लगभग आध मील के बाद रुक गईं। अपने उस पिता 'बिल्लाली' को डोली से उतरते देखकर मैंने भी वैसा ही किया। लियो और जाब भी उतर पड़े। पहली बात जिधर मेरा ध्यान गया, यह थी कि हमारा अभागा अरब साथी मोहम्मद थकावट से चूर होकर जमीन पर पड़ा है। मालूम हुआ कि वह पालकी पर नहीं लाया गया है बल्कि सारा फासला उसने साथ दौड़ते-दौड़ते तय किया है। जब हम रवाना हुए तभी उसकी हालत कुछ अच्छी न थी और अब तो वह बिल्कुल बेदम हो गया था।

हमने चारों तरफ़ निगाह डालकर देखा कि जहाँ हम ठहरे हैं वह एक बड़ी गुफा के सामने बना चबूतरा है। इस चबूतरे पर ह्वेलबोट से लाया गया हमारा सामान पड़ा हुआ था—यहाँ तक कि मस्तूल और पाल वगैरा भी रखे हुए थे। गुफा के चारों तरफ हमें लाने वाले तथा उन्हीं की तरह और बहुत-से आदमी एकत्र थे। वे सब लम्बे और सुन्दर थे, यद्यपि चमड़ी का काला रंग किसी का कम किसी का ज्यादा था। कुछ मोहम्मद की भाँति काले थे; कुछ चीनियों की भाँति पीले थे। सिवाय तेंदुए की खाल के कमरपट्टे के वे नंगे थे और हर एक के पास बड़ा बरछा था। इनमें कुछ स्त्रियाँ भी थीं जो लाल हिरन की खाल पहने थीं। वे देखने में बड़ी सुन्दर थीं; उनकी आँखें काली और बड़ी-बड़ी थीं; उनके चेहरे-मोहरे की काट अच्छी थी और उनके बाल घने तथा घुँघराले थे।

उनमें से चंद स्त्रियां पीले फलालैन का कपड़ा पहने थीं, जैसा मैंने बिल्लाली को पहने देखा था। पीछे मुझे मालूम हुआ कि यह उनके उच्च श्रेणी के होने की निशानी थी। उनका रूप पुरुषों की भाँति भयावना न था और वे भूले-भटके मुस्करा भी देती थीं। जैसे ही हम लोग नीचे उतरे, उन्होंने हमें घेरलि या और उत्सुकतापूर्वक हमें देखने लगीं। लियो का लम्बा, कसरती शरीर और स्पष्ट यूनानी काट का मुख उनको आकर्षक मालूम पड़ा और जब उसने शिष्टाचारपूर्वक अपना हैट उठाकर उन्हें अभिवादन किया और उसके पीले घुँघराले बाल दिखाई पड़े, तब उनसे प्रशंसा की ध्वनि भी निकली। यह बात यहीं खत्म नहीं हुई। ऊपर से नीचे तक अच्छी तरह देखने के बाद उनमें से जो सबसे सुन्दर तरुणी थी और जो एक चोंगा पहने हुए थी, इठलाती हुई आगे बढ़ी और पास पहुँचकर उसने लियो के गले में बाहें डाल दीं और झुककर उसके ओठों को चूम लिया।

इस पर मेरी साँस फूलने लगी; मैंने सोचा कि अब लियो को बरछा भोंका ही जाता है। जाब भी बुदबुदाया। लियो पहले तो चकित हुआ पर बाद में यह कहकर कि हम ऐसे देश में आ गए हैं जहाँ के लोग, जान पड़ता है, प्रारम्भिक ईसाइयों की प्रथाओं का पालन करते हैं, जान-बूझकर उस स्त्री को भी लिपटाकर चूम लिया।

मेरी साँस तब भी रुक रही थी। मैं सोच रहा था कि अब कुछ हुआ, अब कुछ हुआ। यद्यपि लियो के वैसा करने पर कुछ तरुणियों के चेहरे पर परेशानी नज़र आई, जब ज्यादा उम्र वाली स्त्रियाँ और पुरुष मुस्करा पड़े। बाद में जब हमने इस असाधारण जाति के रीति-रिवाज को समझा, तब इसका रहस्य हमें मालूम हुआ। तब हमें ज्ञात हुआ कि संसार की सभी जंगली जातियों में प्राप्त प्रथाओं के प्रतिकूल अमाहज़रों में स्त्रियाँ पूर्णतः स्वतन्त्र हैं और पुरुषों के बराबर दर्जा रखती है; वंश पैतृक नहीं, मातृक होता है; लोग अपनी प्राचीन पूर्वजाओं का गौरवपूर्वक बखान करते हैं पर कोई पिता का नाम नहीं लेता, चाहे उसे पूर्णतः अपने पिता का पता हो। हर फिरके या कुटुम्ब का सिर्फ़ एक पुरुष पिता या सरदार होता है। वह चुना जाता है; वही उन पर शासन करता और 'पिता' कहा जाता है। उदाहरण के लिए बिल्लाली एक फिरके या 'कुटुम्ब' का पिता है, जिसमें सात हज़ार आदमी हैं। उसमें और कोई आदमी

'पिता' नाम से सम्बोधित नहीं किया जाता। जब कोई औरत किसी आदमी को चाहती है तो उसे खुले आम सब के सामने उसके पास जाकर उसका आलिंगन करना पड़ता है, जैसे कि उस सुन्दरी तरुणी ने, जिसे लोग 'उस्तेन' नाम से पुकारते हैं, जियो को आलिंगन किया था। अगर वह पुरुष भी उसे चूम लेता है तो यह माना जाता है कि उसने उस स्त्री को स्वीकार कर लिया और यह क्रम तब तक चलता है जब तक दो में से एक का मन दूसरे से उचट नहीं जाता।

पर मुझे यह भी कह देना चाहिए कि इसके कारण, जल्दी-जल्दी पतियों का परिवर्तन नहीं होता, न ऐसा होने पर आदमियों में कोई झगड़ा ही खड़ा होता है। जब कोई स्त्री अपने पति को छोड़ दूसरे प्रतिद्वन्द्वी के पास चली जाती है तो वह उस तथ्य को उसी प्रकार शान्तिपूर्वक ग्रहण कर लेता है जैसे हम आयकर या अपने वैवाहिक कानूनों को स्वीकार कर लेते हैं और उन पर झगड़ते नहीं।

यह देखकर आश्चर्य होता है कि इस विषय पर मानव-जाति का व्यवहार देश-देश में कितना भिन्न है; नीति छूट और धर्म का विषय बन गई है; एक जगह जो उचित है, वही दूसरी जगह अनुचित है। पर इतना तो समझ ही लेना चाहिए कि सभी सभ्य जातियाँ इसे स्वीकार करती हैं कि संस्कार, समारोह, ही सदाचार की कसौटी है। इस प्रकार हमारी कसौटी से भी अमाहज़रों की इस प्रथा में कोई अनैतिक बात नहीं है। सार्वजनिक रूप से आलिंगन के आदान-प्रदान की यह प्रथा हमारी विवाह-विधि के ही अनुरूप है।

अध्याय ७

उस्तेन का गायन

जब आलिंगन और चुम्बन की लोक-रीति समाप्त हो गई—यद्यपि तरुणियों में से किसी ने मेरी ओर नहीं झांका, हाँ एक जाब के इर्द-गिर्द मँडराती रही किन्तु वह गरीब डरकर दुबक रहा—तब बुड्ढा बिल्लाली गुफा की ओर

बढ़ा और हमें भी अपने पीछे आने का संकेत किया। हम गुफ़ा के अन्दर चले, पर हमारे पीछे उस्तेन भी लग गई, यद्यपि मैंने उसे इशारा कर दिया था कि हम अलहदगी चाहते हैं।

हम पाँच ही क़दम गए होंगे कि हमें मालूम हो गया कि जिस गुफा में हम प्रवेश कर रहे हैं, वह प्रकृति की बनाई हुई नहीं है बल्कि आदमी के श्रम से खोखली की गई है। हमारे अन्दाज़ से यह गुफा लगभग सौ फुट लम्बी, पचास फुट चौड़ी और बहुत ऊँची थी और देखने में गिर्जाघर के प्रकोष्ठ-तुल्य प्रतीत होती थी। हर बारह या पन्द्रह फुट पर इस प्रकोष्ठ से रास्ते फूटे थे, जो मैंने सोचा, छोटे कमरों को जाते होंगे। गुफा-द्वार से पचास फुट के बाद, जहाँ रोशनी धुँधली पड़ गई थी, आग धधक रही थी जिसके कारण चारों ओर की उदास दिवारों पर विशाल परछाइयाँ पड़ रही थीं। यहाँ बिल्लाली रुक गया और हम लोगों से बैठने को कहा। उसने यह भी कहा कि यहाँ आदमी तुम्हारे लिए भोजन लायेंगे। इसलिए हम लोग चमड़े के धुस्सों पर बैठ गए जो हमारे लिए ही वहाँ पहले से ही बिछा दिए गए थे। थोड़ी देर बाद भोजन लेकर किशोरी लड़कियाँ आईं। भोजन में बकरी का उबला मांस, मिट्टी के शकोरों में ताज़ा दूध और भुने हुए भुट्टे थे। हम लोग भूख से तड़प रहे थे। इसलिए जो कुछ सामने आया वह सब हमने साफ़ कर दिया। मुझे नहीं याद है कि जीवन में और कभी ऐसी तृप्ति से मैंने भोजन किया हो।

हमारे भोजन कर चुकने पर बिल्लाली ने, जो अब तक बिल्कुल चुप था, खड़ा होकर हमसे कहा—"यह एक अद्भुत बात हुई है। आज तक किसी को नहीं मालूम, न किसी ने सुना ही था कि इसके पूर्व चट्टानों की जाति के बीच कोई गोरा आया हो। कभी-कभी, पर वह भी बहुत कम, काले आदमी यहाँ आये हैं, जिनसे हमने सुना कि उनकी अपेक्षा बहुत गोरे आदमी भी दुनिया में हैं जो समुद्रों में जहाज़ों पर यात्रा करते हैं, पर ऐसे आदमी यहाँ आज तक नहीं आये थे। जब तुम लोग नहर में नाव खींचकर इस तरफ़ आ रहे थे तभी मैंने देख लिया था और तुम लोगों को खत्म कर देने का आदेश भी दे दिया था क्योंकि किसी अजनबी के लिए इस देश में प्रवेश करना गैरकानूनी है। पर इसी समय 'अवश्य-माननीया' के यहाँ से सन्देश मिला जिसमें तुम्हें जान से न मारने और यहाँ लाने का आदेश था।"

इस जगह मैंने बात काटकर पूछा—"मेरे पिता ! माफ़ कीजिए, यदि अब 'अवश्य-माननीया' यहाँ से भी आगे रहती हैं तो उतनी दूर हमारा आना उन्हें कैसे मालूम हुआ ?"

बिल्लाली ने घूमकर देखा कि वहाँ हमारे सिवा और कोई नहीं है क्योंकि जब उसने अपना भाषण आरम्भ किया तब उस्तेन वहाँ से चली गई थी; और हँसकर बोला—"क्या तुम्हारे देश में कोई ऐसा नहीं है जो बिना आँखों के देख सकता और बिना कानों के सुन सकता हो ? और सवाल न पूछो। वह सब जान गई थी।"

इस पर मैंने अपने कंधे हिलाये। उसने आगे कहा—"तुम लोगों के बारे में और कोई आज्ञा अभी तक नहीं मिली है। इसलिए मैं 'अवश्य-माननीया,' जिन्हें संक्षेप में हम 'हिया' अथवा 'श्री' भी कहते हैं, से भेंट करने और उनकी इच्छा जानने के लिए जा रहा हूँ। वही अमाहग्ग़र जाति की रानी हैं।"

मैंने उससे पूछा कि वह कब तक लौटेगा। उसने उत्तर दिया कि तेज़ी से यात्रा करने पर पाँचवें दिन लौट सकेगा, पर जहाँ वह रहती है वहाँ तक पहुँचने के लिए मीलों तक दलदल पार करने पड़ते हैं। उसने यह भी कहा कि उसकी अनुपस्थिति में हम लोगों के आराम की पूरी व्यवस्था रहेगी और चूँकि उसे हम लोग पसन्द हैं उसे पूरी आशा है कि वह हमारे जीते रहने देने की ही आज्ञा लेकर लौटेगा। पर उसने यह भी कह दिया कि उसकी दादी, उसकी माँ और उसके जीवन में उसने यही देखा है कि जो भी अजनबी यहाँ आया, वह बड़ी निर्दयता के साथ मार दिया गया। और वह 'श्री' के ही आदेश से हुआ, कम से कम वह ऐसा ही समझता है—कम से कम उन्होंने उनकी रक्षा के लिए कभी हस्तक्षेप नहीं किया।

मैंने कहा—"पर यह कैसे हो सकता है ? आप स्वयं वृद्ध हैं और बात आप दादी के ज़माने की कर रहे हैं। इसलिए आपकी दादी के जीवनकाल में 'श्री' ने कैसे आज्ञा दी होगी। उस समय तो वह पैदा भी न हुई होंगी।"

इस पर वह मुस्कराया और कुछ जवाब दिये बिना ही, सलाम करके चला गया। अगले पाँच दिनों तक हमने उसे नहीं देखा।

जब वह चला गया तब हम परिस्थिति पर विचार करने लगे। मैं बहुत परेशान था। इस 'अवश्य-माननीया' अथवा 'श्री' नाम की रहस्यमयी रानी

की बातें मुझे पसन्द नहीं थीं जो इतनी निर्दयता से परदेसी को मारने का आदेश दे देती थी। लियो भी इस सम्बन्ध में उदास था पर विजय-गर्व से अपने मन में यह सोचकर सन्तुष्ट भी था कि यह 'श्री' रानी वही है जिसका वर्णन अमीनार्त्ता के ठीकरे या उसके पिता के पत्रों में किया गया है। इसके प्रमाण में वह उसकी उम्र एवं शक्ति के सम्बन्ध में बिल्लाली की कही हुई बातों को पेश करता था। पर इस समय मैं घटनाओं की शृंखला से इतना घबरा गया था कि ऐसे वाहियात सुझाव को भी काटने की हिम्मत मुझ में न रह गई थी। इसलिए मैंने सुझाव दिया कि हमें बाहर चलकर स्नान कर लेना चाहिए। हम सब बुरी तरह स्नान करने की आवश्यकता का अनुभव कर रहे थे।

इसलिए हमने असाधारण रूप से जड़ रूप, रंग के, एक अधेड़ से, जो हमारी देख-रेख के लिए रखा गया था, अपनी इच्छा व्यक्त की और अपनी पाइप *जलाकर नहाने के लिए उठ खड़े हुए। गुफा के बाहर निकलने पर हमने देखा कि बहुत-से लोग एकत्र हैं जो हमारे बाहर निकलने की प्रतीक्षा कर रहे थे। पर जब उन्होंने पाइप पीते हुए हमें निकलते देखा तो वे इधर-उधर छिप गए और कहने लगे कि ये तो शक्तिमान जादूगर हैं। हमारी दूसरी किसी बात से तम्बाकू पीने से ज्यादा हलचल नहीं पैदा हुई—यहाँ तक कि हमारी बन्दूकों से भी नहीं। इसके बाद हम एक सोते के किनारे पहुँचे और शान्तिपूर्वक स्नान किया।

हमारे इस अत्यन्त सुखद स्नान के समाप्त होने तक सूर्य डूबने लगा था। गुफा तक लौटते-लौटते वह पूरी तरह डूब गया था। गुफा में कई जगह आग जल रही थी और लोग उसके इर्दगिर्द एकत्र थे और उसके प्रकाश में भोजन कर रहे थे। कुछ दीपक भी जहाँ-तहाँ रखे थे या दीवार से लटक रहे थे। ये दिये पके मिट्टी के पात्रों से बने थे और छोटे बड़े अनेक प्रकार के थे, जिनमें पिघली वसा (चरबी) जल रही थी।

---

*अफ्रीका के अन्य भागों की भाँति हमने इस प्रदेश में भी तम्बाकू को उगते देखा। यद्यपि वे लोग इसके अन्य सुखदायक गुणों से अपरिचित थे, पर आमहज्जर लोग सुंघनी के रूप में तथा दवा-दारू के लिए इसका बराबर उपयोग करते थे।

थोड़ी देर तक हम इन कठोर जंगलियों को निर्वाक् भोजन करते देखते रहे। फिर उनकी तथा चट्टानी दीवार पर पड़ती चलती-फिरती लम्बी छायाओं की बात सोचते हुए हमने अपने नये पहरुये से सोने की इच्छा प्रकट की।

बिना एक शब्द बोले वह उठ खड़ा हुआ और नम्रता से मेरा हाथ पकड़, एक दीपक लिये, हमें उन रास्तों से लिवा ले चला जो इस गुफा के बीच से होकर जाते थे। लगभग पाँच कदम चलने के बाद कई छोटे कमरे मिले जो ८ फुट वर्गाकार थे और जो चट्टान काटकर केबिन की शक्ल में बनाये गए थे। इन कमरों में ज़मीन से कोई तीन फुट की ऊँचाई पर एक-एक पत्थर की पटिया दीवार से लगी फैली हुई थी। एक-एक कमरे में जाकर इन्हीं पटियों पर सोने के लिए हम से कहा गया। इन कमरों में कोई भी खिड़की या झरोखा न था, न कोई बिछौना बिछा था। ये शयन-कक्ष नहीं, समाधि-कक्ष से मालूम होते थे जिनमें कदाचित् मृत व्यक्तियों के शव रखे जाते होंगे। यह सब सोचकर मुझे कँपकँपी आ गई पर कहीं न कहीं तो सोना ही था, इसलिए लौटकर हम गुफा से अपने कम्बल उठा लाए और उनमें पड़ रहे। जाब इतना डरा हुआ था कि वह मेरे कमरे से न गया और वहीं सोना चाहा। मैंने भी अपने पास ही ज़मीन पर सोने की आज्ञा दे दी।

सब मिलाकर रात बड़े आराम से कटी। 'सब मिलाकर' मैं इसलिए कह रहा हूँ कि खुद मैं तो भयानक सपना देखता रहा, मानो मुझे ज़िन्दा गाड़ दिया गया है। प्रातःकाल बिगुल की आवाज़ सुनकर हम उठ बैठे। इसे किसी युवक अमाहज़र ने लोगों को जगाने के लिए ही बजाया था। यह बिगुल हाथीदाँत को खोखला करके बनाया गया था। इसके एक ओर छिद्र था जिसमें फूँकने से वह बजता था। यह लोगों को जगाने के लिए ही बजाया जाता था। हम उठ बैठे और जाकर झरने में स्नान कर आए। इसके बाद भोजन परोसा गया जिसे हम लोगों ने खूब डटकर खाया। अब एक स्त्री हमारी ओर बढ़ी, और आकर उसने जाब को सबके सामने चूम लिया। उस समय उसके अनौचित्य की बात को छोड़ दें तो मेरी अब तक देखी बातों में वह बड़ी आनन्दप्रद बात थी। मैं जाब के चेहरे पर व्यक्त भय और खिझलाहट को कभी नहीं भूल सकता। वह इसलिए शर्म से पानी-पानी हो गया कि उसकी इच्छा बिना, उसके मालिकों के सामने ही उसका सबके सामने आलिंगन और चुम्बन किया गया। उस समय

की उसकी मनोव्यथा का वर्णन करना कठिन है। उसे यह बात बहुत बुरी लगी। वह उठकर खड़ा हो गया और उस औरत को, जिसकी उम्र ३० के लगभग होगी, अपने पास से ढकेल दिया।

हाँफते हुए उसने कहा—"नहीं, मेरे पास नहीं।" औरत ने यह समझकर कि शायद वह शर्मा रहा है, उसे फिर आलिंगन करके चूम लिया।

जिस काठ के चमचे से वह भोजन कर रहा था, उसे ज़ोर से हिलाते और चिल्लाते हुए उसने कहा—"चल, मेरे पास से दूर हो। दूर हो बेहया!" फिर हम लोगों से बोला—"आप लोग मुझे माफ करेंगे। मैंने ऐसा करने के लिए हर्गिज़ उसे उत्साहित नहीं किया है। हे ईश्वर! वह फिर मेरी ओर आ रही है। श्री होली! कृपा करके उसे पकड़ लीजिए। पकड़िए उसे। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता; बिल्कुल नहीं। इसके पहले मेरी ज़िन्दगी में ऐसा कभी नहीं हुआ—कभी नहीं। मेरा चरित्र निष्कलंक है।"

इतना कहकर वह जितनी तेज़ी से भाग सकता था, गुफा के बाहर भागा। इस पर हमने पहली बार अमाहज़र लोगों को हँसते देखा। जहाँ तक औरत का सम्बन्ध है वह नहीं हँसी, बल्कि उलटे वह क्रोध से काँप रही थी और उसके प्रति दूसरी औरतों के व्यंग्य ने इस गुस्से को बढ़ाने में आग में घी डालने का काम किया। वह खड़ी दाँत पीस रही थी और गुस्से से थर-थर काँप रही थी। उस समय मेरे मन में आया कि जाब के इस प्रशंसनीय आचरण ने हमारी ज़िन्दगी खतरे में डाल दी है और जैसा बाद को साबित हुआ, मेरा वैसा सोचना ग़लत न था।

औरत के हट जाने के बाद जाब बड़ी उद्विग्न दशा में लौट आया और अपने पास से गुज़रती हर स्त्री को घबराहट से देखता रहा। मैंने मौका पाकर अमाहज़रों को समझाया कि जाब पहले से ही विवाहित है और चूंकि अपनी बीवी के प्रति उसका अनुभव सुखद नहीं था, इसलिए वह घर से निकलकर यहाँ आया। इसीलिए वह औरतों से बड़ा डरता है। पर उन लोगों ने मेरी बातों को चुपचाप सुन लिया और कोई उत्तर नहीं दिया। इससे मैं समझ गया कि जाब के आचरण से उन लोगों ने समस्त 'कुटुम्ब' को अपमानित अनुभव किया है, यद्यपि अपनी साथिन के इस तिरस्कार पर उसकी कुछ अधिक सभ्य बहनें प्रसन्न भी हो रही थीं।

भोजन के बाद हम सब गुफा के बाहर घूमने गए और अमाहज़र लोगों के खेतों एवं पशुओं का निरीक्षण किया। उनके पास दो नस्ल के चौपाए थे। एक बड़े, बेसींग पर दुधार; दूसरे लाल रंग के बहुत छोटे और मोटे, जिनका मांस बहुत अच्छा होता था पर जो दूध नहीं देते थे। बकरियों के लम्बे-लम्बे बाल थे और वे सिर्फ खाने के काम में आती थीं; कम से कम मैंने कभी उन्हें दुहे जाते नहीं देखा। जहाँ तक अमाहजर की खेती की बात है वह बहुत पुराने ढंग की थी। वे लोग खेतों को बर्छे जैसे फावड़ों से खोदते थे और चूंकि उस पर कहीं पाँव टिकाने का साधन न होता था इसलिए जोतने बोने के काम में बड़ी मेहनत पड़ती थी। यह सब परिश्रम का काम पुरुष ही करते थे और औरतों को इस प्रकार के शारीरिक श्रम से छूट दी गई थी। जैसा मैं पहले भी कह चुका हूँ अमाहजर लोगों में अबलाओं को काफ़ी अधिकार मिले हुए थे।

पहले इस असाधारण जाति के उद्भव और कानूनों के बारे में कुछ न जानने के कारण हम बड़े परेशान थे, क्योंकि इन विषयों की वे लोग बिल्कुल चर्चा न करते थे। पर ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, हमें लियो की प्रेमिका उस्तेन से बहुत-सी बातें मालूम हुईं। उस्तेन लियो के साथ परछाईं की भांति लगी रहती थी और उसे बहुत चाहती थी। उससे मालूम हुआ कि हमारी जाति के उद्गम का तो कुछ पता नहीं, कम से कम वह नहीं जानती। पर जहाँ रानी 'श्री' रहती हैं उसके आसपास अनेक इमारतों के ध्वंसावशेष हैं। इस नगर का नाम 'कोर' था। पुराने जमाने में इसी में लोग रहते थे। उन्हीं लोगों की संतति ये अमाहज़र हैं। अब वह नगर बिल्कुल उजड़ गया है और लोगों का विश्वास है कि उसमें भूत-प्रेतों का निवास है, इसलिए इन खंडहरों के पास कोई नहीं जाता। उसके अलावा भी कितने ही और नगरों के ध्वंसावशेष इधर-उधर पड़े हैं। जिन लोगों ने 'कोर' जैसे नगरों को बसाया था उन्हींने चट्टानों को खोखला करके इन गुफाओं को भी बनाया, जिनमें आज अमाहज़र लोग रहते हैं। अमाहजर लोगों में कोई लिखित कानून नहीं है; उनकी परम्परा ही उनका कानून है। जो कोई इन प्रथाओं वा परम्पराओं के विरुद्ध कुछ करता है वह कुटुम्ब के 'पिता' या मुखिया द्वारा मार डाला जाता है। जब मैंने उस्तेन से पूछा कि अपराधी किस प्रकार मारा जाता है

तो वह हँसकर रह गई और इतना ही कहा कि तुम्हें खुद ही मालूम हो जायगा।

उनकी एक रानी है। 'श्री' ही उनकी रानी हैं। पर वे कभी बाहर नहीं निकलतीं—शायद दो-तीन वर्षों के बीच जब कभी किसी अपराधी को दण्ड देना होता है तभी वह निकलती हैं और तब भी मोटे लबादे से पूर्णतः ढकी रहती हैं, जिससे कोई उनका मुंह या बदन न देख सके। इस रानी के नौकर-चाकर सब गूंगे-बहरे हैं इसलिए उसकी कोई बात किसी पर प्रकट नहीं कर सकते। लेकिन इतना जरूर सुना जाता है कि वह अतुल सुन्दरी हैं—उतनी सुन्दरी न कोई स्त्री है, न कभी थी। यह भी सुना जाता है कि वह अमर हैं और उन्हें सब वस्तुओं पर अधिकार प्राप्त है, पर खुद उस्तेन को उनके विषय में कुछ नहीं मालूम था। हाँ, उसका विश्वास था कि रानी समय-समय पर किसी को पति रूप में वरण करती हैं और ज्यों ही कोई कन्या पैदा होती है वह पति क़त्ल कर दिया जाता है। फिर वह कन्या विकसित होकर माता की मृत्यु के बाद उसका स्थान ग्रहण कर लेती है। पर इन विषयों पर कोई निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता। हाँ, इस देश में एक छोर से दूसरे छोर तक उनकी आज्ञा मानी जाती है और उनके आदेशों पर एतराज़ करने वाले को तुरन्त मार डाला जाता है। उनके पास कुछ रक्षक हैं पर कोई नियमित सेना नहीं है। उनकी अवज्ञा करने का परिणाम निश्चित मृत्यु है।

मैंने उस्तेन से पूछा—"यह देश कितना लम्बा चौड़ा है और कितने लोग इसमें रहते हैं।" उसने कहा कि जहाँ तक उसकी जानकारी है, इसमें हमारे जैसे दस 'कुटुम्ब' हैं। हमसे बड़ा वह 'कुटुम्ब' है जिसमें रानी स्वयं रहती हैं। सब 'कुटुम्ब' गुफाओं में ही रहते हैं। ये गुफाएँ दलदलों के बीच इसी प्रकार की ऊँची चट्टानी भूमि पर बनी हुई हैं। इनमें आने-जाने के गुप्त मार्ग हैं। अक्सर इन कुटुम्बों में परस्पर लड़ाई भी हो जाती है और जब 'श्री' लड़ाई बंद कर देने की आज्ञा देती हैं तुरन्त वह बन्द हो जाती है। इन लड़ाइयों और दलदलों के कारण होने वाले ज्वरों के कारण उनकी आबादी ज्यादा बढ़ने नहीं पाती। उनका किसी और जाति से कोई सम्बन्ध नहीं है; कोई जाति हमारे निकट रहती भी नहीं। कारण शत्रु इन दलदलों को पार नहीं कर सकते। एक बार महा नदी (कदाचित् ज़ाम बेज़ी) की ओर से एक सेना आई और उसने हम पर

आक्रमण करने की चेष्टा की, पर इन दलदलों में ही फँसकर खतम हो गई। रात में बड़ी-बड़ी ज्वालाओं को वहाँ चलते-फिरते देखकर शत्रुओं ने सैनिक पड़ाव समझ वहाँ पहुँचने का प्रयत्न किया और उसमें आधे डूब गए। जो बचे वे ज्वर तथा भूख से तड़प-तड़पकर मर गए। ये दलदल सर्वथा दुर्गम हैं; जो लोग उसके गुप्त मार्ग जानते हैं वे ही इसमें आ जा सकते हैं। अगर आप लोग यहाँ लाए न गए होते तो हर्गिज इस स्थान तक नहीं पहुँच सकते थे।

चार दिनों में ये तथा इस तरह की और भी बहुत-सी बातें हमें उस्तेन से मालूम हो गईं। इनके कारण हमारी चिन्ता और बढ़ गई। सारी कहानी अद्भुत थी, अविश्वसनीय लगती थी। सबसे आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह ठीकरे के लेख से बहुत कुछ मिलती-जुलती थी। यह तो मालूम ही हो गया है कि एक रहस्यमयी रानी है जिसमें अद्भुत शक्तियों की कल्पना की जाती है और जो 'श्री' के नाम से विख्यात है। मुझे तो ये बातें कुछ समझ में ही न आती थीं, न लियो ही उनका कुछ ओर-छोर निकाल पाता था। हाँ, इतना जरूर था कि उसकी मुझ पर विजय हो चुकी थी क्योंकि मैं सदा इस कहानी का उपहास किया करता था।

जहाँ तक जाब का सवाल है, उसने कुछ सोचना-विचारना ही छोड़ दिया था और अपने को परिस्थिति रूपी सागर पर बहने के लिए छोड़ दिया था। अरब मोहम्मद के साथ अमाहज़र लोग शिष्टता का बर्ताव तो करते थे पर उसको घोर घृणा के साथ देखते थे। वह बहुत भयभीत था; मैं समझ नहीं पाता था कि वह इतना डरा हुआ क्यों है। वह सारे दिन गुफा के एक कोने में बैठा अल्लाह और नबी को रक्षा के लिए पुकारा करता था। जब मैंने उससे बहुत पूछा तो उसने कहा कि मैं इसलिए डरा हुआ हूँ कि ये वस्तुतः स्त्री-पुरुष नहीं हैं, बल्कि शैतान हैं, और यह देश ही असली नहीं जादू का है। तब से कभी-कभी मुझे भी ऐसा ही प्रतीत होता है। इस प्रकार समय बीतता गया, यहाँ तक कि बिल्लाली के जाने के चौथे दिन की रात आ गई।

हम तीनों उस्तेन के साथ गुफा में आग के चारों ओर बैठे हुए थे। सोने का समय हो रहा था। उस्तेन जो देर से कुछ सोच-विचार में पड़ी, चुपचाप बैठी हुई थी, एकाएक उठ खड़ी हुई और लियो के सुनहले घुँघराले बालों पर हाथ फेरती हुई गाने लगी। आज भी जब मैं अपनी आँखें बन्द करता हूँ, मैं

उसके सुन्दर, सुगठित, सुवस्त्राच्छादित आकार को बारी-बारी से जलती आग के प्रकाश और छाया में चमकते और अपनी मनोभावनाओं को गीत रूप में उँडेलते देखता हूँ। उसके गीत का आशय यह था :—

तुम मेरे चुने हुए हो—आदि से मैंने तुम्हारी प्रतीक्षा की है !
तुम बहुत सुन्दर हो। तुम्हारे जैसे बाल किसके हैं, या किसका वर्ण इतना गौर है ?
किसकी भुजाएँ इतनी दृढ़ हैं ; कौन तुम जैसा पुरुष है ?
तुम्हारी आँखें गगन हैं, और उनमें निहित प्रकाश तारागण हैं।
तुम पूर्ण तथा आनन्द-विह्वल मुख वाले हो ; मेरा हृदय तुम्हारी ओर खिंच गया है।
ज्योंही मेरे नयनों में तुम पड़े मुझमें तुम्हारी आकांक्षा जाग्रत हुई।
तब हे प्रियतम ! मैं तुम्हें अपने निकट लाई।
और तुम्हें दृढ़तापूर्वक पकड़े रही कि तुम्हें कोई हानि न पहुँचे।
मैंने तुम्हारे मस्तक को अपने बालों में छिपा लिया, कि कहीं सूर्य उस पर आघात न कर दे ;
और मैं पूर्णतः तुम्हारी हो गई ; तुम पूर्णतः हमारे हो गए।
ये सुख के दिन चलते रहे पर आखिर बुरा दिन आ गया।
और तब उस दिन क्या हुआ ?
हाय ! मेरे प्रियतम ! मैं नहीं जानती !
पर मैंने तुम्हें फिर नहीं देखा—मैं, मैं अन्धकार में भटक गई।
और उसने जो मुझसे ज्यादा शक्तिमान है, तुमको मुझसे छीन लिया, —वह
जो उस्तेन से अधिक गौर वर्णी है।
तब भी तुमने फिरकर मेरी ओर देखा और मुझे पुकारा। अपनी आँखों को अन्धकार में खोजने दो।
फिर भी वह अपने सौन्दर्य से हावी हो गई और तुम्हें भयानक स्थानों में ले गई
और फिर आह ! हाय मेरे प्रियतम—

Accession Number 25967

Class No.........

एकाएक उस्तेन का गाना, जिसे हम ठीक-ठीक समझ न पाये, खत्म हो गया और उसने अपने सामने की गहरी छाया पर आँखें गड़ा दीं। तब एक क्षण में उसकी आँखों में भय का भयानक सूनापन आया जैसे वे अधदेखी किसी भयानकता पर स्थिर हो गई हों। उसने लियो के सिर से अपना हाथ उठाकर अंधकार की ओर संकेत किया। हम सबने उधर देखा पर कुछ दिखाई न दिया पर वह कुछ देख रही थी या उसका ख्याल था कि देख रही है—ऐसी चीज जिसने उसकी फौलादी नाड़ियों पर भयानक प्रभाव डाला क्योंकि वह उधर देखते-देखते बेहोश होकर धम्म से हमारे बीच गिर पड़ी।

लियो, जिसे इस सुन्दर तरुणी से काफ़ी लगाव हो गया था, उसकी यह दशा देखकर बहुत घबरा गया। और मेरे होश-हवास भी ठिकाने न रहे। सारा दृश्य और परिस्थिति अमानवीय थी।

थोड़ी देर बाद ऐंठकर काँपती हुई वह उठ बैठी।

लियो ने सुन्दर अरबी में पूछा—"उस्तेन, तुम्हारा क्या मतलब था?"

जबर्दस्ती की हँसी हँसते हुए उस्तेन बोली—"कुछ नहीं, मेरे प्रियतम! मैं अपनी जाति की प्रथा के अनुसार तुम्हें गाना सुना रही थी। मेरा और कोई मतलब न था। जो कुछ अभी नहीं हुआ उसके बारे में मैं कैसे कुछ कह सकती थी?"

मैंने उसके चेहरे पर आंखें गड़ाकर कहा—"और तुमने देखा क्या था उस्तेन?"

उसने फिर कहा—"नहीं, मैंने कुछ नहीं देखा। मुझसे न पूछो कि मैंने क्या देखा। मैं तुम्हें क्यों भयभीत करूँ?" फिर लियो की ओर बड़ी ही कोमलता के साथ देखती हुई—वैसी कोमलता सभ्य या असभ्य किसी स्त्री के चेहरे पर मैंने कभी नहीं देखी—उसने लियो का सिर अपने दोनों हाथों से पकड़कर माथे का इस प्रकार चुम्बन लिया जैसे माँ अपने बच्चे का लेती है।

उसने कहा—"हे मेरे प्यारे! जब मैं तुम्हारे पास से चली जाऊँ और रात में अपने हाथ फैलाने पर तुम मुझे न पाओ तो समय-समय पर मुझे याद करना, क्योंकि सचमुच मैं तुम्हें बहुत चाहती हूँ, यद्यपि मैं तुम्हारे चरण धोने योग्य भी नहीं हूँ। आओ अब हम एक दूसरे को प्यार करें और जो कुछ हमें मिला है उस पर खुशी मनायें; क्योंकि कब्र में जाने पर तो न प्रेम रहेगा, न यह

... Pratap College
SRINAGAR

25962

गर्मी रहेगी, न चूमने को ये अधर होंगे ।—कदाचित् कुछ न रह जायगा; केवल बीती बातों की तीक्ष्ण स्मृतियाँ भर रह जायंगी । आज की रात हमारी है; आने वाला कल किसका होगा, इसे कौन जानता है ?"

अध्याय ८

विचित्र दावत और उसके अनन्तर

जो कुछ उसने व्यक्त किया उससे अधिक उसने भविष्य के प्रति जो संकेत दिये उसके कारण यह अद्भुत दृश्य किसी भी दर्शक के ऊपर गहरा असर डालने के लिए काफ़ी था । इसके दूसरे दिन हमें सूचित किया गया कि हमारे सम्मान में शाम को एक भोज दिया जाएगा । मैंने यह कहकर इससे इन्कार करने की बड़ी कोशिश की, कि हम लोग सीधे-सादे आदमी हैं और भोजों की परवा नहीं करते, पर चूंकि हमारी बातों का स्वागत नाराज़गी के मौन से हुआ, मैंने और कोई एतराज़ करना उचित नहीं समझा ।

सूर्यास्त के पूर्व मुझे सूचना दी गई कि सब चीजें तैयार हैं । मैं जाब के साथ गुफा के अन्दर गया । वहाँ लियो से भेंट हुई और जैसा सदा होता था, लियो के पीछे-पीछे उस्तेन भी आ गई । वे दोनों कहीं घूमने गए थे और उस समय के पूर्व उन्हें प्रस्तावित भोज का कुछ पता न था । जब उस्तेन ने इसकी बाबत सुना तो मैंने देखा कि उसके खूबसूरत चेहरे पर भय की रेखा उभर आई । घूमकर उसने एक आदमी, जो गुफा में से जा रहा था, की बाँह पकड़ ली और उससे धृष्ट स्वर में कुछ पूछा । उस आदमी के उत्तर से उसे कुछ तसल्ली होती मालूम पड़ी, क्योंकि उसकी घबराहट कम हो गई थी, यद्यपि सन्तोष नहीं हो पाया था । उसने फिर उस आदमी से, जो कोई अधिकारी प्रतीत होता था, कुछ अनुरोध किया, पर इस बार उसने क्रोध के साथ उत्तर दिया और उसे धकेल दिया । पर क्षणभर में ही उसका मन बदल गया और उसने बाँह पकड़ कर अपने और दूसरे आदमी के बीच, आग के पास बिठा लिया, और मैंने

अनुमान किया कि किसी कारण से उस्तेन ने इस प्रकार उसके आदेश का पालन करना ही उचित समझा होगा।

उस रात गुफा की आग रोज़ की अपेक्षा वृहदाकार थी और उसके चारों ओर गोल बाँधकर ३५ पुरुष और २ स्त्रियाँ बैठी हुई थीं। स्त्रियों में एक तो उस्तेन ही थी; दूसरी वह स्त्री थी जिससे उस दिन जाब भाग खड़ा हुआ था। जैसी उनकी प्रथा थी सब आदमी बिल्कुल चुपचाप बैठे हुए थे और सबके पीछे एक-एक बर्छा चट्टान में उसी कार्य के लिए बने छिद्र में फँसाकर खड़ा रखा था। दो ही एक पीले रंग का फलालैन का कपड़ा पहने हुए थे; और सब केवल तेंदुए का कमरपेटा बाँधे हुए थे, और उनका सारा शरीर नंगा था।

जाब ने सन्दिग्ध स्वर में पूछा—"जनाब! अब यह क्या मामला है? मेहरबानी करके मुझे बचाइए। देखिए फिर वही औरत आई है। लेकिन अब वह मेरे पीछे क्यों पड़ेगी, मैंने उसे कोई प्रोत्साहन नहीं दिया। इस सारे गिरोह को देखकर मैं काँप उठता हूँ। हाँ, यह सच है। पर उधर देखिए, इन लोगों ने मोहम्मद को भी भोजन के लिए बुलाया है और वह औरत उससे कैसे हावभाव से बातें कर रही है। मुझे खुशी है कि मेरा पिण्ड तो छूटा।"

हमने उधर देखा। सचमुच ही वह औरत मोहम्मद को उस कोने से उठाकर अपने साथ ला रही थी जहाँ वह दुबका बैठा डर से काँप रहा था और अल्लाह को पुकार रहा था। वह भी उसके साथ आने को तैयार नहीं था क्योंकि और कारणों को छोड़ भी दें तो उसे ऐसा सम्मान प्राप्त करने का अभ्यास नहीं था—अभी तक उसे बराबर अलग भोजन दिया जाता था। जो भी हो यह तो साफ़ ही दिखाई देता था कि वह बहुत डरा हुआ है और उसके पैर उसके मोटे शरीर को अग्रसर करते हुए लड़खड़ा रहे हैं। हाथ पकड़कर लाने वाली औरत के कारण वह नहीं आ रहा था, बल्कि अपने पीछे बैठे हुए अमाहजर रूपी जंगली निर्दयता के साधनों तथा भयंकर बरछे के कारण डरकर आ रहा था।

मैंने अपने साथियों से कहा—"मुझे ये रंग-ढंग नापसन्द हैं। मेरा ख्याल है, हमें यह सब सहना ही होगा। क्या तुम लोगों के पास अपने-अपने रिवाल्वर, तमंचे हैं? यदि हैं तो अच्छा होगा कि हम उन्हें भर लें।"

जाब ने कहा—"मेरे पास तो है पर श्री लियो के पास सिर्फ शिकारी छुरा है, यद्यपि वह भी काफ़ी बड़ा है।"

यह अनुभव कर कि अपने स्थान से लियो के उसे लाने तक प्रतीक्षा करना ठीक न होगा, हम बहादुरी से आगे बढ़े और अपनी पीठ गुफा से टिकाकर एक पंक्ति में बैठ गए।

हमारे बैठते ही मिट्टी के कूंड़े में एक प्रकार की मदिरा चतुर्दिक् घुमाई गई, जिसका स्वाद कुछ बुरा न था। यह एक प्रकार के देशी अनाज को कूटकर बनाई गई थी, जो अफ्रीका के दक्षिणी भागों में गुच्छों में पैदा होता है और जिसे 'काफिर मकई' कहते हैं। जिस पात्र में मदिरा थी उसकी बनावट विचित्र प्रकार की थी। अमाहजर लोग इस प्रकार के पात्र प्रायः इस्तेमाल करते हैं। ये पात्र बहुत पुराने ज़माने के बने हुए हैं और विभिन्न आकार के हैं। सैकड़ों क्या, हज़ारों वर्ष के बीच तो उस देश में वे बने न होंगे। वे चट्टानी मक़बरों में मिलते हैं जिसका वर्णन हम उचित अवसर पर करेंगे। मेरा तो विश्वास है कि प्राचीन मिश्रियों की प्रथा के अनुकरण में ये मृतकों की आँत रखने के लिए बनाए गए होंगे। इस देश के पुराने निवासियों का मिश्रियों से कुछ सम्बन्ध रहा होगा। लियो का मत था कि मृतकों की प्रेतात्माओं के उपयोग के लिए इन्हें रखा जाता रहा होगा।

ज्यादातर ये पात्र दो मुठिया वाले होते हैं और तीन फुट से तीन इंच तक, अनेक आकारों में मिलते हैं। आकार में भिन्नता होते हुए भी सब बहुत सुन्दर हैं। उन पर तरह-तरह की चित्रकारी है, जो बड़ी लुभावनी तथा जीवित-सी दिखती है। कुछ चित्रों में प्रेम के दृश्य ऐसी बाल-सुलभ सरलता तथा स्वतन्त्रता के साथ अंकित किये गए हैं जो आज के लोगों की रुचि के अनुकूल नहीं। कुछ में नाचती कुमारियों तथा कुछ में शिकार के दृश्य हैं। जिस पात्र से उँडेलकर हमने मदिरा पी उसी के एक तरफ कुछ गोरे आदमी बरछे से एक हाथी को मारते हुए दिखलाए गए थे और दूसरी तरफ की तस्वीर में, जो उतनी अच्छी न थी, एक शिकारी किसी भागते हुए मृग को वाण मारता दिखाया गया था।

एक खतरनाक अवसर पर ये बातें अप्रासंगिक-सी लगेंगी; पर, चूंकि वह अवसर बड़ी देर तक रहा इसलिए 'मज़ा मुंह का बदलने के लिए' थोड़ा

विषयान्तर कर दिया। बहुत देर तक बार-बार वही पात्र घूमकर आता रहा और आग में लकड़ियाँ डाली जाती रहीं। कोई एक शब्द भी न बोला। हम बिल्कुल नीरव बैठे उस आग की लपट और प्रकाश को तथा मिट्टी के टिमटिमाते दीपकों से निकलती परछाइयों को देखते रहे। हमारे और आग के बीच एक बड़ा कठौता रखा था, जिसमें छोटी-छोटी चार मुठियाएँ लगी थीं। इस कठौते के एक तरफ बड़ी मुठिया वाली दो संडासियाँ पड़ी थीं। आग की दूसरी तरफ़ भी उनका एक जोड़ा रखा था। किसी कारणवश मुझे इस कठौते और संडासियों का वहाँ होना अच्छा न लग रहा था। मैं वहाँ बैठा हुआ उन्हें तथा चक्कर में बैठे आदमियों के क्रूर चेहरों को देख रहा था। मैं सोच रहा था कि यह सब कुछ भयानक है और हम लोग इन डरावने आदमियों के कब्जे में हैं। वे मुझे और भी ज्यादा भयंकर इसलिए लगते थे कि उनकी यथार्थ प्रकृति अभी तक हमारे लिए एक रहस्य के समान थी। मैं उन्हें जो कुछ समझता था उससे वे अच्छे हो सकते हैं या ज्यादा खूँखार हो सकते हैं। मुझे दूसरी बात का ज्यादा शुबहा था। मेरा सोचना गलत नहीं था। यह विचित्र दावत थी, क्योंकि इसमें खाने के लिए कुछ न था।

आखिरकार ज्यों ही मुझे मालूम होने लगा कि मुझे सम्मोहित (मेस्मेराइज्ड) किया जा रहा है, दूसरी तरफ से एक आदमी एकाएक ज़ोर से चिल्ला पड़ा :

"हमारे खाने के लिए मांस कहाँ है ?"

इस पर गोलाई में बैठे हुए प्रत्येक आदमी ने आग की ओर हाथ फैलाकर गहरी, नपी-तुली आवाज़ में कहा :

"मांस आता है, आता है।"

"क्या बकरे का मांस है ?"

"हाँ, ऐसे बकरे का जिसे सींग नहीं है, बल्कि बकरे से भी अच्छा ! हम उसे मारेंगे।" सबने एक आवाज़ में कहा और पीछे फिरकर हर एक ने अपने-अपने बर्छे को दाहिने हाथ से उठाया और फिर वैसे रख दिया।

"क्या वह बैल का मांस है ?" फिर एक ने पूछा।

"हाँ, वह बिना सींग के बैल का मांस है, बल्कि बैल से भी अच्छा। हम उसे मारेंगे।"—सबने एक साथ उत्तर दिया।

इसके बाद सन्नाटा छा गया। किन्तु यह देखकर मारे भय के मेरे रोंगटे खड़े हो गए कि मोहम्मद के पास वाली उस औरत ने उसके साथ प्यार जताना शुरू कर दिया है; वह कभी उसके गालों पर हाथ फेरती है, कभी प्यार भरे नामों से उसे पुकारती है पर अपनी क्रूर आंखों से उसके काँपते शरीर को घूरती भी जाती है। इस दृश्य ने न जाने क्यों मुझे डरा दिया, पर मैं ही क्यों सभी भयग्रस्त हो गए थे—विशेषतः लियो तो बहुत डर गया था। यह दुलार सर्पिणी के दुलार के समान था और किसी भयानक षड्यन्त्र का—जिसको पूरा करने के लिए ये सब इकट्ठे हुए थे—एक भाग था। मैंने देखा कि मोहम्मद का भूरा रंग मारे डर के सफेद हो गया है—उस पर बीमारी जैसी सफेदी छा गई है।

इसी समय ज़ोर से आवाज़ आई—"क्या पकाने के लिए मांस तैयार है?"

"तैयार है। तैयार है।" सबने एक साथ उत्तर दिया।

"क्या घड़ा उसे पकाने के लिए गर्म हो गया है?"

"वह गर्म है। वह गर्म है।" सबने कहा।

लियो बोला—"हे भगवान्! उस लेख की याद करो।

'वे लोग अजनबियों के सिर पर घड़ा रखते (और यों उन्हें मार डालते) हैं।"

उसके कहते ही, हम लोग हिलें इसके पूर्व ही दो बदमाश कूदकर खड़े हो गए और लम्बी संडासियों की मूठ पकड़कर उन्हें आग के बीच में खिसका दिया। उधर उस औरत ने, जो मोहम्मद को दुलार रही थी, अपने कपड़ों में से रस्सी का एक फंदा निकाला और उसे मोहम्मद की गर्दन में डालकर खींच लिया, जिससे उसकी गर्दन फंदे में कस गई। पास बैठे दूसरे आदमियों ने उसके पाँव पकड़ लिये। उधर आग के पास वाले दोनों आदमियों ने संडासियों से आग और अंगारों को हटाकर इधर-उधर कर दिया और उसमें से एक बड़ा मिट्टी का घड़ा निकाला जो खुद अंगार की तरह लाल हो रहा था। वे उसे लेकर उस स्थान पर पहुँच गए, जहां मोहम्मद अपनी जान बचाने के लिए हाथ-पाँव झटक रहा था। निराशा में वह दैत्य के समान अपने शत्रुओं से लड़ रहा था और रह-रहकर चीखता था। वे लोग उसके सिर पर वह जलता हुआ घड़ा रखना चाहते थे, पर गला फँसने और पाँव से जकड़े होने के बावजूद वह इतनी ज़ोर

से तड़प रहा था कि वे अपने नाटकीय उद्देश्य में सफल नहीं हो रहे थे।

मैं डर के मारे ज़ोर से चीखकर खड़ा हो गया और अपना रिवाल्वर निकालकर सीधे उस राक्षसी पर गोली दाग़ दी जो पहले मोहम्मद को दुलरा रही थी और जो इस समय उसकी बाहों को जकड़े हुए थी। गोली उसकी पीठ में लगी और वह तुरन्त मर गई जिसके लिए मुझे आज तक खुशी है; क्योंकि जैसा मुझे बाद में मालूम हुआ, इसी औरत ने जाब द्वारा किये हुए तिरस्कार का बदला लेने के लिए, अमाहजर लोगों की प्रथा के अनुसार, यह सब काण्ड रचा था। वह मरकर गिर पड़ी पर मैंने बड़े भय और निराशा के साथ देखा कि उसके मरकर गिरते ही मोहम्मद भी दानवों के पंजे से अपने को छुड़ाकर ऊपर उछला और वह भी उस औरत की लाश मर कर गिर गया। हमारे रिवाल्वर से छूटी हुई भारी गोली दोनों के शरीर से होती निकल गई थी और उसने हत्यारिणी का ही अन्त नहीं कर दिया था बल्कि उसके शिकार को भी सौ गुने अधिक भयानक मृत्यु के चंगुल से मुक्त कर दिया था। इसलिए भयानक होते हुए भी यह घटना दया से पूर्ण थी।

क्षण भर के लिए सब आश्चर्य से अभिभूत हो गए। अमाहजर लोगों ने इसके पहले कभी तमंचे-बन्दूक की आवाज नहीं सुनी थी। इसलिए इसका परिणाम देखकर वे सहम गए। पर शीघ्र ही हमारे पास खड़ा एक आदमी संभल गया और अपना बरछा उठाकर लियो को, जो उसके सबसे ज़्यादा निकट था, मारना चाहा।

"भागो-भागो!" मैं चिल्लाया और जितनी तेज़ी से भाग सकता था, स्वयं गुफा से बाहर की ओर भागा। यदि संभव होता तो मैं बाहर निकल जाता, पर रास्ते में आदमी खड़े थे। फिर मैंने देख लिया था कि गुफा के द्वार के बाहर भी आदमियों की एक भीड़ एकत्र है। मैं गुफा में भागता रहा और मेरे पीछे मेरे साथी भाग रहे थे और हम लोगों के पीछे उस औरत की मृत्यु के कारण पागल से हो रहे आदमखोरों की भीड़ आ रही थी। उछलकर मैं फर्श पर पड़े मोहम्मद की लाश को पार कर गया किन्तु वैसा करने में पास ही पड़े जलते घड़े की आँच मुझे लग गई। उस आँच में मैंने यह भी देखा कि मोहम्मद का हाथ हिल रहा है और अभी तक वह बिल्कुल निर्जीव नहीं हुआ है। इस गुफा के सिरे पर एक चट्टानी चबूतरा था, जो तीन फुट ऊँचा और आठ फुट चौड़ा

रहा होगा। इस पर रात को दो बड़े दीपक रखे जाते थे। आखिर हम तीनों उछलकर इस पर चढ़ गए और हमने निश्चय कर लिया कि मरने के पहले जितना लड़ना संभव होगा लड़ेंगे। हमें इस प्रकार लड़ने को सन्नद्ध देखकर हमारा पीछा करने वाले थोड़ी देर के लिए रुक गए। जाब को हमने बाईं तरफ़ किया, लियो को बीच में रखा और मैं दाहिने हो गया। हमारे पीछे दीपक थे। लियो झुककर, उस लम्बे गलियारे को जो आग के पास तक चला गया था और उसमें आते-जाते हमारे भावी खूनियों की लम्बी परछाइयों को देख रहा था। उनके भाले रह-रहकर चमक उठते थे। वह गरम घड़ा अब भी अँधियारे में मानो क्रोध से दहक रहा था। उस समय लियो की आँखों से चिनगारी निकल रही थी उसके सुन्दर चेहरे पर पत्थर की दृढ़ता थी। उसके दाहिने हाथ में लम्बा शिकारी छुरा था। उसने छुरे के तस्मे को ढीला करके कलाई तक खिसकाया और तब उसने अपनी दोनों बाहें मेरे गले में डालकर मेरा आलिंगन किया।

उसने कहा—"मेरे प्यारे मित्र ! मेरे लिए पिता से भी अधिक ! मैं तुमसे विदा होता हूँ। इन राक्षसों से बचने की कोई आशा नहीं है। चंद मिनटों में ये हमें मार डालेंगे और बाद में खा जाएंगे। विदा ! मैं ही तुम्हें यहाँ लाया। मुझे आशा है, तुम मुझे क्षमा कर दोगे। जाब ! विदा।"

मैंने दाँत पीसते और मौत के लिए तैयार होते हुए कहा—"ईश्वर की इच्छा पूरी हो।" उसी समय चिल्लाकर जाब ने अपना रिवाल्वर ऊंचा किया, गोली दाग़ी और एक आदमी को घायल कर दिया—उसे नहीं जिस पर निशाना साधा था। जाब जिस पर भी निशाना लगाता वह सुरक्षित ही रहता था।

अब वे तेज़ी से आगे बढ़े और मैंने भी जितनी शीघ्रता से गोली चलाना संभव था चलाकर बीच में ही रोक दिया। उस औरत के अलावा मैंने और जाब ने मिलकर पाँच और आदमियों को मारा या सांघातिक रूप से घायल कर दिया। अब हमारी पिस्तौलें खाली हो चुकी थीं और इतना समय न मिलता था कि हम उन्हें पुनः भर लें। इतनों के मर जाने पर भी वे आगे बढ़ते ही रहे।

एक तगड़े आदमी ने चबूतरे पर चढ़ने की कोशिश की पर लियो ने छुरे का ऐसा वार किया कि वह उसके शरीर के आरपार हो गया और वह मरकर नीचे गिर गया। मैंने भी एक दूसरे आदमी को इसी तरह मारकर गिरा दिया।

लेकिन जाब का वार खाली गया और एक अमाहज्र ने उसकी कमर में हाथ डालकर उसे चबूतरे के नीचे पटक दिया। लेकिन जाब का छुरा तस्मे द्वारा उसके हाथ में बँधा न था, इसलिए ज्यों ही अमाहज्र चबूतरे पर झुका छुरे की नोक उसके अन्दर घुस गई और वह ठंडा हो गया। उसके बाद जाब का क्या हुआ, यह मुझे नहीं मालूम ; मेरा ख्याल है कि वह अपने मृत आक्रमणकारी की लाश पर पड़ा रहा।

इसके बाद दो राक्षसों से फिर मेरी लड़ाई शुरू हो गई। सौभाग्य से वे दोनों अपने बरछे पीछे छोड़ आए थे। पहली बार मेरा कसरती बदन और मेरी शारीरिक शक्ति मेरे काम आई। मैंने एक आदमी के सिर पर अपना लम्बा शिकारी छुरा, जो छोटी तलवार जैसा था, इस ज़ोर से मारा कि उसकी खोपड़ी को चीरता हुआ उसकी आँखों तक पहुँच गया और वह धम्म से ज़मीन पर गिर गया।

तब दूसरे दो मेरी ओर झपटे। मैंने उनको आते देखा और एक-एक हाथ दोनों की कमर में डालकर पकड़ लिया। हम तीनों चबूतरे से गुफा के फर्श पर गिर पड़े और बार-बार एक दूसरे के ऊपर-नीचे लुढ़कने लगे। वे बड़े मज़बूत थे, पर मैं गुस्से से पागल हो रहा था और मुझ पर लड़ाई का भयानक नशा छा गया था, जो मानव हृदय में तब घर कर जाता है जब वह मौत और जीवन के बीच में झूल रहा होता है और चारों ओर से उस पर वार हो रहे होते हैं। उन भारी दैत्यों को मेरी बाहों ने इस तरह दबा रखा था और मैंने उन्हें इस तरह अपने शरीर से दबा रखा था कि उनकी पसलियाँ कड़कड़ाकर टूट गईं। तब वे मुझे घूंसों से मारने और दाँत काटने लगे पर मैंने उन्हें छोड़ा नहीं और धीरे-धीरे वे मुरदा हो गए और ढीले पड़ गए। मैं नहीं जानता कि मेरे कैम्ब्रिज कालेज के अध्यक्ष, जो शांति सभा के सदस्य हैं, मुझे ऐसे खूंखार युद्ध में लगा देख पाते तो क्या कहते। मैंने उन दोनों को अब भी नहीं छोड़ा क्योंकि यद्यपि वे बेजान-से हो गए थे पर बहुत धीरे-धीरे उनके प्राण निकल रहे थे। मैं जानता था कि यदि छोड़ दूँगा तो वे जी जाएँगे। दूसरे राक्षसों ने उस अँधियारे में समझा कि हम तीनों मर गए इसलिए उन्होंने हमसे कोई छेड़छाड़ नहीं की।

मैंने अपना सिर फिराकर देखा कि लियो अब चट्टान से नीचे उतर गया है। वह अब भी अपने पाँव पर खड़ा था और लड़ रहा था, पर उसे बहुत से

आदमियों की एक भीड़ ने चारों ओर से घेर लिया था, जैसे किसी हिरन को भेड़ियों ने घेर रखा हो। उसके लम्बे होने के कारण उनके बीच में भी उसका सुन्दर, पीला चेहरा दिखाई दे रहा था, जिस पर उसके चमकीले घुंघराले बाल फैले हुए थे। उनके बीच घिरा हुआ भी वह इस तेज़ी से लड़ रहा था कि बहुत प्रशंसनीय पर भयानक लगता था। वे लोग उसके इतने नज़दीक थे कि बरछे का प्रयोग नहीं कर पाते थे और उनके पास छुरे या डंडे न थे। लियो ने एक आदमी को छुरे से साफ कर दिया पर छुरा उसके हाथ से गिर पड़ा और वह निरस्त्र हो गया। मैंने सोचा—बस अन्त आ गया। पर नहीं, झपटकर उस आदमी को, जिसको उसने मारा था, हाथों से उसने उठा लिया और इस ज़ोर से भीड़ पर फेंका कि उसके धक्के से लड़खड़ाकर पाँच-छः आदमी ज़मीन पर गिर गिए; पर क्षण भर बाद वे फिर उस पर झपटे और धीरे-धीरे भेड़ियों ने उस शेर को दबोच लिया। इतने पर भी एक बार झपटकर उसने एक अमाहग्गर को घूंसों से मारकर गिरा दिया, पर एक आदमी इतने आदमियों के विरुद्ध कब तक लड़ सकता था। अन्त में वह बलूत वृक्ष की भाँति अपने साथ बहुतों को लिये दिये फर्श पर गिर पड़ा। उन लोगों ने उसके हाथ-पाँव बाँध दिये और शरीर को निर्वस्त्र कर दिया।

एक आवाज़ आई—"बरछा लाओ बरछा, इसका गला काटने के लिए और एक पात्र इसका खून एकत्र करने के लिए।"

मैंने देखा कि एक आदमी बरछा लिये दौड़ा जा रहा है, इसलिए मैंने अपनी आँखें बन्द कर लीं। मैं धीरे-धीरे दुर्बल होता जा रहा था और मेरे ऊपर पड़े दोनों आदमी अब भी पूर्णतः निर्जीव नहीं हुए थे, तथा एक सांघातिक शिथिलता मुझ पर छाती जा रही थी, इसलिए मैं भी लियो की कुछ मदद नहीं कर सकता था।

एकाएक हुल्लड़ मचा और मेरी आँखें निश्चेष्ट स्वयं खुल गईं। मैंने उस हत्या के दृश्य की ओर नज़र डाली। वह लड़की उस्तेन लियो के शिथिल पड़े शरीर को अपने शरीर से ढके हुए थी और उसने अपनी बाहें उसके गले में डाल रखी थीं। वे लोग बार-बार उस्तेन को खींचकर अलग कर देने का प्रयत्न करते थे, पर वह लियो के पाँव में अपने पाँव लपेटकर इस तरह चिपटी हुई थी, जैसे कोई लता वृक्ष से चिपट जाती है। इसलिए वे लोग उसे अलग न कर पा रहे

थे। इसके बाद उन लोगों ने उस्तेन को जख्मी किए बिना लियो को वगल से छुरा मारने की कोशिश की पर जिधर वे वार करना चाहते उधर ही वह लियो को ढक लेती। इस प्रकार वह बराबर लियो को बचाती रही और वह मारा नहीं जा सका, केवल घायल हुआ।

अन्त में उन लोगों का धीरज छूट गया। एक आदमी ने कहा—"दोनों को बरछे से भोंक दो। इस तरह मृत्यु में दोनों का विवाह हो जायगा।"

और मैंने देखा कि एक आदमी इस काम के लिए अपना बरछा उठा रहा है। मैंने ऊपर उठे बरछे को चमकते देखा और फिर मैंने अपनी आँखें बन्द कर लीं।

जैसे ही मैंने आँखें बन्द कीं, कि एक आदमी की आवाज़ कड़कड़ाती बिजली की भाँति सारी गुफा में सुनाई दी और चट्टानी रास्तों पर गूंज उठी।

"बन्द करो।"

इसके बाद मैं बेहोश हो गया और मुझे जान पड़ा कि मौत की अन्तिम शून्यता के बीच से मैं गुज़र रहा हूँ।

अध्याय ९

एक लघु चरण

जब मेरी आँख खुली तो मैंने देखा कि आग से थोड़ी ही दूर पर, जहाँ हम उस विचित्र दावत के लिए एकत्र हुए थे, मैं एक चमड़े की चटाई पर पड़ा हुआ हूँ। मेरे पास ही लियो भी पड़ा था किन्तु अब तक उसकी बेहोशी दूर न हुई थी। उसके ऊपर वह सुन्दर लम्बी लड़की उस्तेन, झुकी हुई, वगल में लगे एक गहरे बरछे के घाव को, पट्टी बाँधने के पूर्व, ठंडे पानी से धो रही थी। लड़की के पीछे गुफा की दीवार के सहारे जाब खड़ा था। बाहर से देखने पर तो वह घायल नहीं मालूम होता था; हाँ, इधर-उधर छिल ज़रूर गया था। पर वह अब भी काँप रहा था। आग की उस ओर अनेक आदमी पड़े हुए थे जिन्हें अपनी

जीवन-रक्षा की भयानक लड़ाई में हमने मारा था और जिन्हें देखकर जान पड़ता था मानो अत्यधिक थकावट से शिथिल होकर वे सोने के लिए जमीन पर पड़ रहे हों। औरत को लेकर कुल बारह लाशें थीं ; इनके अलावा बेचारे मोहम्मद—जो मेरे हाथ से मारा गया था—की भी लाश थी। थोड़ी दूर पर बहुत से आदमी बचे हुए आदमखोरों को पकड़कर उनकी मुश्कें कस रहे थे और दो-दो के हाथ एक में बाँध रहे थे। वे बदमाश एक अजीब लापरवाही से अपने को बंधवा रहे थे। पास ही खड़ा हमारा मित्र बिल्लाली, थका हुआ होने पर भी अपनी लम्बी दाढ़ी के कारण रोबीला दिख रहा था और इन बन्दियों के बारे में आवश्यक आज्ञाएँ दे रहा था।

इसके बाद वह मुड़ा और जब उसने देखा कि मैं बैठा हुआ हूँ तो मेरी ओर आया और बड़े ही विनीत भाव से पूछा कि अब तो तबीयत अच्छी है। मैंने उत्तर दिया—मैं खुद नहीं बता सकता कि मेरी क्या हालत है, पर इतना कह सकता हूँ कि सारा शरीर दर्द कर रहा है।

तब उसने झुककर लियो के घाव की परीक्षा की।

उसने कहा : "घाव बुरा है पर बर्छा अँतड़ियों तक नहीं पहुँच पाया। यह अच्छा हो जायगा।"

मैंने कहा—"मेरे पिता, इसका श्रेय आपके आगमन को है। एक मिनट बाद हम नीरोग होने की सीमा से बहुत दूर पहुँच गए होते, क्योंकि आपके उन राक्षसों ने हमारे नौकर की भाँति हमें भी मार दिया होता।" और मैंने मोहम्मद की ओर संकेत किया।

इस पर वह बुड्ढा दाँत पीसने लगा और उसकी आँखों में असाधारण दुर्भावना फूट निकली।

उसने उत्तर दिया—"मेरे वेटे ! डरो नहीं। उनसे ऐसा बदला लिया जायगा कि उसे सुनकर हड्डियों पर के माँस सिकुड़ जायँगे। वे सब 'श्री' के पास भेज दिये जायँगे और उनकी प्रतिहिंसा उनकी महत्ता के ही अनुरूप होगी। वह आदमी (मोहम्मद की ओर संकेत करता है) जिस तरह मरा, उसे इन जानवरों की जिस तरह मृत्यु होगी उसके सामने दयापूर्ण मृत्यु समझनी चाहिए। मैं तुमसे अनुरोध करता हूँ कि मुझे बताओ, यह सब कैसे हुआ ?"

वह घटना जिस कारण और जिस प्रकार हुई थी, उसे संक्षेप में मैंने बता दिया।

उसने कहा—"अरे ऐसा हुआ! तुम देखते हो न मेरे बेटे! यहाँ एक प्रथा है कि यदि कोई अजनबी इस देश में आ जाय तो उसके सिर पर घड़ा रखकर उसे मार डाला जाय और खा लिया जाय।"

मैंने जोश के साथ कहा—"वाह! गोया आतिथ्य को उलट दिया गया है। हमारे यहाँ जब कोई अजनबी आता है तो हम उसकी खातिरदारी करते हैं; उसका मनोरंजन करते और खाने के लिए भोजन देते हैं। यहाँ आप लोग उसे खाकर अपना मनोरंजन करते हैं।"

कंधे हिलाकर उसने कहा—"यह एक प्रथा है। मैं खुद इसे बुरी समझता हूँ।" फिर कुछ सोचकर बोला—"पर मुझे अजनबियों का माँस पसंद ही नहीं है, विशेषतः उनका जो दलदलों में घूमते-फिरते और जंगली चिड़ियों का माँस खाते हुए यहाँ आते हैं। जब 'अवश्य-माननीया' ने आज्ञा दी थी कि तुम लोगों को मारा न जाय, तब उन्होंने उस काले आदमी के बारे में कुछ भी नहीं कहा, इसलिए आदमखोर होने के कारण इन आदमियों की जीभ उसके माँस के लिए लपलपा रही थी और उस औरत ने, जिसे तुमने ठीक ही क़त्ल कर दिया, उनके बुरे मन में यह बात जमा दी कि इसे गर्म घड़े से मार डालना चाहिए। उन्हें इसका मज़ा भी चखा दिया जायगा। वे 'श्री' के भयानक क्रोध के सामने खड़े हों इससे कहीं अच्छा उनके लिए यह होता कि वे मर गए होते और उन्हें आज का दिन देखने को न मिलता। वे सुखी और भाग्यवान हैं जो तुम्हारे हाथ से मारे गए।"

वह कहता गया—"तुमने बहादुरी की लड़ाई लड़ी। ऐ प्रलम्बबाहु, वृद्ध लंगूर! तुम जानते हो कि तुमने वहाँ मरे पड़े दोनों आदमियों को दबाकर उनकी पसलियों को यों तोड़ दिया जैसे लोग अंडे की खोल को तोड़ देते हैं। और उस तरुण शेर ने जो उदाहरण उपस्थित किया वह बड़ा शानदार था। एक तरफ इतने आदमी, दूसरी तरफ वह अकेला। तीन को तो उसने सीधे-सीधे खत्म कर दिया और चौथा—एक आदमी की ओर जिसका शरीर थोड़ा-थोड़ा हिल रहा था इशारा करके—कुछ देर में दुनिया से विदा हो जाएगा, क्योंकि उसकी खोपड़ी फट गई है। इनके अलावा बहुत-से जो बन्दी बना लिये गए,

घायल हैं। निश्चय ही तुम लोगों ने बड़ी वीरता दिखाई और इससे तुम दोनों मेरी प्रशंसा के पात्र और मित्र बन गए, क्योंकि मैं ऐसी वीरतापूर्ण लड़ाई को पसन्द करता हूँ। पर मेरे बेटे लंगूर—और मैं समझता हूँ कि तुम्हारा चेहरा भी बालों से पूर्ण है और सचमुच ही तुम लंगूर जैसे लगते हो—तुमने इनके शरीरों को छेद कर कैसे मारा ? वे कहते हैं कि तुम्हारी तरफ़ से आवाज़ हुई और आवाज़ के साथ ही वे गिर पड़े।"

मैंने जितना बता सकता था, संक्षेप में बता दिया। मैं भयानक रूप से थका हुआ था और सिर्फ इस ख्याल से बात कर रहा था, कि अगर कहीं मैंने उत्तर देने से इन्कार कर दिया, तो ऐसा शक्तिमान आदमी नाराज़ न हो जाए। मेरी बात सुनकर उसने कहा कि "ज़रा इन बन्दियों में से एक पर उसे (पिस्तौल) चलाकर दिखाओ तो। इसकी गिनती न की जाएगी और इससे न केवल मुझे प्रसन्नता होगी बल्कि तुम्हें तुरन्त प्रतिहिंसा का एक अवसर भी मिल जाएगा।" जब मैंने उसे बताया कि हम लोग इस प्रकार निहत्थों को नहीं मारा करते, न हम खुद अपना बदला लेते हैं बल्कि अपराधी को कानून द्वारा दण्डित किए जाने के लिए छोड़ देते हैं, तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने यह भी कहा कि "अच्छा होने पर मैं तुम्हें एक दिन शिकार खेलने ले चलूँगा, उस समय तुम खुद बन्दूक से किसी जानवर को मारकर सब कुछ देख लेना।" इस बात से वह इतना खुश हुआ जैसे बच्चे नये खिलौने के वायदे से खुश हो जाते हैं।

थोड़ी-सी जो ब्रांडी हमारे पास बची थी, वह जाब ने लियो के कंठ में उँडेल दी थी। उसके प्रभाव से लियो ने आँखें खोल दीं, और हमारी बातें समाप्त हो गईं।

लियो की हालत बहुत खराब थी और अब भी वह पूरी तरह होश में नहीं था ; पर जाब एवं उस वीर बाला उस्तेन की सहायता से किसी तरह हम लोग उसे बिस्तरे पर ले गए। जिस प्रकार उसने अपने प्राणों को खतरे में डालकर बहादुरी के साथ मेरे बेटे लियो की रक्षा की थी, उस पर मेरी इच्छा उसे चूम लेने की होती थी, पर मैं डरता था कि कहीं उसे बुरा न लगे। पर मैंने सोचकर निश्चय किया कि उस्तेन जैसी तरुणी से इस तरह का कोई बर्ताव न करना चाहिए जिससे किसी प्रकार की गलत-फहमी की संभावना

हो। इसलिए मैंने अपनी इस इच्छा को दबा दिया। इसके बाद घायल और पीड़ित होते हुए भी मैं अपने हृदय में सुरक्षितता की भावना लिये, जो इधर कई दिनों से बिल्कुल लुप्त हो गई थी, अपने कमरे में पहुँचा और प्रभु को उसकी कृपा के लिए धन्यवाद दिया जिसके बिना यह कमरा ही मेरे लिए कब्र बन गया होता। ऐसे आदमी दुनिया में बहुत ही कम होंगे जो हम लोगों की तरह मृत्यु के इतने निकट पहुँचकर उसके पास से सुरक्षित लौट आए हों।

अच्छे दिनों में भी मुझे नींद कम ही आती है। उस रात तो मैं बुरे-बुरे सपने भी देखता रहा। आग से लाल हुए गर्म घड़े से बचने के लिए, तड़पता मोहम्मद सपनों में बार-बार दिखाई देता था ; उस दृश्य की पार्श्वभूमि में मुझे एक बुर्कापोश शक्ल दिखाई देती थी जो कभी-कभी अपना बुर्का हटा देती और एक अत्यन्त सुन्दरी रमणी का आकार सामने खड़ा हो जाता, फिर वही सफेद कंकाल के रूप में बदल जाती जो कभी घूँघट के अन्दर और कभी बाहर होकर रहस्यमय पर ऊपर से निरर्थक लगने वाले इस वाक्य का बार-बार उच्चारण करती :

"जो जीवित है वह भी मृत्यु का मजा चख चुका है, और जो मरा हुआ है वह कभी न मरने वाला है, क्योंकि आत्म-चक्र में जीवन नहीं है, मृत्यु नहीं है। सब वस्तुएँ सनातन हैं, यद्यपि बीच-बीच में वे सो जाती हैं और विस्मृत हो जाती हैं।"

आखिर सुबह हुई पर मेरा शरीर लकड़ा गया था, यहाँ तक कि मैं उठ न सकता था। सात बजे के लगभग जाब मेरे पास आया ; वह बुरी तरह लँगड़ा रहा था और उसका चेहरा भी फीका पड़ गया था। उसने मुझे बताया कि लियो को रात अच्छी नींद आई पर वह बहुत दुर्बल है। इसके दो घण्टे बाद बिल्लाली हाथ में एक दीपक लिये आया। उसका सिर इस छोटे कमरे की छत को छू रहा था। मैंने आँखें मूँद लीं और सोते होने का बहाना किया, यद्यपि मैं आँख की कोरों से, बीच-बीच में, उसके तिरस्कारपूर्ण पर सुन्दर जीर्ण मुख को देख लेता था। उसने अपनी गृद्ध-दृष्टि मुझ पर डाली और अपनी शानदार धवल दाढ़ी पर हाथ फेरा और बुदबुदाया —"ओह ! यह कितना बदसूरत है जब दूसरा सुन्दर है। यह तो सचमुच लंगूर है। हमने अच्छा ही नाम रखा। पर मैं न जाने क्यों इस आदमी को चाहने

लगा हूँ—इस उम्र में मैं किसी आदमी को चाहने लगूँ, यह कैसे आश्चर्य की बात है ! कहावत है कि 'सब पर अविश्वास करो ; और जिस पर अविश्वास हो उसे क़त्ल कर दो। औरतों से दूर भागो, क्योंकि वे बला हैं और तुझे नष्ट कर देंगी।' यह अच्छी कहावत है, विशेषतः इसका अन्तिम भाग। मैं समझता हूँ कि बहुत प्राचीन काल से यह कहावत चली आई है। जो हो, मैं इस लंगूर को पसन्द करता हूँ। इसने इतनी चतुराई न जाने कहाँ से सीखी। मुझे विश्वास है कि 'श्रीमती' इसे अपने फंदे में न फँसा सकेगी। बेचारा लंगूर ! लड़ाई के बाद बहुत थक गया होगा। मैं चल दूँ नहीं तो उसकी नींद टूट जायगी।"

जब वह अँगूठे के बल लौटकर दरवाज़े के पास पहुँच गया, तब मैंने उसे पुकारा :

"मेरे पिता, क्या तुम हो ?"

उसने उत्तर दिया—"हाँ, बेटा मैं हूँ। पर मैं तुझे तकलीफ नहीं देना चाहता। मैं सिर्फ़ यह देखने आया था कि अब तुम्हारी तबीयत कैसी है, और तुमसे कहना था कि जो लोग तुम्हें क़त्ल करने की कोशिश कर रहे थे वे 'श्री' के पास रवाना कर दिए गए हैं। 'श्री' ने तुम्हें भी तुरन्त बुलाया है पर मैं समझता हूँ कि अभी तुम जाने लायक नहीं हो।"

मैंने कहा—"हाँ, जब तक जरा तबीयत ठीक-ठाक न हो जाय। पर मेरे पिता ! मैं प्रार्थना करता हूँ कि मुझे बाहर रोशनी में ले चलिए। यह स्थान मुझे अच्छा नहीं लगता।"

उसने उत्तर दिया—"हाँ, तुम्हारा कहना ठीक है। यहाँ का वातावरण शोकपूर्ण है। मुझे याद है कि जब मैं लड़का था, तो जहाँ तुम सो रहे हो, वहाँ एक सुन्दर स्त्री को पड़ी हुई देखा था। वह इतनी सुन्दर थी कि मैं प्रायः दीपक लेकर रेंगते हुए उसका दर्शन करने के लिए यहाँ आया करता था। अगर उसके हाथ ठण्डे न होते तो मैं यही सोचता कि वह सो रही है और एक दिन जगेगी। अपने उज्ज्वल धवल वस्त्रों में वह बड़ी खूबसूरत और शान्तिमयी लगती थी। वह बिल्कुल गोरी थी ; उसके बाल पीले थे और इतने लम्बे थे कि उसके पाँव को छूते थे। जहाँ 'श्री' रहती हैं, वहाँ के मक़बरों में ऐसी स्त्रियाँ अब भी हैं। जिन्होंने उनको वहाँ रखा है वे जानते थे, कि मृत्यु के हाथ कत्ल कर दिये जाने के बाद भी अपने प्यारे लोगों के शरीर को किस प्रकार ह्रास से बचाया और

सुरक्षित रखा जा सकता है। तो मैं नित्य यहाँ उसे देखने के लिए आता था—अजनबी, मुझ पर हँस मत, उस समय मेरी उम्र ही क्या थी—यहाँ तक कि मैं उस मृत शरीर को प्यार करने लगा, उस कंकाल को जिसमें कभी जीवन रहा होगा। मैं चुपचाप उसके पास जाता, झुककर उसके ठण्डे मुख को चूमता और आश्चर्य करता, कि उसके बाद कितने आदमी जिये और मरे होंगे, और उस काल में जो बीत गया है, न जाने कितने आदमियों ने उसे प्यार किया और उसका चुम्बन लिया होगा। और लंगूर ! मैं समझता हूँ कि मैंने उस मृतात्मा से विवेक प्राप्त किया। उसने मुझे सिखाया कि जीवन कितना छोटा और मृत्यु कितनी लम्बी है, तथा इस सूर्य के नीचे जितनी वस्तुएँ हैं, सब एक ही राह पर चल रही हैं; और सदा विस्मृत हो जाती हैं। मैं इसी प्रकार सोचा करता था और मृतात्मा से ज्ञान मेरे अन्दर प्रवाहित हो रहा था। पर एक दिन मेरी माँ ने मेरे बदले हुए रंग-ढंग को देखकर चुपचाप मेरा पीछा किया और उस सुन्दर, धवल रमणी को देख लिया। उसने समझा कि मैं उस पर मोहित हो गया हूँ—और मोहित तो मैं हो ही गया था। इसलिए उसने भय और क्रोध में दीपक उठा लिया और उस मृत रमणी को दीवार के सहारे खड़ा करके उसके बालों में आग लगा दी। वह ऊपर से नीचे तक धू-धू करके जल उठी, क्योंकि इस प्रकार रखी लाशें आग लगते ही तेज़ी से जलने लगती हैं। मेरे बेटे देखो ! उसके जलने से जो धुआँ निकला था उसके चिह्न अभी तक छत पर दिखलाई दे रहे हैं।"

मैंने संदिग्ध भाव से छत की ओर देखा, पर वहाँ सचमुच धुएँ के निशान थे, जिसकी पहिचान में कोई गलती न हो सकती थी।

उसने ध्यान में डूबे हुए आगे कहना जारी रखा—"वह सिर से पैर तक जल गई पर मैंने एक पाँव को काटकर रख लिया और उसे कपड़े में अच्छी तरह लपेटकर उस पत्थर की बैठक के नीचे छिपा दिया। ये बातें मुझे इतनी अच्छी तरह याद हैं जैसे कल ही हुई हों। अगर किसी ने इधर-उधर न किया होगा तो वह पाँव अभी तक यहाँ होगा। उस दिन से मैं कभी इस कोठरी में नहीं आया—आज ही आया हूँ। ठहरो, मैं देखता हूँ।" इतना कहकर घुटनों के बल झुककर वह पत्थर की बैठक के नीचे अपने लम्बे हाथों से कुछ टटोलने लगा और थोड़ी ही देर में ढूंढ़कर एक छोटी गठरी-सी निकाली, जो धूल से भर गई

थी । धूल उसने फर्श पर झाड़ दी । वह जीर्ण एवं फट रहे वस्त्रों में लिपटी हुई थी । उसने उसे खोल डाला और हमने आश्चर्य के साथ एक सुन्दर गौर और सुगठित पाँव को देखा, जो अब भी इतना ताज़ा और दृढ़ था, जैसे कल ही वहाँ रखा गया हो ।

उसने शोकावेग से भरी वाणी में कहा—"हे मेरे बेटे लंगूर ! देखते हो, मैंने तुमसे सच्ची बात कही थी । यह चरण अब भी शेष है । बेटे ! लो इसे देखो ।"

मैंने मृत्यु के उस ठंडे टुकड़े को अपने हाथ में ले लिया और दीपक की रोशनी में उसे देखने लगा । उस समय मेरे मन की जो दशा थी, उसका वर्णन करना सम्भव नहीं है । उसमें आश्चर्य, भय तथा अद्भुत आकर्षण सब मिले हुए थे । यह चरण बहुत हल्का था ; उससे बहुत हल्का जितना वह जीवित अवस्था में रहा होगा । देखने में चमड़ी वैसी ही जीवित मालूम पड़ती थी, और उससे एक हल्की सुगन्ध निकल रही थी । न वह पिचका या सिकुड़ा था, न काला या बदसूरत ही हुआ था । रक्षित मिश्रित शवों के मांस के समान, पर उससे कहीं सुन्दर और भरा हुआ । एक जगह आग की लपटों से ज़रा-सा जल गया था, नहीं तो ठीक वैसा ही था जैसे मृत्युकाल में रहा होगा ! यह अद्भुत मसालों की विजय थी ।

वह लघु चरण ! मैंने उसे उसी पत्थर की बेंच पर रख दिया, जिस पर वह हजारों वर्ष तक पड़ा रहा होगा । पता नहीं वह कौन नारी रही होगी जिसे उस विस्मृत सभ्यता के ऐश्वर्य एवं वैभव के बीच ऐसा अद्भुत सौंदर्य मिला । यह लघु चरण ! जो पहले किसी उत्फुल्ल चंचल बालिका का, उसके बाद एक शर्मीली कुमारी का और अन्त में एक पूर्ण-यौवना नारी का (चरण) रहा होगा । जीवन के न जाने किन-किन क्षेत्रों में वह प्रतिध्वनित हुआ होगा और अन्त में न जाने किस साहस के साथ उसने मृत्यु के धूलि-पथ का अतिक्रमण किया होगा ! निशीथ की निस्तब्धता में, जब हबशी पहरेदार संगमर्मर की फर्श पर थके सोते होंगे, वह चुपचाप न जाने किस महाभाग के निकट जाने के लिए उठता रहा होगा, और न जाने कौन इस चरण-ध्वनि के आगमन की प्रतीक्षा करता रहा होगा ! सुन्दर लघु चरण ! कदाचित् वह नारी-सौंदर्य के सम्मुख नत किसी विजेता की दर्पपूर्ण गर्दन के ऊपर रखा गया हो और कदा-

चित् बड़े-बड़े सरदारों एवं राजाओं के ओठ इसकी अलंकृत धवलता को चूमने के लिए झुके हों !

मैंने प्राचीन युग के उस अवशेष को उसी बचे-खुचे कपड़े में पुनः लपेट दिया जो मेरी समझ से उस स्त्री के शव-वस्त्र का ही कोई अंश रहा होगा, क्योंकि वह भी कहीं-कहीं जल गया था। इसके बाद उसे मैंने सन्दूक में रख लिया और सोचा कि उसके लिए यह विश्राम-स्थल कैसा विचित्र है !

इसके बाद बिल्लाली की मदद से मैं लड़खड़ाता हुआ लियो को देखने गया। सचमुच वह बुरी तरह घायल था; जगह-जगह उसका शरीर छिल गया था, मुझ से भी ज्यादा। शायद चमड़ी की अत्यधिक गोराई और बगल के घाव से बहुत ज्यादा खून बहने के कारण भी चमड़ी शिथिल और दुर्बल पड़ गई हो। किन्तु इन सब के बावजूद वह आज खुश नज़र आता था और कुछ खाने को माँग रहा था। जाब और उस्तेन ने उसे उठाकर एक डोली पर रखा और वृद्ध बिल्लाली की मदद से उसे गुफा के दरवाजे तक पहुँचाया। अब वह स्थान धो-पोंछ कर साफ कर दिया गया था और पिछली रात की कत्ल का कोई चिह्न वहां नहीं था। वहाँ हम सब ने नाश्ता किया और वह दिन तथा उसके बाद दो दिन ज्यादातर वहीं बिताए।

तीसरे दिन तक जाब और मैं, दोनों बहुत कुछ ठीक हो गए। लियो भी पहले से बहुत अच्छा था, इसलिए मैं बिल्लाली के अनुरोध को मानकर 'कोर' चलने के लिए राजी हो गया। उस रहस्यमयी रानी 'श्रीमती' के रहने के स्थान का यही नाम था। मैं राजी तो हो गया, परन्तु मुझे भय था कि कहीं इतनी लम्बी यात्रा में लियो की तबीयत खराब न हो जाय या उसके घाव, जो भरे नहीं थे, धक्कों से फट न जाय। अगर हमें यह डर न होता कि आदेश-पालन के विलम्ब से कहीं कोई और खतरा न खड़ा हो जाय, तो मैं इतनी जल्द यात्रा के लिए अपनी स्वीकृति न देता।

Library
Pratap College
SRINAGAR

अध्याय १०

मन की कल्पनाएँ

यात्रा के हमारे निश्चय के एक घण्टे के अन्दर ही पाँच डोलियाँ गुफा द्वार पर पहुँच गईं। हर डोली के लिए चार-चार कहार और दो-दो कन्धा बदलने वाले आदमी थे। इनके साथ पचास सशस्त्र अमाहज़र रक्षा तथा सामान के लिए हमारे साथ चलने को आए। इनमें तीन डोलियाँ हमारे लिए थीं, एक बिल्लाली के लिए थी, जो हमारे साथ जाने वाला था और इस समाचार से हमारी चिन्ता बहुत कुछ दूर हो गई थी। मेरा अनुमान है कि पाँचवीं डोली उस्तेन के उपयोग के लिए रही होगी।

मैंने बिल्लाली से, जो खड़ा हुआ सब प्रबन्ध करा रहा था, पूछा—"पिता! क्या उस्तेन भी हमारे साथ जायगी ?"

उसने कन्धा हिलाकर उत्तर दिया :

"यदि उसकी इच्छा होगी तो जायगी। इस देश में स्त्रियाँ जो चाहती हैं, करती हैं। हम उनकी पूजा करते हैं, और उन्हें अपनी राह चलने के लिए स्वतन्त्र छोड़ देते हैं, क्योंकि उनके बिना संसार नहीं चल सकता ; वे जीवन का उद्गम हैं।"

"ओह !" मैंने कहा ; अभी तक यह बात मेरे ध्यान में न आई थी।

उसने कहना जारी रखा—"हम उन्हें पूजते हैं पर उसी सीमा तक जहाँ तक वे असह्य नहीं हो जातीं और यह बात प्रायः प्रत्येक दो पीढ़ियों के बाद हो ही जाती है।"

मैंने उत्सुकता के साथ पूछा—"और तब तुम लोग क्या करते हो ?"

वह फीकी हँसी के साथ बोला—"तब हम पुरानियों को मार डालते हैं, ताकि नई स्त्रियाँ उससे सबक़ लें और समझ लें कि हम बहुत बलवान हैं। तीन साल हुए, इसी तरह मेरी गरीब पत्नी मार दी गई। यह बड़ा दुःखद था, पर तुम से सच कहता हूँ, कि तब से मेरा जीवन ज्यादा सुखपूर्ण है, क्योंकि मेरी उम्र तरुणियों से मुझे सुरक्षित रखती है।"

मैंने कहा—"थोड़े में यह कि अब तुम्हारी स्थिति ज्यादा स्वतन्त्रता और कम ज़िम्मेवारी की है।"

पहले तो उसे यह वाक्य बड़ा अस्पष्ट और उलझन से भरा मालूम पड़ा पर थोड़ी देर में जब वह समझ गया तो बोला :

"हाँ, हाँ, मेरे लंगूर। मैं समझता हूँ, पर अब सब 'ज़िम्मेदारियाँ' क़त्ल हो गई हैं—कम से कम कुछ तो हो ही गई हैं। इसीलिए तुम यहाँ बहुत कम बूढ़ी स्त्रियों को देखते हो। वे स्वयं अपने ऊपर तबाही लाती हैं।" इसके बाद उसने कुछ गम्भीर स्वर में कहा—"जहाँ तक इस लड़की की बात है, मैं नहीं जानता कि क्या कहूँ? वह एक वीर बाला है और शेर को प्यार करती है। तुम देख ही चुके हो कि किस प्रकार उससे चिपटकर उसने उसकी जान बचाई। फिर हमारी प्रथा के अनुसार तो उसका विवाह भी शेर से हो चुका है और जहाँ भी शेर जाए उसे उसके साथ जाने का अधिकार है। हाँ, यदि 'श्री' इसे न स्वीकार करें तो दूसरी बात है, क्योंकि उनकी बात सब अधिकारों के ऊपर है।"

"यदि 'श्री' उसे लियो को छोड़कर चली जाने की आज्ञा दें और वह इन्कार कर दे, तब क्या होगा?'

उसने काँपकर कहा—"अगर आँधी वृक्ष से झुकने को कहे, और वह न झुके, तब क्या होता है?"

इसके बाद मेरे उत्तर की प्रतीक्षा न करके वह पलट गया और अपनी डोली के पास जा पहुँचा। दस मिनट बाद हम सब, डोलियों में बैठकर, 'कोर' के लिए रवाना हो गए।

ज्वालामुखी का वह प्यालानुमा मैदान पार करने में एक घण्टा से ज़्यादा ही लग गया। फिर उस पार का किनारा चढ़ने में आधा घण्टा लगा, पर एक बार पहुँच जाने पर वहां का दृश्य देखकर तबीयत खुश हो गई। हमारे सामने घास का एक हरा-भरा ढालुवां मैदान दूर तक फैला हुआ था, जिसमें बीच-बीच में वृक्षों के झुण्ड दिखाई देते थे। इस सुन्दर मैदान के पादतल में, नौ-दस मील की दूरी पर दलदल ही दलदल नज़र आता था जिससे गंदी गैस उठकर आकाश पर वैसे ही छा रही थी, जैसे किसी नगर को कोहरा ढक लेता है। इस ढाल पर चलना कहारों के लिए सरल था। दोपहर तक हम दलदल के किनारे पहुँच

गए। वहाँ ठहरकर हमने दोपहर का भोजन किया। इसके बाद एक चक्करदार पगडण्डी से होते हुए हम दलदल में घुसे। यह पगडण्डी आगे जाकर इतनी पतली हो गई कि दिखाई ही न पड़ती थी और आज तक हमारे लिए यह एक रहस्य ही है, कि कहार कैसे उस क्षेत्र से हमें ले गए। हमारे दल के आगे-आगे दो आदमी बड़ी-बड़ी लग्गियाँ लिये चल रहे थे, ये जिन्हें वह बीच-बीच में ज़मीन में धँसाकर न जाने क्या देखते थे। शायद इसका कारण यह था कि मिट्टी में प्रायः परिवर्तन हुआ करता था—किन कारणों से यह परिवर्तन होता था, यह हम नहीं जानते। पर जो ज़मीन एक महीने पथिक के चलने के लिए ठीक होती वही दूसरे महीने उसे निगल जाने को तैयार हो जाती।

मैंने कभी ऐसा सुनसान और निराशाजनक दृश्य न देखा था, जहाँ मीलों तक दलदल ही दलदल थे; सिर्फ़ बीच-बीच में हरी और कड़ी भूमि के छोटे-छोटे टुकड़े दिखाई दे जाते थे। कहीं-कहीं गन्दे पानी की तलैयाँ भी थीं, जिनके किनारे लम्बी-लम्बी घास उग आई थी। इनमें बगुले शोर करते और मेढक लगातार टर्रा रहे थे। मीलों तक यही दृश्य था; हाँ, बीच-बीच में ज्वरकारी कुहासा ज़रूर मिल जाता था। इस विस्तृत दलदल में सिर्फ़ जलपक्षी तथा उन पर गुज़र करने वाले चन्द जानवर थे। हाँ, इन दोनों की तादाद ज़रूर बहुत ज्यादा थी और इनकी अनेक जातियाँ थीं। कुछ तो मेरे लिए सर्वथा नए पक्षी थे। बहुतेरे ऐसे सीधे थे और हमारे आस-पास इस प्रकार मँडराते थे कि हम उन्हें छड़ी से मार सकते थे। इनमें जंगली मुर्गे के समान एक चित्रित और खूबसूरत पक्षी था। तलैयों में एक छोटी जाति के घड़ियाल भी पाये जाते थे, जो जलमुर्गियों का शिकार कर जीते थे। वहाँ भयानक काले जलसर्प भी थे, जिनके काटने से हालत खराब हो जाती थी, यद्यपि वे उतने सांघातिक न थे जितना नाग (कोबरा) होता है। यहाँ नदी वाले मच्छरों से भी अधिक भयंकर और दुःखदायी मच्छर थे, पर इस दलदली प्रदेश का सबसे कष्टप्रद पहलू तो सड़ती हुई वनस्पतियों से निकलने वाली भयानक बदबू थी। ऐसा लगता था मानो इस बदबू के साथ श्वास में मानो मलेरिया प्रवेश करता हो। कभी-कभी तो यह असह्य हो जाती थी।

इसी के बीच हम आगे बढ़ते गए, यहाँ तक कि अपने क्षीण गौरव के साथ जब सूर्य डूब रहा था, तब हम एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ भूमि कुछ ऊँची थी।

उसका विस्तार दो एकड़ के लगभग रहा होगा। उस दलदली सुनसान के बीच शाद्वल भूखण्ड (ओयसिस) के समान। बिल्लाली ने यहीं पड़ाव डालने का आदेश दिया। थोड़ी-सी लकड़ी और नरकट, जिसे बिल्लाली साथ लाया था, जला दी गई और हम सब उसके चारों ओर बैठ गए और उस बदबू तथा दम घोटने वाली गर्मी के बीच जो कुछ हमसे खाया गया हमने खाया, तम्बाकू पी और किसी तरह अपना समय बिताने लगे। वहाँ काफ़ी गर्मी थी पर मज़ा यह कि कभी-कभी ठण्डक भी मालूम पड़ती थी। पर गर्मी होते हुए भी हम आग के पास ही रहे क्योंकि उसके धुएँ से मच्छरों से कुछ बचाव था। बाद में अपने कम्बलों में लिपटकर हमने सोने की कोशिश की, पर कम से कम मुझे तो मेढकों की टर्राहट तथा आकाश में चारों ओर उड़ती हज़ारों चिड़ियों के शोर के कारण सोना असम्भव हो गया। मैंने घूमकर लियो की ओर दृष्टि डाली जो सो रहा था, पर जिसका चेहरा तमतमाया हुआ-सा लगता था, जिससे मुझे चिन्ता हुई। उस्तेन, जो उसके समीप थी, बार-बार उठकर आग के झिलमिल प्रकाश में, चिन्तापूर्वक उसके मुँह पर नज़र डाल लेती थी।

चूँकि मैं उसकी कोई सहायता न कर सकता था, एक उपाय जो हमारे पास था, हम पहले ही कर चुके थे, अर्थात् हर एक ने काफी कुनैन ले ली थी, इसलिए मैं आकाश की ओर देखता रहा जिसमें सहस्र-सहस्र तारागण उगते चले आ रहे थे, यहाँ तक कि स्वर्ग का वह विस्तृत तोरण अगणित प्रकाश-बिन्दुओं से भर गया, जिनमें से प्रत्येक बिन्दु एक विश्व था।

कैसा सुन्दर और अद्भुत यह दृश्य था जिससे मानव अपनी तुच्छता की माप कर सकता था। पर शीघ्र ही मैंने इन बातों के विषय में सोचना छोड़ दिया; क्योंकि जब मन असीम को पकड़ना चाहता है, दिगन्त में एक लोक से दूसरे लोक में छलांगें मारते सर्वशक्तिमान प्रभु के चरण-चिह्नों की खोज करना, अथवा उसकी कृतियों से उसके प्रयोजन का पता लगाना चाहता है, तो थक जाता है। ऐसी बातें हमारे जानने के लिए नहीं हैं। ज्ञान उनके लिए है जो शक्तिमान हैं; हम तो दुर्बल हैं। यदि संयोग से पूर्ण विवेक के दर्शन हमें हो भी जाएँ तो हमारी अपूर्ण दृष्टि उलटे कुण्ठित, अन्ध, हो जाएगी, और अत्यधिक शक्ति हमें उन्मत्त कर देगी या हमारी दुर्बल प्रज्ञा पर बोझ के समान छा जाएगी—यहाँ तक कि बोझ के कारण वह गिर पड़ेगी और हम अपने ही अहंकार की गहराई

में डूब जाएँगे। प्रकृति-पुस्तक के अपने अन्ध निरीक्षण से आखिर मानव के बढ़े हुए ज्ञान का क्या प्रथम परिणाम हुआ ? यही न कि वह अपने निर्माता के अस्तित्व अथवा अपने द्वारा ग्रहण किए तात्पर्य के अतिरिक्त अन्य सब प्रयोजनों पर सन्देह करने लगा ? सत्य आच्छन्न है, घूँघट के अन्दर छिपा है और हम उसी प्रकार उसके वैभव का पूर्ण दर्शन नहीं कर सकते जिस प्रकार हम मध्याह्न सूर्य की ओर नहीं देख सकते। ऐसा करने पर हम नष्ट हो जाएँगे। मानव जिस रूप में यहाँ है, उस रूप में उसके लिए पूर्ण ज्ञान नहीं है, क्योंकि उसकी शक्ति, चाहे अपनी कल्पना में वह उसे जो भी समझ ले, वस्तुतः बहुत थोड़ी है। पात्र शीघ्र भर जाता है और जो अनिर्वचनीय मौन प्रज्ञा उन प्रकाशमान कोटि-कोटि लोकों का संचालन करती है, और जिस शक्ति से वे संचालित होते हैं, उसके सहस्रांश भी इस पात्र में आ पड़े तो वह चूर-चूर हो जाएगा। कदाचित् किसी अन्य स्थान एवं काल में वैसा न भी हो पर इसके विषय में कौन कह सकता है ? इस मांस-जन्य आदमी के भाग्य में तो श्रम करना और कष्ट सहना और नियति द्वारा फूंके बुलबुलों को, जिन्हें वह सुख कहता है, पकड़ना मात्र बदा है। उसे कृतज्ञ होना चाहिए यदि फूटने के पूर्व ये बुलबुले कुछ देर तक उसके हाथ में रह लें। ज्यों ही दुःखान्त नाटिका समाप्त होती है, उसके विनाश की घड़ी आ पहुँचती है और उसे चुपचाप किसी अज्ञात लोक को चला जाना पड़ता है !

मेरे सिर के उपर प्रकाशमान नक्षत्रों का लोक फैला हुआ था और हमारे पाँव के इर्द-गिर्द दलदल से उत्पन्न अग्निगोलक इधर से उधर जा रहे थे ; इन पर कुहासा छाया हुआ था और ये भूमि की ओर आकृष्ट थे। मैंने सोचा, इन ऊपर और नीचे के दृश्यों में दो प्रकार के मानवों की अभिव्यक्ति के दर्शन हो जाते हैं : एक जो मनुष्य है, दूसरा जो वह बन सकता है, यदि महाशक्ति उसे वैसा बना दे।

उस रात मेरे मन में इस प्रकार की कितनी ही कल्पनाएँ उठती रहीं। वे सदा ही हमें उत्पीड़ित करती हैं। मैं 'उत्पीड़ित करती हैं' इसलिए कह रहा हूँ कि चिन्तन केवल बुद्धि वा विचार की लाचारी को मापने का ही कार्य करता है। आखिर इस दिक्-काल के मौन में हमारी क्षीण पुकार का प्रयोजन क्या है ? क्या हमारी धुंधली बुद्धि उस तारा-मण्डित आकाश के रहस्यों को पढ़

सकती है ? क्या उससे कोई उत्तर मिलता है ? प्रतिध्वनियों और कल्पनाप्रसूत दृश्यों के सिवा और कुछ नहीं। फिर भी हम विश्वास करते हैं कि इस मृत्यु के क्षितिज के उस पार कोई न कोई उत्तर अवश्य है, और श्रद्धा ही वह उत्तर देती है। श्रद्धा बिना हमारा नैतिक विनाश हो जायगा, और श्रद्धा के सहारे हम स्वर्ग तक चढ़ सकेंगे।

थका हुआ, फिर भी निद्राहीन, मैं अपनी इस यात्रा और उसकी अद्भुता के विषय में सोचता रहा। ठीकरे पर शताब्दियों पूर्व जो कुछ लिखा गया था उससे हमारी यह कहानी कितनी मिलती है ! यह असाधारण स्त्री कौन है, जो अपने ही जैसे असाधारण इन आदमियों पर, किसी विस्मृत सभ्यता के ध्वंसावशेष में, राज्य कर रही है ? और अमर-जीवन प्रदान करने वाली ज्वाला की कहानी का अर्थ क्या है ? क्या अमृत या किसी ऐसे द्रव की स्थिति सम्भव है जो मांस की इन दीवारों में वह शक्ति भर दे कि वह युगों तक ह्रास एवं विनाश से बची रहें ? ऐसा हो सकता है, पर है नहीं। जैसा किसी ने कहा था, जीवन को अनिश्चित काल तक बढ़ाने में वह आनन्द नहीं जो जीवनोत्पादन तथा उसकी अस्थायी स्थिति में है। और फिर यह बात सही ही हो, तो क्या ? निस्सन्देह इस रहस्य को जानने वाला संसार पर शासन कर सकता है ; वह संसार की सम्पूर्ण सम्पत्ति का संचय कर सकता है ; वह सम्पूर्ण शक्ति तथा शक्ति-स्वरूप ज्ञान प्राप्त कर सकता है। अगर यह ठीक है और अगर यह 'श्री' सचमुच अमर है, जिसका मुझे एक क्षण के लिए विश्वास नहीं होता, तो इतनी शक्ति और वैभव उसके चरणों के नीचे होते हुए भी वह आदमखोरों के समाज के बीच एक गुफा में क्यों बैठी हुई है ? इस शंका ने सवाल का जवाब दे दिया। निश्चय ही कहानी वाहियात है और मूढ़ विश्वासों के उस पुराने युग के ही अनुकूल है। कम से कम मैंने सोच लिया कि मैं अनन्त जीवन पाने की चेष्टा नहीं करूँगा। मैंने अपने जीवन के इन चालीस सालों में ही क्या कम तकलीफें, निराशाएँ और गुप्त कटुताएँ भोगी हैं कि उनकी अवधि को बढ़ाने की बात सोचूं ? फिर भी मेरा ख्याल है कि तुलना में, बहुतों से मेरा जीवन अधिक सुखी है।

यह सोचते हुए कि इस समय तो हमारे जीवन की डोर बढ़ने की जगह कट जाने की ही अधिक संभावना दीख पड़ती है, मैं अन्त में सो गया।

जब मैं जगा तब भोर हो गया था और उस घने प्रातःकुहासे में रक्षक और कहार भूतों की तरह इधर-उधर कर रहे थे और पुनः यात्रा की तैयारी में लगे थे। आग बिल्कुल बुझ गई थी। मैं अँगड़ाई लेकर उठा पर प्रातःकाल की सीलनभरी ठण्डी से मेरा अंग-अंग काँप रहा था। मैंने लियो की ओर देखा, वह बेचारा सिर पर हाथ धरे बैठा हुआ था, उसका चेहरा लाल और आँखें पीली हो रही थीं।

मैंने पूछा—"लियो, कैसी तबीयत है ?"

उसने बैठी हुई आवाज़ में कहा—"मुझे ऐसा जान पड़ता है, जैसे मैं मर रहा हूँ। मेरा सिर फटा जाता है, मेरा बदन काँप रहा है और मैं सांघातिक रूप से बीमार हूँ।"

लियो को ज़ोरों का बुखार चढ़ रहा था। मैं जाब के पास जाकर कुनैन माँग लाया। सौभाग्यवश अब भी हमारे पास काफ़ी कुनैन थी। पर जाब से पता चला कि उसकी तबीयत भी अच्छी नहीं है। उसकी पीठ में दर्द था और सिर में चक्कर आ रहा था। उस स्थिति में और तो मैं क्या कर सकता था, मैंने दोनों को दस-दस ग्रेन कुनैन दी और एहतियात के लिए खुद भी उससे कुछ कम मात्रा में ले ली। इसके बाद मैंने बिल्लाली को खोज निकाला और उसे स्थिति का ज्ञान कराया। उसने मेरे साथ जाकर लियो और जाब—जिसे वह उसके मोटे चेहरे और छोटी आँखों के कारण 'सुअर' कहता था—को देखा।

उनसे कुछ दूर आकर, जिससे वे न सुन सकें, उसने कहा—"ओह ! ज्वर आ गया ! मैं जानता ही था। शेर पर बुरा आक्रमण हुआ है पर वह जवान है इसलिए शायद बच जाय। जहाँ तक सुअर की बात है, उसकी हालत ज़्यादा खराब नहीं है, उसे मामूली बुखार है, जो सदा पीठ के दर्द से शुरू होता है; वह उसकी चर्बी गलाकर चला जायगा।"

मैंने पूछा—"मेरे पिता, क्या वे दोनों चल सकते हैं ?"

"मेरे बेटे ! जाना ही पड़ेगा। अगर वे यहाँ ठहरेंगे तो निश्चय ही मर जायेंगे। फिर वे ज़मीन की अपेक्षा डोली में अच्छे रहेंगे। अगर कोई गड़बड़ी न हुई तो आज रात तक हम इस दलदली क्षेत्र से बाहर निकल जायेंगे, जहाँ हवा अच्छी होगी। आओ, हम उन्हें उठाकर डोलियों में लिटा दें और सफ़र शुरू करें,

क्योंकि प्रातःकाल के इस कुहासे में एक जगह खड़ा रहना बहुत बुरा है। हम खाना रास्ते में चलते हुए खा लेंगे।"

हमने ऐसा ही किया और दुखी हृदय से एक बार पुनः इस अद्भुत यात्रा पर चल पड़े। पहले तीन घण्टे तक आशानुरूप हमारी यात्रा सकुशल होती रही, पर इसके बाद एक ऐसी घटना हुई जिससे हमारे मित्र और हितैषी बिल्लाली का साथ ही छूटते-छूटते रहा। बात यह हुई कि बिल्लाली की डोली सबसे आगे थी, अब हम ऐसे भयानक दलदल से गुज़र रहे थे, कि कहारों के पाँव घुटने तक उसमें धँस जाते थे। सच पूछें तो मेरे लिए यह एक रहस्य ही था कि इतना बोझ लेकर ऐसे रास्ते पर वह किस तरह चल रहे हैं। बीच-बीच में उन दो खाली आदमियों को भी कंधा लगाना पड़ता था।

एकाएक चीख सुनाई दी, उसके बाद बहुत से उद्‌गार सुन पड़े और सबके अन्त में ज़ोर का धमाका हुआ। सारा कारवाँ रुक गया।

मैं अपनी डोली से कूदकर आगे की ओर दौड़ा। लगभग बीस गज़ आगे एक तलैया थी, जिसके किनारे से हम जा रहे थे। यह किनारा ढालुवाँ था। ज्यों ही मेरी नज़र तलैया की ओर गई मैंने भय के साथ देखा कि बिल्लाली की डोली उसमें पड़ी उतरा रही है पर बिल्लाली उसमें या आसपास कहीं दिखाई न पड़ा। बात यह हुई कि रास्ते में बिल्लाली की डोली के एक कहार का पाँव फुफकारते हुए साँप पर पड़ गया और उसने उसके टखनों में काट लिया; स्वभावतः डोली का बाँस उसके हाथ से छूट गया और वह ढाल से नीचे की ओर फिसला। फिसलते हुए, अपनी रक्षा के लिए उसने डोली को पकड़ लिया। परिणाम वही हुआ जो ऐसी हालत में संभव था। डोली ढालुएँ किनारे पर गिर पड़ी और खिसकती हुई तलैया में जा पड़ी। वह आदमी, जिसे साँप ने काटा था, तथा बिल्लाली दोनों तलैया में चले गए। जब मैं पानी के किनारे पहुँचा, दो में से एक भी दिखाई न पड़ता था। अभागा कहार तो सदा के लिए अदृश्य हो गया। या तो उसका सिर किसी चीज से टकरा गया या वह दलदल के अन्दर समा गया या सर्पदंश ने उसे अचेत एवं पंगु कर दिया। जो भी हो, वह अदृश्य हो गया। यद्यपि बिल्लाली भी दिखाई न पड़ता था पर उसकी स्थिति का पता तैरती और ज़ोर से हिलती-डुलती डोली से लग सकता था जिसके परदों एवं कपड़ों में वह फँस गया था।

एक आदमी ने चिल्लाकर कहा—"वह वहाँ है, हमारा पिता वहाँ है।" पर मदद के लिए उसने ज़रा भी हरकत न की; दूसरे सब भी खड़े तमाशा देख रहे थे।

"हट जाओ, ओ कुत्तो !" मैंने अंग्रेजी में चिल्लाकर कहा और अपना हैट अलग फेंककर उस भयानक-सी दिखती तलैया में कूद पड़ा। शीघ्र ही मैं वहाँ पहुँच गया जहाँ बिल्लाली कपड़ों के नीचे हाथ-पाँव मार रहा था।

मैं नहीं जानता कि किस प्रकार मैंने उसे कपड़ों और परदों से ऊपर निकाला। उसका सिर काई से भर गया था। बाकी काम तो आसानी से हो गया, क्योंकि बिल्लाली बड़ा अनुभवी और व्यावहारिक बुद्धि का आदमी था। इस संकट के समय भी वह मुझसे लिपट नहीं गया, जैसा प्रायः डूबते हुए आदमी करते हैं। मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और तैरते तथा खींचते हुए किनारे लाया, पर तलैया में कीचड़ बहुत थी और मैं उसे बड़ी कठिनाई से किनारे तक ला सका। हम दोनों ऊपर से नीचे तक कीचड़ से भर गए थे। किन्तु इस अवस्था में भी बिल्लाली का चेहरा शानदार मालूम पड़ता था।

जैसे उसकी बुद्धि ठिकाने हुई उसने कहारों से कहा—"अरे कुत्तो ! तुमने अपने पिता को डूबने के लिए छोड़ दिया। अगर यह अजनबी मेरा बेटा लंगूर न होता तो मैं डूब ही चुका था। अच्छा, मैं इसे याद रखूँगा !" वह अपनी चमकती हुई और किञ्चित् द्रवित आँखों से उनको घूरता रहा। यद्यपि वे इस दृष्टि को पसन्द नहीं करते थे पर ऊपर से वे उदासीन बने रहे।

अब बुड्ढा मेरी ओर फिर कर बोला—"मेरे बेटे ! जहाँ तक तुम्हारी बात है, विश्वास रखो कि मैं तुम्हारा सम्पत्ति-विपत्ति में मित्र हूँ। तुमने मेरी जीवन-रक्षा की है। कदाचित् मैं भी तुम्हारी जान बचा सकूँ।"

इसके बाद हमने अपने शरीर को धोया-पोंछा, डोली निकाली और आगे चले। हाँ, वह कहार हममें से कम हो गया था। मैं नहीं जानता कि उसके लोकप्रिय न होने के कारण अथवा इन लोगों की उदासीनता तथा स्वभाव की स्वाथपरता के कारण, उसकी किसी ने कुछ खोज-खबर न ली, न किसी को उसके लुप्त हो जाने पर दुखी होते ही मैंने देखा। हाँ, जिन्हें उसके बदले में, उसका काम भी करना पड़ा, उन्हें ज़रूर बुरा लगा।

अध्याय ११

'कोर' का मैदान

सूर्यास्त के लगभग एक घण्टा पहले हम लोग दलदली क्षेत्र को पारकर एक ऐसी उच्च भूमि पर जा पहुँचे जो उमड़ती लहरों की भाँति क्रमशः ऊँची होती हुई एक टीले के रूप में बन गई थी। हमने रात भर के लिए पहली चढ़ाई के शिखर पर पड़ाव डाला। सबसे पहले मैंने जाकर लियो की दशा देखी। उसकी हालत सुबह से भी ज्यादा खराब हो गई थी और उसकी बीमारी में एक नई बात यह पैदा हो गई थी कि उसे बार-बार उल्टी होती थी। उसे रातभर और अगले दिन सुबह तक उल्टी होती रही। उस रात मैं एक घण्टे के लिए भी नहीं सो सका; मैं उस्तेन की सहायता करता रहा। मैंने इस प्रकार विनीत और अथक परिचर्या करने वाली दूसरी स्त्री नहीं देखी। वह बेचारी बराबर लियो और जाब को संभालती रही। यहाँ की हवा बहुत ज्यादा उष्ण न होने पर भी किंचित् गर्म और सुखदायी थी। फिर हम लोग दलदली कुहासे से भी ऊपर आ गए थे, जो हमारे नीचे किसी नगर पर छाए धुएँ के वितान के समान दिखाई दे रहा था। पहले की अपेक्षा यह जगह हमारे लिए काफ़ी अच्छी थी।

दूसरे दिन सुबह होते-होते लियो का दिमाग बिल्कुल खराब हो गया और वह कल्पना करने लगा कि उसके दो टुकड़े हो गए हैं। उसकी यह हालत देखकर मुझे बड़ा भय और चिन्ता हुई। डर के मारे मैं सोचने लगा कि उसकी बीमारी का न जाने क्या परिणाम होने वाला है। मैं ऐसे ज्वरों के बारे में बड़ी बुरी बातें सुन चुका था। मैं इसी विचार में लीन था कि बिल्लाली ने मेरे पास आकर कहा कि हमें तुरन्त चल देना चाहिए। उसकी राय थी कि यदि अगले १२ घण्टों में हम किसी ऐसी जगह नहीं पहुँच गए जहाँ लियो को शान्ति-पूर्वक रखकर उसकी उचित परिचर्या की जा सके तो उसकी मृत्यु सिर्फ एक-दो दिन की बात रह जाएगी। हम उसकी राय मानने को विवश हुए। हमने लियो को डोली में लिटाया और आगे बढ़े। उस्तेन मक्खियों को हाँककर दूर रखने के

लिए और यह खबरदारी रखने के लिए कि लियो जमीन पर न गिर पड़े, उसकी डोली के साथ-साथ पैदल चलने लगी।

सूर्योदय से आध घण्टे पूर्व हम उस टेकरी के शिखर पर पहुँच गए। वहाँ पहुँचते ही हमें बड़ा ही सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ा। हमारे नीचे उस ओर एक हरा-भरा मैदान फैला हुआ था जिसमें जगह-जगह फूल-पौधे लहलहा रहे थे। जहाँ हम खड़े थे, वहाँ से कोई अठारह मील की दूरी पर एक बड़ा भारी पहाड़ दिखाई पड़ रहा था। यह असाधारण पर्वत मैदान से एकाएक उठ खड़ा हुआ था। इस पहाड़ के आधार भाग में घास से भरी ढाल थी पर इस आधार भाग के लगभग ५०० फुट ऊपर से वह चट्टानी दीवार की भाँति सीधे ऊपर चला गया था जिसकी ऊँचाई बारह सौ से पन्द्रह सौ फुट तक रही होगी। स्पष्टतः ज्वालामुखी से पैदा हुए इस पहाड़ का आकार गोल लगता था, पर चूंकि उसकी परिधि का बहुत थोड़ा अंश दिखाई पड़ रहा था, इसलिए उसके विशाल आकार का ठीक-ठीक अनुमान करना कठिन था। बाद में मुझे मालूम हुआ कि उसका विस्तार ५० वर्गमील से कम नहीं था। उस एकान्त मैदान में गौरव-पूर्वक अपना सिर आकाश में उठाए पर्वत के उस महत् दृश्य जैसा शानदार दृश्य मैंने कभी नहीं देखा और शायद कभी देख भी न सकूँगा। वह एक प्राकृतिक गढ़ के समान लगता था। चतुर्दिक् के निर्जन के कारण वह और गौरवशाली दीख पड़ता था और उसकी चोटियाँ आकाश को चूम रही थीं और ज्यादातर बादलों से ढकी थीं। ये बादल उनके इर्दगिर्द धुनी रुई के गाले के समान लगते थे।

मैं उठकर अपनी डोली में बैठ गया और मैदान के उस पार के इस आह्लादकारी दृश्य को देखने लगा। शायद बल्लाली ने मुझे इस अवस्था में देखा होगा, क्योंकि वह अपनी डोली बढ़वाकर मेरे पास लाया।

"देखो, यही 'अवश्य-माननीया' का महल है! क्या किसी रानी का ऐसा सिंहासन कभी रहा है?"

मैंने उत्तर दिया—"मेरे पिता! यह तो अद्भुत है। पर हम उसमें प्रवेश कैसे करेंगे? उन पहाड़ियों पर चढ़ना तो कठिन जान पड़ता है।"

"लंगूर! देख, कैसे चलते हैं। नीचे के रास्ते की ओर देखो। तुम्हें वह क्या मालूम पड़ता है? तुम बुद्धिमान हो। भला बताओ तो।"

मैंने देखा। मार्ग की एक रेखा-सी मालूम पड़ती थी जो सीधे पहाड़ की तलहटी तक चली गई थी, यद्यपि वह घास से ढकी हुई थी। उसके दोनों ओर ऊँचे बाँध थे जो कहीं-कहीं खण्डित थे, पर सब मिलकर पूरी लम्बाई में चले गए थे। मुझे उसका कोई प्रयोजन समझ में नहीं आया। सड़क के दोनों ओर बाँध बनाने की बात मुझे विचित्र-सी लगी।

मैंने उत्तर दिया—"मुझे तो यह सड़क-सी मालूम होती है; वैसे मैं कहने जा रहा था कि किसी नदी की तली है या फिर कोई नहर है।"

बिल्लाली ने सिर हिलाकर अपनी स्वीकृति दी और कहा :

"मेरे बेटे ! तुम ठीक कहते हो। हमारे पहले जो लोग यहाँ रहते थे उन्होंने पानी ले जाने के लिए यह नहर बनाई थी। पहाड़ की जिस चट्टानी परिधि की ओर हम चल रहे हैं, उसके अन्दर कोई बड़ी झील थी। हमारे पहले के निवासियों ने उस पानी के निकास के लिए पहाड़ को खोद-खोदकर यह नहर बनाई थी और उसे झील के पेंदे से मिला दिया था। झील का पानी जोर के साथ नहर में आया और जगह-जगह से उसे तोड़कर या उस पर से उफनकर दूर-दूर तक सारे मैदान में फैल गया, जिससे बहुत-से दलदल हो गए। जब झील का सारा पानी बह गया तो उन लोगों ने झील की उस सूखी भूमि में एक बड़ा नगर 'कोर' नाम से बनाया और बसाया जिसके खंडहर ही अब बच रहे हैं।"

मैंने कहा—"कदाचित् ऐसा ही हो पर वर्षा एवं सोतों के पानी से वह झील फिर न भर गई होगी ?"

उसने कहा—"फिर कैसे भर जाती ? वे लोग बुद्धिमान थे। उन्होंने बरसाती पानी निकलने के लिए नाला बना दिया। वह दाहिनी ओर नदी जैसी चीज तुम देख रहे हो न ?" उसने अँगुली से एक नाले की ओर दिखाया जो हमारे स्थान से लगभग चार मील दूर मैदान में से होकर गया था।

बिल्लाली ने कहा—"वही नाला है और यह पहाड़ की दीवार के सहारे नीचे आया है, जहाँ झील का पानी निकालने वाली नहर से मिलता है। पहले उसी नहर से पानी निकलता रहा होगा, पर बाद में दूसरा नाला बना दिया गया और नहर का सड़क के रूप में उपयोग किया जाने लगा।

मैंने पूछा—"तब क्या नाले के सिवा उस पर्वत में प्रवेश करने का कोई मार्ग नहीं है ?"

उसने उत्तर दिया—"एक जगह है जहाँ से चौपाये और पैदल आदमी बड़ी कठिनाई के साथ उसमें जा सकते हैं, पर वह गुप्त है। तुम एक महीने तक भी खोजो तो उसे नहीं पा सकोगे। साल में सिर्फ़ एक बार उसका उपयोग किया जाता है जब साल भर तक मैदान एवं तलहटी में चरने वाले मवेशी अन्दर ले जाए जाते हैं।

मैंने पूछा—"और 'श्रीमती' वहाँ हमेशा रहती हैं या पहाड़ के बाहर भी आती-जाती हैं ?"

उसने कहा—"नहीं मेरे बेटे ! वह जहाँ हैं बस वहीं हैं।"

अब तक हम उस बड़े मैदान में पहुँच गए थे और मैं बड़े आह्लादपूर्वक उसके फूलों एवं वृक्षों के विविध प्रकार के सौंदर्य का निरीक्षण कर रहा था। तरह-तरह के वृक्ष अलग-अलग या तीन-तीन, चार-चार के झुण्ड में उगे हुए थे। बलूत की एक जाति के पेड़ वहाँ बहुत दिखाई पड़े। ये सदा हरे रहते थे। वहाँ अनेक तमाल वृक्ष भी थे जिनमें कुछ सौ फुट से भी ऊँचे थे। वहाँ जो फर्न द्रुम थे उतने विशाल और सुन्दर मैंने कहीं और नहीं देखे जिन पर झुण्ड की झुण्ड तितलियाँ और मधुपायी भृङ्ग गुँजार कर रहे थे। और इन वृक्षों के बीच गैंडे से खरगोश तक हर तरह के जानवर स्वच्छन्द विचरण कर रहे थे। शुतुरमुर्ग इत्यादि नाना प्रकार के पक्षियों का तो पूछना ही क्या ? यहाँ शिकार की इतनी सामग्री थी कि मैं अपने पर संयम न रख सका। अपने साथ डोली में मैंने अपनी एकनली हलकी बन्दूक शिकारी मार्टिनी ले ली थी। एक मोटे ताज़े सुन्दर दक्षिण-अफ्रीकी मृग को बलूत जाति के एक वृक्ष से अपना शरीर खुजाते देख मैं डोली में से कूद पड़ा और चुपके-चुपके सरकता हुआ उसके जितने निकट पहुँच सकता था, पहुँच गया। जब वह लगभग अस्सी गज़ दूर रह गया तो उसने सिर उठाकर मेरी ओर देखा और भागने की तैयारी की, पर मैंने निशाना साधकर बन्दूक छोड़ी। 'धायँ' और वह एक बार आकाश में उछलकर धम्म से ज़मीन पर गिर पड़ा। कहार हैरत से इस दृश्य की ओर देख रहे थे। पहरुओं का एक दल तुरन्त उस जानवर को खलियाने और काटने को दौड़ पड़ा। मैं चुपचाप अपनी डोली में लौट आया। इस क्रिया से मैं अमाहजर लोगों की

दृष्टि में काफ़ी ऊँचा उठ गया था। वे इसे उच्चकोटि की जादूगरी समझ रहे थे। बिल्लाली ने भी बड़े उत्साह से मेरा स्वागत किया।

वह चिल्लाकर बोला—"मेरे लंगूर बेटे ! अद्भुत है, अद्भुत। तुम निश्चय ही महान् हो, यद्यपि देखने में बदसूरत हो। अगर मैं अपनी आँखों से न देखता तो इस बात का कभी विश्वास न करता। और तुमने कहा था कि इस प्रकार मारने की विधि मुझे सिखाओगे।"

मैंने शान से कहा—"अवश्य मेरे पिता ! इसमें कुछ नहीं है।" किन्तु मन में निश्चय कर लिया "कि जब 'मेरा पिता' बिल्लाली बन्दूक चलायेगा तो मैं किसी वृक्ष के पीछे छिप जाऊँगा।"

इस मामूली घटना के बाद कोई विशेष बात नहीं हुई और सूर्यास्त के लगभग डेढ़ घण्टे बाद हम उस ज्वालामुखी से बनी विशाल ऊँचाई के नीचे पहुँच गए। हमारे कहार उस प्राचीन जलमार्ग से हमें लिये उस स्थान की ओर बढ़ते रहे, जहाँ से एक के ऊपर एक चट्टानी दीवारें फूटती हुई ऊपर को जाती थीं। यहाँ तक सबसे ऊंची चोटी बादलों में छिप गई थी। उसकी एकान्त एवं पवित्र महत्ता देखकर मैं चकित हो गया। हम उस प्रकाशपूर्ण ढलान पर चढ़े चले जा रहे थे, यहां तक कि ऊपर की फैलती हुई परछाइयाँ प्रकाश को निगल गईं। अब हम चट्टानों को काटकर बनाए गए एक सँकरे मार्ग से चल रहे थे। इसे बनाने में हज़ारों आदमियों ने वर्षों तक परिश्रम किया होगा। यह काम उन लोगों ने बिना किसी विस्फोटक द्रव्य या डाइनामाइट की सहायता के कैसे किया होगा, यह विचारकर आश्चर्यचकित होना पड़ता है। यह इस प्रदेश का एक ऐसा रहस्य है जिसे जानना कठिन है। ये पगडंडियाँ और महती गुफाएँ, जो दृढ़ चट्टानों को काटकर बनाई गई थीं, 'कोर' राज्य द्वारा सभ्यता के आदिकाल में बनाई गई होंगी और मिश्री स्मारकों की भाँति इस कार्य में सहस्रों कैदी सदियों-सदियों तक लगे रहे होंगे। पर वे कौन लोग थे जो उस प्राचीनकाल में 'कोर' में बसते थे ?

अन्त में हम सीधी चढ़ान के मुख तक पहुँच गए। यहाँ हमें एक अँधेरी सुरंग दिखाई पड़ी जिसे देखकर पहाड़ों में से रेल लाइनें ले जाने के लिए सुरंगें बनाने वाले आधुनिक इंजीनियरों की याद हो आई। इस सुरंग से होकर बाहर की ओर पानी का एक सोता बहता था। सच पूछें तो कठोर चट्टानों में काटकर

बनाए गए मार्ग के आरम्भ से हमने इस सोते का अनुसरण किया था। इस सोते ने आगे जाकर एक छोटी नदी का रूप धारण कर लिया था और वह नदी हमारी दाहिनी ओर से चक्कर खाती निकल गई थी। चट्टानी रास्ते के आधे भाग में यह स्रोतस्विनी थी और आधे भाग में, जो उससे लगभग आठ फुट ऊँचे तल पर था, चलने के लिए रास्ता बना हुआ था। इस कटे रास्ते के अन्त में सोता मैदान की ओर मोड़ दिया गया था और उसने अपना रास्ता अलग बना लिया था। गुफा के मुहाने पर कारवाँ रुक गया और हमारे साथ आए सेवकगण मिट्टी के दीपक जलाने लगे। बिल्लाली अपनी डोली से उतरकर हमारे पास आया और उसने विनीत पर दृढ़ वाणी में कहा कि 'श्री' की आज्ञा है कि यहाँ से तुम लोगों को अपनी आँखों पर पट्टी बाँधनी पड़ेगी, जिससे इस पहाड़ी मार्ग का भेद तुम्हें न मालूम हो। मैंने खुशी के साथ प्रस्ताव स्वीकार कर लिया पर जाब ने, जिसकी तबीयत अब पहले से बहुत कुछ ठीक हो गई थी, इसे पसन्द नहीं किया। उसका विश्वास था कि यह सब गर्म घड़े से जलाकर मारने की भूमिका है। जब मैंने उसे बताया कि न यहाँ किसी के पास घड़ा है, न आग है और तुम्हें व्यर्थ वहम न करना चाहिए, तब कहीं उसने भी इसे स्वीकार किया। जहाँ तक लियो का सवाल है, घण्टों बेचैन रहने के बाद, भगवत्कृपा से, वह सो गया था या उस पर एक प्रकार की बेहोशी का असर था। जो भी हो, उसे पट्टी बाँधने की कोई आवश्यकता न थी। हमारी आँखों पर पीले कपड़ों की पट्टियाँ बाँध दी गईं। ये कपड़े मकबरों से निकाले हुए वस्त्र थे क्योंकि ये तो स्वयं कपड़े बनाना जानते न थे। न जाने क्यों उस्तेन की आँखों पर भी पट्टी बाँध दी गई शायद इस डर से कि कहीं वह हमें जानकर रास्ते का भेद न बता दे।

इसके बाद हम रवाना हुए। कहारों की पग-ध्वनि से तथा सोते के पानी की बन्द जगह में गूँजती आवाज़ से मुझे मालूम हुआ कि हम उस पहाड़ के अन्दर जा रहे हैं। हम चट्टान के निर्जन हृदय में प्रवेश कर रहे थे यद्यपि यह पता नहीं था कि किधर जा रहे हैं। पर अब आश्चर्यजनक बातों को देखने की मुझे आदत पड़ गई थी, इसलिए मुझे किसी चीज़ पर अब आश्चर्य नहीं होता था। इसलिए मैं डोली में लेटे-लेटे कहारों के पदचाप और जोरों से बहते पानी की आवाज़ सुनता रहा। थोड़ा आगे चलकर कहार गुनगुनाने लगे। यह वही

उदासी भरा गाना था जिसे मैंने उस संध्या को सुना था जब हमारी ह्वेलबोट पकड़ी गई थी। इन सब ध्वनियों का मुझ पर एक विचित्र प्रभाव पड़ रहा था जिसका वर्णन करना सम्भव नहीं है। कुछ आगे चलकर हवा भारी और घनी हो गई और मेरा दम घुटने-सा लगा। अब डोलियाँ एक कोने पर मुड़ीं, फिर दूसरे, तीसरे इसी प्रकार के अनेक मोड़ों से वे मुड़कर आगे बढ़ती रहीं। आगे बहते पानी की ध्वनि भी बन्द हो गई; हवा में कुछ ताज़गी आने लगी किन्तु मोड़ों का अन्त ही न होता था जिससे मुझे हैरत हो रही थी। मैं अपने मन में उनका एक नक़शा बनाता रहा कि अगर इस रास्ते कभी भागने की आवश्यकता पड़ी तो काम आवे, किन्तु कहना अनावश्यक है कि मैं इस प्रयत्न में पूर्णतः असफल हुआ। आधा घण्टा और बीता और ऐसा जान पड़ा मानो हम फिर खुले में आ गए हों क्योंकि पट्टी से छनकर प्रकाश का आभास होने लगा था और उसकी ताज़गी मेरे चेहरे पर पड़ रही थी। थोड़ी देर बाद ही डोलियाँ रुक गईं और मैंने सुना कि बिल्लाली उस्तेन से पट्टी हटा देने और हमारी पट्टियाँ भी खोल देने को कह रहा है। उसकी सहायता की प्रतीक्षा किए बिना ही मैंने अपनी पट्टी की गाँठ ढीली कर दी और बाहर देखने लगा।

हम पहाड़ी दीवार को पार कर गए थे और अब पहाड़ की दूसरी ओर थे। मैंने देखा कि टेकरी यहाँ ज़्यादा ऊँची नहीं है; ज़्यादा से ज़्यादा ५०० फुट ऊँची होगी। इससे मालूम हुआ कि झील का पेंदा मैदान से काफ़ी ऊँचाई पर रहा होगा। यह मैदान, जहाँ हम थे, प्यालेनुमा था; पहाड़ियाँ उसे घेरे हुए थीं; पहले इस प्रकार का एक मैदान हम पार कर आए थे और उसका वर्णन भी कर चुके हैं। यह अवश्य है कि इसका विस्तार पहले से दस गुना था। प्रकृति की चहार-दीवारी से घिरे इस मैदान के बहुत बड़े भाग में खेती हो रही थी जो पत्थर की दीवार से घेर दिया गया था जिससे चौपाये उसे खराब न कर सकें।

इस मैदान में स्थान-स्थान पर बड़ी-बड़ी घास उग रही थी और कुछ मील दूर, उसके मध्य भाग के निकट बड़े-बड़े खंडहर फैले हुए थे। उस समय मैं ज्यादा कुछ नहीं देख सका क्योंकि हमारे वहाँ पहुँचने के साथ ही सैकड़ों अमाहग्गर आ गए और हमें घेरकर खड़े हो गए। ये उन अमाहग्गरों के समान ही थे, जिनसे हमारा परिचय था। इसके बाद एकाएक टुकड़ियों में बँटे, बहुत-

से सशस्त्र सिपाही आ गए। इनके अफसरों के हाथ में हाथी दाँत के सोंटे थे। वे पहाड़ के कगारों से चींटियों की तरह तुरन्त झुण्ड के झुण्ड आ गए थे। सिपाही तथा उनके अफसर कमर में तेंदुए की खाल तो पहने ही थे, कपड़े भी पहने हुए थे। मुझे पता चला कि ये 'श्रीमती' के अंगरक्षक हैं।

उनका सरदार आगे बढ़ा और उसने माथे पर हाथी दाँत के अपने सोंटे को तिरछा रखकर बिल्लाली को सलाम किया और उससे कुछ पूछा, जिसे मैं समझ न सका। बिल्लाली के जवाब देते ही यह सेना लौट पड़ी और पहाड़ के किनारे-किनारे चली। हमारा डोलियों का कारवाँ उनके पीछे-पीछे चला। लगभग आध मील इस प्रकार चलने के बाद हम एक बड़ी गुफ़ा के सामने रुक गए। यहाँ बिल्लाली नीचे उतरा और मुझसे तथा जाब से भी नीचे उतरने के लिए कहा। लियो तो इतना कमज़ोर था कि उसके उतरने का सवाल ही नहीं था। हमने आज्ञा का पालन किया और उस बड़ी गुफा के अन्दर प्रवेश किया। कुछ दूर तक अस्त होते हुए सूर्य की किरणें उसके अन्दर आकर उजाला कर रही थीं। उसके आगे उसमें जगह-जगह जलते दीपक टँगे थे जिनकी पंक्ति बहुत दूर तक चली गई थी।

पहली चीज़ जो मैंने देखी, यह थी कि गुफ़ा की दीवारों पर भी वैसे ही चित्र बने हुए थे जैसे दावत के दिन उपयोग किये गए पात्रों पर हमने देखे थे। इन में प्रेम के दृश्य प्रमुख थे; उसके बाद शिकार की तस्वीरों का स्थान था। इनके अलावा फाँसी, गरम घड़ा सिर पर रखकर अपराधियों का उत्पीड़न इत्यादि के दृश्य थे, द्वन्द्व एवं लड़ाइयों की भी कुछ तस्वीरें थीं; कहीं कुश्तियों के दृश्य थे। जो कुछ मैंने देखा उससे इस नतीजे पर पहुँचा कि अपनी ताक़त या इस भयानक एकान्त के कारण बाहरी शत्रुओं के आक्रमण का सामना इस जाति को बहुत कम करना पड़ा होगा। इन तस्वीरों के बीच-बीच में पत्थरों के अक्षर खुदे हुए थे जो मेरे लिए सर्वथा नवीन थे, क्योंकि वे न यूनानी थे, न मिश्री, न हिब्रू, न असीरियन। वे बहुत कुछ चीनी अक्षरों से मिलते-जुलते थे। गुफा-द्वार के निकट की तस्वीरें तथा लिखावटें जीर्ण होकर मिट चली थीं पर अन्दर की बिल्कुल नई और ताज़ी मालूम पड़ती थीं—वैसी ही जैसी वे खोदने के दिन रही होंगी।

रक्षक दल के सिपाही गुफा-द्वार पर ही रुक गए और हमें अन्दर जाने

के लिए रास्ता बनाकर इधर-उधर खड़े हो गए। गुफा में प्रवेश करने पर हमें श्वेत वस्त्रधारी आदमी मिला, जिसने झुककर हमारा अभिवादन किया, किन्तु कुछ बोला नहीं। बाद में हमें मालूम हुआ कि वह गूँगा और बहरा था।

इस गुफा के कोई बीस फुट अन्दर जाकर एक दूसरी छोटी गुफा या गलियारा था जो मुख्य गुफा के दाहिने बायें चट्टान में काटकर बनाया गया था। हमारी बाईं तरफ, गलियारे के सामने दो पहरेदार खड़े थे, जिससे मैंने अनुमान किया कि वह 'श्रीमती' के महल का प्रवेश द्वार होगा। पर दाहिनी ओर के गलियारे के सामने कोई रक्षक न था और उस गूंगे ने इशारे से हमें उधर ही चलने को कहा। यह रास्ता दीपकों से प्रकाशित था। उसमें कुछ दूर चलने पर हमें एक कमरे का दरवाज़ा दिखाई दिया जिस पर किसी प्रकार की घास से बना एक परदा पड़ा हुआ था।

गूँगे ने उस परदे को हटा दिया और अन्दर जाकर एक रास्ते से हम दूसरे बड़े कमरे में पहुँचे जो उसी तरह ठोस चट्टान को काटकर बनाया गया था। यह देखकर मुझे बड़ा सन्तोष हुआ कि इसकी छत में एक रोशनदान भी बना था जिससे रोशनी आ रही थी। इस कमरे में पत्थर की एक चारपाई, हाथ-मुंह धोने के लिए भरे जलपात्र तथा कम्बलों की जगह पर उपयोग करने को तेंदुए की सुन्दर खालें रखी हुई थीं।

यहाँ हमने लियो को छोड़ दिया जो अब तक गहरी नींद में पड़ा सो रहा था। उस्तेन उसी के पास रुक गई। गूँगे ने घूरकर उसे देखा, मानो कह रहा हो कि "तुम कौन हो, और किसके हुक्म से यहाँ आई हो ?" उसके बाद गूँगा हम लोगों को ऐसे ही कमरों में ले गया। दूसरे कमरे में हमने जाब को छोड़ा। तीसरे, चौथे को क्रमशः बिल्लाली ने और मैंने ले लिया।

अध्याय १२

'अवश्य-माननीया'

लियो को देखने के बाद सबसे पहला काम मैंने और जाब ने यह किया कि हाथ-मुँह धोकर हमने स्वच्छ वस्त्र पहने। जहाज़ के नष्ट होने के बाद से आज तक हम वही कपड़े पहने हुए थे। सौभाग्य से हमारा ज्यादातर सामान ह्वेल-बोट में जहाज़ डूबने के पूर्व ही पहुँच गया था इसलिए सुरक्षित रह गया और नौका से बिल्लाली के आदमियों द्वारा उसकी पूर्वोक्त गुफा में, और बाद में यहाँ लाया गया। हमारे प्रायः सब कपड़े खाकी रंग के, मजबूत फलालैन के बने थे, जिनसे इस सफ़र में मुझे काफ़ी आराम मिला। इसके बने जैकेट, कमीज़ और एक जोड़ी पतलून का वज़न सिर्फ़ ४ पौण्ड था, पर इनसे परिवर्तनशील मौसम तथा सूर्यरश्मियों से मेरी बड़ी रक्षा हुई।

शरीर धो लेने और स्वच्छ कपड़े बदलने से जो राहत हमें हुई उसे हम कभी नहीं भूलेंगे। हमारी प्रसन्नता में साबुन की टिकिया न होने से एक कसर रह गई। हम साबुन लाना भूल गए थे। लेकिन बाद में मुझे मालूम हुआ अमाहज़र, जो मैल को ज्यादा नापसन्द नहीं करते, बदन साफ करने के लिए एक प्रकार की राख का प्रयोग करते हैं, जो शुरू में स्पर्श में बुरी मालूम पड़ती है, पर अभ्यस्त हो जाने पर अच्छी तरह साबुन की जगह काम देती है।

जब मैं कपड़े पहन चुका और कंघी करने के बाद अपनी काली दाढ़ी को कतरकर ठीक कर लिया तब मुझे बड़े जोरों की भूख लग आई। इसलिए मुझे बड़ी ही खुशी हुई जब परदा हटाकर एक जवान गूँगी लड़की मेरे कमरे में आई और उसने मुँह खोलकर इशारा किया। मैं तुरन्त ही समझ गया कि वह भोजन के लिए कह रही है और उसका अनुसरण करते हुए पास के कमरे में गया। यहाँ जाब भी बैठा था, जिसे मेरी ही तरह, एक दूसरी गूँगी लड़की लिवा लाई थी।

चूँकि जाब को अभी तक पिछली बातें भूली न थीं, इसलिए जो लड़कियाँ उसके पास से होकर आती जाती थीं उनको वह शंका की दृष्टि से देखता था।

उसने कहा भी—"इन जवान लड़कियों का रंग-ढंग मुझे शिष्टतापूर्ण नहीं लगता।"

यह कमरा हमारे सोने के कमरे से दूना बड़ा था, जिसे देखकर मैंने अनुमान किया कि असल में यह भोजनागार ही रहा होगा और इसके साथ ही शवों को सुरक्षित रखने के लिए उनमें मसाला भी यहाँ लगाया जाता रहा होगा। ये काटकर बनाई गई गुफाएँ बड़े-बड़े समाधि-भवनों के रूप में रही होंगी, जिनमें उस विनष्ट जाति के पार्थिव अवशेष आश्चर्यजनक कौशल से शताब्दियों तक सुरक्षित पड़े रहे होंगे। इस कमरे में हर तरफ़ पत्थर की ठोस लम्बी मेज़ बनी हुई थी जो प्रायः ३ फुट चौड़ी, ६ फुट ऊँची थी और चट्टान को तराश कर बनाई गई थी। ये मेज़ें किनारे की तरफ़ कुछ खमदार या अन्दर से गोलाई लिये हुए थीं जिससे बैठने वालों के घुटनों को आराम मिलता था। इनमें से हर एक के ऊपर चट्टान में एक-एक झरोखा बना हुआ था जिससे हवा और रोशनी आती थी। पर इन मेज़ों में भी अन्तर था जिसकी ओर पहले मेरा ध्यान नहीं गया। हमारे द्वार से प्रवेश करने पर बाईं ओर जो मेज़ पड़ती थी उसका उपयोग खाने के लिए नहीं शवों में मसाला लगाने के लिए होता था। क्योंकि उसमें शवों के सिर और शरीर रखने के लिए स्थान बने थे और गले के लिए पत्थर में तकियानुमा चीज़ बनी थी। इसमें आदमी की शकल के पाँच छिछले गड्ढे से बने थे, जिनका साइज़ पूरे आदमी से लेकर शिशु की लम्बाई तक था। मतलब इनमें हर तरह के शव रखने का प्रबन्ध था। इनमें बीच-बीच में छेद भी थे जिससे पानी या अन्य द्रव निकल जायँ। अगर इसकी पुष्टि की जरूरत थी तो वह भी गुफा की दीवार में ऊपर की ओर देखने से मिल गई। कमरे की दीवार पर चारों ओर छेनी से तराशे हुए बहुत से चित्र बने थे जो बिल्कुल ताजे बने से लगते थे और जिनमें एक लम्बी दाढ़ी वाले बूढ़े की मृत्यु, मसाला-लेपन तथा समाधीकरण के दृश्य थे। यह बूढ़ा कदाचित् इस देश का कोई प्राचीन राजा या सरदार रहा होगा।

पहली तस्वीर उसकी मृत्यु की थी। बादशाह पलंग पर पड़ा है। वह मर रहा है। उसके पलंग के पास स्त्रियाँ और बच्चे रो रहे हैं। औरतों के बाल खुले हुए उनकी पीठ पर फैल रहे हैं। दूसरे चित्र में मसालालेपन की क्रिया दिखाई गई है। वह पूर्वोक्त प्रकार की, बीच में तराशी मेज़ पर नंगा पड़ा है,

कदाचित् यह चित्र उसी टेबुल से सम्बन्ध रखता है जिसका जिक्र हमने अभी किया है। इस काम में तीन आदमी लगे हुए हैं। एक आदमी खड़ा काम का निरीक्षण कर रहा है ; दूसरा अपने हाथ में चोंगानुमा कोई पात्र लिये हुए है जिसकी टोंटी शव की छाती के पास एक छेद से जो अनुवक्षीय महाधमनी में है, जुड़ी हुई है। तीसरा आदमी शव के इधर-उधर एक-एक पाँव किये खड़ा है और अपने हाथों से ऊपर की ओर एक बड़ा पात्र उठाये हुए है, जिससे कोई गरम भाप निकलती हुई चीज़ चोंगे में गिर रही है। इस खुदे चित्र में सबसे विचित्र बात तो यह है कि चोंगे वाला और बड़े पात्र वाला दोनों अपनी नाक दबाये हुए हैं, कदाचित् शव से निकलती बदबू से बचने के लिए। या अधिक संभव यह है कि जो द्रव मृतक की शिराओं में पहुँचाया जा रहा है उसकी तीक्ष्ण गंध से बचने के लिए उन्होंने अपनी नाक दबा ली हो। दूसरी विचित्र बात यह है कि ये तीनों आदमी अपने चेहरे पर कपड़ा बाँधे हुए हैं, जिसमें आँखों से देखने के लिए छेद बने हुए हैं।

तीसरा प्रस्तर-चित्र मुर्दे के दफनाने का है। मुर्दे का सारा बदन ठण्डा और लकड़ाया हुआ मालूम होता है। वह सफेद लबादा पहने पड़ा हुआ है। जिस पत्थर की पटिया पर वह लेटा हुआ है वह वैसी ही है जिस पर बिल्लाली वाली गुफा में हम सोये थे। इसके सिर और पाँव की ओर दीपक जल रहे हैं और इसके अगल-बगल सुन्दर चित्रित पात्र रखे हुए हैं, जिनमें कदाचित् खाद्य-सामग्री भरी है। छोटा कमरा शोक प्रदर्शन करने वालों तथा ऐसे संगीतकारों से भरा हुआ है जो वीणा जैसा कोई वाद्य बजा रहे हैं। शव के पैताने एक आदमी चादर लिये खड़ा है जो उससे शव को ढकना चाहता है।

चूंकि ये कला के अद्भुत नमूने थे इसलिए भी हमने इनका कुछ विस्तार से वर्णन किया है। उस प्राचीन विस्मृत जाति की मृतक-क्रियाओं का ठीक-ठीक ज्ञान कराने की दृष्टि से भी इन चित्रों का बड़ा भारी महत्त्व है। मेरे मन में विचार आया कि केम्ब्रिज के अपने पुरातत्वान्वेषी मित्रों से यदि कभी मुझे इन चित्रों के विषय में बताने का अवसर मिला तो मेरे भाग्य पर उन्हें कितनी ईर्ष्या होगी। कदाचित् वे कहेंगे कि मैं अत्युक्ति कर रहा हूँ, यद्यपि इस इतिहास के प्रत्येक पृष्ठ पर इस सत्य के सम्बन्ध में इतना आन्तरिक प्रमाण संग्रहीत है कि मेरे लिए उसे गढ़ लेना असम्भव ही समझा जाना चाहिए।

जल्दी-जल्दी मैं इन तस्वीरों को, जो पत्थरों में खुदी थीं, देख गया और आकर भोजन की चौकी पर बैठ गया और डटकर स्वादिष्ट भोजन किया। भोजन में बकरे का उबला माँस, ताज़ा दूध और छोटी-छोटी रोटियाँ थीं जो साफ और चिकनी काठ की तश्तरियों में परसी गई थीं।

भोजन के बाद हम लौटकर लियो की हालत देखने गए और बिल्लाली 'अवश्य-माननीया' के दर्शन करने और उनकी आज्ञा लेने चला गया। लियो के कमरे में पहुँचकर हमने देखा कि उसकी हालत बहुत ज्यादा खराब है। वह बेहोशी से तो जगा था पर विक्षिप्त-सा, अनाप-शनाप बक रहा था और कैम्ब्रिज की किसी नौका-दौड़ की बातें करके उबल-उबल उठता था। जब हमने कमरे में प्रवेश किया तो उस्तेन उसे पकड़े हुए थी। मैं उससे बोला। मेरी वाणी से उसे कुछ राहत मिली; कम से कम वह पहले से बहुत शान्त हो गया और एक खुराक कुनैन लेने को भी राज़ी हो गया।

मैं एक घण्टे तक उसके पास बैठा रहा। मुझे याद है कि अँधेरा छाता जा रहा था और मुझे तकिये पर, जिसे हमने बैग पर कम्बल लपेटकर काम चलाऊ बना दिया था, केवल उसका सिर, सोने की तरह चमकता दिखाई पड़ता था। एकाएक बड़े रोब के साथ बिल्लाली आया और सूचित किया कि रानी ने स्वयं मुझ से मिलने की इच्छा प्रकट की है। उसने यह भी कहा कि ऐसा सम्मान किसी-किसी को ही मिल पाता है। मैंने जिस शान्ति से इस सम्मान को ग्रहण किया उससे वह डर-सा गया। सच्ची बात तो यह थी कि मुझे एक जंगली, काली कलूटी, रानी फिर चाहे वह कितनी ही प्रभुत्वशाली और रहस्यमयी हो, से मिलने की संभावना से, कोई खुशी न हुई थी; विशेषतः इसलिए कि मेरा मन प्यारे लियो की बीमारी से बहुत चिन्तित था और मुझे उसके जीवन के लिए बड़ा भय हो रहा था।

फिर भी मैं उसका अनुसरण करने के लिए उठ खड़ा हुआ। जाते हुए मेरी दृष्टि फर्श पर गिरी किसी चमकती चीज़ पर पड़ी। मैंने उसे उठा लिया। शायद पाठकों को याद होगा कि ठीकरे के साथ सन्दूकची में एक यंत्र भी निकला था जिसमें एक वृत्त, एक बतख तथा कुछ विचित्र लिखावट थी। इन निशानों का अर्थ 'सुतेन सी रा' अर्थात् 'सूर्य का राजपुत्र' था। इस छोटे यंत्र को लियो ने ज़िद कर के एक बड़ी अंगूठी में जड़वा लिया था। यही अँगूठी मैंने फर्श पर

Pratap College
SRINAGAR

पड़ी पाई थी। ज्वर की तीव्रता में, विक्षिप्त की भाँति उसने इसे अँगुली से निकालकर फर्श पर फेंक दिया होगा। यह सोचकर कि अगर मैं इसे छोड़ देता हूँ तो कहीं गायब हो जाएगी, मैंने उठाकर अपनी छोटी अँगुली में उसे डाल लिया और जाब तथा उस्तेन को लियो के पास छोड़कर बिल्लाली के साथ चला गया।

कमरे और बरामदे को पार करते हम एक दूसरे रास्ते में पहुँचे जिसके मुहाने पर दो रक्षक—गार्ड—मूर्तिवत् खड़े थे। हमारे पास पहुँचते ही उन्होंने झुककर सलाम किया और अपने बड़े-बड़े बरछे उठाकर अपने माथे पर उसी प्रकार तिरछे रखे जिस प्रकार सिपाहियों के सरदार ने हमारे 'कोर' पहुँचने पर हाथी दांत का सोंटा अपने सिर पर रखा था। हम उन दोनों के बीच से होकर आगे बढ़े। इसके बाद हमें ठीक उसी तरह का एक गलियारा मिला जिस प्रकार हमारे कमरों के पास था। अन्तर इतना ही था कि यह मार्ग खूब प्रकाश पूर्ण था। कुछ आगे बढ़ने पर हमें दो गूँगी स्त्रियाँ और दो गूंगे पुरुष मिले, जिन्होंने झुककर हमारा अभिवादन किया। स्त्रियाँ हमारे आगे और पुरुष पीछे हो गए। हम आगे बढ़े; हमें अनेक दरवाज़ों के पास से, जिन पर वैसे ही पर्दे पड़े थे जैसे हमारे ठहरने के कमरों के दरवाज़ों पर थे, गुज़रना पड़ा। हमें बाद में पता चला कि ये दरवाजे इन्हीं रानी के गूंगे-बहिरे रक्षकों के कमरों में खुलते हैं। कुछ और आगे बढ़ने पर हमें एक दरवाज़ा दिखाई पड़ा। यह दरवाज़ा हमारे ठीक सामने था, जब अन्य दरवाज़े हमारी बायीं ओर पड़े थे। इससे अनुमान होता था कि यहाँ रास्ता खत्म हो गया है। यहाँ दो श्वेत, बल्कि, पीत वस्त्रधारी रक्षक खड़े थे, जिन्होंने झुककर हमें सलाम किया और भारी पर्दों को हटाकर हमें अन्दर के कमरे में जाने दिया। यह कमरा ४० फुट लम्बा और उतना ही चौड़ा था जिसमें ८-१० पीतवस्त्रधारिणी सुन्दर युवतियाँ, गद्दियों पर बैठी हुई, हाथी दाँत की सुइयों से जरदोज़ी के काम बना रही थीं। ये स्त्रियाँ भी गूँगी-बहरी थीं।

इस सुप्रकाशित कमरे के अन्तिम छोर पर एक दूसरा दरवाज़ा था जिस पर पूर्वी ढंग के सुन्दर पर्दे पड़े थे, जो अब तक देखे पर्दों से बिल्कुल भिन्न थे। यहाँ दो बहुत ही सुन्दर गूँगी लड़कियाँ गर्दन झुकाए और हाथ बाँधे खड़ी हुई थीं। हमारे आगे बढ़ने पर इनमें से हर एक ने अपना एक-एक हाथ उठाकर पर्दा

खींच लिया। अब बिल्लाली ने एक विचित्र बात की। वह देखने में आदरणीय बूढ़ा, साष्टांग दण्डवत् करता हुआ ज़मीन पर पड़ गया और अपनी स्वच्छ धवल दाढ़ी को धूल में घसीटता और ज़मीन पर रेंगता हुआ बढ़ने लगा। मैंने खड़े-खड़े ही उसका अनुसरण किया। उसने कंधे से सिर फिराकर मेरी ओर देखा और बोला :

"मेरे बेटे ! मेरे लंगूर ! घुटनों एवं हाथों के बल ज़मीन पर लेट जा। हम 'अवश्य-माननीया' के सामने जा रहे हैं और अगर तू नम्र एवं विनीत नहीं बनेगा तो वह तुझे वहीं फूँककर उड़ा देगी जहाँ तू खड़ा है।"

मैं डरकर रुक गया और मेरे घुटने स्वतः मुड़ने और झुकने लगे किन्तु विचार ने मेरी रक्षा की। मैंने सोचा, मैं अंग्रेज हूँ और एक जंगली औरत के सामने अमल में क्यों लंगूर बनूँ, नाम तो मेरा पड़ ही गया है। नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। अगर एक बार मैं घुटनों के बल रेंगा तो सदा मुझे वैसा करना पड़ेगा जो अपनी हीनता की स्वीकृति होगी। यह सब सोचकर मैं वीरतापूर्वक वैसे ही खड़े-खड़े आगे बढ़ा। अब हमने एक दूसरे कमरे में प्रवेश किया जो पिछले कमरे से बहुत छोटा था। इसकी दीवारों पर भी वैसे ही बढ़िया रेशमी ज़रदोज़ी का काम किए हुए पर्दे पड़े थे जैसा कि दरवाजे पर पड़ा था। फर्श पर बढ़िया कालीन बिछा था और कमरे में जहाँ-तहाँ आबनूस की हाथी दाँत से मढ़ी हुई कुर्सियाँ रखी थीं। इसके दूसरे सिरे पर एक दरवाज़ा-सा दिखाई देता था जिस पर वैसे ही पर्दे पड़े थे और जिससे छनकर प्रकाश की किरणें आ रही थीं। इस कमरे में कोई न था।

बुड्ढा बिल्लाली बड़े कष्ट से कमरे में रेंगता हुआ चल रहा था। मैं उसका अनुसरण करता था। पर मुझे असफलता का अनुभव हो रहा था क्योंकि जब हमें एक पेट के बल रेंगते हुए बूढ़े का अनुसरण करना पड़े हम मर्यादा युक्त नहीं दिखाई पड़ सकते। वह इतने धीरे-धीरे चलता था कि मुझे बार-बार रुकना पड़ता था और कभी-कभी तो इच्छा होती थी कि ठोकर मारकर उसे आगे बढ़ा दूँ। कभी-कभी तो मुझे हँसी आ जाती थी, इस पर बुड्ढा बिल्लाली डर कर और अपना भयभीत चेहरा घुमाकर मुझसे कहता—"अरे मेरे लंगूर ! यह क्या करता है ?"

अन्ततो गत्वा हम उस छोर वाले दरवाजे के पर्दे के पास पहुँच गए।

बिल्लाली ने ज़मीन पर बिल्कुल औंधे लेटकर अपने हाथ सिर की ओर फैला दिए, जैसे कोई मुर्दा हो। कुछ समझ में न आया कि मैं क्या करूँ; इसलिए मैं कमरे पर नज़र डालने लगा। एकाएक मुझे अनुभव हुआ कि कोई पर्दे के पीछे से मुझे देख रहा है। मैं उस आदमी को देख नहीं सकता था, पर मुझे उसकी दृष्टि का निश्चित रूप से अनुभव हो रहा था। इसका मेरी नाड़ियों पर बड़ा विचित्र प्रभाव पड़ा। मैं डर गया; मैं यह नहीं जानता कि क्यों ऐसा हुआ। यह जगह अजीब और सुनसान थी; उसके पर्दे और दीपक की ज्योति उसके सूनेपन को और बढ़ा रही थी—जैसे रात के समय एक निर्जन प्रकाशयुक्त सड़क अँधेरी सड़क की अपेक्षा अधिक सूनी मालूम पड़ती है। भयंकर नीरवता थी और उसके बीच पर्दे के पास बिल्लाली मुर्दे की भाँति ज़मीन पर पड़ा हुआ था। इस पर्दे से छनकर सुगन्ध की तरंगें कमरे में आ रही थीं। क्षण पर क्षण बीतने लगे फिर भी कहीं जीवन का कोई चित्र नहीं; न पर्दे में ही कोई गति होती है। पर अनुभव हो रहा है कि कोई बराबर मुझे देख रहा है; उसकी दृष्टि मेरे भीतर प्रवेश करती जा रही है। यहाँ तक कि एक अद्भुत प्रकार का भय मुझमें समा गया और पसीने की बूँदें मेरे माथे पर चमकने लगीं।

आखिरकार पर्दा धीरे-धीरे हिलने लगा। इसके पीछे कौन होगा? वही नंगी जंगली रानी, कोई मुरझाई प्राच्यसुन्दरी या उन्नीसवीं सदी की कोई तरुणी, तीसरे पहर की चाय पीती हुई? मुझे इसकी कोई धारणा न थी और इन तीनों में किसी के होने पर मुझे आश्चर्य न होता। मैं आश्चर्य से परे था। अब पर्दा ज़ोर से हिला और उसकी तहों के बीच से एक परम सुन्दर गोरा हाथ बाहर निकला—तुषारधवल तथा कलियों जैसी लम्बी अँगुलियों वाला; रक्तिम नाखूनों से युक्त। इस हाथ ने पर्दे को पकड़ा; उसे एक ओर खींच दिया और एक वाणी सुनाई पड़ी—मैं समझता हूँ कि उससे मधुर, प्यारी, सुरीली आवाज़ मैंने अपने जीवन भर में नहीं सुनी; एक सोते की गूँज जैसी।

अमाहज़र लोग जैसी अरबी बोलते हैं उससे कहीं अधिक शुद्ध अरबी में आवाज़ आई—"अजनबी! तू इतना डरा हुआ क्यों है?"

मैं सोचता था कि अपने आन्तरिक भय के बावजूद मैंने ऊपर से अपने चेहरे को निरुद्विग्न रखा है, इसलिए मुझे इस सवाल पर आश्चर्य हुआ। मैं सोच ही रहा था क्या उत्तर दूं कि पर्दा उठ गया और एक लम्बी शक्ल हमारे सामने

आ गई। मैं जान-बूझकर 'शक्ल' शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ, क्योंकि न केवल गात्र बल्कि उसका चेहरा भी किसी चिकने, श्वेत, महीन कपड़े से ढका था, जिसे देखकर पहले तो मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मुर्दा सफ़ेद कफ़न पहने अपनी क़ब्र से बाहर निकल आया हो। मैं नहीं जानता कि मेरे मन में ऐसा विचार क्यों आया क्योंकि यह ओढ़नी इतनी पतली थी कि उसके नीचे से उसकी गोरी काया की लालिमा फूटकर बाहर निकल रही थी। जो भी हो पर मैं डर जरूर गया और मेरे रोयें खड़े हो गए; मेरे मन में विचार आया कि मैं किसी अपार्थिव चीज़ के सामने खड़ा हुआ हूँ। इतने पर भी मैंने देख लिया कि 'ममी' जैसी वह शक्ल एक लम्बी सुन्दरी की है जिसके अंग-अंग में सौन्दर्य छलक रहा है और जिसमें सर्पिणी की लचक और सुघराई है; वैसा सौन्दर्य और वैसी सुघराई मैंने कभी न देखी थी। जब वह अपना कोई हाथ या पाँव हिलाती थी तो सारा शरीर लहरा उठता था; गर्दन झुकती न थी, पेंच खाकर रह जाती थी।

उस मधुर वाणी ने फिर पूछा—"ऐ अजनबी! तू इतना डरा हुआ क्यों है?" वाणी जिसने मधुरतम सङ्गीत की तरंगों के समान मेरा कलेजा उछाल दिया। "क्या मुझ में कोई ऐसी चीज़ है जिससे आदमी भयभीत हो? तब तो जो आदमी पहले थे, उनसे आज के आदमी बहुत बदल गए प्रतीत होते हैं।" इतना कहकर वह एक अजीब अदा से फिरी, अपनी एक बाँह आगे की ओर उठाए हुए जिससे उसकी सम्पूर्ण सुन्दरता दिखाई पड़ती थी, तथा गहरे काले बाल जो चिकनी लहरों की भाँति उसके श्वेत वस्त्रों पर लहराते हुए, खड़ाऊँ पहने चरण तक पहुँचते थे।

"हे रानी! यह आपकी सुन्दरता है जिससे मैं इतना डर गया हूँ," मैंने बड़े विनीत भाव से उत्तर दिया क्योंकि मुझे और कुछ सूझ नहीं पड़ा कि क्या कहना चाहिए। मेरी बात सुनकर जमीन पर पड़ा हुआ बिल्लाली बुदबुदाया—"बहुत ठीक, मेरे लंगूर, बहुत ठीक।"

"मैं देख रही हूँ कि आज भी मर्द अपने झूठे शब्दों से हम स्त्रियों को फुसलाने की कला में निपुण हैं।" वह बोली। ऐसा लगा जैसे दूर पर चाँदी की घण्टियाँ बज उठी हों। "ऐ अजनबी! तू डर इसलिए गया था कि मेरी आँखें तेरे दिल को टटोल रही थीं। तेरे भय का यही कारण था। फिर भी एक औरत होने के कारण मैं तेरे झूठ के लिए तुझे क्षमा कर देती हूँ, क्योंकि उसे

तूने बड़े विनीत भाव से कहा है। पर यह तो बता कि गुफा-निवासियों के इस देश में तू कैसे आ गया—दलदलों और बुरी चीजों से भरे इस देश में जहाँ मृतकों की मृत पुरानी परछाइयाँ डोलती हैं ? तू यहाँ क्या देखने आया ? तुझे अपनी जान क्यों इतनी सस्ती लगी कि तू उसे **'हिया'** के हाथों, **'अवश्य-माननीया'** के हाथों बेचने आ गया ? यह भी बता कि तूने वह भाषा कैसे सीखी जिसमें मैं बोलती हूँ ? यह बहुत पुरानी भाषा है—प्राचीन शाम (सीरिया) की सुन्दर सन्तति ! क्या अब तक वह दुनिया में जी रही है ? तू देखता है कि मैं गुफाओं में और मृतकों के बीच रहती हूँ, और मुझे दूसरे आदमियों के बारे में कुछ नहीं मालूम, न मैंने कभी उन्हें मालूम करने की चेष्टा ही की। ऐ अजनबी ! मैं अपनी स्मृतियों के साथ जी रही हूँ और मेरी स्मृतियां एक कब्र में पड़ी सो रही हैं—कब्र में जिसे मैंने अपने हाथों खोदा। ठीक ही कहा गया है कि मनुष्य स्वयं अपने हाथों अपने कुमार्ग की रचना करता है"—और उसकी आवाज़ भावोद्वेग से काँप गई और उसमें करुणा भर गई। पर एकाएक उसकी निगाह ज़मीन पर लेटे बिल्लाली पर पड़ी और वह सावधान हो गई।

"ओ बुड्ढे ! तू यहां है ? वतला तेरे कुटुम्ब में यह गड़बड़ी कैसे हुई ? हमारे मेहमानों पर हमला हुआ। और एक को तो गर्म घड़े से मारने और तेरे बच्चे उन राक्षसों द्वारा खा जाने की ही तैयारी थी। और अगर दूसरे भी वीरता-पूर्वक न लड़ते तो उन्हें भी मार दिया गया होता और उनके शरीर से जो जान निकल जाती उसे मैं भी वापस नहीं ला सकती थी। बुड्ढे ! इन बातों का क्या मतलव है ? बोल, तुझे क्या कहना है, क्यों न तुझे उन लोगों को सौंप दूँ जो मेरी प्रतिहिंसा को कार्यान्वित किया करते हैं ?"

उसकी आवाज़ क्रोध से तेज होती गई, यहाँ तक कि चट्टानी दीवारों से टकराकर उसकी प्रतिध्वनि स्पष्ट सुनाई पड़ती थी और पर्दे के अन्दर से भी उसकी लाल आँखें चमक उठीं। गरीब बिल्लाली, जिसे मैं बड़ा निडर समझता था, उसके शब्दों को सुनकर डर के मारे थर-थर काँपने लगा।

वह जमीन से अपना सफेद सिर उठाए बिना ही बोला—"ओ हिया ! ओ अवश्य-माननीया ! तुम महान् हो इसलिए दया करो। मैं अब भी सदा की तरह तुम्हारी आज्ञा मानने वाला दास हूँ। ओ हिया ! इसमें मेरी कोई साज़िश या गलती नहीं। उन बदमाशों ने यह सब किया जिन्हें

मेरे पुत्र कहा जाता है। तुम्हारे मेहमान 'सुअर' द्वारा तिरस्कृत एक स्त्री के बहकाने पर उन्होंने इस देश की पुरानी परम्परा का पालन करते हुए इन मेहमानों के साथ आए मोटे काले अजनबी का मांस खाने का निश्चय किया। उन्होंने सोचा कि काले आदमी के लिए तो 'अवश्य-माननीया' का कोई आदेश है नहीं। जब लंगूर और शेर ने देखा कि वे वैसा करने जा रहे हैं तो इन्होंने औरत को मार दिया तथा उत्तप्त घड़े से बचाने के लिए अपने उस नौकर को भी मार डाला। तब उन बदमाशों ने, इस पापी के बच्चों ने, खून की लिप्सा में पागल होकर शेर, लंगूर और सुअर के ऊपर हमला कर दिया। पर इन्होंने बड़ी वीरतापूर्वक उनका मुकाबल किया। खूब लड़े; बहुतों को मार दिया और तब तक अपनी रक्षा करते रहे जब तक कि मैं न आ गया। मैंने उन कुकर्मियों को बंधवाकर यहाँ 'कोर' भेज दिया है ताकि तुम्हारी महत्ता उनका न्याय करे। ओ अवश्य-माननीया ! ओ श्रीं ! यहाँ वे मौजूद है।"

"हाँ, बुड्ढे ! मैं जानती हूँ। डरो मत, कल मैं बड़े हाल में बैठूंगी और उनका फैसला करूँगी। जहाँ तक तेरी बात है, मैं तुझे माफ करती हूँ, पर खबरदार ! आगे से अपने 'कुटुम्ब' को ठीक तरह से रखना। अच्छा, जा।'

आश्चर्यजनक तत्परता के साथ बिल्लाली अपने घुटनों के बल उठा। उसकी सफेद दाढ़ी अब भी जमीन चूम रही थी, फिर वह जैसे रेंगते हुए आया था वैसे ही लौटा और अन्त में पर्दे के बाहर हो गया, और मैं अकेला उस भयंकर पर परम आकर्षक स्त्री के साथ कमरे में रह गया।

अध्याय १३

आयेशा घूँघट हटाती है

श्री ने कहा—"वह गया सफ़ेद दाढ़ी वाला मूर्ख बुड्ढा ! आह ! मनुष्य अपने जीवन में कितना कम ज्ञान प्राप्त करता है। वह इसे पानी की भाँति एकत्र करता है पर पानी की भाँति ही यह उसकी उँगलियों के बीच से निकल

जाता है, फिर भी अगर ओस की बूँदों के समान उसका हाथ भीगा भी रह जाता है तो मूर्खों की पीढ़ी की पीढ़ी पुकार उठती है—"देखो, वह एक ज्ञानी व्यक्ति है !" क्या ऐसा नहीं है ? "पर वे तुम्हें क्या कहकर पुकारते हैं ? वह तुम्हें 'लंगूर' कहता था ।" इसके बाद वह हँसी और फिर बोली—"इस प्रकार नाम रखना इन जंगलियों का ढंग ही है ; उनमें कल्पना तो होती नहीं इसलिए वे जिन जानवरों से परिचित हैं उन्हीं के नाम पर नाम रखते हैं । अनजबी ! तुम्हें अपने देश में लोग क्या कहकर पुकारते हैं ?"

मैंने उत्तर दिया—"हे रानी ! वहाँ लोग मुझे होली कहते हैं ।"

उसने बड़ी कठिनाई से पर बड़े ही मोहक लहजे में कहा—"होली ! और होली क्या होता है ?"

मैंने उत्तर दिया—"होली एक काँटेदार वृक्ष होता है ।"

"बहुत ठीक ! तुम्हारी शक्ल भी काँटेदार वृक्ष जैसी है । तुम शक्तिमान और कुरूप हो पर अगर मेरा ज्ञान त्रुटिपूर्ण नहीं हो तो तुम हृदय के ईमानदार हो । तुम पर भरोसा किया जा सकता है । फिर तुम विचारवान भी हो । पर होली ! अब वहाँ खड़े न हो, इधर मेरे पास आकर बैठो । मैं उन गुलामों की तरह अपने सामने तुम्हें रेंगता हुआ नहीं देखना चाहती । मैं उनकी पूजा और उनके भय से थक गई हूँ ; जब वे मुझे तंग करते हैं तो कभी-कभी मैं उन्हें तमाशे के लिए दण्ड दे देती हूँ । इससे दूसरे थर्राकर सफेद पड़ जाते हैं और दिल से डर जाते हैं ।"

इतना कहकर उसने अपने हाथीदाँत जैसे हाथ से पर्दे को एक तरफ़ कर दिया कि मैं अन्दर आ सकूँ ।

मैं काँपता हुआ अन्दर गया । वह औरत भयानक थी । पर्दे के अन्दर एक लघु कक्ष था, १२ फुट लम्बा, १० फुट चौड़ा । उसमें एक कोच पड़ा था । पास ही एक मेज़ पर फल और स्वच्छ जल का गिलास रखा था और उसकी एक ओर पत्थर में कटा एक छोटा कुण्ड बना था जिसमें स्वच्छ जल भरा हुआ था । दीपकों से मधुर प्रकाश हो रहा था । वहाँ की वायु एवं पर्दों में एक सूक्ष्म सुगंध थी । श्री ने जो कपड़े पहन रखे थे उनसे तथा उसके सुन्दर बालों से भी सुगंध निकल रही थी । मैं उस छोटे कमरे में प्रवेश करके अनिश्चित मुद्रा में, एक ओर चुपचाप खड़ा हो गया ।

कोच की ओर इशारा करके 'श्री' ने कहा—"बैठो। अभी तक तुम्हें डरने की कोई बात नहीं है, और जब ऐसी बात होगी तो तुम्हें देर तक भय के बीच ठहरना न पड़ेगा, क्योंकि मैं तुरन्त ही क़त्ल कर दूँगी। इसलिए निश्चित होकर बैठो।"

मैं कोच के पैताने, पानी के कुण्ड के निकट, बैठ गया और वह उसकी दूसरी ओर बैठ गई।

अब उसने कहा—"हाँ, तो होली, मुझे बताओ, तुम्हें अरबी भाषा कैसे आई? यह मेरी अपनी प्यारी भाषा है, क्योंकि मैं जन्म से अरब हूँ, बल्कि 'अल अरब अल अरीबा', अरबों में अरब हूँ। मैं काहतान* के पुत्र यारव के वंश से हूँ। मैं सुन्दर प्राचीन नगर ओज़ल में पैदा हुई थी जो यमन प्रदेश में है। तुम अरबी बोलते तो हो पर वैसी नहीं जैसी हम लोग बोला करते थे। तुम्हारे उच्चारण में वह मिठास नहीं है जो हमयार क़बीले की जबान में पाई जाती थी और जिसे सुनने का सौभाग्य मुझे मिला था। कुछ शब्द बदले हुए से भी मालूम पड़ते हैं जैसा कि वे अमाहज़र लोगों में भी बदल गए हैं। अमाहज़रों ने तो इस भाषा की पवित्रता को विकृत और कलंकित कर दिया है और मुझे उनके साथ एक दूसरी ही बोली में बोलने को विवश होना पड़ता है।

मैंने उत्तर दिया—"मैंने वर्षों तक इसका अध्ययन किया है। यह भाषा अब तक मिश्र तथा दूसरे स्थानों में भी बोली जाती है।"

"अच्छा, अभी तक यह भाषा बोली जाती है? और अभी तक मिश्र बना है। मिश्र में आजकल सिंहासन पर कौन-सा 'फेरो' है? अब भी ईरानी 'ओकस'

---

* कान्तान का पुत्र यारव, जो अब्राहम से कई सदी पहले हुआ था, ही प्राचीन अरबों का पूर्वज था। उसी के नाम पर उस देश का 'अरब' नाम पड़ा। अपने को 'अल अरब अल अरीबा' (अरबों में अरब) कहकर श्री यही बताना चाहती थी कि बाद में आकर बसे अरबों से भिन्न मैं शुद्ध अरब रक्त से पैदा हुई हूँ और अब्राहम के पुत्र इस्माइल के वंशजों में नहीं हूँ। ये दूसरे लोग 'अल अरब अल मुस्तरेबा' कहे जाते हैं।

के वंश का ही कोई है, या एकेमीनियन लोग खत्म हो गए ? ओकस को हुए तो बहुत दिन गुज़र गए होंगे ?"

मैं घबराकर बोला—"ईरानियों को तो मिश्र से हटे दो हज़ार वर्ष हो गए होंगे। उनके बाद तो टालोमी, रोमन और दूसरे लोग वहाँ आए और फले-फूले एवं उन्होंने नील पर हुकूमत की। फिर जब उनका समय पूरा हुआ, चले गए। क्या आप ईरानी बादशाह आर्टा ज़रक्सीज़ को जानती हैं ?"

इस पर वह हँस पड़ी, किन्तु बोली कुछ नहीं। एक बार मुझे पुनः कँपकँपी आ गई। उसने पूछा—"और यूनान ? क्या अब भी कोई यूनान है ? ओह ! मैं यूनानियों को प्यार करती थी। वे दिन की तरह सुन्दर और चतुर होते थे किन्तु हृदय के कठोर और मन के चंचल थे।"

मैंने कहा—"हाँ, अब भी यूनान है। कुछ दिनों से तो वह एक राष्ट्र बन गया है। फिर भी आज के यूनानी वैसे नहीं रहे जैसे वे पुराने ज़माने में थे और स्वयं यूनान भी पुराने यूनान की परछाईं भर रह गया है।"

"अच्छा ! तो हिब्रू भी अब तक यरूशलम में होंगे ? और क्या वह मंदिर जिसे बुद्धिमान बादशाह ने बनवाया था अब तक है ? वे अब किस देवता की पूजा करते हैं ? क्या वह मसीहा आया जिसके बारे में वे उपदेश एवं प्रचार करते थे ? और क्या वह दुनिया पर शासन कर रहा है ?"

"नहीं, यहूदी टूटकर दुनिया भर में बिखर गए। यरूशलम अब नहीं है और 'हीरोद' ने जो मन्दिर बनवाया था—"

उसने बीच में ही कहा—"हीरोद ! मैं हीरोद को नहीं जानती। पर तुम कहते चलो।"

"रोमनों ने उसे जला दिया और रोमन गिद्ध उसके भग्नावशेषों पर उड़ते रहे और अब जूड़िया एक रेगिस्तान है।"

"ऐसा ! ये रोमन बड़े लोग थे, और सीधे अपने अन्त तक पहुँच गए; बल्कि नियति की भाँति उन्होंने उसकी ओर दौड़ लगाई। और अपने पीछे निर्जनता छोड़ गए।"

"मौत किसी को नहीं छोड़ती।" मैंने लैटिन (लातीनी) में कहा।

"अरे, तुम लैटिन भी जानते हो ?" वह आश्चर्य से बोली। इतने दिनों के बाद उसके शब्द मेरे कान में पड़े हैं। पर मुझे सन्देह है कि तुम्हारा उच्चारण

वैसा ही है जैसा रोमन करते थे ? यह बात, तुमने जो कही है, किसने लिखी है ? मैं इस लोकोक्ति से परिचित नहीं पर वह उस महान् जाति पर ठीक उतरती है। जान पड़ता है, मैं एक विद्वान् को पा गई हूँ—जिसने विश्व-ज्ञान का जल अपने हाथों में संचित कर रखा है। क्या तुम यूनानी भी जानते हो ?"

"हाँ, रानी, और थोड़ी-थोड़ी हिब्रू भी जानता हूँ; पर उन्हें अच्छी तरह बोल नहीं सकता। वे सब अब मरी भाषाएँ हैं।"

इस पर वह मारे खुशी के, बच्चों की तरह, ताली बजाने लगी। उसने कहा—"ओ होली ! यद्यपि तुम भद्दे वृक्ष हो पर ज्ञान के फल पैदा करने वाले हो। मैं इन यहूदियों से घृणा करती थी, क्योंकि जब मैं उन्हें अपने तत्त्वज्ञान का उपदेश करती थी तो वे मुझे 'काफिर' और 'मूर्तिपूजक' कहते थे। क्या उनका मसीहा आया ? और क्या वह संसार पर शासन करता है ?"

मैंने श्रद्धापूर्वक कहा—"हाँ, उनका मसीहा आया पर वह गरीब और निम्न जाति का था इसलिए उन्होंने उसे अस्वीकार किया, बल्कि उसे कोड़ों से मारकर एक पेड़ पर सूली दे दी। पर उसके शब्द और कार्य जीवित हैं, क्योंकि वह ईश्वर का पुत्र था और सच पूछें तो आज आधी दुनिया पर उसका राज है, पर वह सांसारिक साम्राज्य नहीं है।"

उसने कहा—"आह ! ये कठोर हृदय भेड़िये ! इन्द्रियों और बहुत से देवताओं के अनुयायी, लालची और परस्पर विभक्त ! मुझे अब भी उनके चेहरे दिखाई दे रहे हैं। तो उन्होंने अपने 'मसीहा' को सूली पर चढ़ा दिया। वह सचमुच ईश्वर का पुत्र था तो भी उनके लिए नगण्य था। खैर, इसके विषय में मैं फिर कभी बात करूँगी। अगर कोई ईश्वर शान-शौकत के साथ उनके सामने नहीं आया, तो वे उसकी क्यों परवा करने लगे ? ये विशिष्टता के अभिमानी, जेहोवा, बाल, एस्तोरेथ तथा अनेक मिश्री देवों की पूजा करने वाले, पेटू और रुपये के लोलुप ! उन्होंने मसीहा को इसलिए सूली दे दी कि वह दरिद्र वेश में आया था ? और अब वह सारी पृथ्वी पर फैल गए हैं ? अगर मुझे ठीक याद है तो उनके किसी नबी ने भी ऐसी ही भविष्यवाणी की थी। खैर, छोड़ो इन्हें। इन्हीं यहूदियों ने मेरे दिल को तोड़ा था और दुनिया में मुझे बदनाम करने की कोशिश की थी और मुझे इस सुनसान में धकेल दिया था। जब मैं उन्हें यरुशलम में ज्ञानोपदेश देती थी तो वे मुझे पत्थरों से मारते थे—

हाँ, हाँ, उन सफेद दाढ़ी वाले पाखण्डियों और रब्बियों ने मन्दिर के द्वार पर मुझे पत्थर मारने के लिए लोगों को विवश किया। इधर देखो, अभी तक उस चोट का निशान बना है।" और एक झटके से उसने कपड़ों के भीतर से अपनी सुन्दर बाँह बाहर की, और अपने दूधिया सौंदर्य पर एक लाल निशान की ओर संकेत किया।

मैं भय से पीछे हट गया।

मैंने कहा—"हे रानी! मुझे क्षमा कीजिए। पर मैं चकित हूँ। मैं घबरा गया हूँ। दो हज़ार साल बीत गए जब गोलगोथा में यहूदियों के मसीहा को सूली दी गई थी। तब उससे भी पहले आपने यहूदियों को तत्त्वज्ञान का उपदेश किया था, यह आप क्या कह रही हैं? आप एक औरत हैं, न कि कोई प्रेतात्मा। कोई स्त्री दो हज़ार वर्ष तक कैसे जी सकती है? हे रानी! आप मुझे मूर्ख क्यों बना रही हैं?"

वह कोच पर पीछे की ओर उठँग गई और मैंने पुनः अनुभव किया कि उसकी प्रच्छन्न आँखें मुझ पर पड़ रही हैं और मेरे दिल को टटोल रही हैं। अन्त में बड़े मन्द पर दृढ़ स्वर में वह बोली—"ऐ मनुष्य! जान पड़ता है कि इस धरती पर बहुत से ऐसे रहस्य हैं जिनके बारे में तुम्हें कुछ ज्ञान नहीं है। क्या अब भी तुम्हारा विश्वास है कि सृष्टि की सब वस्तुएँ मर जाती हैं? वे यहूदी भी ऐसा ही समझते थे। मैं तुमसे कहती हूँ कि कुछ भी नहीं मरता। मृत्यु जैसी कोई चीज़ है ही नहीं, यद्यपि 'परिवर्तन' जैसी चीज़ हो सकती है। देखो," उसने चट्टान की दीवार पर बनी कुछ तस्वीरों की ओर संकेत करके कहा—"इस महान् जाति ने जब चट्टानों को खोदकर इन तस्वीरों को बनाया था तब से आज तक तीन बार दो-दो हज़ार वर्ष बीत गए हैं और यद्यपि वे महामारी में नष्ट हो गए पर आज भी वे मरे नहीं हैं। अब भी वे जीवित हैं। इस समय भी उनकी आत्माएँ हमारी ओर खिची आ रही हैं।" उसने एक बार अपने चारों ओर देखा—"कभी-कभी तो निश्चित रूप से मुझे लगता है कि मेरी आँखें उन्हें देख सकती हैं।"

मैंने कहा—"हाँ, पर इस दुनिया के लिए तो वे मर ही चुके हैं।"

"सिर्फ़ कुछ समय के लिए; और इस दुनिया के लिए भी वे बार-बार जन्म लेते हैं। मैं, हाँ, मैं, आयेशा—अजनबी, यही है मेरा नाम—तुमसे कहती हूँ

कि मैं स्वयं एक आदमी के पुनः पैदा होने की प्रतीक्षा में यहाँ बैठी हूँ जिसे मैंने प्यार किया था और तब तक यहाँ बैठी रहूँगी जब तक वह मेरे पास नहीं आता। मैं जानती हूँ कि वह निश्चित रूप से यहाँ आयेगा। यहाँ आकर मुझे बधाई देगा—यहाँ, इसी जगह ! क्या तुम जानते हो कि मैं जो सर्वशक्तिमती हूँ ; मैं, जिसकी सुन्दरता उस यूनानी हेलेन से कहीं ज्यादा है जिसका यशोगान कवियों ने गाया है ; मैं, जिसका ज्ञान सुलेमान से कहीं विस्तृत और गहरा है ; मैं, जो धरती के रहस्य और वैभव को जानती हूँ और सब चीज़ों को अपने उपयोग में ला सकती हूँ—और मैं, जिसने कुछ समय के लिए उस परिवर्तन पर भी विजय पा ली है, जिसे लोग मृत्यु कहते हैं ; मैं, ऐ अजनबी, तुम्हारी समझ से क्यों इन जंगलियों के साथ यहाँ पड़ी हुई हूँ जो जानवरों से भी गए गुज़रे हैं ?"

मैंने नम्रतापूर्वक कहा—"मैं नहीं बता सकता।"

"क्योंकि मैं जिसे प्यार करती हूँ, उसकी प्रतीक्षा कर रही हूँ। कदाचित् मेरा जीवन भी बुरा रहा हो। मैं नहीं जानती, क्योंकि कौन कह सकता है कि बुरा क्या है, भला क्या है ? इसलिए जहाँ वह है वहाँ उसे खोजने जाने के लिए अपने समय से पहले मर भी सकूँ तो मरना नहीं चाहती। कदाचित् मेरे मरने से हमारे बीच ऐसी दीवार खड़ी हो जाय जिसे मैं न लाँघ सकूँ। कम से कम इस विचार से मैं डरती हूँ। फिर उस महावकाश में जिसमें ग्रहगण चक्कर काट रहे हैं, उसे खोजने जाने में मार्ग से भटक जाने का भी भय है। पर एक दिन ज़रूर आयेगा, चाहे उसे पाँच हज़ार वर्ष और लग जायँ और इतने साल काल के चक्र में और गल जायँ—जैसे रात्रि के अन्धकार में क्षीण मेघ-खण्ड गल जाते हैं। या हो सकता है कि वह दिन कल ही हो जब मेरा प्यारा पुनः जन्म ले और एक ऐसे कानून का अनुसरण करते हुए जो किसी भी मानवीय योजना से अधिक शक्तिमान् है, वह मुझे यहाँ पाएगा, यहाँ जहाँ हमने कभी एक दूसरे का चुम्बन लिया था, और निश्चय ही उसका हृदय मेरे प्रति द्रवित होगा, यद्यपि मैंने पहले उसे दुखी किया था। अगर वह मुझे न पहचानेगा, न जानेगा तब भी मुझे प्यार करेगा—और कुछ नहीं तो मेरे सौंदर्य के ही लिए !"

उसकी ये बातें सुनकर एक क्षण के लिए मेरी बोलती बन्द हो गई और मैं

बोल न सका। बात मेरी समझ के बाहर थी!

अन्त में मैंने कहा—"हे रानी! यदि यह ठीक भी हो कि आदमी बार-बार जन्म लेते हैं तो भी आपके साथ तो यह बात नहीं है। यदि आपने जो कुछ कहा है वह सत्य है", यहाँ उसने मुझे तीव्र दृष्टि से देखा और मैं उन प्रच्छन्न आँखों के प्रकाश की पकड़ में आ गया। मैंने जल्दी से अपनी बात पूरी की—"तो आप कभी मरी नहीं।"

उसने कहा—"हाँ, ऐसा ही है पर मेरी बात यह है कि कुछ दैवयोग से और कुछ ज्ञान के द्वारा मैं दुनिया का एक बहुत बड़ा भेद पा गई हूँ। ऐ अजनबी! बता, जब जीवन है तो उसे बढ़ाया क्यों नहीं जा सकता? जीवन के इतिहास में दस, बीस या पचास हज़ार वर्ष क्या हैं? दस हज़ार वर्ष में भी वर्षा और तूफान पहाड़ की चोटी को बहुत कम छोटा कर पाते हैं। दो हज़ार वर्षों में भी ये गुफाएँ बदली नहीं है। सिर्फ मनुष्यों और जानवरों में ही परिवर्तन हुआ है, और मनुष्य भी तो जानवरों जैसा ही है। अगर तुम समझ सको, तो इसमें कोई भी अद्भुत बात नहीं है। जीवन अवश्य अद्भुत है पर जीवन को थोड़ा बढ़ा देने में कोई विचित्रता नहीं है। प्रकृति और प्रकृति के पुत्र मनुष्य दोनों में जीवन-प्रेरणा है और जो उस प्रेरणा का रहस्य जान ले वह प्रकृति की भाँति ही दीर्घ जीवन प्राप्त कर सकता है। वह नित्य, शाश्वत नहीं हो सकता, सदा नहीं जी सकता क्योंकि प्रकृति भी नित्य और शाश्वत नहीं है; उसे भी मरना है, जैसे चन्द्र की प्रकृति नष्ट हो गई है; वह भी नष्ट होगी। या मैं यह कहूँ कि उसका रूपान्तर हो जायगा और वह तब तक के लिए सुप्त या निद्रित हो जायगी जब तक कि उसके पुनर्जीवन का समय न आ जाय। पर उसकी मृत्यु कब होगी? अभी नहीं और जब तक वह जीती है तब तक उसके रहस्यों को जानने वाला भी उसके साथ जीता रहेगा। मुझे अभी पूरा भेद नहीं मालूम पर पहले के लोगों से मुझे कुछ ज्यादा मालूम है। मैं मानती हूँ कि तुम्हारे लिए यह एक बड़ा भारी भेद है, इसलिए इस विषय में इस समय मैं तुमसे कुछ और न कहूँगी। अगर आगे कभी मेरी तबीयत हुई तो मैं और बातें बताऊँगी। क्या तुम्हें आश्चर्य होता है कि मैं तुम्हारे इस देश में आने का भेद कैसे जान गई और तुम्हारे सिर जलाये जाने से बच गए?"

मैंने क्षीण स्वर में कहा—"हां, रानी।"

उस जल-कुण्ड की ओर संकेत करते हुए उसने कहा—"उस पानी में देखो।" और उसने झुककर अपना हाथ पानी पर फैला दिया।

मैं उठकर देखने लगा। क्षण भर में पानी काला हो गया। फिर वह निर्मल हो गया और मैंने अपनी आँखों से साफ देखा कि हमारी नाव भयावनी नहर पर चल रही है। उसके पेंदे की ओर लियो सो रहा है। और मच्छरों से बचने के लिए उसने अपने ऊपर कोट इस तरह डाल लिया है कि मुँह ढक जाय। मैं, जाब और मोहम्मद नाव को किनारे की ओर ले जा रहे हैं।

मैं भौंचक्का होकर चिल्ला उठा—"यह जादू है" क्योंकि मैं उस दृश्य का, जो हम पर सचमुच घटित हो चुका था, हर एक ब्यौरा इस समय पानी में देख रहा था।

उसने उत्तर दिया—"होली! यह जादू नहीं है। तुम्हारा ऐसा कहना तुम्हारे अज्ञान का स्वप्न है। इसमें जादू जैसी कोई बात नहीं है; हाँ, प्रकृति के गुप्त भेदों का ज्ञान जरूर है। यह पानी ही हमारा दर्पण है। जब मैं जानना चाहती हूँ कि कहाँ क्या हो रहा है तब इसमें देखती हूँ। उसमें मैं तुम्हें, तुम्हारे इस देश में बीते जीवन की सब बातें दिखा सकती हूँ। किसी भी चेहरे की याद करो; उसका प्रतिबिम्ब तुम्हारे मन से इस पानी में उतर आएगा। मैं अभी सम्पूर्ण रहस्य नहीं जान पाई हूँ। अभी मैं भविष्य की बातें इसमें नहीं पढ़ सकती। पर यह भेद बहुत पुराना है, यद्यपि अभी तक मुझे उसका पता नहीं लग पाया। अरब और मिश्र के जादूगरों को सदियों पूर्व इसका पता था। एक दिन एकाएक मुझे उस पुरानी नहर का ख्याल आया जिस पर दो हजार साल पहले यात्रा करने का अवसर हाथ लगा था। मेरे दिल में पुनः उसे देखने की इच्छा हुई। जब मैंने इस पानी के दर्पण में देखा तो वहाँ वह नाव दिखाई दी जिसे तीन आदमी पाँव से चलते हुए खींच रहे थे और एक, जिसका चेहरा मैं नहीं देख पाई, पर लगता था कि अच्छे रूपरंग का एक युवक है, उसमें सो रहा था। मैंने आदेश भेजकर तुम्हें बचा लिया। अच्छा, अब विदा। पर जरा मुझे इस युवक—जिसे बुड्ढा शेर कहता है—का समाचार तो दो। मैं उसे देखूंगी, पर तुम कहते हो कि वह बीमार है, ज्वर तथा उस लड़ाई में घायल होने से।"

मैंने दुःखविह्वल वाणी में कहा—"वह बहुत बीमार है। हे रानी! आप तो इतना जानती हैं, क्या उसके लिए कुछ नहीं कर सकतीं?"

"अवश्य कर सकती हूँ। मैं उसे रोगमुक्त कर सकती हूँ। पर तुम इतने दुःख के साथ क्यों बोल रहे हो ? क्या तुम युवक को प्यार करते हो ? क्या वह तुम्हारा पुत्र है ?"

"वह मेरा गृहीत पुत्र है। हे रानी ! क्या उसे आपके सामने लाया जाय ?"

"नहीं, उसे बुखार चढ़े कितने दिन हुए ?"

"यह तीसरा दिन है।"

"बहुत ठीक। उसे एक दिन और पड़ा रहने दो। बहुत करके वह अपनी ही शक्ति से ज्वर-मुक्त हो जायगा और मैं उसे अच्छा करूँ उसकी अपेक्षा यह ज्यादा अच्छा होगा, क्योंकि मेरी दवा ऐसी है कि जीवन को उसके गढ़ में ही हिला देगी। पर कल रात तक देखो, जिस समय उसे पहली बार ज्वर आया उसी समय तक वह उतरने न लगे तब मैं उसके पास आऊँगी और उसे ज्वर-मुक्त कर दूँगी। उसकी परिचर्या कौन करता है ?"

"हमारा गोरा नौकर जिसे बिल्लाली 'सुअर' कहता है। इसके अलावा," आगे मैंने कुछ हिचकिचाहट के साथ कहा—"उस्तेन नाम की एक स्त्री भी है जो इसी देश की बड़ी सुन्दर महिला है। उसने जब पहली बार शेर को देखा तो उसे आलिंगन करके चूम लिया। रानी ! जैसा कि आपके इन आदमियों की परम्परा है, वह तभी से बराबर उसके साथ रहती है।"

उसने शीघ्रता से उत्तर दिया—"मेरे आदमी ! मुझसे मेरे आदमियों के बारे में न कहो। ये गुलाम मेरे आदमी नहीं हैं; वे मेरा हुक्म पूरा करने वाले कुत्ते हैं, तभी तक के लिए जब तक कि इस स्थिति से मेरी मुक्ति नहीं हो जाती। जहाँ तक उनकी परम्पराओं की बात है, मुझे कोई मतलब नहीं। तुम मुझे रानी न कहो। मैं चापलूसी और उपाधियों से थक गई हूँ, ऊब गई हूँ। मुझे आयेशा कहो—मुझे अपने कानों में यह नाम बड़ा मधुर लगता है—इसमें अतीत की प्रतिध्वनि है। हाँ, मैं इस उस्तेन को नहीं जानती। कहीं यह वही तो नहीं है जिसके विरुद्ध मुझे सावधान कर दिया गया था और जिसे मैंने भी अपनी ओर से चेतावनी दे दी थी ? क्या वह—पर रुको, मैं देखती हूँ," और उसने आगे झुककर उस जलकुण्ड के ऊपर हाथ फेरा और आँखें गड़ाकर देखने लगी। फिर धीरे से कहा—"देखो, यही औरत है ?"

मैंने पानी में देखा और उसके स्वच्छ तल पर उस्तेन का सुन्दर चेहरा उभर आया। वह आगे की ओर झुकी हुई अपने नीचे किसी चीज़ को देख रही थी; उसके चेहरे पर असीम कोमलता छा रही थी और उसके घुँघराले, अखरोटनुमा बाल उसके दाहिने कन्धे पर फैले हुए थे।

मैं, पानी का यह असाधारण दृश्य देखकर बहुत घबरा गया और बहुत धीरे से बोला—"हाँ, वही है। वह निद्रित लियो की ओर देख रही है।"

सुदूर किसी वस्तु के ध्यान में डूबे हुए व्यक्ति की-सी अनुपस्थित वाणी में वह बोली—"लियो! लैटिन भाषा में तो इसका अर्थ 'शेर' ही होता है। बुड्ढे ने ठीक ही नाम रखा है। आश्चर्य की बात है", फिर मानो अपने से ही बात करती हुई बोली—"बड़ा ही आश्चर्य है। इतनी समानता! पर यह सम्भव नहीं है!" अधीर होकर उसने पुनः पानी पर हाथ फेरा। वह काला पड़ गया; और वह परछाईं उसी शान्ति के साथ और रहस्यात्मक ढंग पर लुप्त हो गई जिस प्रकार कि उभरी थी और उस स्वच्छ जीवित जल-दर्पण में पुनः दीपक की ज्योति प्रतिबिम्बित हो उठी।

कुछ क्षण वह विचारों में डूबी रही, फिर मुझ से बोली—"होली! जाने के पूर्व तुम्हें मुझ से कुछ कहना तो नहीं है? यहाँ तुम्हें बड़ा नीरस जीवन बिताना होगा, क्योंकि ये जंगली लोग हैं और इन्हें सभ्य मनुष्यों का रंग-ढंग नहीं मालूम है। मुझे तो इससे कोई परेशानी नहीं होती। और मेरा भोजन यह है!" उसने मेज़ पर रखे फल की ओर संकेत करते हुए कहा—"फल के सिवा और कुछ कभी मेरे गले के नीचे नहीं जाता। यही फल, आटे की रोटियाँ और थोड़ा-सा पानी। मैंने अपनी सेविकाओं से तुम्हारी देख-रेख करने के लिए कह तो दिया है। वे मूक हैं; वे गूँगी-बहरी हैं, इसलिए किसी पर कोई बात प्रकट नहीं कर सकतीं, सिवाय उनके जो उनके चेहरों को पढ़ सकते और इशारों को समझ सकते हैं। मैंने ही उन्हें इस रूप में बनाया है। इसमें भी कई सौ वर्ष लग गए और बड़ी कठिनाइयाँ हुईं पर अन्त में मैं सफल हुई। इसके पूर्व भी मैं एक बार सफल हुई थी, पर वह नस्ल बहुत कुरूप थी, इसलिए मैंने उसे नष्ट हो जाने दिया। पर अब जो हैं, वे तुम देख ही रहे हो, सुन्दर हैं। एक बार मैंने शक्तिमान पुरुषों की भी एक जाति का निर्माण किया पर प्रकृति से

उसका मेल न बैठा और वह भी बिखरकर नष्ट हो गई। तुम मुझसे कुछ कहना चाहते हो ?"

अन्दर से डरते हुए, पर ऊपर से निडर होकर मैंने कहा—"ओ आयेशा ! केवल एक बात। मैं आपका मुख देखना चाहता हूँ।"

वह हँस पड़ी, जैसे लघु घण्टियाँ बज उठी हों। उसने कहा—"होली। होश में आओ ! खूब सोच-समझ लो। मैं समझती हूँ, तुम यूनान के देवताओं की कथाओं से परिचित हो। ऐक्टियोन की याद है जो बहुत अधिक सौन्दर्य देख लेने के कारण पागल होकर नष्ट हो गया था ? अगर मैं तुम्हें अपना मुख दिखा दूँ तो तुम्हारी भी वही गति होगी। अपनी असफल कामना और निराशा में तुम अपने ही जीवन को चबा जाओगे, क्योंकि जान लो, मैं तुम्हारे लिए नहीं हूँ, किसी आदमी के लिए नहीं हूँ—सिवाय एक के, जो कभी था, पर अभी तक तो नहीं है।"

मैंने कहा—"आयेशा, जैसी आपकी मर्जी। पर मैं आपके सौन्दर्य से नहीं डरता। मैंने अपने हृदय को फूल की तरह शीघ्र कुम्हला जाने वाले स्त्रियों के सौन्दर्य जैसी असारताओं से बिल्कुल फेर लिया है।"

उसने कहा—"नहीं, तुम गलत कह रहे हो। सौन्दर्य नष्ट नहीं होता। मेरा सौन्दर्य तब तक वैसा ही बना रहेगा, जब तक मैं बनी रहूँगी। ऐ जल्दबाज़ आदमी ! इतने पर भी तू चाहता है तो तेरी इच्छा मैं पूरी कर दूंगी, पर अगर तेरे विवेक पर वासना सवार हो जाय तो मुझे दोष न देना। जो भी एक बार मेरा सौन्दर्य देख लेता है, वह उसे अपने चित्त से कभी निकाल नहीं पाता, इसलिए इन जंगलियों के बीच भी मैं नकाब डालकर ही निकलती हूँ, कि कहीं वे मुझे परेशान न करने लगें और मुझे उन्हें क़त्ल न करना पड़े। बोलो, अब भी देखना चाहते हो ?"

अपनी उत्कण्ठा के वशीभूत होने के कारण मैंने उत्तर दिया—"देखना चाहता तो हूँ।"

उसने अपनी गोरी, गोल बाहों को—मैंने ऐसी बाहें कभी नहीं देखी थीं—ऊपर उठाया और धीरे-धीरे, बहुत धीरे-धीरे अपने बालों के नीचे बँधे बन्द को खोला। एकाएक लम्बी कफन जैसी ओढ़नी ज़मीन पर गिर पड़ी और मेरी आँखें उसकी देह पर घूमने लगीं—देह जिस पर धवल, चिपका हुआ, महीन वस्त्र

पड़ा था जिससे उसका राजकीय रूप फटा पड़ता था। उसमें एक ऐसे जीवन का प्रकाश था, जो जीवन से अधिक कुछ और भी था। उसक सर्पिणी जैसी सुघराई मानवीय नहीं थी। उसके लघु चरणों में खड़ाऊँ थी जिसमें सोने की खूँटियाँ लगी थीं। उसके टखने उससे कहीं परिपूर्ण थे जिसकी कल्पना कोई मूर्तिकार कर सकता है। उसकी पतली कमर पर सफेद कुर्ती के नीचे ठोस सोने का दोमुंहा सर्प बँधा हुआ था और उसके ऊपर उसका बदन पवित्र सुन्दरता के एक सुडौल ढाँचे के समान ऊपर उठता चला गया था जिसके ऊपर उसका तुषार-धवल उन्नत वक्ष था। जहाँ वह अपनी बाहों को बाँधे हुए थी। इन सब के ऊपर जब मैंने उसके मुख पर नज़र डाली तो—मैं कोई कल्पित कहानी नहीं कह रहा हूँ—मेरी आँखें झपक गईं और मैं चकित होकर पीछे हट गया। मैंने स्वर्ग की अप्सराओं की सुन्दरता की कहानियाँ सुनी थीं, इस समय अपनी आँखों से देख रहा था। अपनी विस्मयजनक सुन्दरता और पवित्रता में यह सब भयावना लगता था।

मैं उस सौन्दर्य का वर्णन कैसे करूँ? मैं नहीं कर सकता—बिलकुल नहीं कर सकता। मैंने जो कुछ देखा उसे वर्णन करने की शक्ति किसी आदमी में नहीं हो सकती, कोई क़लम उसे नहीं लिख सकती। मैं उसकी बड़ी-बड़ी कोमल, चंचल, काली आँखों, गुलाबी चेहरे, चौड़े एवं सुघड़ धनुषाकार भ्रू-युगल, जिन पर क्षीण रेखाओं सी रोमावलियाँ थीं, तथा अद्भुत गढ़न की चर्चा कर सकता हूँ पर इन सब के सुन्दर, असीम सौन्दर्य-मण्डित होते हुए भी, उसके आकर्षण का केन्द्र वे नहीं थीं; वह केन्द्र था उसकी प्रकट उदात्तता, उसकी राजकीय शोभा, नम्र शक्ति की देवोपम अभिव्यक्ति में, जो उसके दीप्तिपूर्ण मुख के चतुर्दिक् एक जीवित तेजोवलय की भाँति छा रही थी। इसके पहले मैं कभी कल्पना भी नहीं कर पाया था कि उत्कृष्टताप्रेरित सौन्दर्य कैसा हो सकता है, किन्तु यह सब श्रेयस्कर एवं स्वर्गिक नहीं था। उसके पीछे अंधकार की एक रेखा अवश्य थी। फिर भी वह गौरव-मण्डित था। मेरे सामने का मुख यद्यपि एक ऐसी स्त्री का मुख था जो तीस साल से ज्यादा की न रही होगी और जो पूर्णतः स्वस्थ और अपने पूर्ण यौवन की प्रथम लालिमा में थी फिर भी उसमें अतलस्पर्शी वेदना और वासना की अनुभूति की छाया थी। उसके ओठों पर खिलती मुस्कराहट भी पाप और शोक की उस छाया को छिपाने में असमर्थ थी। वह उन मोहिनी आँखों के प्रकाश में भी चमकती थी, वह उसकी महत्ता में वर्तमान थी, मानो

कहती हो—"मुझे देखो ; मेरे जैसी सुन्दर न कोई स्त्री कभी हुई है, न होगी; मैं अमर और अर्द्ध-दैवी हूँ ; युगों-युगों से स्मृति मेरा पीछा कर रही है; मैं प्रत्येक युग में पाप करूँगी और दुःख भोगूँगी जब तक कि मेरी मुक्ति न हो जाय।"

किसी चुम्बकीय शक्ति से, जिसे रोकना मेरे लिए असम्भव था, खिंचकर मेरी दृष्टि उसके चमकीले नयनों पर पड़ी। मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे उससे निकलकर कोई बिजली मेरे अंदर प्रवेश कर रही है जिससे मैं चौंधिया और घबरा गया।

मेरी दशा देखकर वह हँस पड़ी—आह कैसी मधुर और संगीतमयी थी वह हँसी। उसने बड़ी अदा से, सम्मोहन-सा बिखेरते हुए, कहा "ओ जल्दबाज़ ! ऐक्टियोन की तरह तूने भी हठ करके अपनी इच्छा पूरी की, पर अब सँभल ; नहीं तो कहीं उसी की तरह तू भी न नष्ट हो जाय—और तेरी वासनाओं के भयानक कुत्ते तुझे ही न चबा जायँ। ओ होली ! मैं एक कुमारी देवी हूँ, जो एक व्यक्ति के सिवा और किसी की ओर द्रवित नहीं हो सकती और वह व्यक्ति तू नहीं है। बोल, अच्छी तरह देख लिया ?"

आँखें बन्द करने के लिए अपने हाथ उठाते हुए, मैंने भर्राई आवाज़ में कहा—"मैंने सौन्दर्य देखा, और मैं अन्धा हो गया।"

"ऐसा ! मैंने पहले ही तुमसे कहा था न ? सौन्दर्य विद्युत् की तरह है। वह आकर्षक है, पर वह संहार करता है—विशेषतः वृक्षों का।" सिर हिलाकर वह फिर हँसने लगी।

आयेशा चुप हो गई और मैंने अंगुलियों के बीच से देखा कि उसका चेहरा बदल गया है। उसकी बड़ी-वड़ी आँखें एकाएक स्थिर हो गईं और उनमें एक विचित्र भाव दिखाई पड़ा—जैसे भय उसकी काली आत्मा की गहराई से उठती हुई प्रबल आशा से लड़ रहा हो। उसका प्यारा मुख कड़ा पड़ गया और उसका लचकदार शरीर एकदम सीधा हो गया।

उस सर्पिणी के समान अपना सिर पीछे फेंकते हुए, जो चोट करने ही वाली हो, उसने आधी फुसफुसाहट, आधी फुफकार के स्वर में कहा—"ओ आदमी ! आदमी ! यह तेरे हाथ का यन्त्र ! इसे तूने कहाँ पाया ? बोल, नहीं तो तू जहाँ खड़ा है, वहीं तुझे फूँककर उड़ा दूँगी।" इतना कहते हुए वह मेरी ओर एक क़दम बढ़ी। उसकी आँखों से ज्वाला निकल रही थी ; मैं मारे डर के तुरन्त

उस स्थान पर गिर पड़ा और भयग्रस्त वाणी में अनाप-शनाप बकने लगा।

थोड़ी देर में उसमें फिर आकस्मिक परिवर्तन दिखाई पड़ा और वह पहले जैसी ही हो गई तथा उसी मीठी वाणी में बोली—"शान्त! मैंने तुम्हें डरा दिया। क्षमा करो। ओ होली! कभी-कभी सीमित की गतिहीनता से असीम मन असन्तुष्ट हो उठता है और खीझकर मैं अपनी शक्ति का प्रयोग करना चाहती हूँ। तुम मर ही चुके थे, पर मुझे याद आ गया—"किन्तु वह यन्त्र ?"

एक बार पुनः अपने पाँव पर खड़ा होकर मैंने दुर्बल हकलाती वाणी में कहा—"मैंने इसे पड़ा पाया है।" मेरा मन इतना आतंकित हो गया था कि मुझे अंगूठी के विषय में इसके सिवा और कुछ याद न आया कि मैंने उसे लियो की गुफा में पाया है।

उस असाधारण स्त्री ने, अपने सामान्य स्वभाव के विपरीत एकाएक भावोद्वेग से काँपते हुए कहा—"यह बड़े आश्चर्य की बात है। किन्तु ऐसा ही यंत्र एक बार मेरे देखने में आया था। वह मेरे प्यारे के गले में पड़ा हुआ था।" वह सिसकने लगी। मैंने देखा कि आखिरकार वह नारी ही है।

उसने कहा—'शायद वैसा ही यह दूसरा होगा पर मैंने वैसा दूसरा कभी नहीं देखा। इसका एक इतिहास है और जिसने इसे पहना था, इसकी बड़ी क़द्र करता था।[1] पर मेरा वह यंत्र अंगूठी में जड़ा हुआ नहीं था। जाओ होली! अब जाओ और भूल सको तो इस बात को भूल जाना कि तुमने आयेशा का

---

१. 'मैंने सुतेन सी रा' नामक इस यंत्र को एक अत्यन्त प्रसिद्ध तथा विद्वान् मिश्री पुरातत्ववेत्ता (ईजिप्टालोजिस्ट) को दिखाया था। उसका कहना था कि उसने इस प्रकार का कोई दूसरा यंत्र नहीं देखा। यद्यपि इसमें एक उपाधि का ज़िक्र है जो मिश्री राजाओं को अवसर दी जाती थी, पर इसका फेरो से सम्बद्ध होना अनिवार्य नहीं है—क्योंकि वैसे यंत्रों पर ज्यादातर राजा का नाम एवं सिंहासन खिचा होता है। इसका पूर्व इतिहास क्या था, इसे अब हम नहीं जान सकते, पर मुझे सन्देह नहीं कि इसने राजकुमारी अमीनार्त्ता और उसके प्रेमी कालिक्रेटीज के जीवन में अवश्य विशिष्ट भाग लिया होगा।

सौन्दर्य देखा है।" और मेरी तरफ से मुड़कर वह कोच पर लेट गई और अपना मुँह तकिये से छिपा लिया।

मैं लड़खड़ाता हुआ वहाँ से निकला पर मुझे यह याद नहीं है कि मैं अपने कमरे तक किस प्रकार पहुँचा।

अध्याय १४

नरकाग्नि में जलती हुई आत्मा

रात के लगभग दस बजे होंगे जब मैं किसी तरह जाकर अपने बिछौने पर पड़ गया और अपनी अस्तव्यस्त बुद्धि को संचित कर जो कुछ देखा और सुना था, उसके बारे में सोचने लगा। पर जितना ज्यादा मैं सोचता था उतनी ही मेरी उलझन बढ़ती जाती थी। क्या मैं पागल हो गया हूँ? या शराब के नशे में हूँ? या कोई सपना देख रहा हूँ? या किसी व्यापक धूर्तता का शिकार हूँ? यह क्या बात है कि मुझ जैसा समझदार आदमी, जो अपने इतिहास के वैज्ञानिक सत्यों से परिचित है और यूरोप में अलौकिकता के नाम पर चलने वाली अनर्गल बातों के प्रति अभी तक पूर्णतः अविश्वासी रहा है, विश्वास कर ले कि अभी कुछ ही क्षण पहले वह ऐसी स्त्री से बातें कर चुका है जिसकी उम्र दो हज़ार वर्ष से ज्यादा है? निश्चय ही यह मानवता के अनुभवों के प्रतिकूल है और बिल्कुल असम्भव है। जरूर यह धोखा था? पर धोखा भी कैसे मान लूं?

अगर यह सब धोखा था तो पानी में दिखने वाली वह परछाईं क्या थी? प्राचीन काल की बातों के विषय में उस स्त्री का इतना परिचय और बाद के इतिहास के विषय में अज्ञान, क्या यह असत्य है? फिर उसके अद्भुत सौन्दर्य को क्या समझूँ—ऐसा सौन्दर्य जो संसार के अनुभव से परे है। किसी पार्थिव नारी में ऐसी अलौकिक प्रभा नहीं हो सकती। उसका कहना ठीक ही था कि किसी भी पुरुष के लिए उसके सौन्दर्य को देखना अपने को खतरे में डालना है।

अपनी उभरती हुई जवानी के दिनों की एक स्मृति को छोड़ दूं तो मैंने स्त्रियों की ओर से अपना हृदय पत्थर का बना लिया है पर अब मुझे वे आँखें भुलाए नहीं भूलतीं। आह ! वह नारी, जिसकी ओर भयभीत होते हुए भी, मैं तेज़ी से खिंचा जा रहा हूँ। वह स्त्री, जो अपने पीछे दो हज़ार वर्षों को छोड़ आई है, जिसमें ऐसी महती शक्तियाँ हैं और जिसे गुप्त भेदों का ऐसा ज्ञान है कि वह मृत्यु को स्थगित कर सकती है, निश्चय ही प्रेम किये जाने योग्य है। पर योग्य हो या न हो, आश्चर्य तो यह है कि मेरे जैसा आदमी, जिसे कालेज के मेरे साथी नीरस समझते थे और जो इस समय अधेड़ अवस्था में पहुँच चुका है और प्रतिष्ठित व्यक्ति है, वह इस गोरी जादूगरनी के जाल में पूरी तरह फँस चुका है ! कैसी वाहियात बात है ! बिल्कुल वाहियात ! पर उसने तो मुझे पहले ही चेतावनी दे दी थी—मैंने चेतावनी ग्रहण करने से इन्कार कर दिया। पत्थर पड़े उस उत्कण्ठा पर जो सदा ही पुरुष को स्त्री का घूँघट खोलने को प्रेरित करती है। हमारी मुसीबतों, कम से कम आधी मुसीबतों का कारण यही है। हाय, पुरुष चुपचाप अलग रहकर सुखी क्यों नहीं होता ; इसी तरह स्त्री भी अलग रहकर सुखी क्यों नहीं होती ? पर शायद ऐसा नहीं हो सकता। जो हो पर कैसी दिल्लगी की बात है यह कि इस उम्र में मैं इस विचित्र स्त्री के प्रेम में पागल हो रहा हूँ।

मैंने अपने बाल नोच डाले और यह अनुभव करता बिस्तरे से बाहर कूद पड़ा कि मैं अगर किसी काम में न लग गया तो इन बातों को सोच-सोचकर पागल हो जाऊँगा। पर उसने उस अंगूठी वाले यन्त्र के विषय में क्यों पूछा था ? वह तो लियो वाला यन्त्र था और उसी सन्दूक में से निकला था जिसे विंसी इक्कीस साल पहले मेरे कमरे में छोड़ गया था। तब क्या वह कहानी सच्ची है और ठीकरे का अभिलेख जाली अथवा किसी विस्मृत सनकी व्यक्ति की सनक की उपज नहीं है ? और अगर वह सच्ची है, तो क्या लियो ही वह आदमी है जिसके लिए वह हजारों वर्ष से प्रतीक्षा करती रही है—लियो ही वह मृत आदमी है जो पुनः उत्पन्न होने वाला था ? असम्भव ! ऐसी कल्पना करना भी पागलपन है। किसने मरे आदमी का पुनर्जन्म होते सुना है ?

परन्तु यदि एक स्त्री का दो हज़ार वर्ष तक जीती रहना संभव हो, तो यह भी संभव है—तब कुछ भी सम्भव है। कौन जानता है कि मैं भी किसी

विस्मृत आत्मा का अवतार न होऊँ। यह सम्भव है कि मैं अपने पूर्वजन्म की बातों को भूल गया होऊँ। यह धारणा ऐसी अनर्गल थी कि मैं जोर से हँस पड़ा और दीवार पर खुदे एक गम्भीर से दिखने वाले वीर योद्धा को सम्बोधन करते हुए बोला—"हे पुरातन प्राणी ! कदाचित् मैं तुम्हारा समकालिक होऊँ। या शायद मैं ही तुम अथवा तुम ही मैं हो"—मैं फिर अपनी कल्पना पर हँस पड़ा और मेरी वाणी उस बन्द कक्ष में गूँज उठी, मानो योद्धा की प्रेतात्मा ने हँसने वाली प्रेतात्मा को उत्तर दिया हो।

इसके बाद ही मुझे ध्यान आया कि मैं लियो को देखने नहीं गया, इसलिए मेरे बिस्तरे के पास जलते हुए एक दीपक को मैंने उठा लिया और अपने जूते निकालकर लियो के शयन-कक्ष की ओर चल दिया। रात की हवा के झोंकों से उसके कमरे का पर्दा इधर-उधर हिल रहा था, मानो प्रेतात्मा के हाथ उसे बार-बार उठाते और गिराते हों। मैं चुपके से कमरे में गया और देखा। कमरे में एक दीपक जल रहा था। लियो पलंग पर पड़ा था और बुखार की बेचैनी में छटपटा रहा था पर निद्रित था। उसी के पास उस्तेन आधी फर्श पर लेटी और आधी उस पत्थर के पलँग पर झुकी हुई थी। वह अपने हाथ में लियो का एक हाथ लिये हुए थी और ऊँघ रही थी। दृश्य सुन्दर, बल्कि करुणाजनक था। बेचारा लियो ! उसके गाल लाल हो रहे थे और आँखों के नीचे कालिमा छा गई थी; साँस तेज़ी से चल रही थी। उसकी हालत बहुत खराब थी। मुझ पर पुनः भीषण भय छा गया कि कहीं यह मर न जाय और मैं इस दुनिया में अकेला न रह जाऊँ। पर अगर वह जिया तो कहीं आयेशा के प्रेम में मेरा प्रतिद्वन्द्वी न हो। अगर लियो वह आदमी न भी हुआ जिसकी वह प्रतीक्षा कर रही है, तो भी मेरे जैसा अधेड़ और कुरूप, प्रकाशमान यौवन और सौंदर्य के इस पुतले के विरुद्ध कैसे सफल हो सकता है ? पर प्रभु का धन्यवाद है कि मेरे ये विचार अधिक देर तक न ठहरे। अब भी मेरा पाप-पुण्य-विवेक सर्वथा नष्ट नहीं हुआ था। उस नारी ने अभी उसको चौपट नहीं किया था। इसलिए मैं स्वस्थ हो गया और मैंने हाथ जोड़कर भगवान् से प्रार्थना की कि चाहे लियो ही वह आदमी हो जिसकी वह प्रतीक्षा कर रही है, पर मेरा प्यारा लियो, मेरे लिए पुत्र से भी अधिक लियो रोगमुक्त हो जाय, जी जाय !

इसके बाद मैं जिस प्रकार गया था उसी प्रकार चुपचाप लौट आया। पर सो

न सका ; उस कमरे में लियो को इस प्रकार बीमार पड़ा देखकर मेरी चिन्ता और बढ़ गई, जैसे आग में घी पड़ गया हो। मेरे थके शरीर और मन के कारण नाना प्रकार की कल्पनाएँ उठने लगीं ; नाना प्रकार के दृश्य आँखों के सामने घूमने लगे। कुछ विचित्र थे, कुछ डरावने थे, कुछ ऐसे विचारों एवं स्मृतियों को जगाने वाले थे जो मेरे अतीत जीवन के मलबे के नीचे वर्षों पूर्व दब चुकी थीं। पर इन सबके ऊपर और पीछे उस अद्भुत नारी और उसके मोहक सौंदर्य की याद रह-रहकर उदित हो जाती थी। मैं बेचैन होकर उस गुफा में इधर से उधर, उधर से इधर घूमने लगा।

एकाएक मेरी निगाह चट्टानी दीवार में बने एक झरोखे पर पड़ी जिसकी ओर अब तक मेरा ध्यान नहीं गया था। मैंने दीपक लेकर उसकी जाँच की ; यह झरोखा एक मार्ग में खुलता था। मेरे अन्दर उस समय भी इतनी अक्ल बच गई थी कि मैं समझता कि जिस स्थिति में मैं हूँ, उसमें अपने शयन-कक्ष से न जाने किस ओर जाने वाले रास्ते के बारे में कुछ सोचना अच्छा नहीं है। अगर रास्ता है तो उससे लोग आते-जाते भी होंगे या जब कोई सो रहा हो तब भी उससे आया जा सकता है।

पर कुछ तो इस उत्सुकता से कि देखें यह रास्ता किधर जाता है, और कुछ कोई काम करने की अशान्त कामना के कारण मैं झरोखे से उस रास्ते में गया। आगे पत्थर की कुछ सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। मैं उनसे नीचे उतर गया। सीढ़ियाँ एक दूसरे रास्ते में जाकर समाप्त होती थीं। रास्ता क्या उसे सुरंग कहना चाहिए। यह सुरंग भी पहाड़ों को तराश-तराश कर बनाई गई थी और हमारे शयन कक्ष की ओर जाने वाले गलियारे के नीचे थी। मैं इस सुरंग में बढ़ता गया। वहाँ क़ब्र का सन्नाटा छाया हुआ था, फिर भी मैं न जाने किस अज्ञात आकर्षण से आगे बढ़ता गया। पचास क़दम चलने के बाद एक तीसरा रास्ता मिला जहाँ एक चौरस्ता सा बन गया था। मैं सोच ही रहा था कि किधर चलूँ कि हवा के झोंके से मेरे हाथ का दीपक बुझ गया। अब मैं उस रहस्यमय स्थान के भीतर घोर अन्धकार में खड़ा था। मैं जल्दी से चौराहे को पार कर उसी सीधी सड़क पर कुछ दूर बढ़ गया—इस भय से कि कहीं दूसरे रास्ते पर न निकल जाऊँ और फिर जिस रास्ते से आया हूँ वही न भूल जाय। इसके बाद मैं खड़ा होकर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए ? मेरे पास दियासलाई भी न

थी। और उस सघन अन्धकार में पीछे लौटकर वह लम्बा रास्ता तय करना दुष्कर था। फिर भी मैं वहाँ तो सारी रात खड़ा नहीं रह सकता था। मैंने पीछे फिरकर देखा—चारों ओर घुप्प अन्धकार, कहीं कोई चीज़ नहीं, कोई आवाज़ नहीं। तब मैंने आगे की ओर दूर-दूर तक देखने की चेष्टा की। बहुत दूरी पर आग की धुँधली ज्योति-सी निकलती दिखाई पड़ी। शायद वह कोई गुफ़ा हो जहाँ रोशनी मिल जाय—मैंने सोचा, अब तो फँसे ही हैं, जो हो चलकर देखना चाहिए। मैं हाथों से सुरंग की दीवार को पकड़े और पाँवों से टटोलता हुआ धीरे-धीरे आगे बढ़ा, क्योंकि डर था कि किसी गड्ढे में न गिर जाऊँ। तीस क़दम चलने के बाद प्रकाश दिखाई पड़ा—प्रकाश जो पर्दों से छन कर आता और जाता था। पचास क़दम चलने के बाद वह नज़दीक आ गया। और साठ क़दम पर—हे ईश्वर !

मैं पर्दों के पास पहुँच गया। वे जुड़े हुए न थे इसलिए उनके पीछे का दृश्य मैं देख सकता था। इस कक्ष की सूरत एक मक़बरे की थी। उसके बीच में आग जल रही थी। आग की लपट सफ़ेद थी और उसमें धुआँ नहीं था। बाईं ओर पत्थर की एक अलमारी-सी बनी हुई थी जिसमें चौकी पर कोई चीज़ पड़ी थी, जिसे मैंने मुर्दा के रूप में देखा। उस पर सफ़ेद-सी कोई चीज़ पड़ी थी। दाहिनी ओर भी उसी तरह की एक अलमारी थी जिस पर ज़रदोज़ी के काम के पर्दे पड़े हुए थे। आग के पास कोई स्त्री काला लबादा पहने मुर्दे की ओर मुंह किए झुकी हुई लपट को देख रही थी। मैं सोच ही रहा था कि क्या करूँ, कि एकाएक वह औरत निराशापूर्ण शक्ति से काँपकर उठ खड़ी हुई और अपना काला लबादा उतारकर नीचे फेंक दिया।

अरे यह तो आयेशा ही है !

वह वही चिपके महीन वस्त्र पहने हुई थी जिसमें नक़ाब उतारने पर मैं उसे पहले देख चुका था। वह अपने सीने के नीचे तक की कुर्ती उसी प्रकार दोमुँहे साँप के कमरबन्द से बाँधे हुए थी और उसके घुंघराले बाल कन्धे और पीठ पर फैले एड़ी तक लटक रहे थे। पर उसके चेहरे ने तो फिर मुझे बेबस कर दिया—अपनी सुन्दरता से नहीं बल्कि एक अद्भुत मोहक भय के कारण। सौंदर्य तो अब भी उसके मुख पर था पर उसके ऊपर वेदना, अन्धवासना, क्रूर प्रतिहिंसा की छाप थी तथा उसकी ऊपर चढ़ी हुई आँखों में गहरे उत्पीड़न की

छाया थी। यह ऐसा दृश्य था जिसे बयान करने की शक्ति मुझ में नहीं है।

क्षण भर वह अपने हाथों को सिर के ऊपर उठाए खड़ी रही; उसके ऐसा करते ही उसकी सफेद कुर्ती खिसककर उसके स्वर्णिम कटि पर आ रही और उसके अनावृत शरीर-सौंदर्य से मेरी आँखें झपक गईं। कुछ देर तक वह वैसी ही खड़ी रही। उसके चेहरे पर उभरती दुर्भावना घनी होती गई।

एकाएक मुझे ख्याल आया कि अगर वह मुझे यहाँ इस तरह खड़ा देख ले तो फिर क्या होगा? इस विचार के आते ही मेरा बुरा हाल हो गया और मैं बेहोश होते-होते बचा। पर यह जानते हुए भी कि इस प्रकार मेरे यहाँ छिपकर खड़ा होने के कारण मैं मार दिया जाऊंगा, मैं वहाँ खड़ा रहा। मैं बिल्कुल सम्मोहित हो गया था। हाँ, मुझे अपने खतरे का ख्याल ज़रूर बना हुआ था। मान लो कि वह मेरी किसी तरह की आवाज़ सुन ले या पर्दों को पार कर उसकी आँखें मुझ पर पड़ ही जायें, या कल्पना करो कि मुझे छींक ही आ गई, या अपने जादू से ही उसे मालूम हो गया कि कोई उसे देख रहा है, तो तुरन्त मेरी मृत्यु निश्चित थी।

थोड़ी देर बाद वह अपना ऊपर उठा हाथ नीचे एक ओर लाई और फिर सिर के ऊपर ले गई, उनसे आग की लपटें निकलीं और छत को छूने लगीं जिनके प्रकाश में आयेशा का शरीर, कफनी से ढका मुर्दा तथा कमरे की एक-एक चीज़ प्रकाशित हो उठी।

अब फिर उसकी हाथीदाँत-सी उज्ज्वल बाहें नीचे की ओर आने लगीं और उनके नीचे की ओर गति करते ही उसने अरबी भाषा में कुछ ऐसे स्वर में कहना क्या, फुफकारना, शुरू किया जिसे सुनते ही मेरा खून सूख गया और एक क्षण के लिए मेरे हृदय की धड़कन बन्द हो गई।

"उसका सत्यानाश हो; उसे आग लगे; वह सदा जला करे।"

बाहों के नीचे गिरते ही लपटें समाप्त हो गईं। फिर वे पहले की भाँति ऊपर को उठीं और उनसे लपटें निकलने लगीं; फिर वे नीचे आईं।

"आग लगे उसकी याद को—आग लगे उस मिश्रवाली की याद में।"

फिर उसका हाथ ऊपर गया और नीचे आया।

"सत्यानाश हो उस नील की कुमारी का। आग लगे उसके सौंदर्य में।"

"आग लगे उसे जिसके जादू के आगे मेरा जादू न चल सका।"

"आग लगे उसको जिसने मेरे प्रियतम को मुझसे छीन लिया।"

फिर लपटें बुझ गईं।

उसने अपने हाथों को अपनी आँखों पर रख दिया, और फुफकारना छोड़ वह जोर से चिल्लाई :

"इस कोसने से क्या लाभ है ? उसने विजय प्राप्त की और वह चली भी गई।"

किन्तु एक क्षण बाद उसने और भी भयानक तेज़ी से कहना शुरू किया :

"वह जहाँ भी हो, उसका सत्यानाश हो। जहाँ भी वह हो मेरा शाप उसे पहुँचे और उसके विश्राम को नष्ट कर दे।"

"तारों भरे आकाश को लाँघकर मेरा शाप उसे लगे। उसकी छाया को भी दुःख पहुँचे।"

"मेरी शक्ति वहाँ भी उसे खोज निकाले।"

"मेरी आवाज़ वहाँ भी उसके पास पहुँचे। वह अन्धकार में अपने को छिपावे।"

"वह निराशा के गहरे गड्ढे में गिरे, क्योंकि एक न एक दिन तो मैं उसे खोज ही निकालूंगी।"

फिर लपटें गिर पड़ीं और फिर उसने अपने हाथों से आँखें मूंद लीं।

फिर वह चीख़ती हुई बोली—"यह मूर्खता है। जो शक्ति के पंखों की छाया में सोते हैं उन तक कौन पहुँच सका है ? मैं भी उन तक नहीं पहुँच सकती।"

किन्तु थोड़ी देर बाद उसने फिर अपनी अपवित्र क्रिया शुरू कर दी।

"अगर वह फिर पैदा हो तो उसका सत्यानाश हो, वह आग में जले, बल्कि वह आग में जलती ही पैदा हो।"

"अपने नए जन्म से लेकर अन्तिम निद्रा तक वह अभिशप्त—जलती—ही रहे।"

"हाँ वह अभिशप्त हो क्योंकि तभी अपनी प्रतिहिंसा से मैं उसे पकड़ पाऊँगी और बिल्कुल नष्ट कर दूँगी।"

इसी तरह वह कोसती रही।

लपट उठी और गिरी तथा बार-बार आयेशा की गूढ़ वेदना-भरी आंखों में अपना प्रतिबिम्ब डालती रही; उसके भयंकर दुर्वचनों की फुफकार-भरी आवाज़—और मेरे शब्द उसकी भयानकता का वर्णन करने में असमर्थ हैं—दीवारों से टकराकर लघु प्रतिध्वनियों में विलीन होती रही और पत्थर की चौकी पर फैली सफेद भयानक काया पर बारी-बारी से डरावना प्रकाश और गम्भीर अन्धकार आता जाता रहा।

पर अन्त में वह थककर चुप हो गई। वह चट्टानी फर्श पर बैठ गई। अपने घने मेघ-खण्ड-से सुन्दर बालों को, जो उसके मुख और छाती पर फैले हुए थे, हिलाकर उसने बिखरा दिया और मर्मान्तिक निराशा के उत्पीड़न से जोरों से सिसकने लगी।

वह बिलखने लगी—"दो हजार वर्ष! मैं दो हज़ार वर्ष से तुम्हारी प्रतीक्षा करती और सब दुःख सहती रही हूँ; एक सदी के बाद दूसरी सदी आती रही है, एक युग के बाद दूसरा युग आता रहा है, पर तुम्हारी स्मृति की पीड़ा कम नहीं हुई; आशा की ज्योति बराबर जलती रही। ओह! अपनी हृदय को दग्ध करने वाली वासनाओं और आँखों के सामने सदैव जाग्रत अपने पाप के साथ दो हज़ार साल तक का मेरा जीवन! क्या मेरे जीवन में कभी विस्मृति नहीं आई। हाय वे थकान भरे युग जो बीत गए और जो अभी आगे आने वाले हैं, उसके बाद जो आने वाले हैं—असीम, अन्तरहित।

"मेरे प्रियतम! मेरे प्रियतम! मेरे प्यारे! वह अजनबी इस तरह तुमको मेरे पास क्यों लाया? पाँच लम्बी सदियों से मैंने इतना दुःख नहीं पाया था। अगर मैंने तुम्हारे प्रति पाप किया तो क्या वह पाप अब तक धुल नहीं गया? तुम कब लौटकर मेरे पास आओगे? मेरे पास सब कुछ है पर तुम्हारे बिना सब कुछ होकर भी कुछ नहीं है। मैं क्या करूँ? क्या? क्या? क्या? जान पड़ता है तुम जहाँ हो, वह मिश्रवाली तुम्हारे साथ है और मेरी स्मृति का उपहास करती है। हाय, मैंने जब तुम्हें मार डाला, तो तुम्हारे साथ ही स्वयं भी क्यों न मर गई? हाय! मैं मर भी नहीं सकती! हाय! हाय!" और वह जमीन पर लोट गई और इस प्रकार सिसकने और फूट-फूटकर रोने लगी कि मैंने समझा, उसका कलेजा फट जायगा।

पर एकाएक वह चुप हो गई; फिर खड़ी हुई, अपने अस्तव्यस्त कपड़ों को

ठीक किया, अपने लम्बे बालों को पीछे की ओर हटा दिया और उस चौकी के पास गई जिस पर वह शव पड़ा था।

उसने पुकारा—"ओ कालिक्रेटीज़ !" मैं यह नाम सुनते ही काँप गया। "मैं फिर तुम्हारा मुख देखूंगी—यद्यपि इस हालत में तुम्हें देखना मेरे लिए व्यथाकारी है। तुम्हें देखे युग बीत गए—तुम्हें जिसे मैंने मारा—अपने हाथ से तुम्हारा वध किया—"और काँपती अँगुलियों से उसने पत्थर की चौकी पर लेटे शव के ऊपर पड़ी कफ़नी की कोर पकड़ ली। फिर कुछ देर चुप रही और जब बोली तो दुःख से भरी फुसफुसाहट के साथ बोली—जैसे उसके विचार उसी के लिए भयंकर हो उठे हों।

शव को सम्बोधन करती बोली—"क्या मैं तुम्हें उठाऊँ, जिससे तुम पुराने समय की भाँति यहाँ मेरे सामने खड़े हो ? मैं तुम्हें उठा सकती हूँ और उसने कफ़न से ढके शव पर अपने हाथ फैला दिए; खुद उसकी काया कड़ी और भयानक हो गई जिसे देखने से डर लगता था; आँखें निस्तेज और स्थिर हो गईं। मैं यह देखकर डर के मारे पर्दे के पीछे छिप गया और मेरे सिर के बाल खड़े हो गए कि कफ़नी के नीचे मुरदा हिलने लगा और जैसे कोई सोकर उठने पर ओढ़ी चादर हटाता हो उस तरह की हर्कत हुई। पर एकाएक आयेशा ने अपने हाथ हटा लिये और शव का स्पन्दन भी बन्द हो गया।

उसने भारी आवाज़ में कहा—"इससे क्या फ़ायदा ? जब मैं तुम में तुम्हारी आत्मा को नहीं ला सकती, तुम्हें जीवित नहीं कर सकती, तो जीवन की इस नक़ल से क्या फायदा ? अगर तुम मेरे सामने खड़े भी हो गए तो मुझे जान न सकोगे, और जो कुछ मैं तुम्हें करने को कहूँगी उसके अतिरिक्त और कुछ न कर पाओगे। तुम्हारे अन्दर जो जीवन होगा वह मेरा ही जीवन होगा, तुम्हारा जीवन नहीं होगा, ओ कालिक्रेटीज़।"

एक क्षण तक वह खड़ी सोचती रही और फिर शव के पास घुटनों के बल झुक गई। फिर अपने ओठों से शव का कपड़ा चूम-चूमकर रोने लगी। एक मृतक के प्रति इस भयावनी स्त्री की वासनाओं का यह दृश्य इतना वीभत्स और डरावना था कि मुझे अब उधर देखने का साहस न हुआ और मैं रेंगता हुआ लौट पड़ा। मेरा सारा शरीर थर-थर काँप रहा था और किसी प्रकार

उस घोर अँधेरे मार्ग पर यह सोचता बढ़ रहा था कि मैंने नरक की आग में जलती एक आत्मा का दृश्य देखा है।

किसी तरह लड़खड़ाता मैं बढ़ता रहा—किस प्रकार, यह मैं खुद नहीं जानता। दो बार मैं गिरा ; एक बार चौरस्ते से गलत मार्ग पर निकल गया पर सौभाग्य-वश शीघ्र ही मुझे अपनी गलती मालूम हो गई। बीस मिनट से ज़्यादा चलकर मैं उन सीढ़ियों पर पहुँचा, पर मैं थककर इतना शिथिल और साथ ही भयभीत हो गया था कि मैं उसी पत्थर के फर्श पर धम्म से बैठ गया और बेहोश हो गया।

थोड़ी देर बाद जब मुझे होश हुआ तो अपने पीछे के रास्ते पर मैंने प्रकाश की एक किरण आती देखी। मालूम हुआ कि उषा का आगमन होने ही वाला है। मैं किसी प्रकार मरता जीता सीढ़ियों और झरोखे को पारकर अपने शयन-कक्ष में पहुँच गया और बिस्तर पर पड़ते ही सो या बेहोश हो गया।

अध्याय १५

आयेशा फैसला करती है

जब मेरी आँख खुली तो मैंने जाब को देखा, जो अब ज्वर से मुक्ति पा चुका था। वह प्रकाश की किरण में, जो बाहर से गुफा में आ रही थी, खड़ा था और मेरे कपड़ों को झटकार-झटकारकर और तहाकर रख रहा था, क्योंकि यहाँ कपड़ों को झाड़ने के लिए ब्रुश तो था नहीं। इसके बाद उसने मेरे सन्दूक से मेरा चमड़े का ड्रेसिंग केस निकाला और मेरे उपयोग के लिए सब सामान तैयार कर दिया। पहले उसने इस केस को मेरे पैताने रखा, पर फिर यह सोचकर कि शायद मेरे पाँव फैलाने से धक्का लगकर वह गिर न जाय, उसे उठाकर फर्श पर तेंदुए की खाल पर रख दिया। फिर उसने दो क़दम आगे जाकर देखा और सोचता रहा कि वहाँ रखना ठीक होगा या नहीं। उसे सन्तोष न हुआ इसलिए उसने उसे उठाकर पत्थर की चौकी पर रख दिया। फिर वह

घड़ों को देखने लगा कि उनमें हाथ-मुंह धोने के लिए पानी भरा हुआ है या नहीं। अन्त में मैंने उसे बुदबुदाते हुए सुना—"ओ ! इस जंगली स्थान में गर्म पानी कहाँ ? यहाँ तो वे आदमियों को उबालने के लिए ही पानी गर्म करते हैं !" और उसने लम्बी साँस ली।

"क्या बात है जाब ?" मैंने पूछा।

अपना बाल छूते हुए उसने कहा—"माफ़ कीजिएगा, साहब ! मैंने समझा, आप सो रहे हैं और अब भी ऐसा लगता है कि आपकी आंखों में नींद भरी है और आप सोना चाहते हैं। आपको देखने से मालूम होता है जैसे आप रात भर सोये न हों।"

मैं सिर्फ कराह कर रह गया और कोई उत्तर नहीं दिया। हाँ, मैंने रात जागकर बिताई थी—ऐसी रात जो फिर न आएगी।

"लियो की तबीयत कैसी है जाब ?"

"वैसी ही हालत है साहब। यदि उसकी हालत में शीघ्र सुधार न हुआ तो वह खत्म हो जाएगा, यद्यपि वह जंगली उस्तेन उसकी बड़ी सेवा कर रही है। वह सदा उसके पास बनी रहती है और उसकी देख-भाल किया करती है। अगर मैं उसके काम में कुछ भी हस्तक्षेप करता हूँ तो उसका रूप भयानक हो जाता है; उसके सिर के बाल खड़े हो जाते हैं और वह अपनी भाषा में न जाने क्या-क्या बकती है; उसके चेहरे से मालूम होता है कि मुझे कोस रही है।"

"और ऐसे समय तुम क्या करते हो ?"

"तब मैं उसे झुककर सलाम करता हूँ और कहता हूँ—'हे तरुणी ! मैं तुम्हारे पद को समझ नहीं पाता हूँ और न उसे मानता ही हूँ। बीमारी के कारण अशक्त अपने मालिक की सेवा करना मेरा काम है और मैं उसे तब तक करता रहूँगा जब तक खुद अशक्त न हो जाऊँ।" किन्तु वह मेरी बातों पर ध्यान नहीं देती बल्कि और चिढ़ती एवं कोसती है। कल तो अपनी कुर्ती के अन्दर से उसने एक छुरा निकाल लिया था, इस पर मैंने अपना रिवाल्वर निकाल लिया और हम एक दूसरे के इर्द-गिर्द चक्कर काटते रहे, पर अन्त में वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। किसी ईसाई पुरुष का एक जंगली स्त्री के साथ रहना, फिर चाहे वह कितनी ही सुन्दर हो, कुछ समझ में नहीं आता। पर ऐसी जगह पर मूर्खों के सिवाय कौन बुद्धिमान मनुष्य आयेगा—ऐसी जगह जो

मनुष्य के लिए बनाई ही नहीं गई। और मैं समझता हूँ कि अभी हमारी दुर्दशाओं का अन्त नहीं हुआ है। जब अन्त होगा तो उसी के साथ हमारा भी अन्त हो जायगा, और हम भी इन गुफ़ाओं में मुर्दे और भूत बनकर पड़े रहेंगे। अब मैं लियो को देखने जाता हूँ, पर देखिए वह जंगली बिल्ली मुझे कुछ करने देती है या नहीं। अब तो शायद आप उठेंगे, क्योंकि नौ बज गए हैं।

जाब की बात ऐसी न थी जो एक आदमी को, जिसने सारी रात कुछ अजीब तरह से काटी हो, प्रसन्न कर सकती। पर उसकी बातों में सचाई थी। सब बातों का विचार करने पर यहाँ से बच निकलना असम्भव ही मालूम होता था। अगर मान भी लें कि लियो अच्छा हो जाता है और रानी हमें जाने की अनुमति दे देती है (जो सन्देहास्पद ही है), और गुस्से के किसी क्षण में हमें फूंककर राख नहीं कर देती, तथा अमाहज्जर लोग भी हमें गर्म घड़े से नहीं मारते, किन्तु इन दलदलों के बीच, जो मीलों तक फैले हुए हैं और जो इन अमाहज्जर कुटुम्बों के लिए मनुष्य-निर्मित किसी भी किलाबन्दी से कहीं अधिक दृढ़ सिद्ध हुए हैं; रास्ता खोज लेना हमारे लिए असम्भव ही है। इसलिए एक ही उपाय रह गया है कि जो कुछ हम पर यहाँ आ पड़े उसे भोगते चलें। और अपने लिए तो मैं कह सकता हूँ कि सम्पूर्ण कथा में मुझे इतनी दिलचस्पी हो गई थी और अद्भुत बातों को देखने की उत्सुकता इतनी प्रबल हो उठी थी कि मैं कहीं जाना भी न चाहता था। शरीर गुण धर्म-विज्ञान का कौन जिज्ञासु ऐसा होगा जो इस अद्भुत आयेशा के अध्ययन का मौका पाकर भी उसे छोड़ देगा? इस कर्म में जो भय था, वही उलटा मुझे अपनी ओर आकर्षित किए हुए था। फिर दिन के इस उजाले में, शान्त चित्त से भी मैं इस बात को मानने के लिए बाध्य था कि उस स्त्री ने मुझे आकर्षित कर लिया है, और मैं उस आकर्षण से अपने को मुक्त करने में असमर्थ हूँ। पिछली रात मैंने जो भयानक दृश्य देखे हैं वे भी इस मूर्खता को हमारे मन से दूर करने में असमर्थ थे, और आज तक भी मैं उसे दूर नहीं कर सका हूँ।

मैं हाथ-मुँह धोकर और कपड़े पहनकर भोजन के कमरे में गया और कुछ भोजन किया जिसे पहले की भाँति गूंगी लड़कियाँ लाई थीं। भोजन के बाद मैं लियो को देखने गया जो बिल्कुल विक्षिप्त हो रहा था। उसने मुझे भी नहीं पहचाना। मैंने उस्तेन से पूछा—'तुम्हारी समझ में लियो की तबीयत कैसी है?'

Pratap College
SRINAGAR

पर उसने सिर्फ़ अपना सिर हिला दिया और रोने लगी। निश्चय ही उसे लियो के बचने की बहुत कम आशा थी। मैंने तुरन्त निश्चय कर लिया कि यदि सम्भव हो तो आयेशा को उसे देखने के लिए राज़ी करना चाहिए। अगर उसमें वह शक्ति है, जैसा कि वह कहती है, तो वह लियो को ज़रूर अच्छा कर सकेगी। जब मैं वहाँ था, तभी बिल्लाली भी आ गया। उसने भी सिर हिला दिया और कहा—"आज रात यह नहीं बचेगा।"

"ईश्वर न करे, ऐसा हो मेरे पिता।" मैंने उत्तर दिया और दुखी हृदय लिये वहाँ से हट गया।

पर्दे के बाहर निकलते ही बुड्ढे ने कहा—"मेरे लंगूर! 'अवश्य-माननीया' ने तुमको याद किया है। पर मेरे पुत्र! इस बार वैसा न करना। कल जब तुम पेट के बल रेंगकर नहीं चले तो मैंने हृदय में सोच लिया था कि वह तुम्हें फूंककर राख कर देगी। आज वह बड़े हाल में उन आदमियों का मुक़द्दमा सुनेगी, जिन्होंने तुम पर एवं शेर पर हमला किया था। आओ मेरे बेटे! आओ जल्दी।"

मैं उसके पीछे-पीछे चला। जब मैं मध्य गुफा में पहुँचा तो देखा कि झुण्ड के झुण्ड अमाहजर, कुछ तेंदुए की खाल लपेटे और कुछ कपड़े पहने, उधर ही जा रहे हैं। हम भी उनमें शामिल हो गए और उस लम्बी गुफा में चलते गए। उसकी दीवारों पर सब जगह खुदे हुए चित्र एवं मूर्तियाँ बनी थीं और हर बीस क़दम पर उससे रास्ते निकलकर किसी तरफ़ जाते थे। बिल्लाली से मालूम हुआ कि वे रास्ते समाधि-भवनों की ओर जाते हैं, जो पहाड़ों को काटकर उन लोगों द्वारा बनाए गए थे, जो यहाँ पहले रहते थे। अब कोई उन समाधि भवनों में नहीं जाता। मेरा हृदय पुरातत्व-विषयक शोध का ऐसा अवसर मिलने की खुशी से भर गया।

अन्ततोगत्वा हम गुफा के एक सिरे पर पहुँचे। यहाँ ठीक वैसा ही पत्थर का एक चबूतरा बना था जैसे चबूतरे पर खड़े होकर हमने अमाहज़रों के आक्रमण का सामना किया था। संभवत: ये चबूतरे धार्मिक समारोहों अथवा मृतक-कर्म के लिए बनाये गए होंगे। इस चबूतरे से दोनों तरफ़ रास्ते बने थे और बिल्लाली के बताने से मुझे मालूम हुआ कि वे मृत शरीरों से पूर्ण अन्य गुफाओं की ओर जाते थे। उसने कहा—"प्राय: सारा पहाड़ ही मुर्दों से भरा

है, जो सब बिल्कुल अच्छी हालत में रखे हुए हैं।"

इस चबूतरे के आगे सैकड़ों की भीड़ थी। इस भीड़ में पुरुष भी थे, स्त्रियाँ भी थीं, जिनके चेहरों पर एक विशेष प्रकार की उदासी छाई हुई थी। चबूतरे पर काली लकड़ी की एक कुर्सी रखी हुई थी जिस पर हाथी-दाँत का काम हो रहा था। इसकी बैठक घास के तन्तुओं से बुनी गई थी और पाँव रखने के स्टूल जैसा कोई लकड़ी का तख्ता उसके सामने लगा हुआ था।

एकाएक "हिया ! हिया !" का शोर हुआ जिसे सुनते ही सब के सब मुर्दे के समान पेट के बल जमीन पर लेट गए। उनके बीच केवल मैं खड़ा रहा। इसके बाद बहुत से रक्षक आकर चबूतरे के दोनों तरफ पंक्तिबद्ध खड़े हो गए। इसके बाद लगभग एक कोड़ी गूँगे पुरुष, और उनके पीछे उतनी ही गूँगी स्त्रियाँ हाथ में दीपक लिये आईं। और इन सब के पीछे एक लम्बी, सफेद शक्ल आई, जिसका सारा शरीर, ऊपर से नीचे तक, लबादे से ढका हुआ था। मैंने पहचान लिया कि वही 'हिया' या 'श्री' है। वह चबूतरे पर चढ़कर कुर्सी पर बैठ गई और उसने यूनानी भाषा में मुझ से कहा, कदाचित् इसलिए कि वह नहीं चाहती थी कि उपस्थित अन्य लोग उसे जानें—

"होली ! यहाँ आओ। मेरे पाँव के पास बैठो और देखो कि मैं उनका कैसा न्याय करती हूँ जो मार डालने को तुम पर टूट पड़े थे। क्षमा करना यदि मेरी यूनानी भाषा पंगु की भाँति लड़खड़ाती हो, क्योंकि बहुत दिनों बाद मैंने उसे सुना है और अब मेरी ज़बान कठोर हो गई है जिसमें शब्दों की लोच को व्यक्त करने की शक्ति नहीं रह गई है।"

मैंने झुककर सलाम किया, और चबूतरे पर चढ़कर उसके पाँव के पास बैठ गया।

उसने पूछा—"होली ! तुम्हें रात कैसी नींद आई ?"

मैंने इस आन्तरिक भय से कि कहीं वह जान न गई हो कि मैंने किस प्रकार रात बिताई है, सच-सच कहा—"आयेशा ! मैं अच्छी तरह सो नहीं सका।"

ज़रा हँसकर उसने कहा—"ऐसा ! मैं भी ठीक न सो पाई। पिछली रात मैं सपने देखती रही। होली ! शायद तुम्हारे ही कारण वे सपने आये हों।"

मैंने उदासीनतापूर्वक पूछा—"आयेशा ! आपने सपने में क्या देखा ?"

उसने तुरन्त उत्तर दिया—"मैंने सपने में उसे देखा जिसे घृणा करती हूँ

और उसे देखा जिसे प्यार करती हूँ।" फिर एकाएक बात का रुख मोड़ते हुए उसने अपने रक्षकदल के सरदार से अरबी में कहा—"आदमियों को मेरे सामने लाओ।"

रक्षक एवं सेवक ज़मीन पर लेटे हुए न थे, बल्कि खड़े थे। सरदार ने झुककर सलाम किया और अपने साथ कुछ आदमी लेकर दाहिनी ओर के रास्ते में चला गया।

इसके बाद सन्नाटा छा गया। आयेशा ने अपना सिर अपने हाथ पर झुका लिया और विचारों में डूब गई। और सब आदमी वैसे ही पेट के बल पड़े रहे; हाँ कभी-कभी सिर जरा-सा उठाकर एक आँख से वे हमारी ओर देख लेते थे। इससे मालूम होता था कि उनकी रानी मुश्किल से कभी सार्वजनिक रूप में बाहर आती थी और हर आदमी इतनी तकलीफ़ और उससे भी ज्यादा खतरा उठाकर उसे देखने का अवसर चूकना न चाहता था— उसे क्या बल्कि उसके लबादे को देखने का, क्योंकि सिवाय मेरे वहाँ के किसी और जीवित मनुष्य ने उसका मुख नहीं देखा था। अन्त में हिलते हुए दीपकों की रोशनी दिखाई पड़ी और रास्ते में आते आदमियों की पद-चाप सुनाई पड़ी। सरदार अपराधियों को अपने साथ लिये हुए आ पहुँचा। उनकी संख्या बीस या अधिक रही होगी और उनके चेहरों पर एक ओर क्रूरता और दूसरी ओर उनके जंगली हृदयों में भरे हुए भय की छाया थी। वे चबूतरे के सामने खड़े कर दिए गए और वे दर्शकों की भाँति गुफा की फर्श पर पेट के बल लेटने जा रहे थे कि रानी ने मना कर दिया।

बड़े ही मधुर शब्दों में वह बोली—"नहीं, खड़े रहो; मैं कहती हूँ—खड़े रहो। जल्द ही वह समय आएगा जब तुम लेटे-लेटे थक जाओगे"—और संगीत की गूंज भरी हँसी हँस दी।

मैंने देखा कि उन बदमाशों और अभागों पर भय की एक लहर फैल गई। मुझे उन पर दया आ गई और मैं दुखित हो गया। दो-तीन मिनट ऐसे ही बीते; शायद वह एक-एक को देख रही थी जैसा कि उसके सिर की गति से मालूम होता था—आँखें तो छिपी थीं। अन्त में शान्त एवं दृढ़ स्वर में उसने मुझसे कहा:

"हे मेरे अतिथि! क्या तुम इन आदमियों को पहचानते हो?"

मैं बोला—"हाँ, मैं प्रायः सभी को पहचानता हूँ।" जब मैं कह रहा था तो वे मेरी ओर कातर दृष्टि से देख रहे थे।

"तब तुम सारा किस्सा मेरे और इस बड़ी सभा के सामने कहो।"

मैंने संक्षेप में मुर्दाखोरों की उस दावत की तथा किस प्रकार उन्होंने मेरे नौकर को जलाना चाहा था, इत्यादि बातें सुना दीं। अपराधियों और दर्शकों दोनों वर्गों ने पूर्ण शांति से मेरा बयान सुना। रानी ने भी। इसके बाद आयेशा ने बिल्लाली को नाम लेकर पुकारा। उसने ज़मीन पर पड़े ही पड़े अपना सिर उठाकर मेरे बयान की तस्दीक़ की। और कोई गवाही नहीं ली गई।

अन्त में रानी ने बड़ी ही ठंडी, स्पष्ट वाणी में, जो उसकी सदा की वाणी से बिल्कुल भिन्न थी, और जिसे इच्छानुसार वातावरण के अनुकूल रूपान्तरित कर लेने की अद्भुत विशेषता उसमें थी, कहना आरम्भ किया—"तुम लोगों ने सुन लिया? ऐ विद्रोही बच्चो! बोलो तुम्हें क्या कहना है? क्यों न तुम्हें इसका दण्ड दिया जाय?"

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा पर अन्त में अधेड़ उम्र का एक चौड़े सीने और गिद्ध-सी आँखों वाला आदमी बोला। उसने कहा कि जो आदेश उन्हें दिए गए थे उसमें केवल गोरे आदमियों को नुकसान न पहुँचाने की बात थी; उनके काले नौकर की बाबत हमें कोई आदेश नहीं दिया गया था इसलिए एक औरत के, जो अब मर चुकी है, अनुरोध पर हमने उसे गर्म घड़े से मारने और बाद में उसे खा जाने की तैयारी की थी। यह हमारे देश की सम्मानित प्रथा के अनुकूल ही था। जहाँ तक गोरों पर आक्रमण की बात है वह आकस्मिक जोश और झगड़े में किया गया था जिसका सबको दुःख है। अन्त में उसने नम्रता-पूर्वक प्रार्थना की, कि उन्हें क्षमा कर दिया जाय या फिर उन्हें दलदलों में निर्वासित कर दिया जाय जहाँ वे अपनी किस्मत से चाहे जियें या मरें।

पर मैं उसके चेहरे के भाव से अनुमान कर रहा था कि उसे क्षमा कर दिये जाने की आशा बहुत ही कम है।

इसके बाद कार्रवाई कुछ देर के लिए रुक गई और उस धुंधले स्थान में चतुर्दिक् बहुत ही गहरा सन्नाटा छा गया। दीपकों की ज्योति इतनी मन्द थी कि उसमें चट्टानी दीवारों पर प्रकाश और छाया की बाह्याकृतिमात्र उभरकर रह जाती थी। चबूतरे के सामने भूमि पर मुर्दे के समान कोड़ियों दर्शक पड़े थे

जिनकी पंक्ति बहुत दूर जाकर अंधेरी पार्श्वभूमि में समाप्त होती थी। इस भूमिस्थ दर्शक-मण्डली के सामने अपराधियों का समूह था, जो अपने स्वाभाविक भय को ऊपर से लापरवाही की वीर भावना चेहरे पर लाकर छिपाना चाह रहे थे। दाहिने-बाएँ मौन रक्षकगण खड़े थे; वे सफेद कपड़े पहने तथा बड़े-बड़े भाले तथा कटार लिये हुए थे। गूंगी स्त्रियाँ और पुरुष कड़ी और उत्सुकतापूर्ण दृष्टि से यह सब तमाशा देख रहे थे। इन सब के ऊपर उस जंगली कुर्सी पर लबादा पहने और अपने को पूर्णतः ढके गोरी स्त्री बैठी थी जिसकी सुन्दरता और भयावनी शक्ति उसके इर्द-गिर्द ज्योतिचक्र अथवा किसी अदृष्ट प्रकाश की आभा के समान छाई हुई थी। इस समय, बदला लेने के निश्चय के कारण उसकी आवृत शक्ल जितनी भयंकर लगती थी उतनी भयंकर मुझे फिर कभी नहीं लगी।

और अन्त में उसकी वाणी गूंज उठी।

उसने पहले बहुत धीमी आवाज़ में कहना आरम्भ किया, पर ज्यों-ज्यों समय बीतता गया वह आवाज़ शक्तिमान—तेज़—होती गई, यहाँ तक कि सारी गुफा उससे गूंज उठी—"कुत्तो और साँपो! नरमांस-भक्षको! तुमने दो अपराध किये हैं। पहला क़सूर यह कि तुमने इन गोरे अजनबियों पर हमला किया और उनके नौकर को मार डालना चाहा। सिर्फ़ इसी एक अपराध के लिए तुम्हें मौत का पुरस्कार दिया जाना चाहिए। पर इतनी ही बात नहीं है। तुमने मेरी आज्ञा का उल्लंघन करने का भी दुस्साहस किया। क्या मैंने अपने सेवक और तुम्हारे कुटुम्ब के पिता बिल्लाली द्वारा आदेश नहीं भेजा था? क्या मैंने तुम्हें आज्ञा नहीं दी थी कि इन अजनबियों का भलीभाँति आतिथ्य-सत्कार करना और इन्हीं को तुमने मारने की कोशिश की, जो वीर और सामान्य आदमी की अपेक्षा अधिक शक्तिमान न होते तो तुम्हारे हाथों से निर्दयतापूर्वक मारे ही जा चुके थे? क्या तुम्हें बचपन से ही यह नहीं सिखाया गया है कि 'हिया' का कानून अटल है और जो इसे बिन्दु भर भी तोड़ता है वह नष्ट हो जायगा? क्या मेरी हलकी वाणी ही कानून नहीं है? मैं पूछती हूँ कि तुम्हारे पिताओं ने क्या बचपन से ही तुम्हें यह नहीं सिखाया है? क्या तुम्हें नहीं मालूम है कि जैसे तुम इन महती गुफाओं को अपने ऊपर नहीं गिरा सकते, जैसे तुम सूर्य की गति को नहीं रोक सकते, वैसे ही तुम मुझे मेरे दृढ़ निश्चय

से नहीं हटा सकते या मेरी आज्ञाओं का मनमाना अर्थ नहीं लगा सकते। हे दुष्टो! क्या तुम्हें ये बातें नहीं मालूम हैं? पर तुम सब दुष्ट हो—सिर से पैर तक दुष्ट हो। जैसे वसन्त में चश्मा उबलता है वैसे दुष्टता तुम में फूटी पड़ती है। अगर मैं न होती तो पीढ़ियों पहले ही तुम खत्म हो गए होते और अपनी ही दूषित भावनाओं से तुमने एक-दूसरे को नष्ट कर दिया होता। अब चूंकि तुमने यह काम किया है, चूंकि तुमने इन मेरे मेहमानों को मार डालने की चेष्टा की है, और इससे भी ज्यादा इसलिए कि मेरी आज्ञा का उल्लंघन करने का दुस्साहस किया है, इसलिए मैं दण्ड देती हूँ कि तुम्हें साँसत घर या उत्पीड़न-गुफा[1] में ले जाकर वधिकों—साँसत करने वालों—के सुपुर्द कर दिया जाय और कल सूर्यास्त तक भी जो उसमें जीवित बच जायँ उन्हें उसी तरह मार दिया जाय जिस तरह तुमने मेरे इस अतिथि के नौकर को मारने की चेष्टा की थी।"

इसके बाद वह चुप हो गई और सारे कक्ष में भय फैल गया। अपराधियों ने ज्यों ही अपनी किस्मत का फैसला सुना उनका धीरज जाता रहा और वे जमीन पर लोटकर रोने और कुछ ऐसे ढंग से दया की भीख माँगने लगे कि देखा नहीं जाता था। मैंने भी घूमकर उनको क्षमा कर देने की प्रार्थना आयेशा से की या फिर इससे कम भयानक दण्ड देने को कहा पर वह कठोर और निश्चल बनी रही।

वह मेरी ओर घूमकर यूनानी में बोली—जिसे उस भाषा का बहुतों से अच्छा जानकार होते हुए भी उच्चारण की भिन्नता के कारण[2] मैं ठीक-

---

१. मैंने बाद में इस भयंकर 'उत्पीड़न गुफा' या 'साँसत घर' को देखा जो कोर के प्रागैतिहासिक निवासियों द्वारा बनवाई गई थी। गुफा में चट्टानों के पत्थर की शिलाएँ अनेक रूपों में रखी हुई थीं जिससे कि उत्पीड़न में सहूलियत हो। कितनी ही शिलाएँ प्राचीन अपराधियों के रक्त से काली पड़ गई थीं। बीच में एक भट्ठी भी थी। जिसमें घड़ा गरम करके उसका दण्ड के लिए उपयोग किया जाता था। इन शिलाओं पर उत्पीड़न के भयानक चित्र भी खुदे हुए थे।

२. आयेशा तो दो हजार साल पूर्व की यूनानी बोलती थी, इसीलिए उसके शब्दों के रूप और उच्चारण भिन्न थे।

ठीक समझ न पाया—"मेरे होली! ऐसा नहीं हो सकता। अगर मैं इन भेड़ियों के प्रति दया का वर्ताव करूँ तो इन लोगों के बीच एक दिन के लिए भी तुम्हारा जीवन सुरक्षित नहीं रह सकता। तुम इन्हें नहीं जानते। ये खून पीने वाले चीते हैं और अब भी तुम्हारी जान के भूखे हैं। तुम क्या जानो कि मैं किस प्रकार इन लोगों पर शासन करती हूँ। मेरे पास मेरे आदेश के पालन के लिए सिर्फ़ थोड़े-से रक्षक हैं। ये क्या कर सकते हैं; पर मैं सैनिक बल से नहीं, भय से इन पर शासन करती हूँ। मेरा साम्राज्य कल्पना का साम्राज्य है। किसी की ज़िन्दगी में कभी-कभी ही मैं इस प्रकार का काम करती हूँ जैसा मैंने अभी किया है और एकाध कोड़ी की साँसत करके मार देती हूँ। विश्वास न करो कि मैं इतनी निर्दय हो सकती या इतने छोटों से बदला ले सकती हूँ। इनसे बदला लेने में मुझे क्या फ़ायदा होगा? हे होली! जो बहुत दिनों तक जीते हैं, उनकी वासना नष्ट हो जाती है या वहीं तक रह जाती है जहाँ तक उनका स्वार्थ या हित होता है। यद्यपि मालूम पड़ता है कि मैं क्रोध में इन्हें मौत की सज़ा दे रही हूँ, पर असल बात यह नहीं है। तुम देखते हो कि आकाश में बादल के छोटे-छोटे टुकड़े, अकारण ही, इधर से उधर, उधर से इधर चलते फिरते हैं, पर उनके पीछे कोई जोरदार हवा होती है, जो इन्हें इस प्रकार इधर-उधर उड़ाती फिरती है। मेरे साथ भी यही बात है। मेरी मनोदशा और उसमें होने वाले परिवर्तन ही छोटे बादल के समान हैं, जो चंचल होकर इधर-उधर घूमते हैं, पर उनके पीछे मेरे अभिप्राय की तीव्र वायु बहती रहती है। नहीं, इन्हें मरना ही पड़ेगा और मरना भी उसी प्रकार पड़ेगा जिस प्रकार मैंने बताया है।"

इसके बाद उसने रक्षकों के कप्तान से घूमकर कहा—"मैंने जो कहा है उसे पूरा करो।"

अध्याय १६

'कोर' के मक़बरे

अपराधियों के चले जाने के बाद आयेशा ने हाथ हिलाया, और सब दर्शक घूमकर पेट के बल रेंगते हुए बाहर जाने लगे। चबूतरे से कुछ दूर निकल जाने के बाद वे खड़े होकर चले गए। अब वहाँ कुछ रक्षकों तथा गूंगे दास-दासियों के सिवा हम दोनों—रानी और मैं—रह गए।

मैंने इस अवसर को उपयुक्त समझकर आयेशा से चलकर लियो को देखने के लिए कहा, उसे उसकी गम्भीर स्थिति भी बताई किन्तु उसने स्वीकार न किया और कहा—"मेरे विचार से वह शाम के पहले नहीं मरेगा क्योंकि कोई आज तक इस ज्वर में रात वा उषःकाल के सिवा दूसरे समय नहीं मरा है। इसके अलावा यह ज़्यादा अच्छा होगा कि मेरे उसे रोगमुक्त करने के पूर्व बीमारी अपनी पूरी अवधि ले ले।" तदनुसार मैं वहाँ से चलने के लिए उठा, पर उसने यह कहकर मुझे अपना अनुसरण करने का आदेश किया कि वह मुझसे बातें करना तथा गुफाओं की आश्चर्यजनक वस्तुएँ दिखलाना चाहती है।

मैं उसके आकर्षण-जाल में ऐसा फँस गया था कि यदि मैं चाहता तब भी उसकी बात टाल न सकता, इसलिए मैंने स्वीकृति में सिर हिला दिया। इस पर वह अपनी कुर्सी से उठी और गूंगों को कुछ इशारा कर चबूतरे से नीचे उतरी। उसके नीचे उतरते ही चार लड़कियों ने दीपक ले लिये और दो-दो करके हमारे आगे-पीछे हो गईं। शेष सब लोग वहाँ से चले गए।

अब उसने कहा—"ओ होली! तुम इस स्थान के आश्चर्यों को देखोगे? अच्छा, इस महती गुफा को देखो। क्या तुमने ऐसी कोई और गुफा देखी है? इसे और इस जैसी दूसरी गुफाओं को उस मृत जाति के लोगों ने पहाड़ को काट-काटकर बनाया था जो यहाँ मैदान में बसे हुए नगर में रहती थी। वे कैसे महान् और अद्भुत लोग रहे होंगे, ये 'कोर' के लोग! पर उन्होंने, मिश्रियों की तरह जीवित लोगों की अपेक्षा मरे हुओं का ही अधिक ख्याल किया। अच्छा, तुम्हारे विचार से कितने आदमियों ने कितने समय में इस गुफा और इसके

असंख्य गलियारों को पहाड़ काट-काटकर बनाया होगा।"

मैंने कहा—"हज़ारों आदमियों ने।"

"हाँ होली ! यह बड़ी ही प्राचीन जाति के लोग थे ; मिश्रियों के भी पहले के। मैं इनके लेखों को कुछ-कुछ पढ़ सकती हूँ क्योंकि मुझे उनकी कुंजी मिल गई है। इसी गुफा को देखो, यह उनके द्वारा बाद की बनाई गुफाओं में से एक है", इतना कहकर अपने बगल की चट्टान की ओर घूमकर उसने गूंगियों से दीपक ऊपर उठाने को कहा। चबूतरे के ऊपर एक बुड्ढे आदमी की तस्वीर खुदी थी जो कि कुर्सी पर बैठा हुआ था और जिसके हाथ में हाथीदाँत की छड़ी थी। मुझे तुरन्त ख्याल आया कि यह तस्वीर उस कमरे की तस्वीर से बहुत मिलती-जुलती है जिसमें हमने अपना भोजन किया था। कुर्सी उस कुर्सी के समान ही थी जिस पर बैठकर आयेशा ने अभी-अभी अपना फैसला सुनाया था पर इस कुर्सी के नीचे विचित्र अक्षरों में, जो चीनी लिपि के समान दिखते थे, कोई छोटा लेख लिखा हुआ था। कुछ हिचकिचाहट एवं कठिनाई के बाद आयेशा ने ज़ोर-ज़ोर से इस लेख को पढ़ना और उसका अनुवाद करना शुरू कर दिया। वह लेख निम्नलिखित था :

"राजधानी 'कोर' के निर्माण के चार हज़ार दो सौ उनसठवें वर्ष में इस गुफा (या मक़बरे) को 'कोर' के बादशाह 'तिस्नो' ने बनवाकर तैयार कराया। यहाँ के निवासियों और उनके दासों ने मिलकर तीन पीढ़ी तक बराबर मेहनत करके अपने देश के आगे होने वाले बड़े आदमियों की समाधि के लिए इस महती गुफा को बनाया। आकाश के ऊपर जो स्वर्ग है उसकी कृपादृष्टि हम पर रहे। और परमात्मा उस शक्तिमान बादशाह 'तिस्नो' को जिसकी तस्वीर ऊपर खुदी है, 'फिर जागने के दिन तक' इसमें आराम की नींद सुलावे ; और उसके सेवकों और उसकी जाति के लोगों को भी, जो बाद में आयेंगे पर जिनको सिर नीचा करना पड़ेगा, इसी प्रकार की मीठी नींद दे।"

उसने कहा—"होली ! देखा ? इन्हीं लोगों ने उस शहर को बनवाया और बसाया था जिसके टूटे-फूटे खंडहर अब तक सामने के मैदान में फैले हुए दिखाई पड़ते हैं। और उस शहर को इस गुफा के बनने के चार हज़ार साल से भी पहले बनवाया गया था। आज से दो हज़ार वर्ष पहले मैंने इसे पहली बार देखा

था। तब भी* यह इसी खंडहर के रूप में पड़ा था, जिस रूप में तुम आज देख रहे हो। इससे तुम अनुमान लगा सकते हो कि यह नगर कितना पुराना होगा! अच्छा आओ, तुम्हें दिखाऊँ कि जब उनका समय आ गया तो ये लोग भी किस प्रकार नष्ट हो गए।" इतना कहकर वह मुझे गुफा के मध्यभाग में ले गई। वहाँ एक चट्टान को गोलाई में काटकर एक बड़ा गड्ढा बना था और उसका मुँह वैसा ही ढका था जैसा सड़कों पर बने 'मेनहोल' का होता है। अब उसे दिखाकर उसने मुझसे पूछा—"देखते हो। बताओ, यह क्या है?"

मैंने कहा—"मैं कुछ नहीं जानता।" इस पर वह गुफा की बाईं ओर जाकर दरवाज़े की तरफ़ मुँह करके खड़ी हो गई और गूँगियों से दीपक ऊपर उठाने के लिए इशारा किया। दीवार पर, कोर के बादशाह 'तिस्नो' की तस्वीर के नीचे लिखी लिपि में ही, लाल रंग में रंगा, एक लेख लिखा हुआ था। आयेशा ने इस लम्बे लेख का अनुवाद करके मुझे सुनाया। रंग बिल्कुल ताज़ा मालूम पड़ता था। लेख यों था—

"मैं जूनिस, कोर के महामन्दिर का एक पुजारी, कोर की स्थापना के चार हज़ार आठ सौ तीसरे साल में, इस समाधि-भवन की चट्टानी दीवार पर यह लेख लिख रहा हूँ। 'कोर' नष्ट हो गया है। अब उसके वृहत् कक्षों में बड़ी-बड़ी दावतें न होंगी, अब वह दुनिया पर हुकूमत न करेगा, अब उसके जहाज़ संसार भर में व्यापार करते न घूमेंगे। 'कोर' का पतन हो गया, और उसके साथ ही उसकी बड़ी-बड़ी इमारतें, उसके नगर, उसके बन्दरगाह, उसकी नहरें भी नष्ट हो गईं। अब उनमें सिर्फ़ भेड़िये, उल्लू, बतक और आगे आने वाले जंगली मनुष्य ही रहेंगे। पचीस चन्द्रमाओं पूर्व एक घटा कोर तथा कोर के सौ नगरों पर छा गई। इस घटा से एक ऐसी महामारी फैली जिससे उसके सारे आदमी बूढ़े और जवान, सब मर गए। बूढ़े और जवान, धनी और निर्धन, स्त्री और पुरुष, राजा और दास सब बीमारी से काले हो-होकर मर गए। महामारी रात-दिन लोगों को मारती और मारती ही रही; वह रात-दिन किसी समय ठहरती न थी। जो इस महामारी से बच भी गए वे दुर्भिक्ष के कारण मर गए।

*** ये शब्द ध्यान देने योग्य हैं, क्योंकि इनसे पुनर्जन्म में उनका विश्वास ध्वनित होता है।**

कोर की सन्तति की लाशों को प्राचीन प्रथा के अनुसार सुरक्षित रखना संभव न था, क्योंकि उनकी संख्या अनगिनत थी, इसलिए वे इस गुफा में बने छेद से एक के ऊपर एक कुण्ड या कुएं में भोंक दिए गए। अन्त में दुनिया को प्रकाश देने वाली इस महती जाति के चंद बचे आदमी समुद्र के किनारे पहुँचे और जहाज पर सवार होकर उत्तर की ओर चले गए, और अब सिर्फ मैं, पुजारी जूनिस, यहाँ रह गया हूँ, और मैं यह नहीं जानता कि मेरे सिवाय कोई दूसरा, किसी दूसरे नगर में बच रहा है या नहीं। मैं गहरी हृदय-व्यथा के साथ, अपने मरने के पूर्व इसे यहाँ लिख जाता हूँ क्योंकि शाही कोर अब नहीं रह गया है, उसके मन्दिर में पूजा करने वाला कोई बचा नहीं है, उसके सब महल खाली पड़े हैं, और उसके राजकुमार, उसके सरदारगण, उसका व्यापार और उसकी सुन्दर रमणियाँ इस धरती से सदा के लिए चली गई हैं।"

मैं आश्चर्य से अभिभूत हो सन्न हो गया—उस अभिलेख में व्यक्त सर्वनाश की कथा ने मुझे अवश कर दिया। यह सोचना भी भयानक था कि एक महती जाति का एकमात्र बचा हुआ व्यक्ति, अपने देहावसान के पूर्व, स्वयं अन्धकार में विलीन होने के पूर्व यह लेख लिख गया है! जब एक झिलमिलाते दीपक की धुंधली ज्योति में; शैतानी, भयानक एकान्त में बैठकर उस आदमी ने गुफा की दीवार पर अपने राष्ट्र की मृत्यु की यह संक्षिप्त कथा लिखी होगी तब उसके मन की क्या दशा रही होगी? आह, किसी नीति-उपदेशक, किसी चित्रकार, तथा विचारशील किसी भी व्यक्ति के लिए यह कैसा विषय था!

आयेशा ने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—"क्यों होली! क्या तुम्हें इससे यह ख्याल नहीं आता कि इनमें जो आदमी जहाज से उत्तर की ओर गए, वे ही आरम्भिक मिश्रियों के पूर्वज थे?"

मैंने उत्तर दिया—"नहीं, मैं नहीं जानता। ऐसा जान पड़ता है कि दुनिया बहुत पुरानी है।"

"पुरानी? हाँ, जरूर पुरानी है। एक काल के बाद दूसरा काल आया और जातियाँ, धनी और शक्तिमती जातियाँ, विद्या और कला में निपुण जातियाँ विस्मृति के गर्भ में विलीन होती गईं—यहाँ तक कि उनकी कोई स्मृति भी नहीं रह गई। यह भी ऐसी ही एक जाति थी। काल मानव-कृतियों को खा

जाता है, जब तक कि कोर-वासियों की तरह कोई ऐसी गुफाएँ या इस तरह की दूसरी चीज़ें न छोड़ जाय। पर इनका भी क्या ठिकाना कि किसी दिन इन्हें समुद्र निगल न जायगा या भूकम्प इन्हें भूमिसात् न कर देगा ? कौन जानता है कि पृथ्वी पर पहले क्या-क्या हो चुका है और आगे क्या-क्या होने वाला है ? जैसा बुद्धिमान यहूदी ने युगों पूर्व लिखा था—सूर्य के नीचे कोई चीज़ नई नहीं है। फिर भी मैं सोचती हूँ कि ये लोग सर्वथा नष्ट नहीं हुए। चंद आदमी अन्य नगरों में भी बच गए क्योंकि उनके नगर अनेक थे। किन्तु दक्षिण के जंगलियों या मेरी जाति के लोगों, (अरबों) ने उन पर धावा बोल दिया और उनकी स्त्रियों से शादी कर ली और उन्हीं से यह अमाहज्जर की वर्णसंकर जाति उत्पन्न हुई, जो अपने पिताओं की हड्डियों के साथ आज तक मक़बरों में रहती है। पर नहीं, मैं नहीं जानती। कौन जान सकता है ? काल-रात्रि के अंधकार में मेरा ज्ञान इतनी दूर तक नहीं जा सकता। पर इसमें संदेह नहीं कि वे एक महती जाति के लोग थे। वे तब तक विजय करते गए जब तक कि कोई विजय करने के लिए नहीं बच गया, और तब वे इन पहाड़ी दीवारों के भीतर अपने दास-दासियों, अपने कवियों, अपने शिल्पकारों और अपनी रखेलियों के साथ मौज के दिन बिताने लगे। वे व्यापार करते और लड़ते थे; खाते, शिकार खेलते और सोते थे। इस प्रकार वे तब तक मौज-बहार लूटते रहे जब तक कि उनका समय नहीं आ गया। पर आओ, तुम्हें वह गड्ढा, वह कुआँ, दिखाऊँ जिसका जिक्र इस लेख में किया गया है। तुम्हारी आँखें फिर कभी ऐसा दृश्य न देख पायेंगी।"

तदनुसार बगल के एक रास्ते पर मैंने उसका अनुसरण किया, जो मुख्य गुफा के बाहर निकलता था। उसके बाद हमें अनेक सीढ़ियों से होते हुए नीचे उतरना पड़ा। यह एक सुरंग-सी थी जो चट्टान की ऊपरी सतह से कम से कम ६० फुट नीचे रही होगी। इसमें ऊपर की ओर न जाने कहाँ जाने वाले झरोखे बने थे जिनसे खूब हवा आ रही थी। एकाएक रास्ता समाप्त हो गया। आयेशा रुक गई। उसने गूँगियों से दीपक ऊपर उठाने को कहा। ज्यों ही उन्होंने वैसा किया मैंने एक ऐसा दृश्य देखा जिसे फिर जीवन में देख पाने की आशा नहीं है। हम एक वृहदाकार गड्ढे के अन्दर खड़े थे, या यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि उसके किनारे पर खड़े थे क्योंकि वह नीचे और भी गहरा गया

था—कितना यह मैं नहीं बता सकता। बहरहाल वह हज़ारों मानवी कंकालों से भरा हुआ था जो एक-दूसरे के ऊपर पड़े थे और पिरामिड की शक्ल बना रहे थे। मैं कल्पना नहीं कर सकता कि एक मृत जाति के सम्बन्ध में इस ढेर से अधिक भयानक कोई चीज़ हो सकती है। इससे भी भयंकर बात तो यह थी कि शुष्क वायु में बहुत-सी लाशों पर उनकी सूखी चमड़ी अभी तक झूल रही थी। वे हर स्थिति—'पोज़ीशन'—में बैठी हुई सफेद हड्डियों के पहाड़ से, हमें घूरकर देख रही थीं—मानवता के भयानक व्यंग्य-चित्र के समान। अपनी हैरानी में एक चीख मेरे मुँह से निकल गई और उस बन्द स्थान में उसकी प्रतिध्वनि ने एक कंकाल को, जो हज़ारों वर्ष से उस अस्थिपर्वत के शिखर पर बैठा था, अशान्त कर दिया और वह खिसककर आवाज करता एवं लुढ़कता हमारे पास आकर गिरा और उसके स्थान च्युत होते ही और भी कितनी ही हड्डियों और कंकालों ने उसका अनुसरण किया, यहाँ तक कि समस्त कुआं या गड्ढा उनकी गति से प्रतिध्वनित हो उठा—मानो कंकाल हमारा स्वागत करने के लिए उठ रहे हों।

मैंने कहा—"आइये, यहाँ से हमें चले जाना चाहिए। शायद ये उन्हीं आदमियों की लाशें हैं जो उस महामारी में मरे थे—यही बात है न?"

"हाँ। कोर के लोग अपने मृतकों को मसाले लगाकर सुरक्षित रखते थे, जैसा कि मिश्रियों में भी रिवाज था; पर कोर वालों का ज्ञान, इस विषय में, मिश्रियों से कहीं बढ़ा-चढ़ा था; क्योंकि मिश्री जहाँ आंतों को और दिमाग़ को निकाल लेते थे तहाँ कोर-निवासी अपने मृतकों की नाड़ियों में एक ऐसा द्रव डालते थे जो शरीर के प्रत्येक भाग में फैल जाता था। ठहरो, इसे भी देख लो।" और वह कुछ दूर चलकर एक छोटे दरवाज़े के पास रुक गई। यह दरवाजा हमारे रास्ते से, जिससे हम चल रहे थे, दूसरी ओर खुलता था। उसने गूंगियों को रोशनी अन्दर ले चलने का इशारा किया। अब हम एक छोटी कोठरी में पहुँच गए, जो वैसी ही थी जिसमें हम पहली बार इस देश में सोये थे। अन्तर इतना ही था कि इसमें एक ही जगह सोने के लिए पत्थर की दो चौकियाँ बनी थीं। चौकियों पर दो मुर्दे पीले कपड़ों से ढके पड़े थे। कपड़ों पर युगों से धूल पड़ रही थी। इन लाशों के इर्दगिर्द चौकियों तथा फर्श पर भी सुचित्रित,

रंगीन फूलदान रखे हुए थे पर अलमारियों में शायद ही कोई गहने या हथियार रहे होंगे।

आयेशा ने कहा—"होली ! कपड़े हटा दो।" मैंने हाथ बढ़ाया पर फिर पीछे खींच लिया।

यह मुझे बड़ा अपवित्र कार्य मालूम पड़ा, पर सच्ची बात तो यह है कि मैं उस स्थान की भयंकर गम्भीरता तथा अपने आगे पड़े इन पदार्थों से चकरा-सा गया था। तब मेरे भय पर हँसते हुए उसने स्वयं कपड़ों को हटा दिया। उस कपड़े के नीचे भी लाशें, पतले सुन्दर कपड़े से ढकी हुई थीं। उसने इसे भी हटा दिया और हज़ारों वर्ष बाद उस ठण्डी लाश के चेहरे पर जिन्दा आँखें पड़ीं। यह एक स्त्री की लाश थी; वह कोई पैंतीस वर्ष की या इससे शायद कुछ कम रही होगी। अपने समय में वह ज़रूर सुन्दर रही होगी। इस समय भी उसके शान्त, सुडौल चेहरे तथा अंगों से सुन्दरता फूट रही थी। उसकी भवें पतली और बरौनियाँ लम्बी थीं जिनसे दीपक के प्रकाश में, उसके शुभ्र हाथी-दाँत से चेहरे पर छाया की हलकी रेखाएँ पड़ रही थीं। उसकी पलकें बहुत ही सुन्दर थीं। सुन्दर, सफेद वस्त्र पहने और अपने काले-नीले बालों को छिटकाये, वह अपनी अन्तिम निद्रा में मग्न थी और उसकी बाहों में एक बच्चा था जो उसकी छाती पर औंधा मुख किये लेटा हुआ था। भयंकर होते हुए भी यह दृश्य इतना मनोहर था—मुझे इसे कहने में कोई शर्म नहीं—कि मैं अपने आंसू न रोक सका। वह दृश्य मुझे युगों की खाई, पार कराके मृत कोर के किसी सुखी गृह में ले गया जिसमें यह सुन्दरी रही और मरी होगी और मरते हुए भी अपने अन्तिम बच्चे को अपने साथ ही समाधिभवन में ले गई होगी। हमारे सामने माँ और बच्चा दोनों सो रहे थे; और एक विस्मृत मानवीय इतिहास की धवल स्मृतियाँ उनके मौन में उससे कहीं स्पष्टता के साथ हृदय से बोल रही थीं। जितना उनके जीवन का कोई लिखित विवरण व्यक्त कर सकता है। मैंने श्रद्धापूर्वक उन पर पुनः कपड़े डाल दिये और सोचने लगा कि भगवान् के प्रयोजन की पूर्ति के लिए ऐसे सुन्दर फूल मृत्यु की गोद में जाकर कुम्हलाने के लिए ही खिलते हैं। अब मैं दूसरी चौकी पर रखी लाश की ओर मुड़ा और उसका कपड़ा हटाकर देखा। यह किसी अधेड़ उम्र के पुरुष की लाश थी जिसकी लम्बी दाढ़ी के बाल खिचड़ी हो गए थे। यह आदमी भी सफेद वस्त्र

पहने हुए था और संभव है, कि उक्त स्त्री का पति रहा हो जो उसकी मृत्यु के बाद कई वर्ष जीने के अनन्तर अन्तिम निद्रा के समय उसके पास ही सोने आ गया हो।

हम इस स्थान के बाद दूसरे स्थानों को भी देखने गए। मैं उन सबके वर्णन में एक किताब लिख सकता हूँ पर ऐसा करना, जो बातें मैं कह चुका हूँ, उन्हें थोड़े परिवर्तन से दोहराना भर होगा।

कोर वाले निश्चय ही इस विद्या में बहुत निपुण रहे होंगे, क्योंकि प्रायः सभी लाशें आज तक वैसी ही ताज़ी रखी थीं, जैसी हजारों साल पहले, अपनी मृत्यु के समय रही होंगी। इस जीवित पहाड़ के गहरे मौन में उन्हें कोई हानि न पहुँचा सका; वे गर्मी, सर्दी अथवा सीलन की पहुँच के परे थीं, और जिन मसालों का उन पर प्रयोग किया गया था उनका प्रभाव सार्वकालिक-सा था। सिर्फ़ चंद ही ऐसे उदाहरण मिले जिनमें ऊपर से चमड़ी ताज़ी मालूम पड़ते हुए भी छूने से वह टूटकर अलग गिर जाती थी। आयेशा ने मुझे इसका यह कारण बताया कि इन मामलों में जल्दी-जल्दी में द्रव को नाड़ियों में प्रवाहित करने का मौका न मिल सका होगा और वे सिर्फ़ द्रव[1] में डुबा दी गई होंगी।

पर अन्त में हमने जो मक़बरा देखा उसका हाल ज़रूर लिखूंगा, क्योंकि वहाँ की वस्तुएँ प्रथम मक़बरे की अपेक्षा भी मानवीय समवेदना को उससे कहीं

---

१. बाद में आयेशा ने मुझे वह वृक्ष भी दिखाया जिसकी पत्तियों से यह प्राचीन रक्षक-द्रव तैयार किया जाता था। यह एक झाड़ीदार छोटा वृक्ष है जो आज भी बहुत अधिक परिमाण में पहाड़ के ढालू भाग में उगता है। पत्तियाँ कम चौड़ी और लम्बी होती हैं। रंग हरा होता है, पर पतझड़ में चमकदार लाल हो जाता है। देखने में ये पत्तियाँ बहुत कुछ 'लाटेल' की पत्तियों के समान होती हैं। इनमें यों कोई खास गंध नहीं होती पर उबाल लेने पर इतनी तीव्र गंध निकलती है कि बर्दाश्त करना मुश्किल हो जाता है। पर सर्वोत्तम क्वाथ जड़ों से बनाया जाता था। शवों की रक्षा के लिए इस मसाले का उपयोग कुछ ख़ास वर्गों के लोग ही कर सकते थे। इन पत्तियों एवं जड़ों की बिक्री का सर्वाधिकार बादशाह के हाथ में था, और इस मद से उसे पर्याप्त निजी आय हो जाती थी।

अधिक जागरित करती थीं। इस स्थान में दो ही लाशें थीं और दोनों एक ही चौकी पर रखी हुई थीं। मैंने ऊपर का कपड़ा हटा दिया और मुझे एक अनुपम दृश्य दिखाई पड़ा। एक युवक और एक खिलती हुई लड़की दोनों एक दूसरे को हृदय से लगाए पड़े हुए थे। लड़की का सिर पुरुष की भुजा पर टिका हुआ था और युवक के ओठ लड़की के माथे को चूम रहे थे। जब मैंने पुरुष के शरीर का कपड़ा हटाया तो क्या देखता हूँ कि उसके हृदय के ऊपर खंजर का एक घाव है; ऐसा ही घाव स्त्री की छाती में था जिसकी राह उसके प्राण प्रयाण कर गए थे। ऊपर की चट्टान में केवल तीन शब्दों का लेख था—**"मृत्यु में विवाह।"**

इन दोनों की जीवन-कथा क्या थी; जो जीवित अवस्था में बड़े ही सुन्दर रहे होंगे और जो मृत्यु में भी एक दूसरे से अलग न हुए थे।

मैंने अपनी आँखें बन्द कर लीं और कल्पना अपने तीव्र पंखों से युगों को पार करती उड़ी और उसने ऐसा चित्र बुन दिया जो अपने ब्यौरे में इतना सच्चा था कि मैंने सोचा कि बस हमने काल पर विजय प्राप्त कर ली और मेरी दृष्टि अतीत के रहस्य को पार कर गई।

मैं एक लड़की की शक्ल देख रहा हूँ, जिसके पीले सुनहले बाल नीचे तक लटके हुए उसके धवल वस्त्रों पर चमक रहे हैं। उसकी छाती में उसके वस्त्रों से भी अधिक गोराई है जिसके सामने स्वर्णाभूषणों की चमक फीकी पड़ गई है। फिर मैं देखता हूँ कि महती गुफा वीर तथा दाढ़ी वाले योद्धाओं से भर गई है। उस चबूतरे पर, जिस पर बैठकर आयेशा ने कुछ देर पहले अपराधियों का फैसला किया था, पुजारी के वस्त्र पहने एक आदमी खड़ा है। इसके बाद गुफा की उस ओर से सुन्दर वस्त्रों में सुसज्जित एक लड़की आती है, उसके आगे-पीछे बन्दीगण एवं सुन्दर किशोरिकाए विवाह-गीत गाती आती हैं। चबूतरे के सामने चम्पकवर्णी किशोरी खड़ी है—वह वहाँ उपस्थित सुन्दरतम स्त्रियों से भी सुन्दर है, कमलिनी से भी अधिक पवित्र है, और अपने हृदय में चमकती हुई ओस की बूँदों से भी अधिक ठण्डी है। चबूतरे वाले आदमी के निकट आते ही वह काँप उठती है। इसी समय भीड़ से उछलकर एक काले बालों वाला युवक वहाँ आ जाता है और इस दीर्घकाल-विस्मृता किशोरी के गले में अपनी भुजाएँ डाल उसके विवर्ण मुख को चूम लेता है। लड़की के विवर्ण मुख पर

तेज़ी से रक्त की लालिमा दौड़ जाती है, जैसे शान्त गगन पर ऊषा की लाल किरणें दौड़ जाती हैं। इस पर बड़ा शोर-गुल और हंगामा मचता है; तलवारें चमक उठती हैं। लोग युवक को किशोरी से छुड़ा लेते हैं, और उसके सीने में खंजर भोंक देते हैं। किशोरी चीखकर युवक के पास पहुँच जाती है; उसके कमरबन्द से खंजर खींच लेती है और एक क्षण में अपनी हिम-धवल छाती में मार लेती है; खंजर हृदय के पार हो जाता है और वह गिर पड़ती है। तब सब लोग रोते-चीखते वहाँ से चले जाते हैं और अतीत अपनी पुस्तक बन्द कर देता है।

जो लोग इसे पढ़ें वे एक यथार्थ इतिहास में इस प्रकार मेरे स्वप्न के अनधिकार प्रवेश के लिए मुझे क्षमा कर देंगे पर यह सब इतने स्वाभाविक रूप में मेरी आँखों के सामने नाच गया और एक क्षण के लिए मैंने उसे इतनी स्पष्टता से देखा कि उसका वर्णन किये बिना रह न सका। पर यह कौन कह सकता है कि अतीत, वर्तमान तथा भावी का कितना सत्यांश कल्पना में छिपा है? कल्पना है क्या? कदाचित् वह अस्पष्ट सत्य की छाया है, कदाचित् यह आत्मा का चिन्तन है।

एक क्षण में यह चित्र आँखों के सामने आया और गया। और मैंने सुना कि आयेशा मुझ से कह रही है:

"मनुष्य की गति देखो!" प्रेमी-युगल पर वस्त्र उढ़ाते हुए, बड़ी गम्भीर दिल छूने वाली वाणी में उसने कहा—"हम सब इसी प्रकार, एक दिन, समाधि-स्थानों और उनमें प्रच्छन्न विस्मृतियों के गर्भ में विलीन हो जायँगे।। तुम्हारे मृत्यु-गर्भ में चले जाने के बाद एक दिन ऐसा आएगा, फिर चाहे वह हज़ारों वर्ष बाद ही क्यों न हो, जब मुझे भी मरना पड़ेगा—जैसे कि तुम मरोगे, जैसे कि ये लोग मर चुके हैं। तब इस बात से क्या होता है कि मैं कुछ ज्यादा दिनों तक जीवित रही और प्रकृति से छीने हुए ज्ञान की बदौलत मृत्यु को, कुछ काल तक, दूर हटाए रही; आखिर तो मरना ही है। काल के प्रवाह में दस हज़ार वर्ष या दस हज़ार वर्ष की दस गुनी अवधि क्या है? कुछ नहीं, कुछ नहीं! यह सूर्यप्रकाश पर छाई धुंध के समान है; यह एक घण्टे की निद्रा के समान भाग जाती है या शीतकालीन हिम की भाँति गल जाती है। मनुष्य की गति देखो! यह हमारे ऊपर भी आयेगी और हम भी नींद में खो जायँगे। इसी प्रकार

यह भी निश्चय है कि हम फिर जगेंगे, **श्रौर** जीयेंगे, फिर सोयेंगे **श्रौर** फिर उठेंगे। यह क्रम श्रवधियों, श्रवकाशों **श्रौर** युगों को लाँघते हुए, कल्प से कल्प तक इसी प्रकार चलता रहेगा जब तक कि इस जगत् का श्रन्त नहीं होता **श्रौर** इस जगत् के पार जो जगत् हैं उनका श्रन्त नहीं होता, **श्रौर श्रात्मा** श्रथवा **जीवन** के सिवाय कुछ नहीं बचता। पर हम दोनों के लिए, **श्रौर** इन मृत लोगों के लिए श्रन्तों का श्रन्त **जीवन** में होगा या **मृत्यु** में ? पर यह **मृत्यु जीवन** की **निशा** मात्र है, **श्रौर** उस निशा से **नये दिन** का पुनरोद्भव होता है, **श्रौर** उसका श्रन्त **फिर निशा** में होता है। जब **दिन श्रौर रात, जीवन श्रौर मृत्यु** उस गर्भ में विलीन हो जायँगे, जहाँ से जन्मे थे, तब हमारी क्या हालत होगी ? इतनी दूर तक कौन देख सकता है ? मैं भी नहीं देख सकती !"

इसके बाद एकाएक श्रावाज़ बदलकर उसने कहा :

"हे मेरे श्रजनबी श्रतिथि ! काफ़ी देख लिया या श्रपने महलों के इन समाधि-भवनों की श्रौर विचित्रताएँ तुम्हें दिखाऊँ ? श्रगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें उस स्थान पर ले चल सकती हूँ जहाँ इन गुफाश्रों को पूरा कराने वाले कोर का सबसे शक्तिमान श्रौर वीर राजा 'तिस्नो' ऐसे श्रानबान से लेटा हुश्रा है मानो शून्यता का उपहास श्रौर श्रपने मूर्त्त श्रहम् के सम्मान के लिए श्रतीत की रिक्त छायाश्रों का श्रावाहन कर रहा हो !"

मैंने उत्तर दिया—"हे रानी ! मैं काफ़ी देख चुका। इस वर्तमान मृत्यु के भार से मैं दब गया हूँ। नाशमान मानव बहुत दुर्बल है, श्रौर उसका श्रन्त जिस धूलि में होता है उसी को पास देखकर वह घबरा जाता है। इसलिए, हे श्रायेशा ! मुझे यहाँ से ले चलो।"

अध्याय १७

पासा पलटा

दीपकों का अनुसरण करते हुए, जिन्हें गूँगी लड़कियाँ मशाल के समान आगे-आगे लिये चल रही थीं, हम एक सीढ़ी के पास पहुँचे जो आयेशा के कमरे के गलियारे तक जाती थी, वहीं जहाँ पिछले दिन बिल्लाली पेट के बल चला था। यहाँ मैंने रानी से विदा होना चाहा, किन्तु उसने मुझे न जाने दिया।

उसने कहा—"नहीं, आओ मेरे साथ। सच तो यह है कि तुम्हारी बातें सुनकर मुझे खुशी होती है। होली, ज़रा सोचो तो, दो हज़ार वर्ष से इन दास-दासियों और अपनी आत्मा के सिवाय और कोई बात करने के लिए नहीं मिला, और यद्यपि एकान्त चिन्तन से मुझे बहुत-सा ज्ञान प्राप्त हुआ और अनेक रहस्यों का पता लगा फिर भी मैं विचार करते-करते थक गई हूँ और खुद अपने प्रति मुझे घृणा हो गई है, क्योंकि स्मृति जो कुछ मुझे खिलाती है वह इतना कटु है कि केवल आशा के दाँतों से ही मैं उसे चबा पाती हूँ। तुम्हारा दिमाग़ यद्यपि अभी ताज़ा और मुलायम है, जैसा कि तुम्हारे जैसे तरुण व्यक्ति का होना चाहिए, फिर भी वह चिन्तनशील है। तुम्हें देखकर मुझे एथेंस तथा अरब स्थित बेक्का के उन पुराने तत्वज्ञानियों की याद आ जाती है जिनसे मैं उन दिनों बहस किया करती थी। तुम्हारा चेहरा भी उनसे मिलता-जुलता है और तुम्हें देखकर ऐसा जान पड़ता है कि बुरे अक्षरों में लिखी यूनानी हस्तलिपियाँ पढ़ते-पढ़ते मानो तुम्हारा मुख मलिन हो गया है। इसलिए पर्दा उठाकर कमरे के अन्दर चलो और मेरे पास बैठो। हम फल खायँगे और बातें करेंगे। मैं पुनः तुम्हारे सामने अपना मुख उघाड़ूंगी। तुम्हीं ने यह आफत अपने सिर मोल ली है। मैंने तो तुम्हें पहले ही चेतावनी दे दी थी पर तुम ने नहीं माना। तुम भी मुझे सुन्दरी कहोगे, जैसा कि वे बूढ़े तत्वज्ञानी मुझे देखकर कहते थे और मुझे देखते ही अपना तत्वज्ञान भूल जाते थे। तुफ़ है उन पर!"

ज्यादा कुछ न कहकर उसने अपनी सफेद ओढ़नी उतार दी और केंचुल छोड़कर, बल खाती एवं चमकती हुई सर्पिणी के समान सामने आई और अपनी

अद्भुत आँखों से जो किसी भी विषधर सर्पिणी की आँखों से अधिक सांघातिक थीं ; मुझे घूरने लगी। उन आँखों की सुन्दरता मेरे दिल के अन्दर उतर गई। उसकी हलकी हँसी वातावरण में वैसा ही कम्पन उत्पन्न करती थी जैसे लघु रजत घण्टियाँ बज उठती हैं।

इस समय वह एक नई झोंक में थी और उसके अतलस्पर्शी मन का रंग बदल गया था। इस समय वह उत्पीड़िता और घृणामयी नहीं थी जैसी रात उठती लपटों बीच अपनी मृत प्रतिद्वन्द्विनी को कोसते हुए मैंने देखा था ; न इस समय उतनी भयानक थी जैसी अपराधियों का न्याय करते समय थी। इस समय वह चंचल, विजयिनी अप्सरा-सी लग रही थी। उससे और उसके चतुर्दिक् जीवन—प्रकाशमान, आनन्द विह्वल एवं अद्भुत जीवन—प्रवाहित हो रहा था। उसका प्रदीप्त मुखारविन्द आन्तरिक उल्लास से खिल रहा था। वह कभी हँसती, कभी गहरी साँस लेती, कभी इधर-उधर अपने चंचल नयनों से देखती फिरती थी। उसने अपनी सघन कुन्तल-राशि को हिला दिया और उससे निकलती सुगन्ध कमरे में भर गई ; फिर अपनी चन्दन की खड़ाऊँ से पृथ्वी पर थाप दे-देकर कोई प्राचीन यूनानी गीत गुनगुनाने लगी। उसकी समस्त गंभीरता इस समय लुप्त थी—अथवा उसकी हँसती आँखों के पीछे से कभी-कभी झाँक लेती थी—जैसे सूर्य-प्रकाश में बिजली चमकने पर होता है। इस समय उसने लपकती ज्वाला का भयावनापन, न्यायशक्ति का कठोर शीत तथा समाधि-भवनों की विवेकपूर्ण वेदना सब कुछ अलग रखी सफेद ओढ़नी की तरह ही अपने पीछे छोड़ दिया था और इस समय सुन्दर प्रलोभक पर अधिक पूर्ण एवं अधिक आध्यात्मिक नारीत्व का अवतार-सी लगती थी।

"हाँ तो होली ! वहाँ बैठो, जहाँ से तुम मुझे देख सको। पर याद रखो यह मैं तुम्हारी ही इच्छा की पूर्ति के लिए कर रही हूँ। मैं फिर कहती हूँ कि अगर तुम्हें अपनी थोड़ी-सी जीवन-अवधि हृदय में व्यथा लिये बितानी पड़ी तो मुझे दोष न देना और यह न कहना कि अपनी आँखों से मुझे देखने के पहले ही तुम क्यों न मर गए ! वहाँ बैठो, और मुझे बताओ कि क्या मैं सुन्दर नहीं हूँ ? नहीं, नहीं, इतनी जल्दबाजी न करो। अच्छी तरह सोच लो, मेरे एक-एक अंग को देखो, मेरी गठन, मेरे हाथ-पाँव, मेरे बाल, मेरी गोराई सब का विचार करके तब बोलो कि क्या तुमने कभी ऐसी सुन्दरी देखी है जो मेरे समान सुन्दर

रही हो, जो हमारे वंकिम भ्रू-युगल और पुरैन-से कानों की सुन्दरता में मेरे सामने खड़ी हो सके ? मेरी कटि, कदाचित् इसे तुम मोटी समझो पर वस्तुतः वैसी नहीं है बल्कि स्वर्ण-सर्प की कर्धनी के कारण वैसी दिखती है। चाहो तो तुम छूकर देख लो। लो, देखो, मुझे अपना हाथ दो, जरा दबाकर देखो। हाँ, क्यों कैसी है ?''

मुझसे अब रहा न गया। आखिर मैं मनुष्य था, पुरुष था और वह स्त्री, बल्कि स्त्री से कुछ अधिक ही, थी। ईश्वर जाने वह क्या थी—मैं नहीं जानता। मैं घुटनों के बल उसके सामने प्रणत हो गया और मिश्रित भाषा—ऐसे समय विचार-भ्रम तो हो ही जाता है—बोला—"मैं तुम्हारी पूजा करता हूँ, ऐसी पूजा जो किसी स्त्री की न की गई होगी, और मैं अपनी अमर आत्मा तुम्हारे चरणों की भेंट करता हूँ ; मुझसे विवाह करो।'' मैंने निश्चय ही उस समय वैसा कर लिया होता। मैं क्या संसार का कोई भी पुरुष, क्या सब जातियों के पुरुषों को मिलाकर एक पुरुष बनाया जाता तो वह भी, यही करता। क्षण भर के लिए तो वह चकित हो गई, फिर खिलखिलाकर हँसने और प्रसन्नता से तालियाँ बजाने लगी।

उसने कहा—''वाह होली ! इतनी जल्दी। मैं सोचती थी कि तुम्हें इस प्रकार घुटनों के बल गिरने में कितने क्षण लगेंगे ! युगों से मैंने किसी को अपने पैर पड़ते नहीं देखा और विश्वास करो कि स्त्री के हृदय को ऐसा दृश्य बड़ा मधुर लगता है, और ज्ञान तथा आयु मिलकर भी उस मधुर आनन्द को छीन नहीं पाते जो मेरी जाति का एकमात्र अधिकार है।

''पर तुम चाहते क्या हो ? क्या चाहते हो तुम ? तुम नहीं जानते कि तुम कर क्या रहे हो। क्या मैं तुमसे कह नहीं चुकी हूँ कि मैं तुम्हारे लिए नहीं हूँ ? मैं केवल एक को प्रेम करती हूँ, और वह आदमी तुम नहीं हो। आह होली ! अपने सब ज्ञान और विवेक के वावजूद—और एक प्रकार से तुम विवेकवान हो—तुम असत् के पीछे, दौड़ने वाले मूर्ख हो। तुम मेरी आँखों में आँखें डालकर देखना चाहते हो ? मेरा चुम्बन लेना चाहते हो ? अच्छा, अगर इससे तुम्हें खुशी होती है तो लो, देखो !'' इतना कहकर वह मेरी ओर झुक गई और मेरी आँखों में अपनी आँखें गड़ाकर बोली—"लो, चूम लो, अगर तुम यही चाहते हो। ईश्वर की कृपा से चुम्बन अपना निशान नहीं छोड़ता ; हाँ,

हृदय पर ज़रूर उसका निशान पड़ जाता है । पर मैं तुम्हें कह देती हूँ कि यदि तुमने मुझे चूमा तो यह निश्चय है कि मेरे प्रेम में अपना कलेजा जला-जलाकर मर जाओगे !" वह मेरी तरफ और झुक गई, यहाँ तक कि उसके कोमल बाल मेरे माथे पर लहराने लगे और उसकी सुगन्धित साँस मेरे मुँह पर लगने लगी। मैं दुर्बल और शिथिल हो गया । मैंने सीने से लगाने के लिए अपने हाथ फैला दिए। एकाएक वह सीधी हो गई और उसमें तीव्र परिवर्तन हुआ। अपना हाथ उसने मेरे सिर पर रख दिया। मैंने अनुभव किया कि उसके हाथ से कोई शक्ति, विद्युत् की भाँति, मेरे अन्दर प्रवेश कर रही है । इस शक्ति ने मुझे पुनः शान्त, स्वस्थ कर दिया। मेरा गर्म दिमाग़ ठण्डा हो गया और तुरन्त औचित्य तथा कौटुम्बिक शिष्टाचार के स्तर पर आ गया। मेरी बुद्धि ठिकाने लग गई।

किंचित् कठोरता के साथ उसने कहा—"बस-बस ! यह दिल्लगी बहुत हो चुकी। होली ! सुनो। तुम एक अच्छे और ईमानदार आदमी हो, इसलिए मैं तुम्हें छोड़ देती हूँ, क्षमा कर देती हूँ ! पर ओह। नारी के लिए क्षमा बड़ी कठिन बात है । मैं तुमसे कह चुकी हूँ कि मैं तुम्हारे लिए नहीं हूँ, इसलिए तुम्हारे विचार मेरे निकट से उसी प्रकार बह जाने चाहिएँ जैसे हवा बहकर निकल जाती है । अपनी कल्पनाओं की धूलि को पुनः गहराई में बैठ जाने दो। मेरी ओर से निराश हो जाओ। तुम मुझे नहीं जानते । यदि तुम मुझे दस घंटे पहले देखते, जब वासनाएँ मुझ पर सवार थीं, तो डरकर और काँपकर दूर हट जाते । मैं अनेक चित्तवृत्तियों की नारी हूँ, और उस कुण्ड के जल के समान अनेक वस्तुएं मुझमें प्रतिबिम्बित होती हैं। पर मेरे होली ! वे आती हैं और चली जाती हैं—वे चली जाती हैं होली ! और विस्मृत हो जाती हैं। जल पुनः जल रह जाता है, मैं फिर मैं रह जाती हूँ। जो जल को बनाता है, वही इसे भी बनाता है, और जो मुझे बनाता है वह मुझे बनाता है ; मेरे गुणों में कोई परिवर्तन नहीं होता। इसलिए जो कुछ मैं दिखाई देती हूँ उस पर ध्यान न दो, क्योंकि मैं क्या हूँ, इसे तुम नहीं जान सकते । अगर तुमने फिर मुझे तंग किया तो मैं नकाब डाल लूंगी और फिर कभी तुम मेरा मुँह न देख पाओगे।"

मैं उठा और उसके पास गद्देदार पलँग पर बैठ गया। यद्यपि मेरी उन्मत्त वासना शांत हो गई थी, पर मैं अब भी भावावेश से काँप रहा था, जैसे हवा का

झोंका वृक्ष की पत्तियों को हिलाकर चला जाता है पर उसके जाने के बाद भी पत्तियाँ हिलती रहती हैं। मुझे यह कहने का साहस न हुआ कि मैंने उसे नारकीय अग्नि में जलते और समाधि-भवन के अन्दर अग्नि का आवाहन करते देखा है।

वह कहने लगी—"आओ, यह फल खाओ। विश्वास करो, मनुष्य के खाने योग्य बस यही चीज़ है। अब मुझे उस यहूदी मसीहा के तत्त्वज्ञान के विषय में तो बताओ जो मेरे बाद आया और जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह रोम, यूनान और मिश्र पर तथा जंगलियों पर राज्य करता है। ज़रूर, उसने कोई विचित्र दर्शन सिखाया होगा। मेरे समय में तो लोग हमारे दर्शन की बातों को सुनने के लिए तैयार ही नहीं थे। वे रंगरेलियाँ करते, शराब पीते, ठंडे इस्पात से ख़ून कर देते और लड़ाई-भिड़ाई देखने में मज़ा लेते थे—यही उनका धर्माचार था।"

अब तक मैं बहुत कुछ स्वस्थ हो चुका था और जिस दुर्बलता में मैं गिर पड़ा था, उस पर मुझे लज्जा का बोध हो रहा था, इसलिए मैंने उसके सामने ईसाई धर्म के सिद्धान्तों को अच्छी तरह समझाकर रखा पर उसने स्वर्ग, नरक की बात को छोड़ और किसी बात की ओर बहुत कम ध्यान दिया। उसका ध्यान केवल इन बातों का उपदेश करने वाले व्यक्ति की ओर था! मैंने उसे यह भी बताया कि उसके देश अरब में भी मुहम्मद नाम के एक नबी हुए, जिन्होंने एक नया धर्म चलाया जिसका आज दुनिया में करोड़ों आदमी अनुगमन करते हैं।

वह बोली—"ओह! दो-दो नए धर्म! इसके पहले के बहुत से मतों को मैं जानती हूँ। मैं यह भी समझती हूँ कि शेर की गुफाओं से दूर और भी अनेक मत तब से चले होंगे। आकाश के पर्दों के पीछे क्या है। इसे जानने के लिए मानव जाति सदैव लालायित रही है और आज भी है। अपने अन्त के विषय में उसे जो भय है, स्वार्थ का सूक्ष्म रूप, उसी से धर्म की उत्पत्ति होती है। होली, सभी मत अपने अनुयायियों को भविष्य में अच्छी-अच्छी चीज़ों की आशा दिलाते हैं; बुराई सब उन लोगों के हिस्से में आती है जो उन्हें नहीं मानते। मत आते हैं, और चले जाते हैं, सभ्यताएँ आती हैं और चली जाती हैं, कुछ भी सनातन नहीं है, कुछ भी नहीं रह जाता। हाँ, यह विश्व और मानवी प्रकृति बच जाती है। आह! यदि मनुष्य इतना ही समझ ले कि आशा अन्दर से है,

बाहर से नहीं, और उसे अपनी मुक्ति का मार्ग स्वयं बनाना होगा। उसे अपने को अन्दर ही ढूँढना होगा—वह वहीं है और उसके अन्दर ही जीवन का श्वास है और बुरे-भले का ज्ञान है, उसी नींव पर उसे निर्माण करना है और सीधे खड़ा रहना है; किसी अज्ञात देव-मूर्त्ति—जो उसी की भाँति दीन है—के सामने अपने को डालना नहीं है।"

मैंने अपने मन में सोचा कि उसके तर्क बिल्कुल वैसे लगते हैं जैसे हम उन्नीसवीं सदी में, कोर से बाहर के देशों में, सुनते हैं। मैं इनसे सहमत नहीं हूँ, पर मैंने उससे इस मामले पर बहस करने की कोशिश नहीं की। मेरा मन उन भावनाओं के कारण, जिनसे मैं अभी-अभी गुज़र चुका था, बिल्कुल थक चुका था, फिर मैं यह भी जानता था कि इससे बहस करने में मेरी ही हार होगी। एक सामान्य भौतिकवादी से भी तर्क करने में आदमी थक जाता है, क्योंकि वह हमारे सामने आँकड़े पर आँकड़े रखता है और समस्त भूतत्व विद्या तुम्हारे सिर पर ला पटकता है, जब तुम निष्कर्षों और प्रेरणाओं तथा निष्ठा के हिम-खण्डों को ही उसके भोज्यार्थ प्रस्तुत कर सकते हो। जब सामान्य नास्तिक से बहस करने में यह होता है तब मैं उसके अलौकिक रूप से तेज़ किए गए दिमाग़ और दो हज़ार वर्ष के अनुभव तथा प्रकृति के रहस्यों की जानकारी के आगे क्या कर सकता था? मैं डरता था कि उसे अपने मत का बनाने की चेष्टा करूँगा तो ज्यादा सम्भावना स्वयं ही उसके मत का बन जाने की रहेगी। इसलिए इस विषय पर कुछ न कहकर मैं चुप बैठ रहा। किन्तु तब से प्रायः मुझे इस बात का पछतावा हुआ करता है कि मैं क्यों उस समय चुप रहा क्योंकि यदि मैं बहस करता तो मुझे मालूम हो जाता कि आयेशा वस्तुतः किस बात में विश्वास रखती है और उसका 'तत्त्वज्ञान' क्या है?

आगे भी वह कहती गई—"अच्छा, तो मेरे देश के लोगों को भी एक नबी मिल गया। मेरे ज़माने में कुछ और ही बात थी। उस समय हम अरब बहुत-से देवताओं की पूजा करते थे। 'अल्लात', 'सवा', 'अल उज्ज़ा', 'मनाह', 'वद्द', 'सवा', यागूत', 'यौक़' तथा 'नस्र' वगैरा बहुतेरे देवता पूजे जाते थे। कैसी मूर्खता थी! कैसी लज्जा की बात थी। फिर भी जब मैंने इनके विरुद्ध उपदेश किया तो लोग अपने अपमानित देवों के नाम पर मुझे मारने को तैयार हो गए। होली, सदा ऐसा ही होता आया है। पर तुम चुप हो; क्या मेरी बातों से थक

गए हो ? या तुम्हें भय है कि मैं अपने तत्त्वज्ञान की शिक्षा तुम्हें देने लगूंगी ? क्योंकि इतना तो तुम जानते ही हो कि मेरा अपना एक तत्त्वज्ञान है। बिना अपने तत्त्वज्ञान के कोई उपदेशक कैसे बन सकता है ? अगर तुम मुझे ज़्यादा परेशान करोगे तो मैं तुम्हें मेरा यह तत्त्वज्ञान सीखने के लिए मजबूर करूँगी और तुम मेरे शिष्य बन जाओगे और हम दोनों मिलकर एक ऐसे मत का प्रचार करेंगे जिसमें दूसरे सब मत समा जाएँगे। चंचल आदमी ! अभी आध घण्टा पहले मेरे पाँव पड़ रहा था और अब चुप बैठा है। यह ढंग तो अच्छा नहीं लगता, क्योंकि तुम्हारा कहना है कि तुम मुझे प्यार करते हो। तो अब हमें क्या करना चाहिए ? ओह, ख्याल आ गया ! मैं चलकर उस युवक को देखूंगी, जिसे बिल्लाली 'शेर' कहकर पुकारता है और जो तुम्हारे साथ आया है तथा बीमार पड़ा है। अब तक ज्वर की मियाद पूरी हो चुकी होगी और अब अगर वह मर भी रहा होगा तो मैं उसे बचा लूंगी। होली, डरो नहीं, मैं किसी जादू का उपयोग न करूँगी। मैंने तुम्हें कहा नहीं है कि जादू जैसी कोई चीज़ नहीं है ? हाँ, प्रकृति में प्रच्छन्न शक्तियों को अपने वश में करके उनसे काम लेने की विद्या जरूर है। अच्छा, अब जाओ। मैं भी जल्द ही दवा तैयार करके आती हूँ।"*

मैं वहाँ से चला आया और जब लियो के कमरे में पहुँचा तो 'जाब' और उस्तेन दोनों को अत्यन्त दुःखित पाया। उनका कहना था कि लियो अन्तिम साँसें ले रहा है और वे लोग मुझे बड़ी देर से खोज रहे थे। मैं दौड़कर लियो के पलंग के पास गया और उसकी ओर देखा। स्पष्ट था कि वह मर रहा है। वह बेहोश पड़ा था और उसकी साँस उलटी चल रही थी, उसके ओठ हिल रहे थे, और रह-रह कर सारा शरीर काँप उठता था। मुझे इतना समझने भर को ज्ञान था ही कि ज्यादा से ज्यादा एक घंटे के अन्दर वह पार्थिव सहायता की सीमा पार कर जायगा—हो सकता है कि पांच ही मिनट लगें। मैं अपनी

---

* आयेशा बहुत बड़ी रसायनशास्त्रिणी थी। सच पूछें तो रसायन-शास्त्र ही उसका एकमात्र विनोद और पेशा था। उसने एक गुफा को प्रयोगशाला के रूप में सजा रखा था और यद्यपि उसके साधन अविकसित-से थे, किन्तु उनके द्वारा उसने जो सफलताएँ प्राप्त कीं, वे अद्भुत और आश्चर्यजनक थीं।

स्वार्थपरता पर पश्चात्ताप करने लगा। हाय ! जब मेरा बेटा मर रहा था, मैं आयेशा के समीप बैठा चुहलबाज़ियाँ कर रहा था ! अफसोस ! किस प्रकार हममें बड़े से बड़े लोग स्त्री के नयन-बाणों में बिधकर निम्न स्तर पर आ गिरते हैं ! कैसा अधम हूँ मैं ! सचमुच पिछले आध घंटे में मुझे लियो का कोई ध्यान ही न रह गया था—उस लियो का जो बीस साल तक मेरा सबसे प्यारा साथी और मेरे जीवन में एकमात्र दिलचस्पी का विषय रहा था। और अब शायद बहुत देर हो चुकी थी।

.मैं दुःख से हाथ मलता और चारों ओर देखता था। उस्तेन लियो के पास उदास बैठी थी, उसकी आँखों में निराशा की छाया थी। जाब एक कोने में खड़ा फूट-फूटकर रो रहा था। जब उसने मुझे अपनी ओर घूरते देखा तो रोकर जी हलका करने के लिए बाहर चला गया। अब एक आयेशा का ही भरोसा रह गया था। वह, सिर्फ वही, उसे बचा सकती है, यदि वह झूठी और बनी हुई नहीं है तो, पर विश्वास नहीं होता कि वह बनी हुई है। मैं जाकर उसे बुला लाता हूँ; ज्योंही मैं जाने को तैयार हुआ, जाब दौड़ता हुआ कमरे में आया ; उसके सिर के बाल, डर के मारे, खड़े हो गए थे।

"हे ईश्वर ! हमें बचाना !" अत्यन्त भयग्रस्त वाणी में उसने कहा—"एक मुर्दा रास्ते में चला आ रहा है !"

मुझे एक क्षण के लिए उलझन हुई। पर तुरन्त मुझे ख्याल आया कि हो न हो इसने कफनी ओढ़े आयेशा को देखा है और उसकी असाधारण चाल से यह समझ गया है कि कोई सफेद भूत उसकी ओर चला आ रहा है। तुरन्त ही इसका निर्णय भी हो गया, क्योंकि आयेशा ने गुफा में प्रवेश किया। जाब ने जो घूमकर उसे देखा तो 'वह आया' कहकर एक कोने में जा छिपा और दीवार की ओर मुँह कर लिया और उस्तेन, आयेशा को पहचानकर, पेट के बल जमीन पर लेट गई।

मैंने कहा—"आयेशा, आप अच्छे वक्त पर आईं। मेरा बेटा मर रहा है।"

उसने कोमल वाणी में कहा—"ऐसा ! अगर वह मर नहीं चुका है तो कोई बात नहीं, क्योंकि तब मैं उसे अच्छा कर सकती हूँ। क्या वह आदमी तुम्हारा नौकर है ? क्या तुम्हारे देश में नौकर इसी प्रकार अजनबियों का सत्कार करते हैं ?"

मैंने कहा—"यह बात नहीं। वह आपके मुर्दे जैसे पहिनावे से डर गया है।"

इस पर वह हँस पड़ी।

"और वह लड़की ? हाँ, मैं समझ गई। यह वही है जिसका ज़िक्र तुमने मुझसे किया था। अच्छा, अब इन दोनों से कहो कि बाहर चले जायँ और तब मैं तुम्हारे शेर को देखूँगी। मैं नहीं चाहती कि ये निम्न कोटि के लोग मेरी विद्या को देखें।"

इस पर मैंने उस्तेन से अरबी में और जाब से अंग्रेजी में बाहर चले जाने के लिए कहा। जाब तो तुरन्त प्रसन्नतापूर्वक चला गया क्योंकि यहाँ वह किसी तरह अपने भय को दूर नहीं कर पा रहा था। पर उस्तेन न गई।

एक ओर भयानक रानी का भय और दूसरी ओर लियो के निकट रहने की इच्छा के बीच पिसती हुई उसने मेरे कान में कहा—"वह क्या चाहती है ? यह तो पत्नी का अधिकार है कि जब उसका पति मर रहा हो तब उसके पास रहे। मैं यहाँ से न जाऊँगी।"

आयेशा ने गुफा के दूसरे कोने से, जहाँ खड़ी वह दीवार पर खुदे किसी चित्र की ओर देख रही थी, पूछा—"होली ! यह औरत बाहर क्यों नहीं जा रही है ?"

मुझे कुछ न सूझा कि इसका क्या जबाव दूँ। मैंने इतना ही कहा कि "वह लियो को छोड़कर जाने को राजी नहीं है।" आयेशा झपट कर वहां पहुँच गई और उस्तेन की ओर देखती हुई एक शब्द बोली—केवल एक शब्द, पर उतना ही काफी था; क्योंकि जिस लहजे में उसने कहा उसमें बहुत कुछ समाया हुआ था।

"जाओ !"

और उस्तेन घुटने के बल रेंगती हुई चली गई।

आयेशा ने हँसते हुए कहा—"देखा होली ! यह ज़रूरी है कि मैं इन आदमियों को आज्ञा पालन की शिक्षा देती रहूँ। वह लड़की मेरा हुक्म नहीं मान रही थी। शायद उसने आज दोपहर का वह दृश्य नहीं देखा कि मैं अवज्ञा करने वालों के साथ कैसा बर्ताव करती हूँ। खैर; अब वह चली गई है; आओ, मैं इस युवक को देखूँ।" यह कहकर वह उस पलंग के पास गई जिस पर लियो दीवार की ओर मुँह किये पड़ा हुआ था।

उसके चेहरे की ओर झुकते हुए उसने कहा—"इसकी छवि तो बहुत अच्छी है।"

क्षण भर में ही उसकी लम्बी नरकट-सी काया इस प्रकार लड़खड़ाती हुई पीछे हटी जैसे किसी ने उसे गोली या कटारी मार दी हो—पीछे हटी, यहाँ तक कि चट्टानी दीवार से उसकी पीठ टकरा गई और तब उसके ओठों से एक ऐसी भयानक तथा अपार्थिव चीख निकली जैसी मैंने कभी न सुनी थी।

मैं चिल्लाया—"आयेशा! क्या है? क्या वह मर गया?"

इस पर वह फिरी और बाघिन की भाँति मेरी ओर झपटी।

सर्पिणी के समान फुफकारते हुए वह भयानक स्वर में बोली—"ओ कुत्ते! तूने यह बात मुझसे क्यों छिपाई?" यह कहकर उसने अपना हाथ मेरी ओर इस तरह फैलाया कि मैंने समझ लिया कि वह मुझे मार डालने को ही है।

जीवन्त भय से मैंने कहा—"क्या? क्या?"

उसने कहा—"आह! होली! शायद तू नहीं जानता था, पर अब जान, होली, अब जान। वह देख, मेरा खोया हुआ कालिक्रेटीज़ पड़ा है! कालिक्रेटीज़ जो आख़िरकार मेरे पास लौट आया है। मैं जानती थी कि वह आएगा, वह ज़रूर आएगा!" वह रोने और हँसने लगी और किसी भी नारी की भाँति, जो भावावेश से अभिभूत हो गई हो; बुदबुदाई:

"कालिक्रेटीज़! कालिक्रेटीज़!"

मैंने अपने मन में इसे पागलपन समझा पर वैसा कहने का साहस मुझे नहीं हुआ। फिर इस समय मुझे केवल लियो की जीवन-रक्षा का ही ख्याल था, उस भयानक चिन्ता में और सब बातें भूल गई थीं। अब मैं डरा कि जब तक आयेशा का यह प्रबल भावावेश दूर होगा तब तक लियो कहीं मर न जाय।

इसलिए मैंने बड़ी नम्रता से कहा—"आयेशा, अगर आपने उसकी सहायता के लिए कुछ न किया तो आपका कालिक्रेटीज़ शीघ्र ही हाथों से जाता रहेगा। वह मरा ही चाहता है।"

यह चौंककर बोली—"ठीक है। हाय! मैं पहले क्यों न आई? अब तो मेरे हाथ-पाँव ढीले पड़ गए हैं। मेरा हाथ काँपता है—मेरा भी!—फिर भी यह बड़ा आसान है। होली! यह शीशी पकड़ो", और उसने अपने कपड़ों के अन्दर से मिट्टी की एक छोटी शीशी निकाली, "और दवा उसके गले में उँडेल

दो। अगर वह अभी मरा नहीं है तो इस दवा से बच जायगा। जल्दी करो! जल्दी! वह मरा ही चाहता है।"

मैंने लियो की ओर देखा। बात बिल्कुल ठीक थी। वह मौत से लड़ रहा था। उसका प्यारा मुंह राख की तरह हो गया था और साँस गले में घरघरा रही थी। शीशी पर लकड़ी की छोटी डाट लगी थी। मैंने अपने दाँतों से उसे खींचा और एक बूंद दवा मेरी जीभ पर आ गिरी। उसका स्वाद मीठा था। एक क्षण के लिए मेरा सिर घूम गया और मेरी आँखों के आगे धुँधलका छा गया। पर सौभाग्यवश यह स्थिति क्षण भर ही रही और जितनी जल्दी पैदा हुई थी, उतनी ही जल्दी दूर भी हो गई।

जब मैं लियो के पास गया, वह दम तोड़ रहा था; उसका स्वर्णिम मस्तक धीरे-धीरे ऐंठ रहा था और मुंह थोड़ा-थोड़ा खुला था। मैंने आयेशा को बुलाया और सिर पकड़ने को कहा। उसने वैसा ही किया, यद्यपि वह ऊपर से नीचे तक काँप रही थी। तब मैंने जबड़ों को थोड़ा और खोलकर दवा गले में डाल दी। तुरन्त उससे कुछ भाप निकली, जैसे नाइट्रिक एसिड में व्याघात होने से होता है। इस दृश्य से मेरी आशा, जो पहले ही से क्षीण थी, कुछ उभरी नहीं, न मुझे दवा में ही कुछ विश्वास हुआ।

पर एक बात तो ज़रूर हुई; मृत्यु-कम्प बन्द हो गया। पहले तो मैंने समझा कि वह समाप्त हो गया और भयानक नदी के पार हो गया जिससे मरने पर जाना ही होता है। उसके चेहरे पर बिल्कुल मुर्दनी छा गई और हृदय की धड़कन, जो पहले ही बहुत क्षीण थी, एकदम बन्द हो गई। सिर्फ पलकें थोड़ी-थोड़ी हिलती थीं। अपने सन्देह में मैंने आयेशा की ओर देखा जिसके सिर का कपड़ा उत्तेजना में, खुल गया था। वह अब भी लियो का सिर पकड़े हुए थी, लियो के समान ही उसका चेहरा भी पीला पड़ गया था और उस पर गहरी व्यथा एवं चिन्ता की ऐसी छाप थी जैसी पहले कभी मैंने न देखी थी। स्पष्ट था कि उसे खुद निश्चय नहीं है कि वह मरेगा या जी जायगा। धीरे-धीरे पाँच मिनट बीत गए और मैंने देखा कि उसकी आशा टूट रही है। उसका खूबसूरत गोल मुख मुरझा गया और गहरी मानसिक वेदना के मारे छोटा और पतला दिखने लगा। उसकी आंख के गड्ढों के नीचे व्यथा की पेंसिल ने काली रेखाएँ खींच दीं। ओठों का प्रवाल झड़ गया, वे लियो के मुख के समान सफेद पड़ गए

और करुण रूप से काँपने लगे। उसे देखकर कष्ट होता था ; अपने दुःख में भी मुझे उसके प्रति समवेदना उत्पन्न हुई।

मैंने पूछा—"क्या बहुत देर हो गई ?"

उसने अपने हाथों में अपना मुँह छिपा लिया, और कोई उत्तर नहीं दिया। मैंने भी अपना मुह फिरा लिया। किन्तु जैसे ही मैंने अपना मुँह फेरा, मुझे एक गहरी साँस सुनाई पड़ी और उधर दृष्टि स्थिर करके मैंने देखा कि लियो के चेहरे पर एक रंगत आती दिखाई दी। धीरे-धीरे वह सुर्खी गाढ़ी होती गई और आश्चर्य पर आश्चर्य हुआ कि जिस आदमी को हमने मरा समझ लिया था वह एक करवट हो गया।

मैंने धीरे से कहा—"आप देख रही हैं !"

उसने भारी आवाज में कहा—"हाँ, देखती हूँ। वह बच गया। मैं तो समझी थी कि हमें देर हो गई—एक क्षण, एक लघु क्षण और बीत जाता तो वह जा चुका था !" और वह फूटकर रो पड़ी और इस प्रकार सिसकने लगी जैसे उसका कलेजा फट जायगा। पर इस समय अपने रुदन में भी वह बड़ी सुन्दर लग रही थी। कुछ देर बाद वह चुप हो गई।

उसने कहा—"मुझे क्षमा करो, मेरे होली ! मेरी दुर्बलता के लिए मुझे क्षमा करो। तुम देख ही रहे हो कि आखिर मैं एक स्त्री ही हूँ। आज सुबह ही तुमने उस स्थान का वर्णन किया था जहाँ तुम्हारे इस नवीन मत के अनुसार मनुष्य साँसत भोगता है। तुमने उसे 'नरक' बताया था—एक स्थान जहाँ जीव की अपनी व्यक्तिगत स्मृतियाँ बनी रहती हैं और जहाँ निर्णय की भूलें और गलतियाँ, अतृप्त वासनाएँ, मन के अन्तराल में पड़े अज्ञात भय सामने आकर उपहास करते और अपनी निराशापूर्ण पीड़ा से हृदय को चूर-चूर कर देते हैं। इसी स्थिति में रहकर मैंने दो हज़ार—पूरे दो हज़ार वर्ष बिताए हैं—छयासठ पीढ़ियाँ बीत गई हैं, हाँ उसी स्थिति में जिसे तुम नरक कहते हो। एक अपराध की स्मृति मुझे बराबर रात-दिन छेदती रही है, और मैं अतृप्त कामना की आग में जलती रही हूँ—बिना किसी साथी के, बिना किसी सुख के, बिना मृत्यु के, केवल आशा की धुंधली ज्योति के सहारे, जो कभी यहाँ, कभी वहाँ टिमटिमाती, कभी बुझने-बुझने को होती, कभी ज़रा तेज हो जाती ; पर मेरा

ज्ञान मुझ से कहता रहा कि एक न एक दिन तेरा मुक्तिदाता तुझे मिल जायगा।

"और होली ! ज़रा सोचो, ऐसी कहानी क्या तुम फिर कभी सुन पाओगे, ऐसा दृश्य क्या फिर कभी देख पाओगे ? नहीं, अगर मैं तुम्हें दस हज़ार वर्षों का जीवन दे दूँ तो भी नहीं; तुम चाहो तो मैं ऐसा कर सकती हूँ। पर सोचो, आखिर मेरा उद्धारकर्ता आया—वही जिसके लिए पीढ़ियों से मैं प्रतीक्षा करती रही हूँ। वह नियुक्त समय पर मेरी खोज में आया; मैं जानती थी कि वह ज़रूर आयेगा क्योंकि मेरा ज्ञान झूठा नहीं हो सकता। हाँ, मुझे यह नहीं ज्ञात था कि वह कब और कैसे आयेगा ! फिर भी देखो, मैं कितनी अज्ञान थी ! देखो, मेरा ज्ञान कितना क्षुद्र था, और मेरी शक्ति कितनी तुच्छ थी ! यहाँ वह घण्टों मृत्यु की गोद में पड़ा रहा और मुझे मालूम तक न हुआ—मुझे जिसने दो हज़ार वर्ष तक उसकी प्रतीक्षा की, और वह आया किन्तु मुझे मालूम भी न हुआ ! आख़िर मैं उसे देख पाई। देखो, बाल-बराबर देर होती तो मैं उसे खो चुकी थी, क्योंकि मृत्यु के जबड़ों से मेरी शक्ति भी उसे नहीं निकाल सकती थी। और अगर वह मर जाता तो फिर मुझे नरक की यातनाएँ भोगनी पड़तीं, फिर मुझे थकावटभरी शताब्दियों के बीच से गुज़रना पड़ता और प्रतीक्षा एवं प्रतीक्षा, तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ती जब तक कि अवधि की पूर्ति पर मेरा प्यारा पुनः मेरे पास न आ जाता। और देखो, तुम उसे दवा पिलाते हो, पाँच मिनट बीतते हैं, और मैं नहीं जानती कि वह मरेगा या जिएगा। मैं तुमसे कहती हूँ कि उन छयासठ पीढ़ियों में उतना कष्ट मुझे नहीं हुआ जितना उन पाँच मिनटों में हुआ। वे पाँच मिनट भी बीते, तब भी जीवन का कोई चिह्न नहीं। मैंने समझ लिया कि अगर दवा ने इतनी देर में असर नहीं किया तो अब कोई असर न होगा। तब मैंने सोचा कि वह फिर एक बार मृत्यु की गोद में चला गया और इतने लम्बे युगों के समस्त उत्पीड़न एक विष से बुझे बरछे के रूप में घनीभूत हो गए और मुझे छेदने और छेदने लगे, क्योंकि एक बार फिर मैंने कालिक्रेटीज़ को खो दिया था। और जब यह सब हो चुका, तब देखो ! उसने साँस ली ! देखो, वह जी गया, और अब मुझे विश्वास है कि वह जी उठेगा क्योंकि जिसे यह दवा लग जाती है वह मर नहीं सकता। सोचो होली ! सोचो, कैसी अद्भुत दवा है यह। अब वह बारह घण्टों

तक सोता रहेगा, तब बीमारी उसे छोड़कर चली जायगी, उसके जीवन को और मुझे छोड़ जायगी।"

वह चुप हो गई और लियो के स्वर्णिम मस्तक को अपने हाथ से सहलाने लगी। फिर अत्यन्त पवित्र कोमलता के भाव से उसने झुककर लियो का माथा चूम लिया। यह दृश्य कैसा सुन्दर था—यदि उसने मेरा कलेजा न चीर दिया होता, क्योंकि मैं ईर्ष्यालु हो उठा था।

अध्याय १८

"ऐ स्त्री ! चली जा !"

इसके बाद, एकाध मिनट शान्ति रही और इस अवधि में उसके मुख की दिव्य कान्ति—कभी-कभी वह दिव्य मालूम पड़ती थी—देखने से विदित होता था, मानो वह आनन्द-विह्वल हो रही है। पर अकस्मात् उसके दिमाग़ में कोई नया ख्याल आया और उसका यह दिव्य रूप एकदम प्रतिकूल हो गया।

उसने कहा—"अरे ! मैं तो उस औरत, उस्तेन को भूल ही गई। वह कालिक्रेटीज़ की क्या है—उसकी नौकरानी, या···" इतना कहकर वह ठहर गई, उसकी आवाज़ भर्रा गई।

मैंने अपने कन्धे हिलाये, और बोला—"मैं समझता हूँ कि अमाहग्ग़र प्रथा के अनुसार लियो के साथ उसका विवाह हो चुका है। पर मैं ठीक नहीं कह सकता।"

उसका चेहरा वज्रमेघ के समान काला पड़ गया। इतनी आयु की होते हुए भी वह ईर्ष्या से ऊपर नहीं उठ सकी थी।

उसने कहा—"तब तो उसका अन्त आ गया। उसे मरना ही होगा। अभी मरना होगा !"

मैंने भयग्रस्त होकर पूछा—"किस अपराध के लिए ? हे आयेशा ! वह किसी भी ऐसे अपराध की अपराधिनी नहीं है जिसकी कि तुम न हो। वह

लियो को प्यार करती है और उसने भी उसके प्रेम को स्वीकार किया है। तब उसका पाप क्या है ?"

उसने प्रायः चिड़चिड़ाकर कहा—"होली ! तुम सचमुच मूर्ख हो। उसका पाप क्या है ? उसका पाप यही है कि वह मेरे और मेरी कामना के बीच आकर खड़ी हो गई है। मैं भली-भाँति जानती हूँ कि मैं लियो को उससे छीन ले सकती हूँ—अरे होली ! क्या इस धरती पर कोई ऐसा आदमी है जो मेरे अपनी शक्ति का प्रयोग करने पर मेरा निवारण कर सके ? पुरुष तभी तक वफ़ादार रहता है जब तक प्रलोभन उसके पास से निकल जाते हैं। यदि प्रलोभन प्रबल हुआ तो पुरुष झुक जाएगा, क्योंकि प्रत्येक पुरुष, हर रस्सी के समान, एक विशेष दबाव पर टूटता है। वासना पुरुष के लिए वैसी ही है जैसी शक्ति और स्वर्ण स्त्री के लिए है। ये दोनों की दुर्बलता के भार—बोझ—हैं। मैं सच कहती हूँ कि जिस स्वर्ग की तुम बात करते हो वह मानवी स्त्रियों को अखरेगा अगर वहाँ उनसे अधिक रूपसी अप्सराएँ हुईं, क्योंकि उनके स्वामी तब उनकी ओर नज़र उठाकर भी न देखेंगे और उनका स्वर्ग ही उनका नरक बन जाएगा। पुरुष स्त्री के सौन्दर्य से, यदि वह प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हुआ तो, खरीदा जा सकता है; और स्त्री का सौन्दर्य स्वर्ण से, यदि वह प्रचुर मात्रा में हो तो, खरीदा जा सकता है। मेरे ज़माने में ऐसा ही था, और काल के अन्त तक ऐसा ही रहेगा। मेरे प्रिय होली ! यह दुनिया एक बड़ा बाज़ार है जहाँ हमारी कामनाओं के सिक्के में अधिकतम दाम लगाने वाला कोई भी चीज खरीद सकता है।"

आयेशा की आयु और अनुभव की स्त्री से ऐसे व्यंग्य-वचनों के सिवा और क्या आशा की जा सकती थी ? पर उन्हें सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ और मैंने भी खीझकर कहा कि हमारे स्वर्ग में न विवाह होता है, न कोई लड़की विवाह में दी जाती है।

उसने कहा—"तब क्या तुम्हारा यह मतलब है कि ऐसा होने पर वह स्वर्ग न रहेगा ? छिः तुम पर, होली, जो हम बेचारी अबलाओं की ओर तुम्हारा ऐसा विचार है ! तब क्या तुम्हारे स्वर्ग और नरक के बीच बस यह विवाह ही सीमा रेखा है ? पर बहुत हो चुका; अब बहस और बुद्धि को चुनौती देने के लिए समय नहीं है। तुम हमेशा विरोध क्यों करते हो ? क्या तुम भी पिछले

युग के तत्त्वज्ञानियों के समान हो ? जहाँ तक इस औरत की बात है, उसे मरना ही होगा क्योंकि यद्यपि मैं उसके प्रेमी को उससे छीन ले सकती हूँ, फिर भी जब तक वह जीती रहेगी वह उसके विषय में प्रेम और मृदुतापूर्वक सोचता रहेगा, और यह मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती। कोई दूसरी स्त्री मेरे स्वामी के विचारों में नहीं आयेगी, मेरे राज्य पर केवल मेरा अधिकार रहेगा। अपने समय में उसने सुख भोगा; उसी पर उसे सन्तोष करना चाहिए; क्योंकि एकान्त के शत वर्ष से प्रेम का एक घण्टा कहीं अच्छा है—अब यह रात उसे निगल जाएगी।"

मैंने चिल्लाकर कहा—"नहीं, नहीं; यह बड़ा अपराध होगा और अपराध से बुराई के सिवा और कुछ हाथ नहीं आता। खुद अपने लिए ऐसा न करना।"

"ऐ मूर्ख आदमी ! तब क्या अपने और अपने लक्ष्य के बीच खड़ी चीज़ को हटाना अपराध है ? तब तो हमारा सम्पूर्ण जीवन ही एक लम्बा अपराध है क्योंकि प्रतिदिन हम विनाश करते हैं इसलिए कि हम जियें। इस दुनिया में जो सबसे शक्तिमान है वही जी सकता है। जो दुर्बल हैं, उन्हें नष्ट होना ही पड़ेगा। धरती और उसके फल शक्तिमानों के लिए हैं।[1] जो असफल होकर गिर जाते हैं उनके मृत शरीरों को कुचलते हुए हम पद और शक्ति के लिए दौड़ते हैं; मरते, भूखे बच्चों के मुख से छीनकर हम खाना खाते हैं। संसार का यही नियम है। तुम कहते हो अपराध से बुराई पैदा होती है, पर असल में तुम्हें अनुभव नहीं है, क्योंकि अपराधों से बहुत-सी भलाइयाँ और भलाइयों से बहुतेरी बुराइयाँ भी होती देखी जाती हैं।[2] अत्याचारी का निर्मम क्रोध बाद में आने वाले सहस्रों के लिए आशीर्वाद-रूप हो सकता है और एक पवित्र मनुष्य, एक महात्मा की प्रेमलता एक राष्ट्र को पराधीन बना सकती है। मनुष्य अपने हृदय की बुराई, भलाई के अनुसार यह वह काम करता है; पर वह नहीं जानता कि उसका परिणाम क्या होगा; जब वह हाथ चलाता है तब अन्धा होता है और नहीं जानता कि चोट कहाँ लगेगी। वह उन सूक्ष्म तन्तुओं के प्रति भी अज्ञान है

१. वीरभोग्या वसुन्धरा

२. ......"धरम तें अधरम अधरम धरम करै।"—सूरदास

जो परिस्थिति को बुनते हैं। भलाई-बुराई, प्रेम और घृणा, दिन और रात, मधुर और कटु, पुरुष और स्त्री, ऊपर का स्वर्ग और नीचे की धरती, सब एक दूसरे के लिए आवश्यक हैं। फिर इनमें से हर एक के अन्त को कौन जानता है। मैं तुम से कहती हूँ कि नियति का हाथ इन सब को बटकर अपने प्रयोजन का बोझ उठाने योग्य इन्हें बनाता है, और उस महत् रज्जु में समस्त आवश्यक वस्तुएँ एकत्र हो जाती हैं। इसलिए हमें यह कहना शोभा नहीं देता कि यह चीज़ बुरी है, वह अच्छी है, अथवा अन्धकार घृणित है और प्रकाश सुन्दर है; हमारे अतिरिक्त दूसरी आँखों में बुराई ही भलाई हो सकती है और अन्धकार दिन की अपेक्षा अधिक सुन्दर हो सकता है—या फिर सभी समान रूप से अच्छे हो सकते हैं। सुन रहे हो होली ?"

मैंने अनुभव किया कि इस प्रकार के प्रलाप के विरुद्ध कुछ भी तर्क करना निरर्थक है, क्योंकि ऐसी बातों को उनकी तार्किक परिणति तक ले जाया जाए तो वह सम्पूर्ण नैतिकता, जिस रूप में हम उसे ग्रहण करते हैं, का विनाश कर देगा। पर आयेशा की बात से हमें पुनः भयपूर्ण कँपकँपी आ गई, क्योंकि जो व्यक्ति मानवी कानूनों के बन्धन से रहित है और जो सदसदविवेक से बिल्कुल मुक्त है वह कुछ भी कर सकता है। हमारी बुराई, भलाई की नैतिक भावना चाहे कितनी ही पक्षपातपूर्ण और पारम्परिक हो फिर भी, हमारे अन्तःकरण के कथनानुसार, वह व्यक्तिगत उत्तरदायित्व की उस दीवार पर आधारित है जो मनुष्य जाति को पशुओं से अलग करती है।

इतने पर भी उस्तेन को उसकी शक्तिमती प्रतिद्वन्द्विनी के हाथ मारे जाने से बचाने के लिए मैं बहुत उत्कण्ठित था क्योंकि मैं उसे स्नेह और सम्मान की दृष्टि से देखता था। इसलिए मैंने एक बार पुनः अनुरोध किया।

मैंने कहा—"आयेशा! आप बहुत गूढ़ हैं और मैं आपकी बुद्धि को पा नहीं सकता। पर आपने स्वयं ही मुझ से कहा है कि हर मनुष्य को स्वयं ही अपना कानून बनना चाहिए और अपने हृदय की शिक्षा का ही अनुसरण करना चाहिए ? क्या आपके हृदय में उसके लिए कोई दया नहीं है जिसका स्थान आप ग्रहण करेंगी ? कृपया सोच लीजिए, जैसा आप कहती हैं—यद्यपि मेरे लिए यह अविश्वसनीय है—आपका प्रियतम युगों बाद लौटा है और आपने उसे मौत के मुँह से निकाल लिया है। क्या आप उसके आगमन का समारोह

एक ऐसी स्त्री को मारकर मनायेंगी जो उसको प्यार करती है, और जिसे संयोगवश वह भी प्यार करता है। एक ऐसी स्त्री को मारकर जिसने आपके लिए उसकी जान उस समय बचाई जब आपके दास उसे बरछे भोंककर मार रहे थे ? आपने यह भी कहा था कि भूतकाल में आपने इस युवक के साथ बुरा व्यवहार किया था, उसे अपने हाथ से मार डाला था क्योंकि वह मिश्री अमीनार्त्ता को प्यार करता था।"

"ऐ अजनबी ! तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ ? तुमने यह नाम कैसे जाना ? मैंने तो तुम्हें नहीं बताया"—उसने मेरा हाथ पकड़ते हुए जोर से पूछा।

मैं बोला—"शायद मैंने सपने में यह बात देखी। 'कोर' की इन गुफाओं में विचित्र सपने दिखाई पड़ते हैं। जान पड़ता है कि इस सपने में सचाई की छाया है। पागलपन भरे उस अपराध से आपको क्या मिला ? दो हजार वर्षों की प्रतीक्षा ! यही न ? और अब आप पुनः उसी इतिहास को दोहराएंगी ? आप जो चाहे कहें, मैं आपसे कहता हूँ कि इसका परिणाम बुरा ही होगा। कर्ता को भले से भला ही मिलता है, जब बुराई से बुराई ही पैदा होती है—फिर चाहे बाद में बुराई से भलाई ही पैदा हो जाय। अपराध और पाप तो होते ही रहेंगे, पर जो अपराध और पाप करता है उसका बुरा ही होता है। उस मसीहा ने, जिसके बारे में मैंने आपको बतलाया था, भी यही कहा था और ठीक ही कहा था। मैं कहता हूँ कि यदि आप इस निर्दोष स्त्री को मार डालेंगी तो आप पर बड़ा अभिशाप पड़ेगा और अपने प्रेम के प्राचीन वृक्ष का कोई फल आप न पा सकेंगी। अब, आप क्या सोचती हैं ? यह आदमी जब आपको उस स्त्री का खून करते देखेगा, जिसने उसकी सेवा की और जान बचाई, तो उसे आपके बारे में कैसा लगेगा ? क्या वह आपको ग्रहण करेगा ?"

उसने उत्तर दिया—"मैं इसका उत्तर पहले ही दे चुकी हूँ। होली ! यदि मैं तुम्हें और उसे दोनों को मार डालूँ तब भी वह मुझे प्यार करेगा। क्योंकि जैसे अगर मैं तुम्हें मारना चाहूँ तो तुम मेरे हाथ से नहीं बच सकते, वैसे ही वह मुझे प्यार किये बिना नहीं रह सकता। फिर भी तुम जो कुछ कह रहे हो, उसमें सत्य हो सकता है, क्योंकि वह मेरे मन से भी टकराता है। अगर ऐसा ही है तो मैं इस स्त्री को छोड़ दूँगी। मैंने तुम्हें बताया नहीं है कि मैं निर्दयता के लिए निर्दयता नहीं करती ? मैं किसी को कष्ट में देखना या कष्ट पहुँचाना

पसन्द नहीं करती। उसे मेरे सामने आने दो—जल्दी लाओ, कहीं मेरा मन फिर न जाय"—और उसने अपने चेहरे पर नक़ाब डाल लिया।

मुझे प्रसन्नता हुई कि चलो, कुछ तो हुआ ; इसलिए मैंने बाहर जाकर उस्तेन को पुकारा। वह उठकर दौड़ी हुई मेरे पास आई।

"क्या मेरे स्वामी मर गए ? हाय, ऐसा न कहिएगा !" उसने चीखकर अपना उच्च भावनापूर्ण मुख मेरी ओर उठाते हुए कहा। उसका सारा मुँह आँसुओं से तर था और उस पर विनय और करुणा की छाया थी। यह देखकर मेरा हृदय द्रवित हो गया।

मैंने उत्तर दिया—"नहीं, वह जीता है। अवश्य-माननीया ने उसे बचा लिया। आओ।"

उसने गहरी साँस ली और प्रवेश किया और घुटनों और हाथ के बल ज़मीन पर पड़ गई।

अत्यन्त ठण्डी, सूखी आवाज़ में आयेशा ने कहा—"उठो ! और यहाँ आओ।"

उस्तेन ने आज्ञा का पालन किया और उसके सामने सिर झुकाकर खड़ी हो गई।

इसके बाद कुछ देर सन्नाटा रहा जिसे आयेशा ने तोड़ा।

उसने सोये हुए लियो की ओर संकेत करके कहा—"यह आदमी कौन है ?"

उसने धीरे से उत्तर दिया—"वह मेरा पति है।"

"किसने उसे तुम्हारा पति बनाया ?"

"अवश्य-माननीया ! मैंने अपने देश की प्रथा के अनुसार उसे वरण किया।"

"इस आदमी का, जो अजनबी है, वरण कर तूने बुरा किया। वह तुम्हारी जाति का नहीं है इसलिए तुम्हारी प्रथा उस पर लागू नहीं होती। अच्छा, सुन संयोग से, अज्ञानवश तूने ऐसा काम कर डाला, इसलिए ऐ नारी, मैं तुझे छोड़ देती हूँ, अन्यथा तुझे मार डालती। अच्छा, फिर से सुन ले। अब तू अपने स्थान पर चली जा और फिर इस आदमी से बोलने या अपनी आँखों से इसे देखने का साहस न करना। वह तेरे लिए नहीं है। तीसरी बार सुन ले। अगर

तू मेरी इस आज्ञा का उल्लंघन करेगी तो उसी क्षण मर जायगी। जा !"

पर उस्तेन नहीं हिली।

"ऐ औरत चली जा !"

उस्तेन ने मुंह ऊपर उठाया। मैंने देखा कि वह भावावेश से चूर-चूर हो रहा है।

उसने भर्राई हुई आवाज़ में कहा—"नहीं हिया ! मैं नहीं जाऊँगी। वह आदमी मेरा पति है और मैं उसे प्यार करती हूँ—मैं उसे प्यार करती हूँ और मैं उसे छोड़कर न जाऊँगी। तुम्हें क्या अधिकार है कि इस तरह मुझे अपने पति को छोड़कर चली जाने को कहती हो ?"

मैंने देखा कि आयेशा ऊपर से नीचे तक क्रोध से काँप उठी और यह सोचकर मैं डर गया कि पता नहीं, क्या होने वाला है।

मैंने लैटिन में कहा—"दया कीजिए। प्रकृति उससे यह करा रही है।"

उसने लैटिन में ही रुखाई से उत्तर दिया—"मैं दया ही कर रही हूँ। अगर मैं दया न करती तो अब तक यह खतम हो चुकी होती।" फिर उस्तेन को सम्बोधन करके बोली—"ऐ औरत ! मैं तुझी से कह रही हूँ कि जहाँ तू खड़ी है, वहीं मैं तुझे ढेर कर दूँ इसके पहले यहाँ से चली जा।"

उसने अत्यन्त वेदना भरे स्वर में कहा—"मैं नहीं जाऊँगी ! यह मेरा है—मेरा ! मैंने उसे ग्रहण किया, मैंने उसकी जान बचाई ! अगर तुम में शक्ति है तो तुम मुझे मार डालो ! मैं तुम्हें अपना पति नहीं दूँगी—कभी नहीं,—हर्गिज़ नहीं !"

इस पर आयेशा ने बड़ी फुर्ती के साथ न जाने क्या किया कि मैं ठीक तरह से देख नहीं सका। पर मुझे आभास-सा हुआ, मानो उसने अपने हाथ से उस दीन लड़की के सिर पर हलकी ठेस दी हो। मैंने उस्तेन की ओर देखा और डरकर लड़खड़ाता हुआ पीछे हट गया। क्योंकि उसके सिर पर घने घुंघराले बालों के बीच तीन उँगलियों की छाप थी—बर्फ के समान सफेद। और उस लड़की ने अभिभूत की भाँति अपने हाथ अपने सिर पर उठा दिए।

इस अमानवीय शक्ति के भयानक प्रदर्शन पर सकपकाकर मैं बोला—"हे ईश्वर !" पर आयेशा हँस पड़ी।

उसने उस विस्मित लड़की से कहा—"ऐ अजान मूर्खा ! तू समझती है

कि मैं तुझे नहीं मार सकती ? देख, उधर आईने में जाकर देख।" और उसने लियो के गोल 'शेविंग ग्लास' (दाढ़ी बनाने के लिए शीशा) की ओर, जिसे जाब ने उसके अन्य सामान के साथ एक ओर रख दिया था, इशारा किया—"होली ! ज़रा इस स्त्री को वह आईना दे दो कि वह देख ले कि उसके बालों के बीच क्या है और समझ ले कि मैं उसे मार सकती हूँ या नहीं।"

मैंने शीशा लेकर उसे उस्तेन के सामने कर दिया। उसने देखा, अपने बालों को छुआ, फिर देखा और फिर ज़मीन पर गिरकर सिसकने लगी।

आयेशा ने, उपहासपूर्ण स्वर में कहा—"अब भी तू जायेगी या मैं दोबारा मारूँ ? देख, मैंने तुझ पर अपनी मुहर लगा दी है इसलिए कि जब तक तेरे सब बाल सफेद न हो जाएँ तब तक मैं तुझे पहचानती रहूँ। पर समझ रख कि यदि मैंने फिर तुझे देखा तो तेरी हड्डी-पसली एक कर दूँगी।"

बेचारी उस्तेन बिल्कुल सहमी और टूटी हुई उठी और फूट-फूटकर रोती हुई कमरे से बाहर चली गई।

उसके जाने के बाद आयेशा ने कहा—"मेरे होली ! इतना डरे क्यों दिखाई देते हो ? मैं तुमसे कहती हूँ कि मैं जादू का प्रयोग नहीं करती—जादू कोई चीज़ नहीं है ; केवल एक शक्ति है जिसे तुम नहीं जानते, नहीं समझते। मैंने उसे डराने के लिए यह छाप लगा दी है अन्यथा मैं उसे मार ही डालती। अब मैं अपने नौकरों को बुलाकर उनके द्वारा अपने स्वामी कालिक्रेटीज़ को अपने कमरे के निकट किसी कमरे में ले जाऊंगी जिससे मैं उसकी देख-भाल कर सकूँ और जब वह उठे तब उसका स्वागत कर सकूँ। वहीं तुम और तुम्हारा गोरा नौकर भी रहेंगे। पर एक बात याद रखना, नहीं तो तुम्हारी कुशल नहीं और वह यह कि कालिक्रेटीज़ से न कहना कि वह औरत किस प्रकार यहाँ से गई है और मेरे बारे में भी कुछ न कहना। मैंने तुम्हें चेता दिया है !" और मुझे सदा से भी ज्यादा घबराया हुआ छोड़कर वह नौकरों को आदेश देने चली गई।

सचमुच मैं इतना घबरा गया था और एक के बाद दूसरे मनोक्षोभ से इतना शिथिल हो गया था कि मैं सोचने लगा कि पागल तो न हो जाऊँगा। सौभाग्य-वश ज्यादा सोचने का अवसर न था, क्योंकि गूंगे लियो तथा हमारे सामान को लेने के लिए आ गए। हमारे नए कमरे आयेशा के निजी कमरे से

लगे हुए ही थे। वह खुद कहाँ सोती है, इसे मैं नहीं जानता था।

वह रात मैंने लियो के कमरे में ही बिताई पर वह रात भर मुर्दे की भाँति बेहोश सोता रहा और एक बार भी नहीं हिला। मैं भी खूब सोया पर मेरी नींद डरावने सपनों से भरी हुई थी। जो भयावने दृश्य मैंने देखे थे वे मेरे सामने आते रहे। विशेषतः जिस प्रकार आयेशा ने अपनी अँगुलियों की छाप अपनी प्रतिद्वन्द्विनी के सिर पर डाल दी थी, उसे मैं भूल न पाता था। उसकी तीव्र सर्पिल गति तथा आघात से डाली हुई सिर की वे तीन पंक्तियाँ मुझ पर गहरा प्रभाव छोड़ गई थीं। मैं इस भयंकर दृश्य को अब भी कभी-कभी स्वप्न में देखता हूँ, जिसमें दुखिनी उस्तेन, अपने प्रेमी पर अन्तिम दृष्टि डालकर रोती सिसकती हुई अपनी रानी के भय से रेंगती-रेंगती कमरे के बाहर जाती दिखाई देती है।

दूसरा दुःखदायी सपना उस कंकालों के पिरामिड से उद्भूत होकर मेरे ऊपर छा जाता था। इस सपने में मैं देखता था कि वे सब कंकाल उठ खड़े हुए हैं और सहस्रों की संख्या में, अपने गुल्म, दल, फौज बनाये, हमारे पास से आगे चले जा रहे हैं। सूर्य का प्रकाश उनकी रिक्त पसलियों के भीतर प्रवेश कर रहा है। वे कोर के मैदानों की ओर बढ़े जा रहे हैं—वे सुन्दर सड़कों, फौआरों, महलों और अनिन्द्य सुन्दर मन्दिरों को पार करते चले जा रहे हैं पर बाजार में उनका स्वागत करने वाला कोई भी नहीं है—किसी भी स्त्री का मुख वातायनों में नहीं दिखाई देता है। केवल एक अशरीरी वाणी उनके आगे आगे गूँजती जा रही है—"शाही 'कोर' का पतन हो गया ! पतन ! पतन ! पतन !" पर वे चलते जाते हैं और उनकी पग-ध्वनि से नगर का एकान्त प्रतिध्वनित होता चलता है। सूर्यास्त तक यह सेना पुनः समाधिभवन के दरवाज़े पर आ जाती है और गुफा के अन्दर उसी अस्थिगह्वर में पुनः गिर पड़ती है। फिर पंजरों का पिरामिड बन जाता है। मैं डरकर जग जाता हूँ और देखता हूँ कि आयेशा, जो मेरे और लियो के पलंग के बीच में खड़ी थी, एक छाया की भाँति कमरे के बाहर फिसलती चली जा रही है।

इसके बाद मैं पुनः सो गया और इस बार मीठी नींद, सुबह तक, सोता रहा। जब मैं उठा तो शरीर में ताजगी और फुर्ती आ गई थी। अन्त में वह

समय भी आ पहुँचा जब आयेशा के कथनानुसार लियो को जागना चाहिए था। आयेशा घूंघट पहने स्वयं आ गई।

उसने कहा—"होली ! देखो, ज्वर-मुक्त हो जाने के कारण अब वह भला-चंगा, उठ बैठेगा।"

ये शब्द मुश्किल से उसके मुंह से निकल पाए होंगे कि लियो ने करवट बदली और अँगड़ाई लेकर अपनी आँखें खोल दीं और किसी स्त्री को अपने ऊपर झुकी देख उसे उस्तेन समझ उसकी गर्दन में दोनों बाहें डाल दीं और मुख चूम लिया तथा अरबी में बोला—"उस्तेन ! तुमने अपना सिर इस तरह क्यों बाँध रखा है ? क्या तुम्हारे दाँतों में दर्द हो रहा है ?" फिर जाब से अंग्रेजी में कहा—"मुझे बड़े ज़ोर की भूख लगी है। जाब ! मुझे क्या हो गया था ?"

"श्री लियो ! मैं स्वयं नहीं जानता।" आयेशा की ओर कातर दृष्टि से देखता हुआ, जाब बोला—क्योंकि वह अभी तक उसे चलता-फिरता शव ही समझ रहा था—"पर आप ज़्यादा न बोलिए। आप बहुत बीमार हो गए थे और आपकी बीमारी के कारण हम सब बड़ी चिन्ता में पड़ गए थे।" इसके बाद आयेशा की ओर देखकर कहा—"अगर यह महिला मुझे जाने की जगह दें तो मैं आपके लिए शोरबा लाऊँ।"

इस बात से लियो का ध्यान उस 'महिला' की ओर गया जो पूर्णतः चुपचाप खड़ी थी।

लियो ने कहा—"अच्छा ! यह उस्तेन नहीं हैं ! उस्तेन कहाँ गई ?"

तब पहली बार आयेशा बोली, और उसके प्रथम शब्द ही झूठे थे—"वह किसी से मिलने गई है। और उसकी जगह मैं यहाँ आपकी सेवा करने के लिए, आपकी परिचारिका रूप में उपस्थित हूँ।"

आयेशा की मीठी सुरीली आवाज़ और मुर्दे-सी वेशभूषा से लियो की अर्द्धजागरित बुद्धि चकित हो गई। उसने कुछ उत्तर न दिया, किन्तु शोरबा पीकर फिर सो गया और शाम तक सोता ही रहा। जब वह दूसरी बार जागा तो उसने मुझे देखा और मुझसे पूछने लगा कि क्या बात हो गई थी। पर मैंने उस समय अगले दिन सुबह तक के लिए टाल दी। दूसरे दिन जब वह उठा तो बहुत अच्छा था। तब मैंने उसकी बीमारी तथा अपने कार्यों के विषय में उसे चन्द बातें बताईं, पर चूंकि आयेशा मौजूद थी इसलिए मैं उसे इसके

सिवा कुछ ज्यादा बातें नहीं बतला सका कि वह इस देश की रानी हैं और हम लोगों को बहुत मानती हैं। वह अपनी खुशी से नकाब पहनकर निकलती है। यद्यपि मैंने यह बातें अंग्रेजी में कहीं, फिर भी डर रहा था कि मेरे चेहरे के भावों से कहीं वह कुछ का कुछ न समझ ले ; फिर मुझे उसकी चेतावनी भी याद थी।

दूसरे दिन सुबह जब लियो उठा तो पूर्णतः स्वस्थ हो गया था। बगल का घाव भर गया था और उस भयानक ज्वर के कारण आई हुई शिथिलता भी दूर हो गई थी। यह सब आयेशा की उस अद्भुत दवा का ही असर था। स्वस्थ होते ही उसे इस दुस्साहसिक यात्रा की सब घटनाएँ, उसके दलदल में बीमार एवं बेहोश होने तक, याद आ गईं। उसे उस्तेन की भी याद आई जिसे वह बहुत प्यार करने लगा था। सच पूछो तो उसने उस्तेन के बारे में मुझसे प्रश्नों की भरमार कर दी। इन सवालों का उत्तर देने का साहस मुझे न हुआ क्योंकि लियो के पहली बार जागने पर आयेशा ने मुझे बुला भेजा था और मुझे लियो से उस्तेन सम्बन्धी घटना की कोई भी बात बताने से एकदम मना कर दिया था। यह भी कह दिया था कि अगर मैंने कुछ कहा तो मेरे हक में अच्छा न होगा। दूसरी बार उसने फिर मुझे चेतावनी दी कि "खबरदार, उससे तुम कुछ न कहना। समय आने पर मैं खुद उसे बताऊँगी।"

आयेशा का सारा व्यवहार ही बदल गया था। जो कुछ जानकारी मुझे उसके बारे में हुई थी उससे मैं यही आशा करता था कि वह अपनी पुरानी दुनिया के प्रेमी पर तुरन्त अपना दावा करेगी, पर न जाने किस विचार या कारण से, जिसे जानने में मैं उस समय असमर्थ था, उसने ऐसा नहीं किया। वह लियो की सेवा, परिचर्या का ध्यान रखती और उसकी आवश्यकताओं की चुपचाप और अत्यन्त नम्रतापूर्वक पूर्ति किया करती, जो उसके पहले के शाही रंग-ढंग के बिल्कुल विपरीत था। वह बड़े सम्मानपूर्वक उसे सम्बोधन करती और जहाँ तक हो सकता उसके पास ही रहती थी। इस रहस्यमयी स्त्री के प्रति लियो की उत्सुकता भी उसी तरह बढ़ गई थी जिस प्रकार मेरी बढ़ी थी और वह उसका मुख देखने को विशेष उत्सुक था। मैंने उससे इतना तो बता ही दिया था कि जिस प्रकार उसकी आवाज़ मीठी और गठन सुन्दर है वैसे ही उसका मुख भी सुन्दर है। किसी तरुण की उत्कण्ठा को खतरनाक ऊँचाइयों

तक पहुँचाने के लिए इतना ही पर्याप्त था और यदि अपनी बीमारी का कुछ प्रभाव अब भी उसके ऊपर न होता और उस्तेन के बारे में वह इतना परेशान न होता—जिसकी मृदुता और वीरनिष्ठा का वह प्रायः बखान किया करता था—तो निश्चय ही अब तक आयेशा के प्रेम-जाल में कभी का फँस चुका होता। पर अभी तो स्थिति यह थी कि वह केवल उत्सुक था और यद्यपि मेरी भाँति उसे आयेशा की उम्र का ठीक पता न था पर वह भी उसके बारे में कुछ उलझन में तो जरूर पड़ गया था, क्योंकि वह ठीकरे के अभिलेख में वर्णित रानी के रूप में उसे मानने लगा था। तीसरे दिन सुबह, जब वह कपड़े बदल रहा था, मुझे सवाल पर सवाल करके इतना परेशान किया कि मैंने उससे कह दिया कि इस विषय में जो कुछ पूछना हो आयेशा से पूछो, क्योंकि मैं नहीं जानता कि उस्तेन कहाँ है और यह सच भी था क्योंकि मुझे सचमुच उस्तेन के बारे में, इस समय कोई जानकारी न थी। सुबह का नाश्ता कर लेने के बाद लियो और मैं, दोनों, आयेशा के सामने उपस्थित हुए। अब गूँगियों को आज्ञा दे दी गई थी कि हम जब भी चाहें अन्दर आ-जा सकते हैं।

सदा की भाँति, इस समय भी, वह अपने कक्ष में बैठी थी। पर्दा उठाते ही वह अपने पलंग से उठ खड़ी हुई और हमारे, बल्कि सच पूछो तो लियो के, स्वागत के लिए दोनों हाथ फैलाए आगे बढ़ी। कैसा सुन्दर दृश्य था कि वह नक़ाब डाले इठलाती हुई बलवान अंग्रेज युवक की ओर बढ़ रही थी। लियो यद्यपि रक्त की दृष्टि से आधा यूनानी था पर बालों को छोड़कर और बातों में पूरा अंग्रेज ही दिखता था। उसमें आजकल के यूनानियों की कोमलता तथा ढील-ढाल न थी, यद्यपि उसमें अपनी विदेशी माँ का सौंदर्य प्रस्फुटित हुआ था। वह काफ़ी लम्बा था और उसके वक्ष चौड़े थे। उसके चेहरे पर गौरव का भाव था जो उसके अमाहजर नाम 'शेर' से ठीक ही अभिव्यक्त होता था।

आयेशा ने अपनी अत्यन्त मीठी वाणी में कहा—"मेरे स्वामी और अतिथि तुम्हारा स्वागत है। मैं तुम्हें फिर ज़मीन पर खड़ा देखकर बहुत प्रसन्न हूँ। और मैं सच कहती हूँ कि यदि मैं न बचाती तो तुम इस प्रकार फिर खड़े न दिखाई पड़ते। पर बीमारी अब चली गई है और"—गूढ़ भावों का एक संसार ही अपने शब्दों में उँडेलती हुई वह बोली—"मैं चेष्टा करूँगी कि अब वह कभी न लौटे।"

लियो ने झुककर प्रणाम किया और फिर अपनी सर्वोत्तम अरबी में उसकी मेहरबानियों के लिए धन्यवाद दिया।

आयेशा ने नम्र वाणी में कहा—"नहीं नहीं, तुम्हारे जैसे आदमी को दुनिया मरने न देती। दुनिया में ऐसा सौंदर्य विरल है। मुझे धन्यवाद देने की जरूरत नहीं। मैं तुम्हारे आने से सुखी हूँ।"

लियो ने मेरी तरफ़ मुड़कर अंग्रेजी में कहा—"अरे, यह महिला तो बड़ी शिष्ट और सुशील जान पड़ती हैं। अच्छी जगह पहुँचे। मैं समझता हूँ कि ऐसा अवसर पाकर आप चूके न होंगे ! वाह, क्या सुन्दर भुजाएँ हैं !"

मैंने उसे चुप रहने का इशारा किया, क्योंकि मुझे शंका हुई कि आयेशा हमें बड़े ध्यान से देख रही है और उसके आवृत मुख पर सन्देह की छाया पड़ने लगी है।

आयेशा बोली—"मुझे विश्वास है कि मेरे नौकर-चाकर तुम्हारी ख़िदमत ठीक तरह से करते हैं; अगर इस दरिद्र स्थान में किसी प्रकार भी आराम मिल सकता है तो वह तुम्हें ज़रूर मिलेगा। और भी कोई बात तुम चाहते हो तो कहो।"

"हाँ, रानी !" लियो ने जल्दी से पूछा—"मैं यह जानना चाहता हूँ कि मेरे साथ जो औरत थी वह कहाँ गायब हो गई ?"

आयेशा ने कहा—"वह ? वह लड़की ! हाँ-हाँ, मैंने उसे देखा तो था। मैं नहीं जानती कि वह कहाँ गई है। उसने इतना ही कहा कि मैं कहीं जा रही हूँ। संभव है वह लौट आए, संभव है न लौटे। बीमार की सेवा बड़ा कठिन काम है, और ये जंगली औरतें चंचल भी होती हैं।"

लियो यह समाचार सुनकर परेशान और दुखी हो गया।

उसने मुझसे अंग्रेजी में कहा—"बड़ा आश्चर्य है !" फिर आयेशा की ओर घूमकर बोला—"मुझे कुछ समझ में नहीं आता ! हम दोनों एक दूसरे को चाहते थे।"

आयेशा ने मीठी, संगीत भरी हँसी हँसकर बात टाल दी।

... College
...NAGAR

अध्याय १६

"मुझे एक काला बकरा दो"

इसके बाद देर तक इधर-उधर की बातें होती रहीं जो इस समय मुझे याद नहीं हैं। पर किसी कारण से, कदाचित् इसलिए कि कहीं लियो को उसका पता न चल जाय, आयेशा पहले की भाँति, खुलकर बात नहीं करती थी। कुछ देर बाद उसने लियो को सूचित किया कि हमारे मनोरंजन के लिए उसने आज रात नृत्य का प्रबन्ध किया है। यह सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि अब तक मैं यही समझता था कि अमाहज़र लोग इस प्रकार के मनोरंजन से अपरिचित हैं। बाद को हमें मालूम हुआ कि अमाहज़र नृत्य अन्य देशों में प्रचलित नृत्य से भिन्न है। इसके बाद जब हम उठकर चलने लगे तो आयेशा ने मुझसे कहा कि शायद लियो इन गुफ़ाओं की सैर करना चाहे। यदि ऐसा हो तो तुम उसे दिखला देना। इसलिए मैं और लियो जाब तथा बिल्लाली के साथ वहाँ से विदा हुए।

इस सैर का वर्णन कर मैं उन्हीं बातों को दोहराना नहीं चाहता जो इन गुफाओं के सम्बन्ध में पहले लिखी जा चुकी हैं। इस बार हम दूसरी गुफ़ाओं में गए पर उनमें वस्तुएँ तो वही थीं। बाद में हम कंकालों के उस पिरामिड को देखने गए जो कल रात मुझे सपने में दिखाई पड़ा था। फिर वहाँ से दूसरे समाधि-भवन में गए जहाँ 'कोर' के गरीब लोगों के शव रखे थे। ये शव उतनी अच्छी तरह रक्षित नहीं थे जितनी अच्छी तरह धनिक वर्ग के शव थे। बहुतों पर कोई कपड़ा ही न था; फिर ५०० से १००० तक शव एक बड़े समाधि-भवन में रख दिए गए थे; बहुत-से शव एक के ऊपर एक रखे हुए थे।

लियो ने इस असामान्य और अद्भुत दृश्य को बड़ी दिलचस्पी से देखा। उसकी सम्पूर्ण कल्पना क्रियाशील हो उठी। पर बेचारे जाब को इसमें कोई आकर्षण न अनुभव हुआ। इस देश में आने के बाद जो घटनाएँ घटी थीं उनसे वह यों ही घबराया हुआ था, विनष्ट मानवता के इन भयानक दृश्यों ने उसके चित्त को और भी क्षुब्ध कर दिया। बिल्लाली के इन शब्दों से भी उसकी

तबीयत ठिकाने न हुई कि उसे इन मुर्दों से डरना न चाहिए, क्योंकि उसे भी इन्हीं मुर्दों में शामिल होना है।

जब मैंने यह बात उसे अँग्रेजी में समझाई तो वह बोला—"किसी आदमी के लिए इस प्रकार कहना क्या अच्छी बात है ? पर एक आदमखोर जंगली से और क्या आशा की जा सकती है ? पर वह ठीक ही कह रहा है !" और उसने गहरी साँस ली।

गुफाओं की सैर खत्म कर हम लौट आए। दोपहर को चार बज चुके थे और हमें भोजन एवं विश्राम की ज़रूरत थी। हमने लौटकर भोजन किया। भोजनोपरान्त हमने थोड़ी देर आराम किया। छः बजे हम, जाब के साथ, आयेशा के पास गए। आयेशा जाब को कुण्ड के जल पर उतरती तस्वीरें दिखाती रही जिससे उसके बचे होश-हवास भी गुम हो गए। आयेशा को मुझसे मालूम हो गया था कि वह सत्रह बच्चों में से एक था। उसने जाब से अपने भाई-बहिनों का ध्यान करने को कहा। सब भाई-बहिनों की शक्ल कुण्ड के जल पर दिखाई देने लगी। बहुतों की शक्ल बिल्कुल साफ़ थी, कुछ की धुँधली थी। धुँधली होने का कारण यह था कि जाब को स्वयं उनकी सूरत शक्ल साफ़ नहीं याद आ रही थी और जल में मन में उदित होने वाली शक्लों की छाया ही पड़ती थी।

यह याद रखना चाहिए कि इस विषय में आयेशा की शक्तियाँ सीमित थीं क्योंकि कुछ विशिष्ट अपवादों को छोड़कर वह केवल उपस्थित लोगों में से किसी के मन में उभरने वाली बातों का प्रतिबिम्ब ही पानी में उदित कर पाती थी। हाँ, यदि वह स्वयं किसी स्थान वा स्थिति से परिचित होती तो अवश्य पानी में उसकी या वहाँ से गुजरने वाले पदार्थों की छाया डाल सकती थी जैसा कि ह्वेलबोट के सम्बन्ध में हो चुका था। पर दूसरों के मन पर वह इस प्रकार का प्रभाव न डाल सकती थी। उदाहरण-स्वरूप वह मेरे कालेज के गिर्जे के अन्तरंग भाग को, जिस रूप में वह मुझे याद था उसी रूप में, पानी में दिखा सकती थी पर उस समय उसका क्या रूप वस्तुतः होगा, यह नहीं दिखला सकती थी जहाँ तक दूसरों से सम्बन्ध रखने वाले विषयों की बात थी वह वही बातें दिखा सकती थी जो किसी न किसी उपस्थित व्यक्ति के मानस-पटल

पर उदित हों। हमने पार्लियामेण्ट भवन, सेंटपाल का गिर्जाघर इत्यादि प्रसिद्ध इमारतें दिखाने को कहा तो उनकी बड़ी विकृत एवं धुँधली छाया जल पर उदित हुई क्योंकि यद्यपि उनका एक सामान्य खाका हमारे मन में था परन्तु उसकी कला एवं कारीगरी के ब्यौरे हमारे स्मृति-पट पर स्पष्ट नहीं थे, इसलिए उनकी पूरी छाया उदित नहीं हुई।

यद्यपि आयेशा अपनी मनःप्रेक्षण शक्ति से यह करती थी और मानसिक उत्प्रेक्षण (टेलीपैथी) के विकसित रूप के सिवा यह कुछ नहीं था पर जाब इन बातों को न समझता था और इसे आयेशा की जादूगरी समझ डरता था। इसलिए जब उसने अपने सुदूर स्थित भाइयों के स्पष्ट चित्र पानी पर देखे और आयेशा को खिलखिलाकर हँसते देखा तो मारे डर के उसकी चीख निकल गई। लियो को भी यह प्रदर्शन कुछ अच्छा न लगा, वह सिर्फ़ अपने घुँघराले बालों में अँगुली फेरता चुपचाप खड़ा यह सब देखता रहा।

इस तमाशे के अन्तिम भाग में लियो शामिल नहीं था। बहरहाल इसके एक घण्टे बाद गूँगियों ने आकर इशारे से बताया कि बिल्लाली बाहर खड़ा है और दर्शन करना चाहता है। आज्ञा मिलने पर वह रेंगता हुआ कमरे में आया और निवेदन किया कि नृत्य की सब तैयारी हो चुकी है और रानी तथा उनके सफेद अतिथियों को वहाँ चलना चाहिए। कुछ देर बाद हम सब उठ खड़े हुए और आयेशा ने अपनी सफेद कफनी पर काला लबादा डाल लिया। हम सब बाहर आए। नृत्य खुले आकाश के नीचे, महती गुफा के सामने के चौरस मैदान में होने वाला था। हम उसी ओर चल पड़े।

गुफा-द्वार से लगभग १५ क़दम की दूरी पर तीन कुर्सियाँ रखी थीं। हम इन पर बैठ गए और प्रतीक्षा करने लगे क्योंकि वहाँ कोई नृत्यकार तो दिखाई नहीं देता था। रात निविड़ अँधियारी तो नहीं पर काफ़ी अँधेरी थी; अभी तक चाँद भी न निकला था, इसलिए हमें आश्चर्य हो रहा था कि नाच हम देखेंगे कैसे?

जब लियो ने पूछा तो आयेशा ने हलकी हँसी हँसकर कहा—"अभी तुम्हें सब मालूम हो जाएगा।"

उसके मुँह से ये शब्द निकले ही होंगे कि चारों ओर से काली शक्लें आती दिखाई पड़ीं। हर एक के पीछे कोई ऐसी जलती चीज़ थी जिसे हमने पहले मशाल समझा। वह जो भी चीज रही हो पर जल बड़े ज़ोर से रही थी

और हर आदमी से लगभग एक-एक गज़ पीछे थी। इस तरह जलती मशालें लिये पचास आदमी आ गए। वे नरक से आए यमदूतों के समान दीखते थे। लियो ने पहले देखा कि वे मशाल जैसी चीज़ें क्या हैं।

उसने कहा—"हे ईश्वर ! ये तो मुर्दे जल रहे हैं।" मैंने घूर-घूरकर देखा। उसका कहना ठीक था। हमारे दिल बहलाव के लिए रोशनी करने वाली ये मशालें और कुछ नहीं गुफाओं से लाए गए आदमियों की सुरक्षित लाशें थीं।

ये मुर्दों की मशालें लिये आगे बढ़ते आए और हमसे लगभग बीस कदम की दूरी पर एक स्थान पर रुक गए और अपने जलते बोझों को एक दूसरे के आड़े ज़मीन पर रखते गए। जैसे एक बड़ी होली जल रही हो। वे चिल्लाते और दौड़ते थे। ये शव इस तेज़ी से जल रहे थे जैसे राल के पीपे भी न जलेंगे। यहीं तक अन्त नहीं हुआ। मैंने देखा कि एक हृष्ट-पुष्ट आदमी ने एक जलता हुआ हाथ उठा लिया जो किसी शव से टूटकर अलग हो गया था। उसे लेकर वह अंधकार में दौड़ गया। फिर रुका और शीघ्र ही एक लम्बी ज्वाला धधक उठी। हमने देखा कि वहाँ बाँस में एक स्त्री की लाश बँधी चट्टान के सहारे ऊपर उठी हुई थी। उस आदमी ने उसके बालों में आग लगा दी थी। कुछ दूर पर उसने एक दूसरी लाश में आग लगाई, फिर तीसरी, फिर चौथी—यहाँ तक कि हम सब तीन तरफ ऐसी ही रोशनी से घिर गए। इन लाशों को सुरक्षित रखने वाले मसाले इतने ज्वलनशील थे कि शवों के मुँहों और कानों से एक-एक फुट ऊँची ज्वालाएँ निकल रही थीं।

नीरो ने जिंदा ईसाइयों को धूने में लपेटकर तथा उन्हें जलवाकर अपने उद्यान में रोशनी की थी, और तब से शायद पहली बार हम इस प्रकार का दृश्य इस समय देख रहे थे। सौभाग्य की बात इतनी ही थी कि ये मशालें ज़िंदा आदमियों की नहीं थीं।

हमको जो तमाशा दिखाया जा रहा था उसमें यद्यपि इतनी कमी थी फिर भी यह दृश्य इतना वीभत्स और भयानक था कि मेरी अल्प-शक्ति उसका वर्णन करने में असमर्थ है। उससे हमारी नैतिक एवं भौतिक प्रेरणाओं पर प्रभाव पड़ता था। अतीत काल के मुर्दों द्वारा जीवितों के उल्लास को प्रकाशित करने के इस कार्य में कुछ अत्यन्त भयानक पर साथ ही आकर्षक तत्त्व छिपे हुए थे। यह जीवितों एवं मृतकों—दोनों—पर स्वयं एक व्यंग्य के समान था। प्राचीन

काल के इन मरे हुए सीज़रों से जंगलियों के नृत्य में प्रकाश का काम लिया जा रहा था। वे क्या जानते होंगे कि आगे चलकर हमारी ही सन्तानों के उत्सुक समूह, हमारी स्मृति की पूजा करने की जगह हमारा ऐसा हीन उपयोग करेंगे और इस दुःखजनक संसार में पैदा करने के लिए वे उलटा हमें शाप देंगे।

फिर इस तमाशे का एक शारीरिक—भौतिक—पहलू भी था, जो बहुत महत्त्वपूर्ण था। कौर के ये प्राचीन नागरिक जिस प्रकार जिये थे, उसी प्रकार जल भी रहे थे—उनका जीवन विलास, भोग तथा अत्यन्त उदारता से पूर्ण था, जीवन के वही गुण उनके गलने में भी व्यक्त हुए थे। फिर संख्या में भी वे बहुत थे। ज्यों ही वे टखनों तक जल चुकते थे, और इसमें लगभग बीस मिनट लग जाते थे, तो पाँवों की ठोकर मारकर दूर हटा दिया जाता था और उनके स्थान पर दूसरा शव लाकर जला दिया जाता था। यह अग्निदाह बड़े भारी रूप में हो रहा था और उसकी ज्वालाएँ आकाश में उठ रही थीं, कभी-कभी बीस से तीस फुट तक ऊँची जिनसे दूर-दूर तक अंधकार में प्रकाश के भभूके उठते थे। उधर अमाहज्र लोगों की काली आकृतियाँ उछल रही थीं—नार्किक अग्नि को प्रज्वलित करने वाले यमदूतों की भाँति। हम सब खड़े भयपूर्वक उस दृश्य को देख रहे थे—हैरान फिर भी मुग्ध।

आयेशा ने हँसते हुए, मानो उस पर इन बातों का कुछ प्रभाव न हो, कहा—"होली! मैंने तुम्हें अद्भुत तमाशा दिखाने का वचन दिया था और देखो, मैंने तुम्हें निराश नहीं किया। फिर इससे कुछ शिक्षा भी मिलती है। भविष्य का विश्वास न करो, क्योंकि कोई नहीं जानता कि आगे क्या आने वाला है। इसलिए वर्तमान में, आज के लिए, जियो और उस धूल से बचने की चेष्टा मत करो जो मानव-जीवन का अन्त है। तुम क्या सोचते हो—यदि उन बहुपूर्व विस्मृत सरदारों एवं महिलाओं को मालूम हो जाता कि किसी युग में उनके मुलायम शरीरों का उपयोग जंगलियों के नृत्य को प्रकाशित करने में किया जायगा तो उन्हें कैसा अनुभव होता? पर अब देखो, नाचने वाले आ रहे हैं। कैसे आनन्दी जीव हैं! मंच पर रोशनी हो गई, अब खेल शुरू होता है।"

उसके कहते ही उस मानवीय होली के इर्द-गिर्द दो पंक्तियाँ अलग-अलग बन गईं—एक पुरुषों की, दूसरी स्त्रियों की, जिनमें लगभग सौ-सौ की

संख्या रही होगी। सब के सब तेंदुए और साबर के चमड़े पहने हुए थे। हमारे और आग के बीच में वे एक-दूसरे के आमने-सामने चुपचाप पंक्तिबद्ध खड़े हुए। तब नृत्य आरम्भ हुआ—भयानक नार्किक नृत्य। उसका वर्णन करना सर्वथा असम्भव है, पर उनके उछलने-कूदने तथा हाथ हिलाने के ढंग से वह नृत्य की अपेक्षा नाटक ही अधिक मालूम होता था। वे जिस गुफा में रहते थे वहीं के दृश्यों की कल्पना का आधार ले सकते थे—उनके विनोद और मनोरंजन की चीज़ों का स्रोत भी सुरक्षित मृतक ही थे क्योंकि उनके साथ ही वे, अपने घरों में रहते थे। सारा विषय ही अमानुषिक था।

सबसे पहले एक हत्या करने का रूपक प्रस्तुत किया गया। जिस आदमी को मारने की चेष्टा की गई थी, जब वह घायल होकर गिर पड़ा तो उसे ज़िंदा ही गाड़ देने का प्रयत्न किया गया। वह बेचारा तड़पता और अपने प्राण बचाने के लिए जी-जान से चेष्टा करता था। घृणित नाटक का प्रत्येक अंक भयंकर एवं वीभत्स नृत्य के साथ समाप्त होता था। और यह नाटक पूर्ण मौन अवस्था में हो रहा था।

किन्तु एकाएक यह तमाशा रुक गया और चारों तरफ़ शोरगुल होने लगा। एक मोटी-ताज़ी स्त्री, जिसे मैंने बड़े जोश के साथ नाचते देखा था, इस अपवित्र दृश्य से पागल-सी होकर, शराबी की तरह, अनाप-शनाप बकने लगी। वह उछलती और लड़खड़ाती हुई हमारी तरफ़ बढ़ रही थी और चिल्लाती जाती थी—"मैं एक काला बकरा चाहती हूँ; मैं काला बकरा लेकर रहूँगी। मेरे लिए काला बकरा लाओ।" इतना कहकर वह चट्टानी फर्श पर धड़ाम से गिर पड़ी। वह कांप रही थी और उसके मुँह से फेचकुर निकल रहा था। बीच-बीच में चीखती जाती थी—काला बकरा! काला बकरा! बड़ा ही वीभक्त दृश्य था।

उसके चारों ओर नर्तकों की भीड़ लग गई, यद्यपि कुछ अब भी पार्श्वभूमि में नाच रहे थे।

एक बोला—"इस पर भूत चढ़ा है, भूत। दौड़ो, जल्दी से काला बकरा लाओ। ओ भूत! चुप रहो। अभी काला बकरा आता है। लोग लेने गए हैं। चुप!"

ज़मीन पर लोटती और फेचकुर बहाती वह औरत चीखी—"काला

बकरा ! मैं काला बकरा लूँगी।"

"हाँ, भूत ! अभी बकरा आ रहा है। पर चुप तो हो।"

इतने में ही कोई सींग पकड़कर एक बकरा लाता है।

औरत चीखी—"क्या यह काला बकरा है ? क्या यह काला बकरा है ?"

किसी ने उत्तर दिया—"हाँ भूत ! यह उतना ही काला है जैसी रात !" फिर पास वाले आदमी से धीरे से बोला कि औरत न सुन सके—"इसे अपने पीछे छिपा लो। कहीं भूत देख न ले कि इसके पुट्ठों एवं पेट पर सफेद दाग हैं। उधर ले जाकर मारो। पर कटोरा कहाँ है ?"

"बकरा ! बकरा ! बकरा ! मुझे मेरे काले बकरे का खून पिलाओ ! मैं ज़रूर पिऊँगा, ज़रूर पिऊँगा। आह ! आह ! मुझे बकरे का खून दो।"

तभी घोषणा की गई कि बकरे की बलि दे दी गई और एक औरत एक कटोरे में खून भरे दौड़ती उस ओर लोटती औरत के पास आई और कटोरा उसके मुँह से लगा दिया। वह भूताविष्ट औरत खून पी गई और उसके खून पीते ही उसका सारा भूत उतर गया और पागलपन या हिस्टीरिया का कोई लक्षण नहीं रह गया। उसने अपने हाथ फैलाये, धीरे से मुस्कराई और जाकर नाचने वालों में शामिल हो गई और वे पुनः पहले की तरह दो पंक्तियों में बँट गए थे।

मैंने समझा कि तमाशा खत्म हो गया और ऊबकर मैं आयेशा से विदा होने के लिए कहने ही जा रहा था कि एकाएक एक ओर से एक लंगूर फुदकता हुआ आया ; दूसरी तरफ से एक शेर आ गया। ये सचमुच के लँगूर और शेर न थे बल्कि वैसा वेश धारण किये हुए आदमी ही थे। इसके वाद एक बकरी आई ; फिर एक आदमी बैल बनकर आया और अपने सींगों को इधर-उधर घुमाने लगा। इसके बाद अनेक जानवर आये। यहाँ तक कि एक लड़की अजगर बनकर आई जिसके पीछे उसकी लम्बी पूँछ कई गज़ तक फैली हुई ज़मीन पर घिसट रही थी। अब सब जानवर अप्राकृतिक ढंग से नाचने लगे और अपनी-अपनी बोलियाँ बोलने लगे। कहीं शेर की दहाड़, कहीं साँप की फुफकार, कहीं लंगूर की चीख, कहीं बैल की हुँकार।

यह तमाशा बहुत देर तक चलता रहा। अन्त में ऊबकर मैंने आयेशा से पूछा कि क्या मैं और लियो जाकर उन मानवीय मशालों को देख सकते हैं और

चूँकि उसने एतराज़ नहीं किया, हम उठकर वहाँ से बाईं तरफ को चल दिये। दो-एक जलती लाशों को देखने के बाद, इस प्रेत-लीला से ऊबकर, हम लौटने ही वाले थे कि हमारा ध्यान एक स्फूर्तिशाली नर्त्तक की ओर गया जो तेंदुए का वेश धारण किए हुए था किन्तु अपने साथियों से छिटककर अलग आ पड़ा था और हमारी ओर होता हुआ, अँधेरे की ओर खिसका जाता था। उत्सुकता-वश हम भी उसके पीछे चले। एकाएक तेंदुआ तड़पा और हमारे पास से यह कहता हुआ कि 'आओ', अंधेरे की ओर चला गया। हम दोनों आवाज़ से पहचान गए कि यह उस्तेन है। लियो, बिना मेरी सलाह लिये ही, उसके पीछे-पीछे अँधेरे की ओर चला। मैं भी भयग्रस्त हो जल्दी-जल्दी उनके पीछे गया। तेंदुआ लगभग पचास कदम चलकर रुक गया क्योंकि अब वह मशालों की रोशनी से काफ़ी दूर निकल आया था। तब तक लियो भी पहुँच गया।

मैंने उस्तेन को धीरे से कहते सुना—"हे मेरे स्वामी ! आख़िर मैंने तुम्हें पा लिया। सुनो, मेरे प्राण 'अवश्य-माननीया' के कारण संकट में हैं। शायद लंगूर ने तुम्हें बताया होगा कि रानी ने किस तरह मुझे तुमसे दूर हटाया। हे स्वामी ! मैं तुम्हें प्यार करती हूँ और इस देश की रीति के अनुसार तुम मेरे हो चुके हो। मैंने तुम्हारा प्राण बचाया। हे मेरे प्यारे ! मेरे स्वामी ! क्या तुम मुझे छोड़ दोगे ?"

लियो ने उत्तर दिया—"हर्गिज़ नहीं ! उस्तेन, मैं तो तुम्हें खोज रहा था। आओ रानी के पास चलकर उन्हें सब मामला बता दें।"

"नहीं, नहीं। वह हमें मार डालेगी। तुम उसकी शक्ति नहीं जानते, वहाँ खड़ा लंगूर जानता है क्योंकि वह देख चुका है। खबरदार ! अब एक ही रास्ता है। अगर तुम मुझे चाहते हो तो आओ अभी इसी घड़ी मैं तुम्हें लेकर दलदलों के पार भाग चलूँ। शायद इस तरह हम बच जायँ।"

मैंने कहा—"लियो, ईश्वर के लिए, कदापि ऐसा न···"

पर वह बीच में ही बोल पड़ी—"नहीं, इनकी बात न सुनो। जल्दी करो, जल्दी। हम जिस हवा में साँस ले रहे हैं उसमें मृत्यु भरी है। शायद इस समय भी 'अवश्य-माननीया' हमारी बातें सुन रही हो।" इतना कहकर वह लियो से लिपट गई। ऐसा करने में उसके सिर के बालों से तेंदुए का सिर खिसककर

नीचे आ रहा और मेरी निगाह तीन उँगलियों की छाप पर पड़ गई जो उस धुँधली रोशनी में भी चमक रही थी।

इस निराशाजनक स्थिति से भयग्रस्त हो मैं पुनः हस्तक्षेप करना ही चाहता था, क्योंकि स्त्रियों के विषय में मुझे लियो की दुर्बलता का ज्ञान था, कि मुझे अपने पीछे एक रजत हास्य सुनाई पड़ा। मैंने फिरकर देखा। खुद आयेशा खड़ी थी। उसके साथ बिल्लाली तथा दो गूंगे भी थे। मेरी साँस रुक गई और मैं गिरते-गिरते बचा, क्योंकि मैं जानता था कि इस परिस्थिति का अन्त किसी भयानक दुर्घटना में होगा, और शायद मैं ही उसका प्रथम शिकार बनूं। उस्तेन ने अपने प्रेमी को छोड़ दिया और दोनों हाथों से अपनी आंखें बन्द कर लीं। लियो तो परिस्थिति की भयंकरता को जानता न था इसलिए उसने शर्माकर सिर झुका लिया।

अध्याय २०

विजय

इसके बाद दुःखदायी मौन के कुछ क्षण बीते। तब आयेशा ने उसे भंग किया।

उसने अपनी मृदुतम वाणी में, जिसके पीछे इस्पात की झंकार थी, कहा—"नहीं मेरे स्वामी और अतिथि! इतने शर्मिन्दा न हो। दृश्य तो सुन्दर था—तेंदुआ और शेर!"

लियो ने अंग्रेजी में कहा—"भाड़ में जाय।"

उसने आगे कहा—"उस्तेन! मैं तो आगे बढ़ जाती पर तेरी माँग पर रोशनी पड़ी और उसमें मेरी अंगुलियों की छाप चमक उठी।" यह कहकर क्षितिज पर उठते हुए चाँद की ओर उसने संकेत किया। फिर बोली—"हाँ, नाच समाप्त हो गया और मशालें भी जलकर बुझ गई हैं। सभी का अन्त मौन और राख में होता है। इसलिए उस्तेन! मेरी दासी! तूने इसे अच्छा

अवसर समझा, और मैं, जो कभी कल्पना भी नहीं कर सकती कि मेरे आदेश की अवज्ञा की जा सकती है, समझ रही थी कि तू बहुत दूर चली गई होगी।"

व्यथित नारी बोली—"क्यों मुझे खेल खिलाती हो ? मुझे मार डालो और किस्सा खत्म कर दो।"

"नहीं, ऐसा कैसे ? प्रेम के उत्तप्त अधरों से इतनी जल्द कब्र के ठंडे मुँह में जाना चाहती हो ?" आयेशा के संकेत पर दोनों गूँगे आगे बढ़े और उन्होंने लड़की की एक-एक बांह पकड़ ली। तड़पकर लियो अपने पास वाले गूंगे पर झपटा, उसे जमीन पर पटक दिया और छाती पर चढ़कर मारने के लिए घूंसा ताना।

आयेशा फिर हँसी—"वाह मेरे अतिथि ! खूब पटकान दी। एक आदमी, जो अभी-अभी इतना बीमार रह चुका हो, ऐसा करता है तो जरूर उसकी भुजाएँ बड़ी पुष्ट हैं। पर मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि इस आदमी को ज़िन्दा छोड़ दो। वह लड़की को कुछ नुकसान न पहुँचायेगा। रात की हवा में ठण्डक बढ़ रही है और मैं उस लड़की का अपने कमरे में स्वागत करूँगी। जिसे तुम चाहते हो उसे मैं भी पसन्द करूँगी।"

मैंने लियो का हाथ पकड़कर जमीन में पड़े हुए गूंगे के ऊपर से खींचकर उसे उठाया। यद्यपि वह अर्द्धचकित-सा था, उसने उस आदमी को छोड़ दिया। तब हम मैदान पारकर गुफा की ओर चले। नर्तक लुप्त हो चुके थे और आग जलकर सफेद राख के ढेर में परिवर्तित हो चुकी थी।

थोड़ी देर में हम आयेशा के कमरे में पहुँच गए, किन्तु मैं रास्ते भर इसी चिन्ता में मग्न रहा कि हे भगवान् ! न जाने क्या होने वाला है।

आयेशा अपनी गद्दी पर बैठ गई, जाब और बिल्लाली को विदा कर दिया; गूंगों को भी उनके दीपक ठीक तरह से रखने के बाद उसने इशारे से हटा दिया। केवल एक गूंगी लड़की रह गई जो आयेशा की बहुत प्रिय परिचारिका थी। हम तीनों खड़े रहे; अभागी उस्तेन हमारे बायें एक ओर हटकर खड़ी थी।

आयेशा ने कहना आरम्भ किया—" ऐ होली ! बोलो, यह कैसे हुआ कि तुम आज रात के इस अपराध में सम्मिलित पाये गए—तुम जिसके कहने से मैंने इस दुष्टा", उस्तेन की ओर दिखाकर, "को जान से न मारकर छोड़ दिया था कि यहाँ से दूर चली जाए ? बोलो, सब बातें सच्ची-सच्ची बताओ क्योंकि

मैं इस मामले में झूठ सुनना पसन्द न करूंगी।"

मैंने उत्तर दिया—"यह सब आकस्मिक था। मुझे इसके बारे में कुछ भी मालूम न था।"

उसने रुखाई के साथ कहा—"होली! मैं तुम्हारा विश्वास करती हूँ, और यह तुम्हारे लिए शुभ है कि मैं तुम्हारा विश्वास करती हूँ। तब क्या सारा अपराध इसी लड़की का है?"

लियो ने बात काटते हुए कहा—"इसमें मुझे कोई अपराध नहीं मालूम पड़ता। वह किसी दूसरे आदमी की पत्नी नहीं है और उसने इस भयानक स्थान की प्रथा के अनुसार मुझसे विवाह किया है। तब किसे नुकसान पहुँचा है? जो हो, श्रीमती, जो अपराध उसने किया है वही मैंने भी किया है, इसलिए अगर उसे सज़ा मिलती है तो मुझे भी मिलनी चाहिए।" इतना कहते-कहते वह जोश के साथ बोला—"अगर तुमने उन गूंगे-बहिरों में से किसी को फिर इसे हाथ लगाने की आज्ञा दी तो मैं उसे टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगा।"

आयेशा हिम-मण्डित मौन में सब कुछ सुनती रही और कुछ न बोली। जब लियो बोल चुका तब उसने उस्तेन से कहा—"क्यों तू कुछ कहना चाहती है? तू जो फूस के समान है, तू जो पर के सदृश है,—तू जिसे अपनी वासना की पूर्ति के लिए मेरी इच्छा की आँधी के विरुद्ध उड़ने का साहस हुआ! बोल, मैं जानना चाहती हूँ तूने ऐसा क्यों किया?"

तब मैंने नैतिक साहस और निर्भीकता का अत्यन्त अद्भुत उदाहरण, जिसकी कल्पना की जा सकती है, देखा। वह अभागी लड़की, यह जानते हुए भी, कि वह अपनी भयंकर रानी से क्या आशा कर सकती है, और अपने कटु अनुभवों से यह जानते हुए भी, कि उसकी प्रतिद्वंद्विनी की शक्ति कितनी बड़ी है, अचल रही और उसकी निराशा की गहराई से ही उसे यह शक्ति प्राप्त हुई कि रानी की आज्ञा का उल्लंघन कर सके।

अपने सिर से तेंदुए की खाल एक ओर फेंककर, अपनी पूरी ऊँचाई में तन कर, सिर को ऊपर उठाते हुए वह बोली—"हाँ, मैंने यह अपराध किया, क्योंकि मेरा प्रेम मृत्यु से, क़ब्र से अधिक गहरा है। मैंने यह अपराध इसलिए किया कि इस आदमी के बिना, जिसे मेरे हृदय ने चुना है, मेरा जीवन जीवित मृत्यु के समान है। इसलिए मैंने जान पर जोखिम लिया और यद्यपि मैं जानती हूँ कि

मेरे प्राण तुम्हारे क्रोध की भेंट हो चुके हैं, फिर भी मुझे खुशी है कि मैंने उसका खतरा मोल लिया और मुझे उसे खतरे की भेंट चढ़ा देना है, क्योंकि उस आदमी ने मेरा आलिंगन किया और मुझसे कहा है कि अब भी वह मुझे प्यार करता है।"

आयेशा अपने पलंग से कुछ ऊपर उठी किन्तु फिर बैठ गई।

उस्तेन अपने पूरे स्वर में दृढ़ता के साथ बोलती गई—"मेरे पास जादू नहीं है और मैं रानी नहीं हूँ, न मैं सदा जीती रहूँगी; पर एक नारी-हृदय कितना ही गहरा पानी हो, डूबता नहीं है रानी! और रानी! एक नारी की आँखें तुम्हारे घूंघट के अन्दर घुसकर भी देख सकती हैं।"

"सुनो: मैं जानती हूँ कि तुम स्वयं इस आदमी को प्यार करती हो इसलिए मुझे जो तुम्हारे रास्ते में आती है, तुम नष्ट करके रहोगी। मैं मरती हूँ—मैं मरकर अन्धकार में जाने के लिए तैयार हूँ। मरकर कहाँ जाऊँगी, यह मैं नहीं जानती। पर इतना जानती हूँ कि मेरी छाती में एक प्रकाश चमक रहा है, और उस प्रकाश के सहारे, मैं सत्य को देख रही हूँ, उस भविष्य को भी देख रही हूँ जिसमें भाग लेने के लिए मैं न रहूँगी, पर जो लपेटे हुए कागज के समान मेरे सामने खुलता जा रहा है। जब मैंने पहली बार अपने स्वामी को जाना"—यहाँ उसने लियो की ओर संकेत किया—"तभी मैं समझ गई थी कि वधू की दहेज में मुझे मृत्यु मिली है; यह बात एकाएक मेरे सामने चमक उठी थी पर मैं पीछे नहीं फिरी क्योंकि मैं उसके प्रेम का मूल्य देने को तैयार थी, और देखो, वह मूल्य, वह मृत्यु यहाँ आ पहुँची है। जैसे मैं इसे पहले से जान गई थी, वैसे ही विनाश के कगार पर खड़ी मैं यह भी देख रही हूँ कि तुम भी इस अपराध से लाभ उठाने में असमर्थ रहोगी। वह मेरा है, और यद्यपि तुम्हारा सौन्दर्य तारा-मण्डल में सूर्य की भाँति चमकता है फिर भी तुम्हारे लिए वह मेरा ही रहेगा। इस जीवन में वह तुम्हारी आँखों में आँखें नहीं डालेगा, न तुम्हें अपनी प्रियतमा कहकर पुकारेगा। तुम्हारा विनाश भी निकट है, मैं देख रही हूँ"—यहाँ उसकी आवाज़ अभिभूत भविष्यवक्ता की भाँति तेज़ हो गई—"आह! मैं देख रही हूँ—"

इसी समय इसके उत्तर में भय और क्रोध की एक चीख सुनाई पड़ी। मैंने अपना सिर घुमाया। आयेशा उठ खड़ी हुई थी और अपना एक हाथ उस्तेन

की ओर बढ़ाए हुए खड़ी थी। उस्तेन एकाएक मौन हो गई। मैंने गरीब अबला की ओर देखा। इस समय उसके चेहरे पर भयानक भय का वही भाव उदित हो गया था जो हमने उस समय देखा था जब वह गुफा में हमारे पास बैठी-बैठी उठकर गीत गाने लगी थी। इस समय उसकी आँखें बड़ी-बड़ी हो गईं, उसके नथने फूल गए और ओठ पीले पड़ गए।

आयेशा कुछ न बोली, न उसके मुँह से किसी प्रकार की आवाज़ ही निकली। वह केवल तन गई और अपना हाथ उस्तेन की ओर फैला दिया, और उसका लम्बा आवृत शरीर पत्ते की तरह काँपने लगा; उस्तेन पर उसने अपनी दृष्टि गड़ा दी। उसके घूरते ही उस्तेन अपने हाथ सिर पर ले गई, बड़े जोर से चीख़ मारकर दो बार घूमी और धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ी। मैं और लियो दोनों उसके पास दौड़कर गए। वह पत्थर-सी मुर्दा पड़ी थी। वह किसी गुप्त, अद्भुत, विद्युत् शक्ति द्वारा अथवा प्रबल इच्छा शक्ति द्वारा—जिस पर इस भयानक स्त्री का अधिकार था—मरकर ठंडी हो गई थी।

एक क्षण तक तो लियो समझ ही न सका कि यह क्या हो गया। पर जब उसने समझा तो उसका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। घोर शपथ ग्रहण करता हुआ वह मुर्दे के पास से पलटकर आयेशा पर झपटा पर वह देख रही थी और नजदीक आने पर उसने अपना हाथ फिर फैला दिया। लियो लड़खड़ाता हुआ मेरे पास लौटा और अगर मैंने पकड़ न लिया होता तो वह गिर ही गया था। बाद में उसने मुझे बताया कि उसे ऐसा मालूम पड़ा जैसे किसी ने उसकी छाती पर तेज़ घूंसा मारा हो। इससे भी अधिक आश्चर्य तो इससे हुआ कि एकाएक उसकी सारी मर्दानगी जाती रही और वह बिल्कुल शिथिल तथा निर्बल-सा हो गया।

तब आयेशा ने बड़ी मृदुता से कहा—"मेरे अतिथि! अगर मैंने अपने न्याय से तुम्हें चोट पहुँचाई हो तो मुझे क्षमा करो।"

क्रोध और दुःख से अपने हाथ नोचता अभागा लियो चीखा—"माफ़ करूँ तुझ राक्षसी को! माफ़ करूँ तुझ हत्यारिन को! ईश्वर की शपथ, यदि मैं तुझे मार सकता तो अवश्य मार डालता!"

उसने उसी मृदुवाणी में कहा—"नहीं, नहीं। तुम समझ नहीं रहे हो पर अब जानने का समय आ गया है। तुम मेरे प्यारे हो! मेरे कालिक्रेटीज़ हो,

मेरे सुन्दर और शक्तिमान हो ! हे कालिक्रेटीज़ ! मैं दो हज़ार वर्ष से तुम्हारी राह देख रही हूँ और अब कहीं तुम लौटकर मेरे पास आए हो। और यह स्त्री"—शव की ओर संकेत करके—"मेरे और तुम्हारे बीच में आ गई थी इसीलिए कालिक्रेटीज़ ! मैंने उसे धूल में मिला दिया।"

लियो ने कहा—"यह झूठ है। मेरा नाम कालिक्रेटीज़ नहीं हैं ! मैं लियो विंसी हूँ ; कालिक्रेटीज़ मेरा पुरखा था—कम से कम मेरा यही विश्वास है कि वह मेरा पुरखा था।"

"आह ! तुम कहते हो कि कालिक्रेटीज़ तुम्हारा पुरखा था ; पर तुम, तुम भी कालिक्रेटीज़ हो, तुम फिर से पैदा हो कर मेरे पास लौट आए हो—हे मेरे प्यारे स्वामी !"

"मैं कालिक्रेटीज़ नहीं हूँ, और तेरा स्वामी बनने या तुझसे किसी प्रकार का सम्बन्ध रखने की अपेक्षा तो नरक से आने वाली किसी चुड़ैल का स्वामी बनना कहीं अच्छा होगा क्योंकि वह तुझसे तो भली होगी।"

"कालिक्रेटीज़ ? तुम ऐसा कहते हो ? तुम कहते हो ? किन्तु नहीं, तुमने बहुत समय से मुझे देखा नहीं है, इसलिए तुम्हें कुछ याद नहीं रहा है। फिर भी कालिक्रेटीज़ ! मैं बहुत सुन्दर हूँ।"

"ऐ हत्यारिन ! मैं तुझसे घृणा करता हूँ, और तुझे देखने की मेरी कोई इच्छा नहीं है। मुझे इससे क्या कि तू कितनी सुन्दर है। मैं कहता हूँ न कि मैं तुझसे घृणा करता हूँ।"

मृदु पर व्यंग्यभरी हँसी हँसकर आयेशा बोली—"लेकिन थोड़ी ही देर में तुम मेरे पाँव पड़ने लगोगे और क़सम खाकर कहोगे कि तुम मुझे प्यार करते हो। आओ, इस समय के समान फिर दूसरा समय न आएगा। आओ, इस मृत लड़की के सामने, जो तुम्हें प्यार करती थी, मैं इसे प्रमाणित किए देती हूँ।"

"कालिक्रेटीज, अब मेरी ओर देखो !" इतना कहकर उसने झटपट अपनी ओढ़नी उतार फेंकी और अपनी नीची कुर्ती तथा सर्पाकार कर्धनी के साथ तनकर खड़ी हो गई। कपड़ों से अपने महिमावान प्रकाशपूर्ण सौन्दर्य और राजकीय गौरव में वह ऐसी निकली जैसे तरंग से वीनस (प्रेम की देवी) अथवा मर्मर प्रस्तर से गैलेशिया का आविर्भाव हो गया हो अथवा किसी मकबरे से कोई सुन्दर प्रेतात्मा निकल आई हो। उसने खड़ी होकर अपनी प्रकाशमान आँखें

लियो की आँखों में गड़ा दीं। मैंने देखा कि लियो की बँधी मुट्ठियाँ खुलती जा रही हैं और उसके कठोर एवं खिचे हुए अङ्ग शिथिल होते जा रहे हैं। मैंने देखा कि आश्चर्य एवं अद्भुतता का भाव आकर्षण में बदलता जा रहा है। फिर यह आकर्षण चाह में परिवर्तित होने लगा। जितना ही वह इस आकर्षण से छूटने का प्रयत्न करता, उतना ही मुझे स्पष्ट होता जाता था कि आयेशा का भयानक सौन्दर्य किस प्रकार उसे जकड़ता जा रहा है और उसका हृदय उसके हाथ से निकलता जा रहा है। क्या मुझे खुद इस शक्ति का ज्ञान नहीं था ? क्या मैं—जो लियो से दूनी उम्र का था—स्वयं इस अनुभव से गुज़र नहीं चुका था ? और क्या इस समय भी मैं पुनः उसका अनुभव नहीं कर रहा था, यद्यपि आयेशा के मृदु कामना से दीप्त नयन मेरी ओर नहीं, लियो की ओर, लगे हुए थे। आह ! मुझे स्वीकार करना पड़ता है कि मैं एक भयानक एवं उन्मत्त ईर्ष्या से पीड़ित हो रहा था ! मुझे शर्म आनी चाहिए कि कभी-कभी मुझे लियो पर झपट पड़ने की इच्छा होती थी। इस स्त्री ने मेरी नैतिक भावना को भ्रमित, लगभग तहस-नहस कर दिया था, और उसकी अतिमानवीय सुन्दरता का अवलोकन करने वाले हर व्यक्ति की यही दशा होती। मैं नहीं जानता कि मैंने किस तरह अपने को सम्भाल लिया और पुनः उस दुःखान्त घटना का उत्कर्ष देखने में लग गया।

लियो हाँफकर बोला—"हे परमेश्वर ! तुम क्या स्त्री हो ?"

आयेशा अपनी गोल सुडौल हाथीदांत जैसी गोरी बांहें फैलाती और प्यारी हँसी हँसती हुई बोली—"हाँ, सचमुच, सचमुच मैं एक स्त्री हूँ। हे कालिक्रेटीज़ ! स्वयं तुम्हारी प्रियतमा !"

वह देखता रहा और देखता रहा। मैंने देखा कि धीरे-धीरे वह आयेशा की ओर बढ़ रहा है। पर अकस्मात् उसकी आँखें अभागी उस्तेन के शव पर जा पड़ीं और वह काँपकर खड़ा हो गया।

उसने भारी आवाज़ में कहा—"यह कैसे हो सकता है ? तुम हत्यारिन हो। वह मुझे प्यार करती थी।"

देखिए, वह यह भूला जा रहा था कि वह खुद भी उस्तेन को प्यार करता था।

निशीथ काल में मलय समीर जैसे वृक्षों के बीच एक गुदगुदाने वाली

सरसराहट पैदा करता है वैसे ही मधुर स्वर में आयेशा बोली—"इससे क्या ? यह कोई बात नहीं है। यह कुछ नहीं है। अगर मैंने कोई पाप भी किया है तो उसकी पूर्ति मेरे सौन्दर्य से हो जाती है। अगर मैंने पाप किया है तो तुम्हारे प्रेम के वश होकर किया है। इसलिए मेरे पाप को दूर हटा दो, उसे भूल जाओ"—एक बार फिर उसने अपनी बाहें फैला दीं और धीरे से कहा—"आओ !" और कुछ ही क्षण में काम हो गया।

मैंने उसे अपने से लड़ते देखा—मैंने भागने के लिए उसे फिरते भी देखा ; पर आयेशा की आँखें उसे लौहशृंखलाओं से भी अधिक शक्ति के साथ खींच रही थीं। उस नारी के सौन्दर्य का जादू तथा केन्द्रीभूत इच्छाशक्ति और वासना उसके अन्तर में प्रवेश करके उसे बेबस कर चुकी थी—हाय, उसी औरत के शव के सामने यह सब हो रहा था, जो लियो को प्यार करती थी और जिसने उसके लिए प्राण दे दिए थे। यह बात भयानक और दुष्टतापूर्ण लगती है पर इसके लिए लियो को अधिक दोष नहीं दिया जा सकता। जिस प्रलुब्धा ने उसे इस वासना-जाल में जकड़ लिया था वह मानवेतर थी और उसकी सुन्दरता मानुषी कन्याओं की लुनाई से कहीं बढ़ी-चढ़ी थी।

मैंने फिर आँख उठाकर देखा। अब आयेशा का सम्पूर्ण शरीर लियो की बाहों में था और उसके ओठ लियो के ओठ से लगे थे। इस प्रकार लियो अपनी मृत प्रेमिका की शव-वेदी के सामने ही अपना प्रेम उस हत्यारिन को समर्पण कर रहा था जिसके हाथ उस अभागिनी उस्तेन के खून से रंगे हुए थे—उस दिन के लिए ही नहीं सदा के लिए। जो लोग अपने मान-मर्यादा को लात मारकर इस प्रकार वासना की तराजू पर अपने को रखकर बेच देते हैं उन्हें शायद ही मुक्ति मिलती हो। उन्होंने जैसा बोया है, वैसा ही काटेंगे। जब वासना के फूल मुर्झाकर झड़ जाते हैं और कड़वा फल हाथ में रह जाता है तब पछताना ही शेष रह जाता है।

एकाएक सर्पिणी की भाँति बल खाकर आयेशा ने लियो के आलिंगन से अपने को मुक्त कर लिया और विजयपूर्ण उपहास की हँसी हँसकर, मृत उस्तेन की ओर संकेत करती हुई बोली :—

"कालिक्रेटीज़ ! मैंने कहा था न कि थोड़ी ही देर में तुम मेरे पांव पड़ने लगोगे। निश्चय ही इसमें कुछ ज़्यादा समय नहीं लगा।"

लियो दुःख और शर्म से कराह उठा; यद्यपि वह बेबस और मोहित हो रहा था पर अभी यह अवस्था नहीं हुई थी कि जिस गहरी मर्यादाहीनता में वह डूब गया था उसे न समझ सकता। बल्कि जैसा कि बाद में रात को मुझे मालूम हुआ उसके अन्दर का सद्भाव उसके पतित भाव के विरुद्ध लड़ने को उठ खड़ा हुआ था।

आयेशा तीसरी बार फिर हँसी और जल्दी से नकाब डाल ली। इसके बाद उसने गूँगी दासी की ओर कुछ इशारा किया, जो बड़े आश्चर्य के साथ खड़ी यह सब तमाशा देख रही थी। गूँगी लड़की गई और दो गूँगों को लेकर लौट आई। रानी ने उन्हें इशारे से कुछ समझाया। इस पर उन तीनों ने मृत उस्तेन की भुजाएँ पकड़ लीं और उसे घसीटते हुए कमरे के बाहर ले गए। लियो कुछ समय तक इसे देखता रहा और फिर हाथ से अपना मुँह छिपा लिया। अपनी उत्तेजित कल्पना में मैंने देखा कि मृत उस्तेन की चमकती आँखें जाती हुई हमारी ओर देख रही हैं।

जब लाश दूर पर्दों के बाहर निकल गई तो आयेशा ने गंभीरतापूर्वक कहा—"मृत भूत चला गया।" फिर एकाएक उसकी चित्तवृत्ति में न जाने क्या परिवर्तन हुआ कि उसने पुनः अपनी नक़ाब उलट दी और अरब में रहने वालों की प्राचीन काव्यमयी प्रथा[1] के अनुसार विजयोन्माद में एक गीत गाने लगी, जो सुन्दर एवं भावपूर्ण होते हुए भी इतना असम्बद्ध था कि उसका अनुवाद करना अत्यन्त कठिन है। वस्तुतः वह लिखने और पढ़ने की जगह गाने की चीज़ थी

१. प्राचीन अरबों में, गद्य या पद्य, काव्योद्‌गार को बड़े सम्मान से देखा जाता था। और जो इसमें पारंगत होता था उसे 'कातिब' या 'व्याख्याता' कहा जाता था। हर साल बड़ा भारी समारोह होता था जिसमें कविगण अपनी कविता पढ़ते थे और जो कविताएँ सर्वोत्तम समझी जाती थीं उन्हें सुनहले अक्षरों में रेशम पर लिखा जाता था और उनको सार्वजनिक रूप में प्रदर्शित किया जाता था। वे 'अल मदाहबत' (स्वर्णिम काव्य) के नाम से विख्यात होती थीं। श्री होली ने आयेशा के जिस गायन का वर्णन किया है वह प्राचीन प्रथा का ही अनुसरण करता है।

और दो भागों में बँटी हुई थी—एक वर्णनात्मक, दूसरा निजी। जहाँ तक मुझे याद है उसका भाव कुछ यों था :

प्रेम मरुस्थल में उगे पुष्प की भाँति है।

वह अरब के 'बोल' की भाँति है जो केवल एक बार फूलकर मुरझा जाता है ; वह जीवन की नमकीन रिक्तता में फूलता है, और उसके सौंदर्य की चमक उजड़े दयार में यों छा जाती है जैसे तूफ़ान पर जगमगाता एक तारा।

इसके ऊपर आत्मा का सूर्य होता है और इसके चतुर्दिक् उसकी दिव्यता की वायु बहती है।

एक चरण की ध्वनि सुनकर प्रेम प्रफुल्ल हो उठता है—मैं कहती हूँ। मैं कहती हूँ कि प्रेम प्रफुल्ल हो उठता है और जो भी पास से निकलता है उस तक अपने सौंदर्य को झुका देता है।

वह उसे चुन लेता है, हाँ वह मधुपूर्ण प्याले को चुन लेता है और उसे उठा ले जाता है; मरुभूमि से दूर, मरुभूमि के बाहर, जब तक कि फूल मुर्झा नहीं जाता, जब तक कि मरुभूमि समाप्त नहीं हो जाती।

जीवन के शून्य में केवल एक ही पूर्ण पुष्प खिलता है।

वह फूल है प्रेम !

हमारे प्रवास की नीहारिका में केवल एक ही स्थिर ज्योति है।

वह ज्योति प्रेम है।

हमारी निराशापूर्ण निशा में केवल एक ही आशा है।

वह आशा प्रेम है।

और सब असत् है। और सब पानी पर डोलती छाया है। और सब केवल वायु और अहंकार है।

कौन कह सकता है कि प्रेम का बाट या माप क्या है ?

वह मांस से उत्पन्न होता है, वह आत्मा में निवास करता है। वह हर एक से सुख ग्रहण करता है।

सौंदर्य में वह तारिका के तुल्य है।

उसके रूप अनेक हैं पर सब सुन्दर हैं। कोई नहीं जानता कि वह तारिका कहाँ से उगी, न कोई उस क्षितिज को ही जानता है जहाँ यह डूबेगी।

इसके बाद वह लियो की ओर फिरी और उसके कन्धे पर हाथ रखकर

श्रौर पूर्ण तथा विजयी स्वर में गाने लगी—

हे मेरे प्रियतम ! मैं न जाने कब से तुम्हें प्यार कर रही हूँ, पर मेरा प्रेम कम नहीं हुश्रा।

मैं तुम्हारे लिए न जाने कब से प्रतीक्षा कर रही हूँ श्रौर देखो मेरा पुरस्कार यह है—यहाँ है !

बहुत दिन हुए मैंने एक बार तुम्हें देखा था किन्तु तुम मुझसे छीन लिये गए।

तब मैंने एक कब्र में धीरज का बीज बोया; उस पर श्राशा का सूर्य चमकाया श्रौर पश्चात्ताप के श्रश्रुबिन्दुश्रों से उसे सींचा श्रौर श्रपने ज्ञान की श्वास से उसे प्रश्वसित किया।

श्रौर श्रब श्ररे ! उसमें श्रंकुर फूट श्राए हैं श्रौर उस पर फल लग गए हैं। श्ररे देखो ! यह कब्र से श्रंकुरित हुश्रा है। हाँ-हाँ, मृतकों की राख तथा सूखी हड्डियों के बीच !

मैंने प्रतीक्षा की श्रौर मेरा पुरस्कार मेरे पास है।

मैंने मृत्यु पर विजय प्राप्त की है, श्रौर जो मृतक था उसे ही मृत्यु पुनः मेरे पास लौटा लाई है।

इसलिए मैं श्रानन्द-विह्वल हूँ ; भविष्य उज्ज्वल है।

श्रसीम खेतों के बीच हमारे चलने के पथ श्राज हरित हैं।

समय श्रा गया है। रात्रि घाटियों में भाग गई है।

उषा पर्वत-शृङ्गों को चूम रही है।

मेरे प्रियतम ! हम सुख से रहेंगे श्रौर हमारा मार्ग सरल होगा।

राजाश्रों के मुकुटों से हमारा श्रभिषेक होगा।

संसार के समस्त जन चकित होकर हमारी पूजा करेंगे।

वे हमारे सौंदर्य श्रौर हमारी शक्ति के सामने श्रन्धे होकर पतित होंगे।

युगों-युगों तक हमारी महत्ता बिजली की तरह गरजती रहेगी।

श्रनन्त दिनों की धूलि-मध्य हम रथ की भाँति चलते रहेंगे।

श्रपनी विजय श्रौर वैभव में हँसते हुए हम गतिमान होंगे।

उस सूर्यप्रकाश की भाँति हँसते हुए जो पहाड़ियों पर कूदता फिरता है।

श्रागे श्रौर श्रागे, विजय पर विजय, सदा नई विजय प्राप्त करते हुए।

अपनी शक्ति में आगे बढ़ते, अप्राप्त शक्ति की ओर गति करते हुए।
प्रकाश के वस्त्र पहने, आगे बढ़ने में कभी न थकते हुए।
जब तक कि हमारी नियति पूर्ण न हो जाय और रात न आजाय।

उसका भावपूर्ण गान बन्द हो गया—उसका रूपात्मक गायन, जिसका दुर्बल आशय मात्र मैं दे सका हूँ। इसके बाद उसने कहा :

"कालिक्रेटीज़! शायद तुम्हें मेरे शब्दों पर विश्वास नहीं हो रहा है; शायद तुम समझते हो कि मैं तुम्हें भ्रमित कर रही हूँ और मैं इतने दिनों तक जीती नहीं रही हूँ और तुम मेरे लिए पुनः उत्पन्न नहीं हुए हो। नहीं, इस तरह न देखो—सन्देह और शंका की पीली छाया को दूर कर दो और विश्वास रखो कि इन बातों में असत्य के लिए कोई स्थान नहीं है। चाहे सूर्य अपना मार्ग भूल जाय और अबाबील पक्षी अपना घोंसला भूल जाय, पर मेरी आत्मा के लिए झूठ बोलना और तुमसे दूर हो जाना असंभव है। मुझे अंधी कर दो; मेरी आँख निकाल ले जाओ और मेरे चतुर्दिक् अंधकार घिरने दो, फिर भी मेरे कान तुम्हारी अविस्मृत वाणी को पहचान लेंगे—वह मेरी चेतना में उससे भी अधिक तीव्रता से गूंज उठेगी जितना तुरही की आवाज़ गूँजती है। मेरी श्रवणशक्ति को भी बन्द कर दो और हज़ारों आदमियों को मुझे माथे पर छूने दो। उनमें मैं तुम्हें अलग करके बता दूँगी। मेरी समस्त इन्द्रियों से मुझे हीन कर दो। मुझे अन्ध, बधिर, मूक, स्पर्शज्ञान-शून्य कर दो तब भी मेरी चेतना चंचल बच्चे की भाँति मेरे अन्दर उछल पड़ेगी और मेरे हृदय में उसकी आवाज़ गूँजेगी। कालिक्रेटीज़ देखो! हे देखने वाले देखो! तुम्हारी रात की चौकसी समाप्त हो गई। देखो तुम्हारा प्रातः तारक उग रहा है!"

थोड़ी देर चुप रहकर वह फिर बोली—"रुको! अगर अब भी इस प्रबल सत्य को ग्रहण करने के विरुद्ध तुम्हारा हृदय कठोर ही बना है और हमारी विलक्षण-सी लगने वाली बातों के लिए तुम्हें कुछ बाहरी प्रमाण की आवश्यकता है तो वह भी तुम्हारे सामने रखा जाएगा, और होली! तुम्हारे सामने भी। तुम दोनों एक-एक दीपक ले लो और मेरे पीछे आकर देखो कि मैं तुम्हें कहाँ ले चलती हूँ।"

बिना कुछ सोचे हम एक-एक दीपक लेकर उसके पीछे हो लिये। जहाँ तक मेरी बात है मैंने इन परिस्थितियों में सोचने का प्रयत्न ही त्याग दिया था

क्योंकि विचित्रताओं की काली दीवार के सामने विचार प्रतिक्षण अपने को असमर्थ पाते थे। अपने कमरे के सिरे पर पहुँचकर आयेशा ने एक पर्दा उठाया और हमें एक छोटी सीढ़ी बनी दिखाई दी, जैसी प्रायः कोर की इन धुँधली गुफाओं में बनी होती थी। जब हम तेज़ी से इस सीढ़ी से नीचे उतर रहे थे तो मैंने देखा कि सीढ़ियाँ बीच में इस क़दर घिसकर चिकनी और पतली हो गई हैं कि किसी-किसी की ऊँचाई साढ़े सात इंच से घिसकर साढ़े तीन इंच तक रह गई है। मेरी देखी दूसरी गुफाओं की सीढ़ियाँ ज़रा भी घिसी न थीं और यह स्वाभाविक ही था क्योंकि जब कोई नया मुर्दा दफ़न करना होता तभी उनमें कोई आता था। इस विचित्र तथ्य ने मुझे चकित कर दिया। सीढ़ी के नीचे उतरकर मैं पुनः उसकी ओर देखने लगा। आयेशा ने उलट कर मुझे देखा और पूछा :

"तुम आश्चर्य कर रहे होंगे कि ये किसके चरण हैं जिनके कारण यह चट्टान घिस गई है ? ये मेरे पाँव हैं—मेरे छोटे हलके पाँव ! मुझे याद है जब ये सीढ़ियाँ नई और चौरस थीं। पर दो हज़ार वर्ष से भी ज़्यादा समय से मैं प्रतिदिन इन पर बार-बार चलती रही हूँ और मेरी खड़ाउओं ने ठोस पत्थर को खा डाला है !"

मैंने कुछ जवाब न दिया पर जिस प्रकार मुझे इन घिसी सीढ़ियों से आयेशा की प्राचीनता का विश्वास हुआ, वैसा किसी दूसरी चीज़ से न हुआ था। न जाने वह कितनी लाख बार इन पर से चढ़ी उतरी होगी तब इन चट्टानी सीढ़ियों की यह हालत हुई होगी।

ये सीढ़ियाँ एक सुरंग को जाती थीं। इस सुरंग में चन्द क़दमों पर एक दरवाज़ा बना था जिस पर पर्दा पड़ा हुआ था। मैं इसे देखते ही पहचान गया। यह वही दर्वाज़ा था जिसमें से झाँककर मैंने आयेशा के हाथ से निकलती लपटों का दृश्य देखा था। मैं उस दृश्य को याद करते ही काँप उठा। आयेशा ने उस समाधि-भवन—मक़बरे—में प्रवेश किया। वह एक मक़बरा ही था। हम लोगों ने उसका अनुसरण किया। मैं मन ही मन खुश हो रहा था कि अब मुझे इस स्थान का भेद मालूम हो जाएगा, फिर भी परिणाम या हल जानने में कुछ डर भी रहा था।

अध्याय २१

मृत और जीवित का मिलन

लियो के हाथ से दीपक लेकर और उसे अपने सिर से ऊँचा उठाकर आयेशा बोली—"इस स्थान को देखो। यहीं मैं इन दो हज़ार वर्षों से सोती रही हूँ। दीपक का प्रकाश फर्श में बने एक गड्ढे पर पड़ा। इसी जगह मैंने उठती हुई आज्ञाकारी लपटों को देखा था। इस समय आग बुझ गई थी। अब मैंने देखा कि पत्थर की एक चौकी है जिस पर सफेद कपड़े से ढका कोई मुर्दा पड़ा हुआ है। समाधि-भवन पर जाली का काम हो रहा है। इस चौकी की दूसरी ओर एक दूसरी चौकी बनी है।

अपना हाथ चट्टान पर टिकाती हुई आयेशा बोली—"यहाँ, यहाँ मैं पीढ़ियों से रात पर रात सोती हूँ। मेरे पास सिर्फ एक ओढ़नी है। यह अच्छा नहीं लगता कि मैं मुलायम बिछौने पर सोऊँ और मेरा प्रियतम" शव की ओर संकेत करती हुई "वहाँ मृत्यु की कठोर शय्या पर सोये। यहाँ हर रात इस ठण्डे निर्जीव संगति में मैं सोती रही हूँ, यहाँ कि मेरे करवट बदलते-बदलते उन सीढ़ियों की तरह ही यह पत्थर भी घिसकर क्षीण हो गया है। कालिक्रेटीज ! तुम्हारे चिर-निन्द्रा काल में भी मैं तुम्हारे प्रति इतनी निष्ठावान रही हूँ। और अब, मेरे स्वामी, तुम एक अद्भुत वस्तु देखोगे—तुम जीवित अपने को ही मृतरूप में देखोगे। मैंने इन वर्षों में तुम्हारी रक्षा एवं सेवा की है। कालिक्रेटीज ! क्या तुम तैयार हो ?"

हमने कोई उत्तर नहीं दिया, पर एक-दूसरे की ओर त्रस्त नयनों से देखा। दृश्य ऐसा ही भयानक पर पवित्र था। आयेशा आगे बढ़ी और कफ़न के किनारे को पकड़ लिया। इसके बाद पुनः बोली :

"यद्यपि यह तुम को अद्भुत प्रतीत होता है पर डरो नहीं। हम सब जीवधारी पहले भी इसी प्रकार जी चुके हैं। हमारी शक्लें सूर्य के लिए नई नहीं हैं ! केवल हम इससे अनजान हैं क्योंकि स्मृति कोई विवरण लिखकर नहीं रखती और धरती से मिली हुई मिट्टी पुनः धरती से मिल जाती है। मृत्यु

से कोई बचा नहीं है। परन्तु अपने एवं कोर के मृतकों के सञ्चित ज्ञान के द्वारा मैंने तुम्हें धूल में नहीं मिलने दिया और इस प्रकार तुम्हारे मुख का सौन्दर्य सदैव अपनी आँखों के सामने रखा !

"अच्छा अब देखो ! मृतक और जीवित को एक-दूसरे से मिलने दो। काल-भेद को पार करके अब भी दोनों एक हैं। यद्यपि दयालु निद्रा ने हमारे मन के लेखों को मिटा दिया है और इस प्रकार हमारे उन दुःखों को शून्य के गर्त्त में डाल दिया है जो एक जीवन के बाद दूसरे जीवन में हमें चुभते रहते, यहाँ तक कि हम निराशा से पागल हो जाते, पर पहचान को मिटा देने की शक्ति काल के पास भी नहीं है। फिर भी यह महानिद्रा और जीवन वस्तुतः एक ही हैं। जैसे वायु मेघों को तितर-बितर कर देती है वैसे ही हमारी निद्रा का आवरण भी हमारे ऊपर से हट जाता है और अतीत की जमकर हिम-सी हो गई वाणियाँ सूर्य के प्रकाश से पुनः पिघलकर संगीत की झंकारों में फूट पड़ती हैं। अतीत का रोदन और हास्य काल के व्यवधान को पारकर एक बार पुनः मुखरित हो उठता है।

"इसलिए कालिक्रेटीज़ ! तुम जो अभी हाल में पैदा हुए हो, अपने ही बहुत दिन पूर्व के मृत रूप को देखकर भयभीत न होना। मैं तुम्हारे अस्तित्व की पुस्तक का केवल एफ पृष्ठ उलट रही हूँ और दिखाती हूँ कि उस पर क्या लिखा हुआ है।

"देखो !"

इतना कहकर उसने एकाएक शव के ऊपर का कपड़ा हटा दिया और उस पर दीपक का प्रकाश पड़ा। मैंने उधर देखा और डरकर पीछे हट गया; क्योंकि वह जो भी कहे, यह एक अमानवीय दृश्य था। उसकी व्याख्याएँ हमारे सीमित मस्तिष्कों से परे थीं। उस पत्थर की चौकी पर, सफेद वस्त्र पहने, पूर्णतः सुरक्षित, लियो किसी का शव पड़ा था। मैं कभी वहाँ खड़े जीवित लियो को, कभी वहाँ पड़े शव को देखता था। मुझे दोनों में कोई अन्तर न दीखता था, इसके सिवा कि मुर्दे की उम्र कुछ अधिक प्रतीत होती थी। दोनों के अंग-अंग मिलते थे—यहाँ तक कि दोनों के सुनहरे बाल भी एक-से थे। मैंने यह भी अनुभव किया कि मृतक के मुख पर वही भाव था जो गहरी निद्रा में मग्न लियो के चेहरे पर कभी-कभी दिखाई पड़ जाता है। दोनों में इतनी समानता

थी कि मुझे यह कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं है कि मैंने जुड़वाँ बच्चों में भी कभी इतनी समानता न देखी थी, जितनी इस मृत एवं जीवित जोड़ी के बीच में थी।

मैंने मुँह फिराया कि देखूँ इसे देखकर लियो पर क्या असर पड़ा है। वह तो अर्द्ध-विस्मृत एवं मोहित अवस्था में था। वह शव की ओर चुपचाप दो-तीन मिनट देखता रहा; फिर एकाएक बोला—

"इसे ढक दो और मुझे बाहर ले चलो।"

आयेशा ने, जो एक नारी की अपेक्षा आविष्ट भविष्य-वक्ता ही अधिक मालूम पड़ती थी, दीपक को ऊपर उठाते हुए कहा—"कालिक्रेटीज़ ! ज़रा रुको।" दीपक के प्रकाश में स्वयं उसकी देह-यष्टि का सौन्दर्य निखर उठा था।

"ठहरो। मैं तुम को कुछ और भी दिखाना चाहती हूँ। जिससे मेरा कोई पाप तुमसे छिपा न रहे। ऐ होली, क्या तुम मृत कालिक्रेटीज़ के सीने पर का कपड़ा हटा दोगे, क्योंकि मेरे स्वामी तो अपने मृत शरीर को छूते डरते हैं?"

मैंने काँपती अंगुलियों से आज्ञा का पालन किया, क्योंकि अपने पास खड़े जीवित मनुष्य की निद्रित मूर्ति को छूना मुझे एक अपवित्र कार्य मालूम पड़ता था। अब सीना खुल गया था और ठीक उसके हृदय के ऊपर एक घाव दिखाई पड़ रहा था जो कटार या भाले का घाव था।

उसने कहा—"तुम देख रहे हो कालिक्रेटीज ! तब जान लो कि यह मैं ही हूँ जिसने तुम्हें मारा था, मैंने तुम्हें जीवन की जगह मृत्यु दी। मैंने तुम्हें मिश्री अमीनार्त्ता के कारण मारा था, अमीनार्त्ता जिसे तुम प्यार करते थे; अपने कपटाचार से उसने तुम्हारे हृदय को वश में कर लिया था, पर जैसे मैंने इस उस्तेन को तहस-नहस कर दिया, वैसे अमीनार्त्ता को मैं न मार सकती थी। वह मेरे लिए अधिक शक्तिमती थी। जब मेरा उस पर वस न चला तब जल्द-बाजी और तीक्ष्ण क्रोध में मैंने तुम्हें मार दिया और इन अनेक युगों से तुम्हारे लिए रोती रही हूँ तथा तुम्हारे आने की प्रतीक्षा करती रही हूँ। अब तुम आ गए हो और अब मेरे तुम्हारे बीच कोई चीज खड़ी नहीं हो सकती। अब मैं तुम्हें मृत्यु की जगह जीवन दूँगी, अमर अनन्त जीवन नहीं, क्योंकि वह तो कोई नहीं दे सकता पर जीवन और यौवन जो हज़ारों वर्ष तक क़ायम रहेंगे। इनके अतिरिक्त मैं वैभव और शक्ति, धन तथा अनेक अच्छी एवं सुन्दर

वस्तुएँ तुम्हें दूँगी, जो न अतीत में किसी आदमी को मिली होंगी, न आगे आने वालों को मिलेंगी। एक बात और, फिर तुम विश्राम करोगे और अपने नवीन जन्म-दिन के लिए तैयार होगे। तुम इस शरीर को देख रहे हो, जो स्वयं तुम्हारा है। इन सूनी सदियों में वही मेरे सुख का एकमात्र साधन और मेरा साथी रहा है। अब इसकी कोई आवश्यकता नहीं रही क्योंकि तुम जीवित रूप में मेरे पास उपस्थित हो और इससे ऐसी स्मृतियाँ उमड़ती हैं जिन्हें मैं भूल जाना चाहती हूँ। इसलिए इसे उसी धूल में मिल जाने दो, जिससे आज तक मैंने इसकी रक्षा की है।

"देखो ! मैंने इसी आनन्द की घड़ी के लिए यह चीज़ तैयार रखी है"—और वह अपने सोने की चौकी के पास की अलमारी से दो मुठिया वाला एक पात्र उठा लाई, जो शीशीनुमा था और जिसके मुँह में डाट लगी थी। उसने उस डाट को निकाल कर अलग कर दिया। फिर धीरे से झुककर उस मृतात्मा के धवल ललाट को चूम लिया। इसके बाद शीशी की चीज़ उस शव पर छिड़क दी। छिड़कते समय उसने इसकी पूरी सावधानी रखी कि हम लोगों पर या स्वयं अपने पर कोई बूंद न गिरे। तुरन्त ही घनी भाप-सी उठी और सारी गुफ़ा दम घोटने वाले धुएँ से भर गई जिससे हम उस सांघातिक अम्ल की क्रिया न देख सके। जहाँ शव पड़ा था वहाँ से एक भयानक चड़चड़ाहट की आवाज़ आती थी जो बाद में बन्द हो गई। थोड़ी देर में सब धुआँ दूर हो गया; केवल शव स्थान पर छोटा-सा बादल रह गया। दो-तीन मिनट बाद वह भी साफ़ हो गया और हमने देखा कि पत्थर की उस चौकी पर, जहाँ सदियों तक उस प्राचीन कालिक्रेटीज़ का शव पड़ा रहा, दो चार मुट्ठी राख-भर रह गई थी जिससे अब भी हलका-हलका धुआँ निकल रहा था। अम्ल ने शरीर को बिल्कुल भस्म कर दिया था, बल्कि जहाँ-तहाँ पत्थर को भी खा गया था। आयेशा ने झुककर थोड़ी राख उठा ली और शान्त एवं पवित्र वाणी में यह कहती हुई उसे हवा में उड़ा दिया—

"राख में राख !—अतीत में अतीत !—विनष्ट में विनष्ट !—कालिक्रेटीज़ मर गया और पुनः पैदा हो गया है !"

राख हमारे चारों ओर उड़कर चट्टानी फर्श पर गिर पड़ी। हम चुपचाप सन्नाटे में उसका गिरना देखते रहे। हम में बोलने की सामर्थ्य नहीं थी।

उसने कहा—"अब मेरे पास से जाओ और सोना चाहो तो सो रहो। मैं अब विचार करूँगी, क्योंकि कल रात हमें यहाँ से चल देना है और जहां हमें चलना है वहाँ गए हुए मुझे बहुत समय हो गया है।"

तदनुसार हमने झुककर अभिवादन किया और उसके पास से चले गए।

अपने कमरे की ओर जाते समय मैंने जाब के कमरे में झाँककर देखा कि उसकी क्या हालत है, क्योंकि अमाहग्गर समारोह से भयभीत होकर, वधित उस्तेन से भेंट होने के पूर्व ही वह चला गया था। वह ईमानदार आदमी मीठी नींद में सो रहा था। मुझे यह सोचकर खुशी हुई कि इस भयानक दिन के अन्तिम दृश्यों को देखने से वह बच गया। अब हम अपने कमरे में पहुँचे। यहाँ पहुँचकर लियो, जो अपने मृत शरीर को देखने के बाद से ही अर्धविस्मृत अवस्था में था, फूटकर रोने लगा। अब वह उस भयावनी आयेशा के सामने नहीं था, इसलिए जो भी घटनाएँ घट चुकी थीं उनकी भयंकरता उस पर तेज़ी से प्रकट हो रही थी, विशेषतः उस्तेन जो उससे ऐसे घनिष्ठ स्नेह-बन्धन में बँध गई थी, की हत्या की स्मृति एक भयानक तूफ़ान की भाँति उस पर फट पड़ी। उसके दुःख को देखकर मुझे भी दुःख होता था। वह अपने को कोसता था, उस घड़ी को कोसता था जब हमने ठीकरे का अभिलेख पढ़ा था जो इस रहस्यमय तरीके पर अब ठीक उतर रहा था, वह अपनी दुर्बलता को कोसता था। आयेशा को कोसने का साहस उसे नहीं था—भला ऐसी औरत की बुराई करने का साहस कौन कर सकता था जिसकी आत्मा हमें प्रतिक्षण देख रही हो?

अपनी चरम वेदना से विकल होकर उसने अपना सिर मेरे कन्धे पर रख दिया और कराहते हुए बोला—"अब मैं क्या करूँ? मैंने ही उसे मारी जाने जाने दिया यद्यपि मैं बेबस था पर पाँच ही मिनट बाद, उसके मृत-शरीर के ऊपर, मैं उसकी हत्यारिन को चूम रहा था। मैं एक हीन पशु हूँ पर मैं इस भयानक जादूगरनी से जीत भी नहीं सकता। मैं जानता हूँ कि कल भी मैं यही करूँगा; मैं जानता हूँ कि सदा के लिए मैं उसके वश में हो गया हूँ। अगर मैं उसे नहीं देख पाऊँगा तो फिर सारे जीवन किसी स्त्री की बात नहीं सोचूंगा। मैं उसी प्रकार उसका अनुसरण करने को बाध्य हूँ जैसे सुई चुम्बक का अनुसरण करती है। अब अगर यहाँ से जाना सम्भव भी हो तो मैं नहीं जाऊँगा। मैं उसे नहीं छोडूंगा; मेरे पांव उसे छोड़कर आगे ही नहीं नहीं बढ़ेंगे। पर मेरा मन अब

भी स्पष्ट है और मैं मन से उसे घृणा करता हूँ—कम से कम सोचता यही हूँ। बड़ी भयानक बात है—और वह ; वह मृत पुरुष। मैं उससे क्या समझ सकता हूँ ? वह मैं था ! मैं बन्धन में बँधने के लिए बिक गया और अपने मूल्य के बदले वह मेरी आत्मा लेकर छोड़ेगी।"

तब पहली बार मैंने उसे बताया कि मेरी स्थिति भी उससे कुछ ज़्यादा अच्छी नहीं है। और मैं यह कहने को बाध्य हूँ कि आयेशा के प्रति अपने आकर्षण के बवजूद लियो ने मेरे प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने की शिष्टता जताई। कदाचित् उसने सोचा हो कि जहाँ तक आयेशा का सम्बन्ध है उसके लिए ईर्ष्या का कोई कारण नहीं है। मैंने उसे सुझाया कि चलो भाग चलें, पर शीघ्र ही हमने इसे व्यर्थ समझकर छोड़ दिया और ईमानदारी की बात तो यह है कि अगर कोई उच्च शक्ति हमें इन दुःखभरी गुफाओं से निकालकर कैम्ब्रिज पहुँचा देने को तैयार भी होती तो हम दोनों में से शायद ही कोई आयेशा को छोड़कर जाने के लिए तैयार होता। जैसे शलभ अपने को जलाने वाली लौ को छोड़कर नहीं जा समता, उसी प्रकार हम भी आयेशा को छोड़कर नहीं जा सकते थे। हमारी दशा पक्के अफीमचियों की-सी हो गई थी ; शान्त विचार के क्षणों में हम अपने कार्य की भयानकता का अनुभव करते थे पर उसके पैशाचिक आनन्द का त्याग करने को तैयार न होते थे।

कोई ऐसा मनुष्य नहीं हो सकता था जो एक बार भी आयेशा को अनावृत्त देखकर या उसकी वाणी का संगीत सुनकर या उसके शब्दों के तीक्ष्ण ज्ञान को पीकर सुख के समुद्र के लिए भी स्वेच्छापूर्वक वह आनन्द छोड़ देता। तब लियो के लिए, जिसके प्रति इस असाधारण स्त्री ने दो हज़ार वर्ष तक अपनी अपूर्व निष्ठा को बनाये रखा, सोचना कहाँ तक संभव था ?

निस्सन्देह वह दुष्ट थी ; इसमें भी सन्देह नहीं उसने उस्तेन की, जो उसकी राह का काँटा थी, हत्या की थी ; किन्तु साथ ही वह बड़ी वफादार भी थी और ऐसी स्त्री के अपराधों को, विशेषतः जब वह सुन्दरी भी हो और उसी के प्रेम के कारण वे अपराध किए हों, पुरुष स्वभावतः बहुत हलका समझता है।

इसके अलावा किस आदमी को ऐसा अवसर मिला होगा जो इस समय लियो को मिला हुआ था ? सच है कि इस भयानक स्त्री के साथ अपने को जोड़-

कर वह अपने जीवन को दुष्ट प्रवृत्तियों* की एक रहस्यमयी नारी के प्रभाव में छोड़ देगा, पर वैसा तो किसी साधारण विवाह में भी उसके साथ हो सकता था। पर कोई साधारण विवाह उसे ऐसा अप्रतिम सौंदर्य, ऐसी दिव्य निष्ठा, ऐसा ज्ञान, प्रकृति के रहस्यों पर ऐसा नियन्त्रण तथा उनसे प्राप्त शक्ति एवं मर्यादा और सब के ऊपर अक्षय यौवन का राजमुकुट नहीं प्रदान कर सकता था। यद्यपि दूसरे किसी भी मनुष्य की भाँति ही लियो कटु लज्जा एवं वेदना

---

* इस बात पर कई मास तक विचार करने के बाद मैं यह कहने को वाध्य हूँ कि मुझे इसकी सत्यता पर विश्वास नहीं है। यह बिल्कुल सत्य है कि आयेशा ने एक हत्या की, पर मैं समझता हूं कि यदि हममें वैसी ही अप्रतिहत शक्ति होती और हमारे हित भी उसी प्रकार खतरे में होते तो समान स्थिति में हम भी वही करते। यह भी याद रखना चाहिए कि उसने अपनी आज्ञा के उल्लंघन के लिए यह दण्ड दिया, और उस प्रणाली में जरा-सी हुक्म-अदूली की सजा भी मृत्य थी। इस हत्या की बात छोड़ दें तो उसकी बुराई यहीं तक रह जाती है कि वह ऐसे विचारों को व्यक्त करती थी जो हमारे आचरण नहीं तो उपदेश के विरुद्ध पड़ते हैं। पर यदि हम व्यक्ति के पुरातन इतिहास की खोज करें तो इस नतीजे पर पहुंचेंगे कि यह सब आयु और कटु अनुभवों और मर्मभेदिनी निरीक्षण शक्ति से प्राप्त प्रेरणाओं के सिवा और कुछ न था। यह आम बात है कि ज्यों ज्यों हमारी उम्र बढ़ती है, हम कठोर होते जाते हैं तथा बचपन की बातों को भूलते जाते हैं और केवल मृत्यु ही हमें नैतिक विनाश से बचाती है। कम आयु के लोग उन प्रथाओं एवं परम्पराओं की दासता से अपेक्षाकृत मुक्त होते हैं, जिन पर अधिक आयु के लोग बुराई-भलाई को तोलते हैं। अब देखिए; दुनिया का बूढ़े से बूढ़ा आदमी भी आयेशा के सामने बच्चे के समान था और बुद्धिमान से बुद्धिमान को भी उसके ज्ञान का तिहाई भी ज्ञान न था। उसके ज्ञान का सार यही था, कि एक ही चीज जीवन को जीने योग्य बनाती है और वह चीज है प्रेम, प्रेम अपने सर्वोच्च भाव में। और उसे पाने के लिए वह अन्य बातों की परवा न करती थी। यही उसकी दुष्टता का सार है। फिर यह भी याद रखना चाहिए कि इसके साथ ही उसमें असाधारण सीमा तक विकसित कुछ गुण भी थे जैसे उसकी निष्ठा की स्थिरता।

का अनुभव करता था किन्तु इस असाधारण सम्पदा से भाग भी नहीं सकता था।

मेरी तो यह राय है कि यदि वह ऐसा करता तो मैं उसे पागल समझता। पर मैं स्वीकार करता हूँ कि इस विषय में मेरे विचारों को सावधानी के साथ ग्रहण करना चाहिए। मैं खुद आज तक आयेशा को प्यार करता हूँ और दुनिया की दूसरी किसी भी स्त्री के जीवन-व्यापी प्रेम की अपेक्षा उसके एक सप्ताह के प्यार को, यदि मैं पा सकता तो, ज्यादा अच्छा समझता। जो कोई मेरे इस वक्तव्य पर सन्देह करता होगा वह भी अगर आयेशा को घूंघट के बाहर एक बार देख लेता तो वही कहता जो मैं कह रहा हूँ। निश्चय ही मैं पुरुष की बात कर रहा हूँ, क्योंकि आयेशा के विषय में किसी स्त्री की राय जानने का लाभ हमें नहीं मिला, पर यह बहुत सम्भव है कि दूसरी स्त्री रानी के ढंग को नापसन्द करती और नष्ट कर दी जाती।

कोई दो घण्टे से ज्यादा समय तक मैं और लियो अपनी शिथिल नाड़ियों और भयत्रस्त आँखों के साथ बैठे रहे और उन विचित्र घटनाओं पर बातचीत करते रहे जिनके बीच से हम गुज़र रहे थे। एक गंभीर तथ्य की जगह यह सब परियों के आख्यान जैसा मालूम होता था। कौन विश्वास कर सकता था कि ठीकरे का लेख न केवल ठीक था बल्कि हमने स्वयं अपने जीवन में उसे प्रमाणित देखा, और कोर की कब्रों के बीच वह हमारे आगमन की प्रतीक्षा में हज़ारों वर्ष से बैठी थी? कौन सोच सकता था कि लियो के रूप में वह रहस्यमयी नारी उस आत्मा को पा जायगी जिसके मृत पार्थिव शरीर को वह शताब्दियों से सुरक्षित रखे हुए उसके पुनरागमन की प्रतीक्षा कर रही थी? पर बात ऐसी ही थी। जो कुछ हमने अपनी आँखों देखा उसे देखकर इसके सत्य में किसी प्रकार की शंका करना हमारे जैसे साधारण बुद्धि के आदमियों का काम नहीं है। इसलिए अन्त में, विनीत हृदय तथा मानवीय ज्ञान की असमर्थता की गहरी भावना तथा अनुभव न रखते हुए भी, ऐसी बातों को झूठ बताने के दुस्साहस पर आश्चर्य करते हुए हमने निद्रादेवी की शरण ली और अपने भाग्य को भगवान् भरोसे छोड़ दिया, जिसने मानवीय अज्ञान के घूंघट को हटाकर जीवन की अमित संभावनाओं की एक झाँकी हमें करा दी थी।

अध्याय २२

जाब का दुःस्वप्न

दूसरे दिन सुबह ९ बजे थे जब जाब—जो अभी तक त्रस्त और भयभीत लगता था—मुझसे मिलने आया। मुझे और लियो को जीवित देखकर वह खुश हुआ और उसने ईश्वर का धन्यवाद किया। उसे यह आशा नहीं थी कि हम उसे जिन्दा मिलेंगे। जब हमने अभागी उस्तेन की हत्या की कहानी उसे सुनाई तो हमारे जीवित रहने पर उसने ईश्वर का और भी धन्यवाद किया, पर उस्तेन की हत्या पर उसे बड़ा ही दुःख हुआ—यद्यपि उस्तेन का व्यवहार उसके प्रति बहुत अनुकूल न था, न वही उस्तेन का विशेष सम्मान करता था; दोनों एक दूसरे को चिढ़ाते रहते थे पर इस संकट के समय में वे बातें भूल गईं और रानी के हाथ उसकी इस दुर्दशा की कहानी सुनकर उसे बड़ी चोट लगी।

जाब ने कहा—"आपको बुरा लगेगा इसलिए मैं ज्यादा कुछ कहना नहीं चाहता। पर मेरी राय में यह स्त्री वस्तुतः मानुषी नहीं है। वह चुड़ैल शैतान है या शैतान की पत्नी है, जो कब्र से निकलकर यह खेल खेल रही है। अकेला शैतान भी इतना दुष्ट नहीं हो सकता। यह भूत-प्रेतों का देश है और यह औरत उन पर राज्य करती है। यह जो चाहे कर सकती है। इसके सामने जादूगरनी की क्या बिसात है? हम इसके चंगुल में फँस गए हैं। अगर हम यहाँ से निकल गए तो अपना अहोभाग्य समझेंगे। पर यह कहां सम्भव है? इससे निकलने का कोई रास्ता हमें तो नहीं दिखाई देता। श्री लियो जैसे सुन्दर युवक को पाकर यह चुड़ैल उसे क्यों जाने देगी?"

मैंने कहा—"आओ, आओ। कुछ हो, उसने ही उसके प्राणों की रक्षा की है।"

"हाँ और बदले में उसकी आत्मा लेकर छोड़ेगी। वह उसे भी अपनी तरह एक जादूगर बना डालेगी। मैं कहता हूँ कि ऐसे लोगों से सम्बन्ध रखना भी बुरा है। कल रात मुझे नींद नहीं आई इसलिए मैं जागता और अपनी माँ की दी हुई बाइबिल पढ़ता रहा। इसमें जादूगरनियों तथा उस प्रकार के अन्य लोगों

का क्या हाल होगा, यह बताया गया था। पढ़ते-पढ़ते भय के मारे मेरे सिर के बाल खड़े हो गए। अगर मेरी बुढ़िया माँ मुझे इस स्थिति में देख ले तो उसको कैसा आश्चर्य होगा ?"

"हां जाब, यह एक विचित्र देश है और यहाँ के निवासी भी बड़े विचित्र हैं"—मैंने लम्बी साँस लेकर कहा, यद्यपि मैं जाब की भाँति मूढ़ विश्वासी नहीं हूँ, पर मैं मानता हूँ कि कुछ ऐसी बातें ज़रूर हैं जो खोजकर नहीं जानी जा सकतीं।

उसने कहा—"हाँ साहब ! आप ठीक कहते हैं। यदि आप मुझे निपट मूर्ख न समझें तो मैं आप से इस समय, जब श्री लियो बाहर हैं (लियो तड़के उठकर कहीं घूमने निकल गया था) कुछ कहना चाहता हूँ और वह यह है कि दुनिया में मेरी सैर का यही अन्तिम देश है। मैंने कल रात एक सपना देखा। सपने में मेरे बूढ़े पिता दिखाई पड़े। वह एक रात्रिकालीन कमीज़ पहने हुए थे—वैसी ही जैसी यहाँ के लोग विशेष अवसरों पर पहनते हैं। उसके हाथ में मुट्ठी भर वह घास थी जो उसने यहाँ आने के मार्ग में एकत्र की होगी, क्योंकि इस पाशविक गुफा के द्वार से लगभग ३०० गज़ की दूरी पर मैंने ढेर की ढेर वैसी घास देखी थी।

"मेरे बाप ने बड़ी संजीदगी से कहा—"जाब ! तेरा समय पूरा हो गया है, पर मैं नहीं समझता था कि तुझे ढूंढ़ने के लिए मुझे इतनी दूर आना पड़ेगा। मैं बड़ी कठिनाई से तेरा पता लगा सका। अपने बूढ़े बाप को इस तरह दौड़ाना कोई मित्रतापूर्ण कार्य नहीं है। इस कोर से दुष्टों के समूह के समूह निकले हैं।"

"नियमित सावधानी रखनी चाहिए।" मैंने सुझाया।

"जाब ने उदास होकर कहा—"हाँ साहब ! इसमें सन्देह ही क्या है ? उनके गर्म घड़े से मारने की क्रिया को जानते हुए और क्या कहा जा सकता है। जो भी हो, मेरा समय पूरा हो गया है और मेरे पिता की आत्मा का कहना था कि मैं शीघ्र ही उसके पास पहुँच जाऊँगा।"

मैंने कहा—"पर मुझे विश्वास है कि इससे तुम यह न समझे होगे कि अपने पिता को सपने में देखने के कारण तुम्हारी मृत्यु निकट आ गई है। अगर कोई अपने पिता को सपने में देखने के कारण मर जाय तो फिर उसका क्या होगा जो अपनी सास को सपने में देखता है ?"

जाब ने कहा—"आप तो मज़ाक कर रहे हैं। पर आप मेरे बाप को नहीं जानते; अगर दूसरा कोई होता तो मैं उसकी परवा न करता। १७ बच्चों का बाप होकर भी वह बड़ा ही अलहदी था और वह सिर्फ़ यह स्थान देखने के लिए इतनी दूर आने का कष्ट कदापि नहीं उठा सकता। मैं जानता हूँ कि वह मतलब से आया था। मैं इस स्वप्न पर विश्वास करता हूँ। फिर सबको एक न एक दिन तो जाना ही है, यद्यपि इस कुलिया में मरना—जहाँ ईसाई प्रथा से दफनाने की सम्भावना अपने शरीर की तौल का सोना देने पर भी नहीं है—बड़ा बुरा है। जनाब, मैंने सदा अच्छा बनने की कोशिश की और ईमानदारी के साथ अपने कर्त्तव्य का पालन किया, और जिस रूप में पिता ने कल सपने में मुझे मेरा समय समाप्त होने की बात बताई, वह न देखता तो मैं अवश्य ही इस समय शान्तचित्त होता। जो भी हो। मैंने आपकी और श्री लियो की ईमानदारी से सेवा की है और यदि कभी आप इस जाल से निकल जायँ—क्योंकि पिता ने आपके बारे में तो कुछ नहीं कहा—तो कृपया मेरे बारे में अपनी शुभ भावनाएँ बनाये रखिएगा और फिर कभी फूलदानों पर लिखे यूनानी लेखों के फेर में न पड़िएगा।"

मैंने गम्भीरता से कहा—"बस जाब! बस। यह सब तेरा पागलपन है। तुम्हें ऐसी बातें अपने दिमाग़ में भर लेने की मूर्खता नहीं करनी चाहिए। हमने जीवन में बहुत-सी अजीब बातें देखी हैं और आगे भी देखते रहेंगे।"

जाब ने कुछ ऐसे विश्वास से उत्तर दिया कि मुझे बहुत बुरा लगा—"नहीं साहब! यह पागलपन नहीं है। मेरा समय आ गया है और मैं एक अद्भुत घबराहट का अनुभव कर रहा हूँ क्योंकि कोई मृत्यु के आगमन पर आश्चर्य किए बिना नहीं रह सकता। यदि आप भोजन कर रहे हैं तो आप जहर की कल्पना करते हैं और सारा भोजन आपके पेट के लिए हानिकर हो जाता है; यदि आप अन्धेरी गलियों में चल रहे होते हैं तो छुरे की कल्पना सिर पर सवार हो जाती है और आप काँप उठते हैं। उस अभागी लड़की का उदाहरण तो सामने ही है, यद्यपि मैं उसके बारे में सदा कठोर रहा क्योंकि जिस जल्दबाज़ी में उसने शादी की उसे मैं शिष्टता के विरुद्ध समझता था। फिर भी साहब, मैं समझता हूँ कि गर्म घड़े से मेरी मृत्यु न होगी।"

मैंने क्रोधपूर्वक कहा—"क्या वाहियात बकता है?"

जाब ने कहा—"बहुत अच्छा साहब ! मेरे लिए उचित नहीं कि आपसे बहस करूँ, पर इतना अवश्य कहूँगा कि आप जहाँ कहीं जा रहे हों मुझे अपने साथ ले चलें ताकि जब मैं मरूँ तो आपके सामने ही मरूँ और मेरी आँखों के सामने एक मैत्रीपूर्ण मुख हो। और साहब, अब मैं आपके लिए नाश्ता लाता हूँ।" और मुझे बेचैनी की हालत में छोड़कर वह चला गया।

मैं जाब को बहुत चाहता था। वह बड़ा ही अच्छा और ईमानदार आदमी था। मेरे लिए वह सेवक से भी अधिक मित्र था और उसको कुछ होने के विचार मात्र से मेरे गले से रुलाई फूट पड़ी। इस वाहियात बातचीत के बाद भी मैं देख रहा था कि उसका विश्वास इस बात में बहुत दृढ़ है कि कुछ न कुछ होने वाला है, और यद्यपि प्रायः ऐसे मूढ़ विश्वास अन्त में गलत निकलते हैं—फिर इस मामले में तो भयानक एवं असाधारण परिस्थितियों का जाब के मन पर बुरा असर पड़ना और उसे अस्थिर कर देना स्वाभाविक था—फिर भी इन बातों के कारण मेरा हृदय कुण्ठित हो गया।

थोड़ी देर में नाश्ता आ गया और इसी समय लियो भी लौट आया। लियो से मालूम हुआ कि वह अपने चित्त को शान्त करने के लिए गुफा के बाहर घूमने निकल गया था। जाब और लियो दोनों को देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई और मन से चिन्ता का बोझ उतर गया। नाश्ता करके हम फिर घूमने चले गए। कुछ अमाहज़र खेत जोतकर उसमें अन्न की बुवाई कर रहे थे। ढंग बहुत पुराना था। एक आदमी की कमर में बकरी की खाल का एक बैग बँधा था जो उछलता कूदता चलता था और उसके इस प्रकार उछलने कूदने से अन्न के बीज निकलकर इधर-उधर बिखरते जाते थे। इन भयानक आदमियों को यह काम करते देख मन को कुछ शान्ति पहुँची, क्योंकि शेष मानवता के साथ उनके सम्बन्ध का यही एकमात्र सूत्र था।

जब हम लौट रहे थे तो रास्ते में बिल्लाली मिला और उसने बताया कि श्री ने आप लोगों को बुलाया है। इसलिए हम सब डरते हुए वहाँ पहुँचे क्योंकि आयेशा का क्या भरोसा था ? वह सब नियम-बन्धन के परे थी। उसके संसर्ग से वासना, आश्चर्य एवं भय उत्पन्न होते थे पर अपमान की भावना नहीं उत्पन्न होती थी।

सदा की तरह गूंगी लड़कियाँ हमें अन्दर ले गईं। उनके चले जाने के

बाद आयेशा ने घूंघट हटा दिया, और लियो से आलिंगन करने के लिए कहा और कल रात की सब बातों को भूलकर लियो ने बड़ी शीघ्रता एवं तत्परता से उसकी इच्छा की पूर्ति की। यहाँ तक कि शिष्टाचार का भी कुछ विचार न किया।

उसने अपना गोरा हाथ उसके सिर पर फेरा और प्यार भरे नयनों से उसकी ओर देखने लगी। उसने कहा—"ऐ प्यारे कालिक्रेटीज़ ! तुम कब मुझे पूर्णतः अपनी बना लोगे और कब हम सचाई के साथ एक दूसरे के और एक दूसरे के लिए हो जायंगे ? मैं तुम्हें बताती हूँ। पहले तुम मेरे जैसे हो जाओ। अमर नहीं क्योंकि अमर तो मैं भी नहीं हूँ पर इतने दृढ़ अवश्य कि काल के बाण तुम्हारे जीवन के कवच पर यों चमककर रह जायँ जैसे सूर्यकिरण जल पर चमक उठती है। अभी मैं तुम से नहीं मिल सकती क्योंकि तुम कुछ दूसरे हो, मैं कुछ और हूँ। मेरा तेज तुम्हें जला देगा और तुम्हें समाप्त कर देगा। तुम देर तक मेरी तरफ़ देख भी नहीं सकते क्योंकि इससे तुम्हारी आँखें दुखने लगेंगी और तुम्हारी बुद्धि भ्रमित हो जाएगी, इसलिए"—ज़रा अदा के साथ—"मैं फिर घूंघट डाल लेती हूँ।" (उसने कहा तो पर ऐसा किया नहीं।) "नहीं; सुनो। तुम्हारी सहन-शक्ति से ज़्यादा तुम्हारी परीक्षा न लेनी चाहिए। आज ही शाम को, सूर्यास्त के एक घण्टा पहले, हम सब यहाँ से रवाना हो जायँगे और कल शाम तक—अगर सब कुछ ठीक-ठीक होता गया और मैं रास्ता न भूली तो हम सब 'जीवन स्थान'—अमृत स्थान—तक पहुँच जायँगे। वहाँ तुम उस अग्नि में नहाओगे और उससे दिव्य होकर निकलोगे, जैसा कि तुम्हारे पहले कोई पुरुष नहीं निकला। कालिक्रेटीज़ ! तब मैं तुम्हारी पत्नी और तुम हमारे पति, हमारे स्वामी बनोगे।"

इस अद्भुत वक्तव्य पर लियो कुछ बुदबुदाया पर मैं सुन न सका। उसके भ्रम पर किञ्चित् हँसकर वह बोली—"होली ! तुम्हें भी मैं उस अमृत का लाभ दूंगी, तब तुम भी सदा बहार की तरह हो जाओगे। मैं जरूर ऐसा करूँगी क्योंकि मैं तुमसे खुश हूँ। ज्यादातर मनुष्यों की तरह तुम निपट मूर्ख नहीं हो और यद्यपि तुम्हारी तात्त्विक विचारधारा पुराने ज़माने की विचारधाराओं के समान ही मूर्खतापूर्ण है, फिर भी किसी नारी के नयनों के विषय में एक सुन्दर वाक्य कहना अभी तक भूले नहीं हो।"

लियो ने पहले की तरह खुश होकर कहा—"वाह चचा ! तुम भी चाटुकारी करते रहे हो ? तुम्हारे बारे में मैं ऐसा ख्याल नहीं करता था !"

जितनी भी शालीनता मैं बटोर सकता था, उसके साथ मैंने जवाब दिया—"ऐ श्रायेशा ! मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, किन्तु यदि कोई ऐसा स्थान हो भी जैसा आप कहती हैं और उस स्थान में ऐसी गुणमयी अग्नि हो जो मौत को टाल सकती है, तो भी मैं उसे नहीं चाहता। ऐ आयेशा ! यह दुनिया मेरे लिए ऐसा मुलायम आशियाँ नहीं रही है कि मैं सदा उसमें रहने की इच्छा करूँ। हमारी धरती-माता का हृदय पत्थर का है और वह अपने बच्चों को दैनिक भोजन में रोटियों की जगह पत्थर ही देती है। खाने के लिए पत्थर, प्यास बुझाने के लिए तिक्त जल और दुलार-प्यार के लिए कोड़े ! कौन इन दुःखों को अनेक जीवनों तक सहना चाहेगा ? कौन अपनी पीठ पर बीते दिनों और प्रेम की स्मृतियाँ, अपने पड़ोसी के दुःख जिसे वह कम नहीं कर सकता, तथा ज्ञान जिससे शान्ति नहीं मिलती, लादकर चलना चाहेगा ? मरना अवश्य कठिन है क्योंकि हमारा कोमल मांस उस कीटाणु से, जिसे वह देख नहीं सकता, उस अज्ञात से जो पर्दे के पीछे छिपा हुआ है, डरकर सिसक जाता है पर मेरी समझ से, ऊपर से हरा-भरा और सुन्दर पर अन्दर से जीर्ण और मृत होकर जीना और स्मृति के कीट का सदा हृदय को छेदते रहना और भी कठिन है।"

वह बोली—"फिर सोच लो, होली ! इन बातों के होते हुए भी दीर्घ-जीवन, शक्ति और अक्षय सौन्दर्य से वे सब वस्तुएँ प्राप्त होती हैं जो मनुष्य को प्रिय हैं।"

मैंने उत्तर दिया—"हे रानी ! वे क्या वस्तुएँ हैं जो मनुष्य को प्रिय हैं ? क्या वे पानी के बुलबुले जैसी नहीं हैं ? क्या आकांक्षा उस अन्तहीन सीढ़ी के समान नहीं है जो जितना ही उस पर चढ़ते हैं वह आगे और आगे बढ़ती जाती है ? वह ऊँचे से ऊँचे—और ऊँचे ले जाती है जहाँ कोई विश्राम-स्थल नहीं है; और डण्डे पर डण्डे बढ़ते जाते हैं, जिनकी संख्या की कोई सीमा नहीं। क्या ऐश्वर्य भोगते-भोगते उसी से घृणा नहीं हो जाती जब वह एक घण्टे की मनःशान्ति देने में असमर्थ हो जाता है ? और क्या ज्ञान की भी कोई सीमा है जहाँ हम पहुँचने की आशा करें ? जितना ही हम जानते हैं उतना ही हमारा अज्ञान हमारे आगे प्रकट होता जाता है। यदि हम दस हज़ार वर्ष तक जीवित रहें तो

भी क्या सूर्यों और सूर्यों के आगे जो अवकाश है तथा जिन हाथों ने इन्हें आकाश में लटका रखा है उनके रहस्य को जान सकेंगे ? क्या हमारा ज्ञान हमारी चेतना को कुरेद कर हमारी आत्माओं की रिक्त कामनाओं का ढोल न पीटता रहेगा ? क्या वह इन महती गुफाओं में जलने वाले उस दीप-ज्योति के समान न होगा जो जितना ही तेज़ जलती है उतना ही अपने चतुर्दिक् के अन्धकार को व्यक्त करती है ? इनके अतिरिक्त वह कौन-सी चीज है जो दीर्घ जीवन से प्राप्त हो सकती है ?''

"नहीं, नहीं, मेरे होली । एक और वस्तु है । वह वस्तु है प्रेम । प्रेम जो सब वस्तुओं को सुन्दर बना देता है और जिस धूल में हम चलते हैं उसे दिव्यता प्रदान करता है । प्रेम को पाकर जीवन के वर्ष पर वर्ष सुखपूर्वक बीतते हैं, किसी महान् संगीत की तान की भाँति जो श्रोता को मुग्ध कर लेता है और पृथ्वी के दुःख एवं प्रवञ्चना से ऊपर गरुड़ के पंखों पर उड़ाते हुए उसे स्वर्ग की ओर ले जाता है ।''

मैंने उत्तर दिया—"ऐसा हो सकता है । पर यदि प्रेमपात्र टूटे वाद्य के समान केवल कलेजा छेदे या प्रेम निष्फल हो जाय तब क्या होगा ? तब क्या मनुष्य अपनी वेदना को पत्थर पर अंकित करेगा जब कि उसको उसे लिखने के लिए जल की आवश्यकता है ? नहीं, आयेशा ! मैं केवल अपनी अवधि भर जीना चाहता हूँ । मैं अपनी पीढ़ी के लोगों के साथ बूढ़ा होऊँगा, नियत समय पर मर जाऊँगा तथा विस्मृत हो जाऊँगा । मुझे उस अमरत्व की प्यास है जिसके सामने तुम्हारे द्वारा दिया जाने वाला दीर्घायु का प्रसाद तुच्छ है, महान् जगत् के सामने तुच्छ एक अँगुली-प्रमाण के समान । और सुनें, जिस अमरता की ओर मैं देखता हूँ और जिसे देने का आश्वासन मेरा धर्म मुझे देता है, उन सब बन्धनों से मुक्त होगी जो यहाँ मेरी आत्मा को बाँधे रहेंगे । क्योंकि जब तक मांस है, शरीर है तब तक दुःख एवं बुराई तथा पाप के वृश्चिक दंश भी रहेंगे, किन्तु जब हमारा शरीर हम से जुदा हो जायगा तब आत्मा अनन्त श्रेय का उज्ज्वल वस्त्र पहनकर चमक उठेगी और उससे श्रेयस्करी भावनाओं की वह श्वास-धारा फूटेगी कि हमारी मनुष्यता की सर्वोच्च अभिलाषाएँ या एक बाला की प्रार्थना की पवित्रतम सुगन्ध भी उसमें तैर न पायेगी ।''

किञ्चित् हँसकर आयेशा बोली—"क्या बात है ! इस समय तुम ऊँचा उड़

रहे हो और तुरही की भाँति ज़ोर से बोल रहे हो। अभी-अभी तुमने उस अज्ञात की चर्चा की थी जिस पर पर्दा पड़ा हुआ है। तुम अपनी निष्ठा की आँखों से उस प्रकाश को देखते हो—अपनी कल्पना के रंगीन चश्मे से। इस प्रकार मनुष्य अपनी निष्ठा की कूँची से भावी की विचित्र-विचित्र तस्वीरें खींचता है! कल्पना की बहुरंगी तस्वीरें! आश्चर्य तो यह है कि एक तस्वीर भी दूसरी से नहीं मिलती! मैं तुम्हें बता सकती हूँ—पर क्या फायदा? एक मूर्ख को उसके तुच्छ खिलौने से, उसके मनमोदक से क्यों वञ्चित किया जाय? खैर, इसे जाने दो पर होली! मैं फिर भी कहती हूँ कि जब तुम अनुभव करोगे कि बुढ़ापा धीरे-धीरे तुम पर छाता जा रहा है और जीर्णायु की भोथर धार तुम्हारे दिमाग में भयंकर उत्पात मचा रही है तब तुम शायद पछताओगे कि ऐसे महाप्रसाद को क्यों छोड़ दिया। पर सदा ही ऐसा हुआ है। मनुष्य कभी उस चीज़ से सन्तुष्ट नहीं होता जो उसके हाथ पकड़ ले सकते हैं। यदि उसके अँधेरे मार्ग को प्रकाशित करने के लिए एक लघु दीप जलता है तो वह इसलिए उसे ठुकरा देता है कि वह तारा क्यों नहीं है! आनन्द उसके पैरों के आगे एक क़दम पर नाचता है जैसे बड़वाग्नि और उसे आग को मुट्ठी में करना है, तारे को जीतना है। सौन्दर्य का तिरस्कार करता है क्योंकि उससे अधिक मधुराधर होंगे; धन तुच्छ है क्योंकि दूसरे अपने (धन के) बोझ से उसे लज्जित कर सकते हैं; यश एक रिक्तता-सा लगता है क्योंकि उससे बड़े भी यशस्वी हो चुके हैं। तुम्हीं ऐसा कहते हो और मैं तुम्हारे ही शब्दों का तुम्हारे विरुद्ध प्रयोग कर रही हूँ। तुम चाँद पकड़ने का सपना देख रहे हो। मैं इसमें विश्वास नहीं करती और इस कल्पना में दीपक को फेंक देने पर तुम्हें मूर्ख कहती हूँ।"

मैंने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया क्योंकि मैं उससे यह नहीं कह सकता था, विशेषतः लियो के सामने, 'जब से मैंने तुम्हारा मुँह देखा है तबसे तुम्हारी सूरत सदा मेरी आँखों के आगे नाचा करती है, और शायद सदा ऐसा ही रहेगा। इसलिए मैं नहीं चाहता कि ज़्यादा जीकर तुम्हारी याद में छटपटाता रहूँ और निष्फल, अतृप्त प्रेम की कटुता में घुला करूँ।' पर शोक, बात यही थी और आज तक भी मेरी वही दशा है।

उसने अपना स्वर एवं विषय बिल्कुल बदलकर कहा—"और अब, ऐ कालिक्रेटीज़! मैं तुमसे यह पूछना चाहती हूँ कि यहाँ तुम मेरी खोज में कैसे

आए ? कल रात तुमने कहा था कि कालिक्रेटीज़—वही जिसे तुमने मृत रूप में देखा था—तुम्हारा पुरखा था। कैसे ? बोलो, तुम तो बहुत कम बोलते हो।''

लियो ने आयेशा को सन्दूक और उस ठीकरे की सम्पूर्ण कहानी कह सुनाई जिस पर उसकी पूर्वजा मिश्री अमीनार्त्ता का लेख अंकित था। आयेशा बड़े गौर से सुनती रही और जब वह पूरी कहानी सुना चुका तब मुझसे बोली :

''क्यों होली ! तुम्हें याद है कि जब पाप-पुण्य पर हमारे तुम्हारे बीच बात हुई थी और मेरा यह प्यारा बीमार पड़ा हुआ था, तब मैंने तुमसे कहा था कि कभी-कभी भलाई से बुराई और बुराई से भलाई पैदा हो जाती है—जो बोते हैं वे नहीं जानते कि फसल कैसी होगी, न आघात करने वाला ही जानता है कि उसका घूंसा कहाँ पड़ेगा ? अब देखो, यह मिश्री अमीनार्त्ता, यह नील घाटी की राजकुमारी, जो मुझे घृणा करती थी और जिसे मैं अब तक घृणा करती हूँ—क्योंकि एक प्रकार से मेरे विरुद्ध उसकी चल गई—वही, खुद वही अपने प्रेमी को मेरी बाहों में भेजने के लिए यहाँ का मार्ग दिखलाने वाली बन गई। उसी औरत के लिए मैंने इसे मारा और अब देखो, उसी के द्वारा यह मेरे पास लौट आया है ! वह मेरा बुरा चाहती थी और उसने ऐसे बीज बोये कि मुझे तुच्छ घास हाथ आवे पर देखो उसने मुझे वह चीज़ दी जो सारी दुनिया मिलकर भी नहीं दे सकती। पर होली ! तुमने अपने लिए एक अद्भुत वर्ग की कल्पना कर रखी है जिसमें तुम्हारे पाप-पुण्य, बुराई-भलाई के वृत्त 'फिट' हो जाते हैं।''

थोड़ा रुककर वह कहती गई—''हाँ, तो उसने अपने पुत्र को आदेश दिया कि अगर वह मार सके तो मुझे मार दे क्योंकि मैंने उसके पिता को मारा था। और ऐ कालिक्रेटीज़ ! तुम्हीं वह पिता हो, और इसी तरह तुम्हीं वह पुत्र हो। क्या तुम अपने प्रति और अपनी सुदूरस्थिता माँ के प्रति किए हुए अन्याय का बदला मुझ से लेना चाहते हो ? ओ कालिक्रेटीज़ ! देखो'', वह घुटनों के बल झुक गई और अपनी धवल छाती से वस्त्र हटाकर बोली—''देखो, यहाँ मेरा हृदय धड़कता है, और वहाँ तुम्हारे पास छुरा है, भारी और लम्बा छुरा, तेज धार वाला छुरा, एक अपराधिनी नारी को मारने लायक छुरा ! उसे उठाओ और बदला ले लो ! मारो ! ठीक जगह पर आघात करो जिससे तुम्हें सन्तोष हो जाय कालिक्रेटीज़ ! और फिर सुखी होकर जीवन बिताना क्योंकि तब तुम

अन्याय का बदला ले चुके होगे और अतीत के आदेश को पूर्ण कर चुके होगे।"

लियो ने उसकी ओर देखा ; तब अपना हाथ बढ़ा दिया और उसे पुनः उसके पाँवों पर खड़ा कर दिया।

व्यथापूर्ण स्वर में वह बोला—"आयेशा उठो ! तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैं तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचा सकता, नहीं, नहीं, उसके लिए भी नहीं, जिसे कल रात तुमने मार दिया। मैं तुम्हारे वश में हूँ ; तुम्हारा दास हूँ। मैं तुम्हें कैसे मार सकता हूँ ?—तुम्हें मारने के पूर्व मैं स्वयं अपने को मार लूंगा।"

उसने हँसते हुए उत्तर दिया—"कालिक्रेटीज ! तब तो तुमने मुझे प्यार करना शुरू कर दिया। अब मुझे अपने देश की बात बताओ—तुम्हारा राष्ट्र उत्कृष्ट होगा ; है न ? एक साम्राज्य से युक्त, रोम की भाँति ? निश्चय ही तुम वहाँ लौटोगे और यह अच्छा ही होगा क्योंकि मैं नहीं चाहती कि तुम कोर की इन कन्दराओं में रहो। नहीं, ज्यों ही तुम मेरी तरह बन जाओगे, हम यहाँ से चल देंगे। डरो नहीं, मैं कोई न कोई रास्ता खोज निकालूंगी, और तब हम तुम्हारे इंग्लैंड की यात्रा पर रवाना हो जायँगे और अपनी मर्यादा के अनुकूल रहेंगे। दो हजार वर्ष तक मैंने इसीलिए प्रतीक्षा की है कि इन घृणित गुफाओं और इन मातमी सूरत वाले आदमियों को फिर न देखना पड़े। अब वह समय आ ही गया है और मेरा हृदय उसके लिए यों तड़प रहा है जैसे बच्चे का मन छुट्टी के दिन के लिए तड़पता है क्योंकि तुम इस इंग्लैंड पर राज्य करोगे—"

लियो ने जल्दी से बात काटकर कहा—"लेकिन हमारे यहाँ तो एक रानी राज कर ही रही है।"

आयेशा बोली—"वह कुछ नहीं है, वह कुछ नहीं है। उसे गद्दी से उतारा जा सकता है।"

इस पर हम दोनों उद्विग्न होकर चीख पड़े कि उसकी जगह हम अपने को ही उठा फेंकना ज्यादा अच्छा समझेंगे।

चकित होकर आयेशा बोली—"यह विचित्र बात है ! ऐसी रानी, जिसे सारी प्रजा चाहती है। निश्चय ही जब से मैं 'कोर' में आकर रह रही हूँ, दुनिया बहुत बदल गई है।"

हमने उसे समझाया कि बादशाहों का रूप अब बदल गया है और जिस

सम्राज्ञी के अधीन हम रह रहे हैं उसको उसके विस्तृत राज्य में सभी शुभ विचारों के लोग प्यार और सम्मान करते हैं। हमने उसे यह भी बताया कि हमारे देश में वास्तविक शक्ति प्रजा के हाथ में है, वस्तुतः हम जनता के निम्न एवं सब से कम शिक्षित वर्गों द्वारा शासित हो रहे हैं।

उसने कहा—"तो यह कहो कि प्रजासत्तात्मक राज्य है—तब तो वहाँ कोई स्वेच्छाचारी शासक भी होगा क्योंकि मैंने बहुत देखा है कि प्रजासत्तात्मक राज्यों में अपना स्पष्ट संकल्प नहीं होता और वे अन्त में स्वेच्छाचारी को खड़ा कर देते हैं और फिर उसकी पूजा करते हैं।"

मैंने कहा—"हाँ, हममें स्वेच्छाचारी भी हैं।"

उसने कहा—"तब ठीक है। हम इन स्वेच्छाचारियों को नष्ट कर सकते हैं, और तब कालिक्रेटीज देश पर हुकूमत करेगा।"

मैंने तुरन्त ही आयेशा को सूचित किया कि वहाँ फूंक मारकर उड़ाना कोई तमाशा नहीं है कि बिना किसी भय के किया जाय। किसी भी ऐसे प्रयत्न पर कानून द्वारा विचार किया जायगा, जिसका अन्त शायद फाँसी के तख्ते पर जाकर हो।

वह घृणा के साथ हँसी—"कानून ! कानून ! ऐ होली, क्या तुम नहीं जानते कि मैं कानून के ऊपर हूँ, और कालिक्रेटीज की भी वही स्थिति रहेगी ? हमारे लिए सम्पूर्ण मानवीय कानून वैसे ही हैं जैसे पहाड़ के लिए उत्तरी वायु। वायु पर्वत को झुका पाती है ? या पर्वत वायु को झुकाता है ?

"और मैं कहती हूँ कि अब तुम जाओ, और मेरे प्यारे कालिक्रेटीज़ तुम भी, क्योंकि मैं अपनी यात्रा की तैयारी करूँगी। तुम दोनों को और तुम्हारे नौकर को भी तैयारी करनी है। पर अपने साथ ज़्यादा कपड़े वगैरा सामान न लेना क्योंकि मेरा ख्याल है कि हमें सिर्फ़ तीन दिन लगेंगे। उसके बाद हम यहाँ लौट आयेंगे। और यहाँ आकर मैं कोर की इन गुफाओं को सदा के लिए नमस्कार करने की योजना बनाऊँगी। हाँ, मेरा हाथ चूम लो !"

इस तरह हम वहाँ से लौटे और हमारे आगे जो समस्या थी उसकी भयानकता पर मैं रास्ते भर सोचता आया। स्पष्ट था कि यह भयंकर आयेशा इंग्लैंड जाने का निश्चय कर चुकी है और जब मैं सोचता था कि इसके वहाँ पहुँचने का क्या परिणाम होगा तो भय से काँप उठता था। मैं उसकी शक्तियों को

College
...INAGAR

अच्छी तरह जानता था और मैं यह भी जानता था कि वह पूरी तरह उनका प्रयोग करेगी। उसे थोड़ी देर के लिए नियन्त्रण में रखा जा सकता था पर निश्चय था कि उसकी दर्पपूर्ण महत्त्वाकांक्षिणी प्रेरणा बंधनमुक्त हो जायगी और शताब्दियों के अपने एकान्त का बदला लेकर रहेगी। अगर अकेले सौंदर्य की शक्ति काम न देगी तो अपने प्रयोजन की पूर्ति तथा अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए वह लोगों को विनष्ट कर अपना मार्ग बनायेगी, और चूंकि वह मर नहीं सकती, न मारी जा सकती है* तो फिर उसे कौन रोक सकेगा? मुझे सन्देह नहीं था कि अन्त में वह ब्रिटिश राज्य पर, बल्कि कदाचित् सारी दुनिया पर, एकछत्र राज्य करेगी। मैं यह भी जानता था कि वह अपनी शक्ति से बहुत शीघ्र हमारे राज्य को संसार का सबसे वैभवशाली एवं ऐश्वर्यवान साम्राज्य बना देगी पर यह सब जीवन की भयंकर बलि के बाद ही संभव होगा।

कहानी एक सपने अथवा किसी कल्पनाशील मस्तिष्क के असाधारण आविष्कार के समान मालूम पड़ी, फिर भी वह सत्य थी—एक अद्भुत सत्य जिसकी ओर शीघ्र ही दुनिया को ध्यान देना पड़ेगा। इन सब बातों का अभिप्राय क्या है? बहुत सोचने के बाद मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि इस अद्भुत स्त्री से—जिसके भावोद्वेग ने उसे शताब्दियों तक बंधन में रखा—परमात्मा संसार की प्रणाली को बदलने, अधिक अच्छा बनाने और ऐसी शक्ति के निर्माण का काम लेना चाहते हैं जिसके विरुद्ध किसी प्रकार का विद्रोह या प्रश्न-चिह्न न खड़ा हो सके, जैसे नियति के आदेशों पर कोई सवाल नहीं किया जा सकता।

---

* मुझे दुःख है कि कभी इस बात का पता न लगा सका कि आयेशा जीवन की आकस्मिक दुर्घटनाओं से प्रभावित हो सकती है या नहीं। शायद इनका भी उस पर कोई प्रभाव नहीं था। ऐसा न होता तो इतनी अधिक शताब्दियों के बीच किसी भी दुस्साहसिक दुर्घटना में उसका अन्त हो गया होता। यह सत्य है कि उसने लियो को सुझाया था कि मुझे मारकर बदला ले लो पर सम्भवतः यह बात उसके स्वभाव की परीक्षा लेने तथा अपने प्रति उसके मानसिक रुख का पता लगाने के निमित्त कही गई होगी। बिना किसी प्रयोजन के वह क्षणिक जोश में नहीं आती थी।

अध्याय २३

सत्य का मन्दिर

हमें तैयारी करने में ज्यादा समय नहीं लगा। हमने बदलने के कुछ कपड़े तथा फालतू जूते अपने हैण्डबेग में रख लिये। अपने-अपने रिवाल्वर के साथ हममें से दोनों ने एक-एक एक्सप्रेस राइफल भी ले ली। इसी होशियारी के कारण, ईश्वर की कृपा से कई बार हमारे प्राण बचे थे। साथ ही काफी गोली-बारूद भी ले ली। अपनी भारी बन्दूकें तथा और सामान हमने वहीं छोड़ दिया।

नियुक्त समय से चंद मिनट पूर्व हमें आयेशा के कक्ष में बुलाया गया। हमने उसे भी तैयार पाया। उसने अपनी कफ़नी पर काला लबादा पहन रखा था।

उसने पूछा—"क्या तुम लोग इस साहसिक सफ़र के लिए तैयार हो ?"

मैंने कहा—"हाँ, हम तैयार हैं। यद्यपि आयेशा ! खुद मुझे इसमें विश्वास नहीं है।"

उसने कहा—"होली ! सच्ची बात तो यह है कि तुम उन प्राचीन अविश्वासी यहूदियों की भाँति हो—जिनकी स्मृति मुझे अक्सर बेचैन कर देती है—जो उन बातों को बड़ी मुश्किल से ग्रहण करते थे जिन्हें जानते न थे। पर तुम खुद ही देखोगे ; और यदि मेरा दर्पण"—उसने स्वच्छ धवल जलकुण्ड की ओर संकेत किया—"झूठ नहीं बताता तो मार्ग आज भी उसी तरह खुला है जैसे वह प्राचीन काल में खुला हुआ था। अब हमें चल देना चाहिए—एक नया जीवन का आरम्भ करने, जिसका अन्त कहाँ होगा, कोई नहीं जानता।"

मैंने भी प्रतिध्वनि की—"हाँ, कौन जानता है, कहाँ ?" और हम सब निकलकर महती केन्द्रीय गुफा में, फिर वहाँ से दिन के प्रकाश में बाहर आये। इस गुफा के दरवाज़े पर केवल एक डोली रखी थी और छः गूंगे कहार प्रतीक्षा कर रहे थे। इनके साथ हमारा पुराना मित्र बिल्लाली भी था, जिसे देखकर मुझे खुशी हुई, क्योंकि उसके लिए मेरे मन में एक प्रकार का स्नेह उत्पन्न हो

चुका था। ऐसा जान पड़ा कि किसी कारण से अपने अतिरिक्त आयेशा ने सबके पैदल ही चलने की व्यवस्था की है। इसमें हमें कोई अप्रसन्नता न थी क्योंकि गुफाओं की लम्बी कैद के कारण बाहर पैदल चलने का मौका ही कहाँ मिलता था। ये गुफाएँ मृतकों के लिए चाहे जितनी सुविधाजनक रही हों पर हमारे जैसे श्वास लेने वाले प्राणियों का दम उनमें घुटता था। चाहे संयोगवश हो, या आयेशा के आदेश से हो, गुफा के सामने वाला मैदान, जहाँ हमने वह भयानक नृत्य देखा था, दर्शकों से रिक्त था। एक माई का लाल न दिखाई पड़ता था, इससे हमने अनुमान लगाया कि इन दासों के सिवा किसी और को आयेशा के सफ़र की खबर न थी।

थोड़ी देर के बाद ही हम झील वाले हरे-भरे तथा बोए हुए मैदान को पार कर रहे थे। चतुर्दिक् की ऊँची पहाड़ियों के बीच यह स्थान एक बड़े मर्कत मणि की भाँति चमक रहा था। एक बार फिर इस स्थान की नैसर्गिक शोभा को देखने का अवसर मिला। कोरवासियों द्वारा अपनी राजधानी के लिए ऐसा स्थान चुनने पर हमें आश्चर्य हुआ। झील का पानी बाहर निकालने तथा फिर यहाँ पानी न एकत्र होने देने के महत् कार्य में कितने श्रम, कितनी सूझ और निर्माणकला के कितने गूढ़ ज्ञान की ज़रूरत पड़ी होगी! जहाँ तक मेरा अनुभव है, प्रकृति के विरुद्ध मनुष्य क्या कर सकता है, यह इसका एक अप्रतिम उदाहरण है। धारणा की विशालता तथा विस्तृति में इस प्राचीन कारीगरी के सामने स्वेज़ की नहर नहीं ठहरती।

जब हम सुरभित शीतल वायु का आनन्द लेते हुए लगभग आधे घण्टे तक चल चुके तब ध्वंसावशेष की इमारतें साफ़-साफ़ दिखाई पड़ने लगीं।

उतनी दूर से भी हम देख सकते थे कि वे ध्वंसावशेष कितने अद्भुत हैं और प्रत्येक क़दम उन्हें और स्पष्ट करता जाता था। बैबिलोन या थीवा अथवा अन्य प्राचीन ध्वंस-नगरों की तुलना में यह बड़ा नगर नहीं था। इसकी बाहरी खाई के अन्दर बारह वर्गमील या उससे कुछ ज्यादा जमीन रही होगी। पास पहुँचने पर हमने देखा कि दीवारें भी बहुत ऊँची न थीं; चालीस फुट ऊँची होंगी। वे अब तक गिरी न थीं और अपनी पूरी ऊँचाई में खड़ी थीं। इसका एक कारण यह भी था कि चारों ओर से पहाड़ियों से घिरा होने से कोरनिवासियों को अपनी रक्षा के लिए क़िले की बुर्जियों की ज़रूरत न थी, क्योंकि बाहरी शत्रु

वहाँ तक पहुँच ही न सकते थे और दीवारें उन्होंने नागरिक झगड़ों के लिए बनाई थीं। पर ये दीवारें जितनी ऊँची थीं उतनी ही चौड़ी भी थीं और ६० फुट चौड़ी खाई से घिरी हुई थीं जिसमें कहीं-कहीं अब भी पानी था। सूर्यास्त के दस मिनट पहले हम लोग इस खाई तक पहुँच गए और टूटे-फूटे पुल के पत्थरों पर से उसे पारकर दीवार की ढाल पर होते हुए उसकी चोटी पर पहुँच गए। क्या अच्छा होता कि मेरी क़लम उस महत् और गौरवशाली दृश्य का वर्णन कर सकती जो वहाँ हमें दिखाई पड़ा। डूबते सूर्य की लालिमा में रंगे खंडहर मीलों और मीलों तक फैले हुए थे—स्तंभ, मन्दिर, राजमहल जिनमें बीच-बीच में हरी झाड़ियाँ उग आई थीं। इन भवनों की छतें न जाने कब से टूटकर नष्ट हो चुकी थीं पर अपनी विशालता एवं चौड़ाई तथा प्रयुक्त पत्थरों की मजबूती के कारण दीवारें तथा स्तंभादि अब भी खड़े थे।[1]

ठीक हमारे सामने एक रास्ता था जो नगर का राजमार्ग रहा होगा। वह बहुत चौड़ा और सीधा था। चट्टानी पत्थरों से बना होने के कारण अब भी उस पर ज़्यादा घास या झाड़ियाँ न उग सकी थीं। इसके विरुद्ध बाग-बगीचे बिल्कुल घने जंगल के रूप में बदल गए थे। दूर से भी विविध मार्गों को पहचाना जा सकता था क्योंकि उन पर कदाचित् ही कोई हरियाली दिखाई पड़ती थी। इस महान् राजमार्ग के दोनों ओर बड़े-बड़े भवनों के खंडहर फैले हुए थे। इनके बीच-बीच में उद्यान भूमि-खण्ड थे, जो उन्हें एक दूसरे से अलग करते थे पर इस समय काँटेदार झाड़ियों से भर गए थे। सभी भवन एक ही प्रकार के रंगीन पत्थर के बने थे और अधिकांश में बड़े-बड़े खम्भे थे, जिन पर हज़ारों वर्ष से

---

१. छः हज़ार वर्ष के बाद भी इन खंडहरों की सुरक्षितता का एक कारण यह भी है कि कोर का नाश किसी शत्रु, या भूकम्प के द्वारा नहीं हुआ अपितु एक भयंकर प्लेग के कारण वहाँ के निवासी भाग खड़े हुए। इसलिए मकान ज्यों के त्यों छूट गए। फिर इस मैदान की जल वायु भी शुष्क और बहुत अच्छी थी और वर्षा एवं वायु का प्रकोप बहुत कम होता था।

मनुष्य के चरण नहीं पड़े थे ।[1]

चलते-चलते हम एक बड़े खंडहर के समीप पहुँचे जो कम से कम आठ एकड़ जमीन में फैला था । यह एक मन्दिर था । इसमें एक के भीतर दूसरा, दूसरे के भीतर तीसरा इस तरह अनेक खण्ड थे जो बड़े-बड़े खम्भों द्वारा अलग किये गए थे । ये खम्भे बड़े ही सुन्दर थे और मैंने इतने सुन्दर खम्भे और कहीं नहीं देखे । ये बीच में पतले और ऊपर-नीचे की ओर क्रमशः मोटे होते गए थे । पहले तो हमने समझा कि ये नारी-यष्टि की नक़ल हैं जैसा कि अनेक प्राचीन धार्मिक इमारतों में हम देखते हैं, पर दूसरे दिन पहाड़ के ढालुए हिस्से को पार करते समय हमने बड़े सुन्दर तमाल (पाम) उगे देखे और समझ गया कि प्रथम कारीगर ने इन्हीं को या इनके पूर्वजों को देखकर वे खम्भे गढ़े होंगे ।

इस महान् मन्दिर के अग्रभाग के पास हम रुक गए । मैंने यहाँ के कुछ बड़े खम्भों को नापा । आधार भाग पर उनका व्यास १८ से २० फुट था और वे ७० फुट ऊँचे थे । आयेशा भी अपनी डोली से नीचे उतर गई ।

उसने लियो से जो उतरने में सहायता देने पहुँच गया था, कहा—"कालिक्रेटीज़ ! पहले यहाँ एक कोठरी थी जिसमें कोई सोना चाहे तो सो सकता था । दो हज़ार वर्ष हुए जब तुम उस मिश्री बर्र (अमीनार्त्ता) के साथ यहाँ ठहरे थे । पर तब से मैं इधर नहीं आई और जान पड़ता है, वह गिर गई ।" इसके बाद हम लोगों को साथ लिये वह बहुत-सी टूटी-फूटी सीढ़ियों को पार कर बाहरी खण्ड में पहुँची और अँधेरे में इधर-उधर देखने लगी । फिर उसे कुछ याद आ गया, और बाईं ओर दीवार के सहारे कुछ क़दम चलकर वह खड़ी हो गई ।

"अभी तक यह वैसी ही है"—आयेशा ने कहा और दो गूंगों को बढ़ने का

---

१. बिल्लाली ने मुझे बताया कि अमाहज्जर लोगों के विश्वासानुसार नगर का ध्वंस भूतों का अड्डा है और वे किसी भी प्रलोभन से इसमें प्रवेश करने को तैयार नहीं होते । वह खुद भी इस प्रथा को तोड़ने के लिए तैयार न था पर आयेशा की सरपरस्ती में होने के कारण ज्यादा इन्कार न कर सका । हम दोनों को यह सोचकर आश्चर्य हुआ कि जो लोग सदा ही मृतकों के बीच रहते हैं और अवसर पड़ने पर लाशों को जलाने से भी नहीं चूकते वे ही उन स्थानों में जाने से हिचकते हैं जिनमें वे ही मृतक (जिनके साथ ये रहते हैं) रहा करते थे ।

संकेत किया। ये गूँगे सब सामान लादे हुए थे। उनमें से एक ने आगे बढ़कर एक दीपक निकाला और उसे एक छोटी अँगीठी से जलाया। अमाहज़र सदा यात्रा में अपने साथ एक छोटी जलती अंगीठी रखते थे। दीपक के जलते ही हमने उस स्थान में प्रवेश किया जिसके सामने आयेशा रुक गई थी। यह एक छोटी कोठरी थी जो दीवार में बनी थी और इसमें पत्थर की एक बड़ी मेज़ रखी थी। कदाचित् उस महान् मन्दिर का कोई द्वार-रक्षक इसमें रहता रहा होगा।

यहाँ हमने पड़ाव किया और उस अँधेरे में जितना संभव था साफ़ करके आरामदेह बना लिया। इसके बाद लियो, जाब और हमने मांसाहार किया। आयेशा तो, जैसा मैं पहले कह चुका हूँ, आटे की रोटी, फल और पानी के सिवा कभी कुछ छूती ही न थी। जब हम लोग खाना खा ही रहे थे तभी पूर्णचन्द्र, मन्दिर की दीवार के ऊपर उदित हुआ और उसकी रजत् किरणों से सारा स्थान चमक उठा।

अपना सिर अपने हाथ के बल रखकर स्वर्ग की रानी को मन्दिर के स्तंभों के ऊपर उगती देखती हुई आयेशा बोली—"होली! क्या तुम जानते हो कि मैं आज तुम्हें यहाँ क्यों लाई हूँ? यह एक अजीब बात है पर कालिक्रेटीज़! क्या तुम जानते हो कि इस समय तुम जिस स्थान पर ठहरे हुए हो, वहाँ कभी तुम्हारा शव पड़ा था। मैं यहीं से तुम्हारा शव उठाकर कोर की गुफाओं में गई थी। वह दृश्य मुझे फिर याद आ रहा है। मैं उसे देख सकती हूँ। कैसा भयानक दृश्य है!" और वह काँप उठी।

लियो जल्दी से उछल पड़ा और जिस जगह बैठा था, वहाँ से हटकर दूसरे स्थान पर जा बैठा। आयेशा पर उन स्मृतियों का जो भी प्रभाव पड़ा हो किन्तु लियो के लिए उनमें कोई आकर्षण नहीं था।

आयेशा कहने लगी—"मैं तुम्हें यहाँ इसलिए लाई हूँ कि वह अद्भुत दृश्य देखो जो शायद ही किसी आदमी ने देखा होगा—उजड़े कोर पर पूर्णचन्द्रोदय का दृश्य। जब तुम भोजन कर चुकोगे तब मैं तुम्हें समझाना चाहूँगी कि कालिक्रेटीज़! केवल फल खाया करो। पर अभी नहीं, तुम्हारे अग्नि-स्नान के बाद। एक जमाने में मैं भी खूँखार पशु की भाँति मांसाहार करती थी। जब तुम खा चुकोगे तब हम बाहर चलेंगे और मैं तुम लोगों को यह मन्दिर तथा उस देवता को दिखलाऊँगी जिसकी यहाँ कभी पूजा होती थी।"

हम तुरन्त उठ खड़े हुए और चल पड़े। यहाँ फिर मेरी क़लम असमर्थ हो रही है। विभिन्न खण्डों की नाप-जोख देना, यदि मेरे पास वह हो भी, तो पाठकों को उबा देगा; पर मैं नहीं समझ पा रहा हूँ कि हमने जो देखा उसका किस प्रकार वर्णन करूँ, जो अपने विनाश में भी महान् था—अनुभूति की सीमा के भी परे। खण्ड पर खण्ड, शक्तिमान स्तम्भों की पंक्ति पर पंक्ति, जिनमें कुछ पर नीचे से ऊपर तक बढ़िया खुदाई, रिक्त कक्षों के अवकाश पर अवकाश जो अपने मौन में किसी भी जनाकीर्ण सड़क से अधिक मुखर थे। और सब के ऊपर मृतक का निर्जीव मौन, अत्यन्त एकान्त की अनुभूति और अतीत की विचारमग्न आत्मा! कितना सुन्दर, पर कितना रिक्त! ज़ोर से बोलने का साहस ही न होता था। स्वयं आयेशा भी अभिभूत हो गई थी क्योंकि इस पुरातन अवशेष के सामने उसकी लम्बी उम्र भी कुछ नहीं थी। हम फुसफुसाते थे और हमारी फुसफुसाहट भी दूर-दूर तक के स्तम्भों में दौड़कर गूँज उठती थी। ऊपर पूर्णचन्द्र अपने किरणजाल से सम्पूर्ण ध्वंस को धवल वस्त्राच्छादित कर रहा था। सचमुच पूर्णचन्द्र का इस उजड़े कोर की ओर देखने का वह दृश्य अद्भुत था। यह सोचना कितना अद्भुत था कि न जाने कितने हज़ार वर्षों से ऊपर के निर्जीव चन्द्र और नीचे यह मृत नगर एक-दूसरे को देखते रहे हैं और घोर एकान्त में एक दूसरे से अपने विस्मृत गौरव की कहानी कहते रहे हैं। धवल प्रकाश पड़ता है और क्षण-क्षण भर लघु छायाएँ तृणाच्छादित खण्डों की ओर दौड़ती हैं, मानो पुरातन पुजारियों की आत्माएँ अपने पूजागृहों में दौड़ रही हों। फिर धवल प्रकाश पड़ता है और उससे लम्बी छायाएँ उद्भूत होती हैं—यहाँ तक कि इस दृश्य का सौंदर्य एवं ऐश्वर्य तथा इसके वर्तमान मरण का स्वच्छन्द गौरव हमारी आत्माओं के अन्दर समा जाते हैं और उस शान-शौकत की कहानी, जिसे कब्र निगल गई है—और जिसकी स्मृति भी लुप्त हो गई है, उससे कहीं तीव्र स्वर में सुनाते हैं, जितना सेनाओं के उद्घोष में भी सम्भव नहीं।

हम देखते रहे और देखते रहे, न जाने कब तक, कि आयेशा ने कहा—"और मैं तुम्हें सौंदर्य का प्रस्तर-पुष्प एवं आश्चर्य-किरीट दिखाऊँगी, यदि अब भी वे अपने सौंदर्य से काल का उपहास करने और जो कुछ पर्दे में है उसके प्रति मानव-हृदय को कामनाओं से भर देने के लिए अब भी बने होंगे।" इतना

कहकर किसी उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना वह दो अन्य खण्डों से होती हुई हमें उस प्राचीन मन्दिर के गर्भ भाग में ले गई।

इस पचास गज चौकोर भीतरी खण्ड के बीच हमने कला की सर्वोच्च रूपकीय रचना देखी। प्रांगण के बीचोंबीच एक मोटी वर्गाकार चट्टानी चौकी पर, एक विशाल काले पत्थर का गोलक रखा था जिसका व्यास २० फुट रहा होगा। इस गोलक पर पाँव रखे एक वृहदाकार पंखी नारीमूर्ति खड़ी थी जिसका सौंदर्य इतना मोहक और दिव्य था कि जब चन्द्र-ज्योति के प्रकाश एवं छाया में मैंने उसे पहली बार देखा तो आश्चर्य से मेरी साँस रुक गई और एक क्षण के लिए हृदय स्पन्दन बन्द हो गया।

यह मूर्ति ऐसे शुद्ध और धवल मर्मर को तराशकर बनाई गई थी कि इतने वर्षों के बाद भी चन्द्रकिरणों के पड़ते ही वह चमकने लगी थी। वह बीस फुट से भी ज्यादा ऊँची थी। यहाँ पर लगी ऐसी स्त्री-मूर्ति थी जिसके अंग-अंग साँचे में ढले थे और जिसके मुख से इतनी सुन्दरता और मृदुता; इतनी नजाकत बरसती थी कि इसकी इतनी लम्बाई इसके मानवी, और उससे भी अधिक आध्यात्मिक सौन्दर्य को घटाने के बदले बढ़ा रही थी। वह आगे की ओर किंचित् झुकी पर अपने अधखुले पंखों पर इस तरह अवलम्बित थी मानो इस झुकने में भी अपना सन्तुलन साध रही हो। उसकी बाहें आगे की ओर उस स्त्री की भांति फैली हुई थीं जो अपने प्रियतम का आलिंगन करने ही वाली हो। उसकी सारी मुद्रा कोमलतम याचना की थी। उसकी यह परिपूर्ण एवं गौरव-युक्त देह प्रायः अनावृत थी, सिवाय मुख के—और यह भी एक असाधारण बात थी—जिस पर एक हलका घूंघट पड़ा था जिसके नीचे से उसकी रूप-रेखा भर दिखाई दे रही थी। उसके सिर से होता हुआ एक हलका आवरण आया था जिसके दोनों छोर उसके वाम स्तन पर पड़े हुए थे।

बहुत देर तक मुग्ध होकर देखने के बाद मैंने आयेशा से पूछा—"यह कौन है?"

आयेशा ने कहा—"होली! क्या तुम अनुमान नहीं कर सकते? तब तुम्हारी कल्पना कहाँ है? यह विश्व पर खड़ी सत्य की मूर्ति है और अपने बच्चों से अपने मुख को निरावरण करने का आवाहन कर रही है। देखो चौकी पर क्या लिखा हुआ है। निश्चय ही यह लेख कोर निवासियों के धर्मशास्त्र से

लिया गया होगा।" वह हमें मूर्ति के आधार भाग तक ले गई जहाँ चीनी लिपि जैसी दिखाई देने वाली लिपि में एक लेख था। वह काफ़ी गहरा खुदा था इसलिए आयेशा उसे अच्छी तरह पढ़ सकती थी। उसने हमें उसका अनुवाद करके यों बताया :—

"क्या कोई ऐसा आदमी नहीं है जो मेरा घूँघट हटाकर मेरा मुख देखे, जो बहुत सुन्दर है ? जो कोई मेरे मुख से घूंघट उठाएगा मैं उसी की हो जाऊँगी और मैं उसे शान्ति तथा ज्ञान एवं सत्कर्म की मधुर सन्तति दूँगी।"

और एक आवाज़ आती है—"यद्यपि जो लोग तुम्हारी खोज में हैं सभी तुम्हारी कामना करते हैं पर देखो ! तुम कुमारी हो और काल के अन्त तक कुमारी ही रहोगी। मानवी से उत्पन्न कोई ऐसा पुरुष नहीं है जो तुम्हारा घूँघट हटाकर भी जीता रह सके और कोई ऐसा होगा भी नहीं। ओ सत्य की देवी ! केवल मृत्यु द्वारा ही तुम्हारा घूँघट हटाया जा सकता है !"

और सत्य की देवी ने अपनी बाहें फैला दीं और रोने लगी, क्योंकि जो उस पर प्यार दिखाते हैं वे उसे पा न सकेंगे, न उसके मुख के सामने अपना मुख लाकर उसे देख सकेंगे।

पूरा अनुवाद सुनाने के बाद आयेशा ने कहा—"देखते हो। प्राचीन कोर के इन लोगों की देवी सत्य की देवी थी और उसी के लिए उन्होंने अपने मन्दिर बनवाये ; वे उसी को पाने की चेष्टा करते थे ; यह जानते हुए भी कि वे उसे न पायेंगे, वे उसे पाने को प्रयत्नशील थे।"

मैंने दुखी होकर कहा—"और आज तक भी इसी प्रकार मनुष्य उसकी खोज करते हैं, पर उसे पाते नहीं, और जैसा कि यह शास्त्र कहता है, उसे पायेंगे भी नहीं ; क्योंकि केवल मृत्यु में ही सत्य की प्राप्ति होती है।"

यह आवृत एवं दिव्य सौन्दर्य इतना पूर्ण और इतना पवित्र था कि हमें ज्ञात हुआ जैसे मर्मर के कारागार से एक जीवित प्रेरणा निकलकर मनुष्य को उच्च स्वर्गीय विचारों की ओर ले जा रही हो। कवि का सौन्दर्य-स्वप्न मानो पत्थर में जमकर रह गया हो जिसे मैं जीवन भर न भूल सकूँगा।

एक बार पुनः उसकी ओर दृष्टि डालकर हम चन्द्रज्योतित खण्डों से होते हुए लौट पड़े। मुझे बड़ा दुःख है कि मैं फिर उस मूर्ति को नहीं देख सका। इसलिए और भी कि मैंने चन्द्रप्रकाश में उस विश्व-गोलक के ऊपर कुछ धारियाँ

देखी थीं। अधिक प्रकाश में उसे देखा जाता तो पता चलता कि कोर के लोग विश्व के मानचित्र को किस रूप में जानते थे। फिर भी उसके गोलाकार होने से विश्व के सम्बन्ध में उनके वैज्ञानिक ज्ञान का कुछ न कुछ पता तो चलता ही था।

अध्याय २४

तख्ते का पुल

दूसरे दिन अरुणोदय के पूर्व ही गूंगों ने हमें जगा दिया। जब तक हमने आँखों को मल-मलकर उनमें भरी नींद को दूर किया और एक झरने पर, जो विशाल बाहरी खण्ड के एक संगमर्मर के कुण्ड में प्रवाहित था, जाकर प्रातः-कृत्य से निवृत्त हुए तब तक आयेशा भी तैयार होकर चलने के लिए डोली के पास आकर खड़ी हो गई। बुड्ढा बिल्लाली तथा दो गूंगे सामान बाँध रहे थे। आयेशा उस मर्मर की सत्य-देवी की भाँति ही घूंघट डाले हुए थी और मेरे मन में यह विचार आया कि हो न हो इसने इस मूर्ति से ही घूंघट डालने की प्रेरणा ग्रहण की हो। पर मैंने देखा कि आज वह बहुत सुस्त है और उसमें पहले की वह तेज़ी एवं चपलता नहीं है जो उसे हजारों स्त्रियों में अलग ही रखती थी। उसका सिर झुका हुआ था। जब हम वहाँ पहुँचे तो उसने सिर उठाया और हमारा स्वागत किया। लियो ने पूछा कि रात कैसी नींद आई?

उसने उत्तर दिया—"मेरे प्यारे कालिक्रेटीज! बुरी! बहुत बुरी! रात भर विचित्र और भयानक सपने आते रहे और मैं नहीं जानती कि उनका आशय क्या है। मुझे अनुभव होता है जैसे कोई बुरी छाया मुझे घेरे हुए है। पर वह मेरा क्या कर सकती है?" फिर एकाएक नारी-सुलभ कोमलता से बोली—"पर यदि मुझको कुछ हो जाय और मैं स्वयं निद्रित होकर तुम्हें जगता छोड़ जाऊँ तो क्या तुम मुझे याद करोगे? हे मेरे कालिक्रेटीज़! क्या तुम तब तक मेरी प्रतीक्षा करोगे जब तक मैं फिर न आ जाऊँ, जैसे शताब्दियों तक मैंने

तुम्हारे आगमन के लिए प्रतीक्षा की है ?"

और उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना वह आगे कहती गई—"अब हमें चल देना चाहिए क्योंकि अभी बहुत दूर चलना है और मैं चाहती हूँ कि नीलाकाश में दूसरे सूर्योदय के पूर्व ही 'अमृत भवन' तक पहुँच जाऊँ।

पाँच मिनट बाद हम सब पुनः उस उजड़े नगर में से होते हुए चल दिए। और ज्यों ही सूर्य की प्रथम किरण सुनहले तीर छोड़ती इस ध्वंसावशेष पर उतरी, हम बाहरी दीवार के फाटक के उस पार हो गए। यहाँ हमने एक बार पुनः फिरकर इस उजड़ी महत्ता और ऐश्वर्य को देखा। हमें दुःख हुआ कि समयाभाव-वश हम उसकी ज्यादा खोज-बीन करने में असमर्थ थे। यहाँ से आगे हमने खाई पार की और मैदान में आ गए।

जैसे-जैसे सूर्य आकाश में चढ़ता गया, आयेशा की स्फूर्ति भी बढ़ती गई—यहाँ तक कि वह पुनः अपनी सामान्य मनोदशा में आ गई और उसने हँसते हुए कहा कि यह शिथिलता उस स्थान के प्रभाव के कारण थी जहाँ गत रात को वह सोई थी।

उसने कहा—"ये जंगली लोग कहा करते हैं कि कोर में भूतों का अड्डा है और मैं निस्सन्देह उनकी बातों का विश्वास करती हूँ। एक अपवाद के सिवा ऐसी खराब रात मेरी कभी नहीं कटी। हाँ, वह रात भी मुझे याद आ रही है जब उसी स्थान पर तुम मेरे पाँव के पास मरे हुए पड़े थे। मैं अब कभी यहाँ न आऊँगी। सचमुच यह मनहूस जगह है।"

थोड़ी देर ठहरकर नाश्ता करने के बाद फिर हम रवाना हो गए और दो बजे दिन तक एक पहाड़ की तलहटी में पहुँच गए जो दीवार-सा खड़ा था और पन्द्रह सौ से दो हज़ार फुट तक ऊँचा रहा होगा। यहाँ हम थोड़ी देर के लिए ठहरे। मुझे तो समझ में ही नहीं आता था कि अब हम आगे कैसे जा सकते हैं ?

डोली से उतरती हुई आयेशा बोली—"हमारा असली सफर तो अब आरंभ होता है क्योंकि इन आदमियों को यहीं छोड़ देना होगा, और हमें अपना सामान स्वयं ही ढोना होगा।" इसके बाद उसने बिल्लाली से कहा—"तुम और ये कहार यहीं रहेंगे और हमारे लौटने की प्रतीक्षा करेंगे। कल दोपहर तक शायद हम लौट आयें पर अगर उस समय तक हम न आयें तो भी इन्तजार करना।"

बिल्लाली ने नम्रतापूर्वक झुककर कहा कि हम बूढ़े होने तक लौटने का इन्तज़ार करते रहेंगे ।

अब उसने जाब की ओर संकेत करते हुए कहा—"ओ होली ! अच्छा हो कि तुम इस आदमी से भी कह दो कि यहीं ठहरे क्योंकि यदि उसका दिल पक्का नहीं है और उसमें खूब साहस नहीं है तो वह आफत में पड़ सकता है । इसके अतिरिक्त उस स्थान का रहस्य, जहाँ हम जा रहे हैं, साधारण आदमियों के जानने योग्य नहीं है ।"

मैंने जाब से यह बात कही तो उसने बड़ी गंभीरता से गिड़गिड़ाते, बल्कि रोते हुए, उसे अलग न छोड़ने की प्रार्थना की । उसने कहा कि वह जो कुछ देख चुका है उससे ज्यादा बुरा क्या देखने को मिलेगा और उसे उन गूँगों के साथ रहने की कल्पना मात्र से डर लगता है जो पता नहीं कब गर्म घड़े से उसका सफ़ाया कर दें ।

जो कुछ उसने कहा उसका अनुवाद करके मैंने आयेशा को सुना दिया । आयेशा ने कंधे हिलाकर कहा—"तब आने दो । मेरा तो उसमें कुछ नुकसान है नहीं । आफत उसी के सिर पर आयेगी । वह दीपक तथा यह लेकर चलेगा ।" और उसने एक काठ का तख़्ता दिखाया जो सोलह फुट लम्बा रहा होगा और जो उसकी डोली के बाँस में बँधा था । मैंने समझा था कि यह डोली के परदों को कड़ा और चौड़ा रखने के लिए है पर अब मालूम हुआ कि हमारी असाधारण यात्रा में वह किसी अज्ञात प्रयोजन के अर्थ साथ लिया गया है ।

यह तख़्ता बहुत सख्त पर हलका था । एक दीपक तथा इस तख़्ते को जाब ने उठा लिया । दूसरा दीपक तथा तेल की शीशी मैंने अपनी पीठ पर लटका ली । लियो ने खाने-पीने का सामान तथा एक छोटी मशक, जिसमें पानी था, लाद ली । यह सब हो चुकने के बाद आयेशा ने बिल्लाली तथा उन गूँगों को सौ गज़ की दूरी पर स्थित कुसुमित मैगनोलिया के कुँज में जाकर तब तक छिप रहने की आज्ञा दी जब तक हम चले न जायँ । आज्ञा के उल्लंघन पर मौत की सज़ा देने की धमकी भी दे दी । उन्होंने विनीत भाव से सलाम किया । जाते समय बुड्ढे बिल्लाली ने हमसे मित्रतापूर्ण ढंग पर हाथ मिलाया और कान में धीरे से कहा कि 'अवश्य माननीया के साथ इस यात्रा पर तुम्हारी जगह मेरा जाना अधिक उचित होता' और मुझे उसकी बात ठीक ही लगी । एक

मिनट बाद वे सब चले गए। तब आयेशा ने हम से पूछा कि क्या हम चलने के लिए तैयार हैं। फिर घूमकर पहाड़ की ऊँची चोटी की ओर देखा।

मैंने कहा—"हे परमेश्वर ! लियो, क्या हमें इस पहाड़ पर चढ़ना पड़ेगा ?"

लियो इस समय अर्द्धमोहित, तथा रहस्यमयी उत्सुकता से आक्रान्त था; उसने अपने कंधे हिलाए पर कुछ उत्तर न दिया। एकाएक आयेशा उछलती हुई इस पहाड़ पर चढ़ने लगी। हमको उसका अनुसरण करना ही पड़ा। वह जिस फुर्ती और अद्भुत सरलता के साथ एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर उछलती हुई चढ़ती जाती थी, उसे देखकर आश्चर्य होता था। पर वस्तुतः यह चढ़ाई उतनी कठिन न थी जितनी शुरू में हमें मालूम पड़ती थी, यद्यपि बीच-बीच में दो एक ऐसे खतरनाक स्थान पार करने पड़े जहाँ से पीछे देखना भी भयजनक था। चट्टान अभी तक ढलुई थी और उतनी सीधी न थी जितनी ऊपर जाने पर मिली।

विना विशेष श्रम के हम पिछले स्थान से लगभग साठ फुट ऊँचे आ गए। कठिनाई सिर्फ़ 'जाब' के साथ थी क्योंकि उसे तख्ता लेकर चलना पड़ता था। चूंकि रास्ता घुमावदार था, हम पिछले स्थान से लगभग ६०-७० क़दम बाईं तरफ़ आ गए थे। आगे हमें एक गली मिली जो शुरू में बहुत संकरी थी पर ज्यों-ज्यों हम आगे बढ़ते गए वह खुलकर चौड़ी होती गई जैसे फूल की पंखुरी खुलती है। यह गली अन्दर की ओर ढालुवाँ होती गई थी। यहाँ तक कि अब हम नीचे के अपने साथियों की ओट हो गए। यह गली प्रकृति-निर्मित थी। वह ३० या ४० गज तक जाकर एकाएक एक गुफा में समाप्त हो गई थी। यह गुफा भी प्राकृतिक थी क्योंकि बिल्कुल अनगढ़ एवं टेढ़ी-मेढ़ी थी, जबकि कोर निवासियों के हाथ की बनी गुफाएँ बहुत सुडौल थीं।

इस गुफ़ा के मुँह पर आयेशा ने रुककर हमें दोनों दीपक जला लेने को कहा। मैंने दोनों दीपक जलाए ; एक उसे दे दिया। दूसरा अपने साथ रखा। वह हमारे आगे-आगे पर बड़ी होशियारी से इस गुफा में बढ़ी। यहाँ होशियारी की ज़रूरत भी थी क्योंकि गुफा की ज़मीन बहुत विषम, ऊँची-नीची, टेढ़ी-मेढ़ी थी और जगह-जगह पत्थर निकले हुए थे जिनसे ठोकर लगने का भय था। कहीं-कहीं तो उसमें इतने गहरे गड्ढे थे कि कोई गिरता तो उसकी टाँग ही टूट जाती।

लगभग २० मिनट तक हम इस गुफा में चलते रहे। मेरे अनुमान से वह कोई चौथाई मील लम्बी रही होगी। अन्ततोगत्वा हम उसके उस छोर पर जा पहुँचे और मैं चौंधियाकर इधर-उधर देख ही रहा था कि हवा का एक झोंका आया और दोनों दीपक बुझ गए।

आयेशा ने हम लोगों को आवाज़ दी क्योंकि वह कुछ आगे बढ़ गई थी। हम धीरे-धीरे उसके पास पहुँच गए। हमारे आगे पहाड़ फट गया था और उसमें एक भयंकर दरार पड़ गई थी। शायद भूकम्प से या बार-बार विद्युत्पात से वैसा हुआ होगा। यह भयंकर दरार चारों ओर ऊँचे कगारों एवं चोटियों से घिरी थी, और अँधेरे के मारे स्पष्ट यह भी न दिखाई देता था कि वह कितनी चौड़ी है पर उसके अँधकार से अनुमान होता था कि बहुत चौड़ी न होगी। पर जहाँ हम खड़े थे वहाँ से उसके आकार-प्रकार का कुछ ज्ञान न होता था क्योंकि चारों ओर १५०० से २००० फुट ऊँचे पहाड़ खड़े थे और वहाँ तक बहुत ही कम प्रकाश पहुँच पाता था। एक सँकरी चट्टान ओठों से बाहर निकले दाँत की तरह गुफा से निकलकर इस खड्ड के ऊपर लगभग ५० गज़ तक चली गई थी। वह केवल अपने उद्गम पर गुफा से मिली थी अन्यथा निराधार अधर में झूल रही थी।

आयेशा ने कहा—"हमें इसी से पार होना है। सावधान, यदि घबरा गए या हवा में फिसले तो फिर कोई पता न लगेगा, क्योंकि इस खड्ड की गहराई का कुछ पता नहीं है।" यह कहकर वह तुरन्त उस पर बढ़ने लगी। उसके बाद मैं, फिर जाब, फिर लियो आ रहे थे। ऐसे खतरनाक स्थान पर जिस सरलता से यह औरत बढ़ रही थी उसे देखकर आश्चर्य होता था। मैं थोड़ी ही दूर चला हूँगा कि हवा के ज़ोर से खड़े-खड़े चलने में भय मालूम पड़ने लगा इसलिए मैं घुटनों के सहारे ज़मीन में हाथ टेके धीरे-धीरे उस पर रेंगकर चलने लगा। जाब एवं लियो ने भी ऐसा ही किया।

पर आयेशा ने इस दीन विधि का आश्रय नहीं लिया। वह हवा के झोंकों में भी अपने दिमाग़ और अपने सन्तुलन को ठीक रखे बराबर बढ़ी जा रही थी।

हम इस भयानक पुल से, जो हर क़दम पर सँकरा होता जा रहा था, लगभग बीस पग चले होंगे कि भयंकर आवाज़ के साथ प्रभंजन का एक झोंका आया। मैंने देखा कि आयेशा कुछ झुककर उसे सहन करने की चेष्टा कर रही

है पर हवा उसके काले लबादे के नीचे भर गई और वह लबादा उसके शरीर से अलग होकर हवा में यों उड़ा जैसे कोई घायल पक्षी हो। उसका इस प्रकार उड़कर जाना बड़ा भयानक दृश्य था। अन्त में वह सुदूर अन्धकार में जाकर समा गया।

मैं उस चट्टान से और भी चिपट गया और चारों ओर देखने लगा। सारा कगारा हवा के मारे सनसना रहा था। हमारे नीचे हवा के टकराने से ऐसा शब्द हो रहा था मानो कोई जीवित प्राणी चीख रहा हो। भयंकर दृश्य था। उस अन्धकार में हम आकाश और पृथ्वी के बीच लटके हुए थे। हमारे नीचे शत-शत फुट गहरी रिक्तता फैली थी जो क्रमशः अन्धकार से पूर्ण होती गई थी—यहाँ तक कि अन्त में निविड कालिमा के सिवा कुछ न दिखाई देता था। उसकी गहराई कल्पना के परे थी। ऊपर दमघोटक हवा का असीम अवकाश फैला हुआ था और दूर, बहुत दूर, ऊपर नीलाकाश की एक रेखा-सी चली गई थी। इस भयंकर दरार में, जिसके ऊपर हम झूल रहे थे, भयंकर तूफान पागल की भाँति टकराता और अट्टहास करता था और अपने सामने के वाष्पखण्डों एवं बादलों को छिन्न-भिन्न करता आ रहा था। इन भागते मेघखण्डों के कारण तो हम लगभग अन्धे ही हो गए थे। हमारी बुद्धि कुछ काम न करती थी।

स्थिति इतनी भयंकर एवं अपार्थिव, अलौकिक थी कि उसने हमारी भय-भावना को भी कुण्ठित कर दिया था। अब तक मैं कभी-कभी उसे स्वप्न में देखता हूँ और उसकी कल्पना मात्र से शरीर पसीने-पसीने हो उठता है।

उधर आयेशा ने आवाज़ दी—"बढ़ते चलो! बढ़ते चलो।" लबादा निकल जाने के बाद अपने धवल वस्त्रों में वह एक स्त्री की अपेक्षा तूफान पर तैरती हुई प्रेतात्मा ही अधिक मालूम पड़ती थी। "बढ़ो, नहीं तो गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो जाओगे। अपनी आँखें धरती में गड़ा दो और चट्टान को पकड़े रहो।"

हमने उसकी आज्ञा का पालन किया और उस कम्पित पथ पर, जिससे टकरा-टकराकर वायु चीखती और रोती थी, रेंगते हुए चलने लगे। हम धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए, कितनी देर तक यह नहीं कह सकता। आखिरकार हम इस पुलनुमा चट्टान के किनारे के निकट जा पहुँचे। यहाँ इसकी बनावट एक प्रस्तर-फलक—पत्थर की पटिया—जैसी थी। पर इसके आगे पहाड़ के उस सिरे को जोड़ने वाली कोई चीज न थी। जैसे राक्षस जम्हाई ले रहा हो, इस

प्रकार हमारे सामने रिक्त अवकाश था। आयेशा हमारे आगे झुकी हुई खड़ी थी पर हम पेट के बल पत्थर की उस चट्टान से चिपके हुए थे। अब मेरी समझ में आया कि लकड़ी का तख्ता क्यों लाया गया है। उस पार ठीक से कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था क्योंकि सामने की पहाड़ी की छाया या और किसी कारण से वहाँ इतना अन्धेरा था जैसे बदली की अँधेरी रात हो।

आयेशा ने कहा—"थोड़ी देर रुको। शीघ्र ही रोशनी हो जायगी।"

उस समम मैं समझ न सका कि उसका मतलब क्या है? उस भयानक स्थान पर और प्रकाश कहाँ से आ जायगा? मैं उसकी इस बात पर आश्चर्य ही कर रहा था कि ज्योति की लम्बी तलवार की भाँति अस्तंगत सूर्य की एक किरण उस गहरे अन्धकार को चीरती उस स्थान पर आकर पड़ी जहाँ हम लेटे हुए थे। आयेशा की सुन्दर देह अपार्थिव तेज से दीप्त हो उठी। मैं यही चाहता हूँ कि मैं उस भयंकर खाई पर छाए कुहासे एवं अन्धकार को चीरते उस अग्नि कृपाण के नग्न एवं अद्भुत सौन्दर्य का वर्णन कर सकता। मैं आज तक नहीं जान पाया कि वह उस समय कैसे वहाँ अवतरित हुआ। मेरा अनुमान है कि सामने की चोटी में कोई दरार या छिद्र होगा जिससे अस्तंगत सूर्य के ठीक सामने आने पर प्रकाश प्रवाहित हो गया। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि दृश्य अद्भुत था। अन्धकार के हृदय में वह ज्वलित कृपाण भोंक दिया गया था और जहाँ भी वह पड़ा, वहाँ तीव्र प्रकाश की धारा बह गई; यहाँ तक कि दूर से भी एक-एक कण स्पष्ट दिखाई पड़ने लगे पर इसके तीक्ष्ण किनारे से ज़रा ही दूरी पर वही घनीभूत अन्धकार था।

इसी सूर्यरश्मि की प्रतीक्षा आयेशा कर रही थी। वह जानती थी कि इस ऋतु में हजारों वर्ष से सूर्यास्त के समय ऐसा दृश्य उपस्थित होता है। इसी समय के हिसाब से उसने हमारी यात्रा की व्यवस्था की थी। अब हम स्पष्ट देख सकते थे कि हमारे सामने क्या है। जहाँ दाँत या जिह्वा के समान निकली वह चट्टान खत्म हुई थी उससे ठीक सामने ग्यारह या बारह गज़ की दूरी पर, शायद खाई की गहराई में से उठी हुई एक चट्टान की गोलाकार चोटी थी। यदि इतनी ही बात होती तो वह हमारे लिए बेकार थी क्योंकि उसकी परिधि का निकटतम भाग भी हम से प्रायः चालीस फुट दूर था पर इस गोल एवं खोखली चोटी पर पानी की मार से चिकना हुआ एक बड़ा चपटा पत्थर रखा

दिखाई पड़ता था। इस पत्थर का एक सिरा झुककर हमारी तरफ़ आया हुआ था जिसको बीच में एक स्तंभाकार पतली शिला उठाए हुए थी और उसके हमारी ओर वाले सिरे की दूरी हमारे स्थान से कोई बारह फुट रही होगी। यह पत्थर रह-रहकर हवा में हिल उठता था।

आयेशा ने कहा—"जल्दी ! जल्दी करो। तख़्ता लाओ। जब तक रोशनी है हमें इसे पार कर लेना चाहिए। ज़रा देर में रोशनी चली जायगी।"

जाब ने कहरते हुए कहा—"हे ईश्वर ! उसका निश्चय ही यह मतलब नहीं हो सकता कि इस जगह से हम उस जगह तक पार हो जायँगे।" पर मेरे आदेशानुसार उसने तख़्ता धीरे-धीरे आगे सरका दिया।

"हाँ जाब, इसी पर से चलना होगा"—मैंने एक पैशाचिक आनन्द के साथ कहा, यद्यपि तख़्ते पर सरकने की धारणा मेरे लिए उसकी अपेक्षा कुछ कम दुखदायी न थी।

मैंने तख़्ता आयेशा की ओर बढ़ा दिया और उसने उसे बड़ी होशियारी के साथ खाड़ी या दरार के ऊपर इस तरह रख दिया कि उसका एक सिरा हमारी इस चट्टान पर रहा और दूसरा उस पत्थर पर जो हमसे १२ फुट दूर था और हिल रहा था। इसके बाद उसने एक पाँव उस पर रखा जिससे वह हवा में उड़ न जाय और हमारी ओर मुड़कर बोली—"जब मैं पिछली बार यहाँ आई थी तब से उस हिलते हुए पत्थर का वह खंभानुमा आधार और पतला हो गया है, इसलिए मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकती कि अब वह हमारा बोझ सँभाल सकेगा या नहीं। इसलिए पहले मैं ही पार जाती हूँ क्योंकि मुझे कोई चोट नहीं लग सकती" और आगे कुछ न कहकर वह हलके-हलके पर दृढ़ता से अपने पाँव जमाती हुई तख़्ते से पार चली गई और उस हिलते पत्थर को पकड़ लिया।

उसने कहा—"कोई डर की बात नहीं है। देखो, तख़्ते को न छोड़ना। मैं चट्टान की इस ओर तख़्ते को पाँव से दबाकर खड़ी होती हूँ जिससे तुम्हारे भारी बोझ से वह उलट न जाय। अब आओ होली ! जल्दी करो, नहीं तो रोशनी चली जायगी।"

मैं घुटनों के बल बैठ गया। जीवन में यदि कभी मैं भयभीत हुआ तो वह यही समय था। मुझे यह कहने में भी शर्म नहीं कि मैं आगे बढ़ने में

हिचकिचाया और पीछे सरक गया।

उस अद्भुत स्त्री ने, जो उस हिलते पत्थर पर एक चिड़िया के समान खड़ी थी, पुकारकर कहा—"तुम डरते हो ? डरते हो तो हट जाओ और कालिक्रेटीज़ को आने दो।"

अब मैंने पक्का इरादा कर लिया। इस स्त्री द्वारा उपहास का पात्र बनने से खड्ड में गिरकर मर जाना कहीं अच्छा है। इसलिए मैं हिम्मत करके उस तख्ते पर सरक चला। वैसे तो मैं सदा ही ज्यादा ऊंचाई से घृणा करता रहा हूँ पर उस दिन के पहले इस स्थिति की भयानकता की पूरी कल्पना मैं नहीं कर पाया था। आह ! दोनों हिलते सिरों पर झुक-झुक पड़ने वाला वह तख्ता ! मैं घबरा-घबरा उठता था कि अब गिरा, अब गिरा, पर किसी तरह तख्ते के पार हो गया और उस हिलते पत्थर पर जाकर पड़ जाने का आनन्द मैं कैसे बताऊँ, जो मेरे बोझ से तूफान में पड़ी नाव के समान हिल रहा था। मैंने ईश्वर को प्राण-रक्षा के लिए धन्यवाद दिया।

इसके बाद लियो की बारी आई और यद्यपि उसका चेहरा भय से पीला हो रहा था पर वह रस्सी पर चलने वाले नट के समान जल्दी से तख्ते के पार हो गया। आयेशा ने अपना हाथ बढ़ाकर उसका हाथ थाम लिया, और मैंने उसे कहते सुना—"वाह कैसी वीरतापूर्वक आए प्यारे, वाह ! अब भी तुम में पुरानी यूनानी साहसिक भावना बनी हुई है।"

अब खड्ड के उस पार केवल जाब ही रह गया। वह तख्ते के किनारे ही तक पहुँचा था कि चिल्ला उठा—"यह मुझ से न होगा। साहब ! मैं इस भयंकर स्थान में गिर जाऊँगा।"

मैंने कहा—"तुम्हें आना ही पड़ेगा। जाब ! आओ, यह उतना ही सरल है, जैसे मक्खी पकड़ना।"

"यह मुझसे न होगा। मुझसे न होगा साहब।"

आयेशा ने कहा—"वह आदमी आता हो तो आये नहीं तो वहीं ठहरकर मरे। देखो, रोशनी जा रही है। एक क्षण में वह चली जायगी।"

मैंने देखा। उसका कहना ठीक था। सूर्य चोटी के उस छिद्र के नीचे हटता जा रहा था जिसमें से होकर उसकी किरण इधर आ रही थी।

मैंने पुकारा—"जाब ! यदि तुम वहाँ रुके तो अकेले ही मरोगे। रोशनी जा रही है।"

लियो चिल्लाया—"जाब आओ ! मर्द बनो। बिल्कुल सरल है।"

अब जाब चीखकर नीचे की ओर मुँह किए तख्ते पर पड़ गया और थोड़ी-थोड़ी दूर उछलकर आने लगा। उसके दोनों पैर तख्ते के दोनों ओर रिक्त अवकाश में नीचे झूल रहे थे। उसके उछलने में वह हिलता पत्थर जो एक पतले खंभे पर टिका हुआ था भयानक रूप से हिलने लगा और इससे भी बुरी बात यह हुई कि जब वह आधा तख्ता पार कर चुका था, एकाएक रोशनी चली गई, और अंधेरा हो गया—जैसे किसी परदे से घिरे हुए कमरे में एकाएक दीपक बुझ गया हो। चतुर्दिक् घुप्प अँधकार छा गया।

भय से त्रस्त हो मैं चिल्लाया —"जाब ! ईश्वर के लिए आगे बढ़ो।" उधर प्रत्येक बार जाब के उछलने से उस पत्थर का कम्पन इतना भयंकर होता जा रहा था कि उसे पकड़े रहना कठिन था। सचमुच इस समय हमारी स्थिति बड़ी भयंकर थी।

अँधेरे में जाब चिल्लाया—"हे प्रभु ! मुझ पर दया कर। हाय ! तख्ता सरका जा रहा है।" इसके साथ ही खड़बड़ाहट का शब्द हुआ और मैंने सोचा कि वह खड्ड में गया।

पर उसी समय उसका हाथ, जिसे उसने मारे भय के फैला दिया था, मेरे हाथ में आ गया और मैंने उसे उठा लिया। ओह, मुझे न जाने कितना ज़ोर लगाना पड़ था पर शायद ईश्वर ने मुझे उस समय इसके लिए पर्याप्त शक्ति दे दी। और एक क्षण बाद जाब उस चट्टान पर मेरी बगल में खड़ा हाँफ रहा था। मुझे बड़ी खुशी हुई।

पर तख्ता ! मैंने अनुभव किया कि वह गिर रहा है। फिर चट्टान के किसी उभरे हिस्से से उसके टकराने की आवाज़ आई। और वह गिरकर न जाने कहाँ चला गया।

मैं चिल्ला उठा—"हे ईश्वर ! अब हम लौटेंगे कैसे ?"

उस अंधकार में लियो बोला—"मैं नहीं जानता। आज की आफत क्या कम थी। बचकर यहाँ पहुँच जाने के लिए मैं कृतज्ञ हूँ।"

आयेशा ने केवल इतना ही कहा—"लो मेरा हाथ पकड़ लो और चले आओ।"

अध्याय २५

जीवन-तत्त्व

मैंने उसके आदेशानुसार किया और भय से काँपते हुए उसका हाथ पकड़े अन्धे की भाँति उस पत्थर के सिरे की ओर चला। थोड़ी दूर चलने पर जो मैंने अपने पाँव बढ़ाकर देखा तो कोई भी चीज़ छूने में न आई।

मैंने हाँफकर कहा—"अरे! मैं गिर जाऊँगा।"

आयेशा ने उत्तर दिया—"तब गिर जाओ, और मेरा विश्वास करो।"

अब अगर स्थिति पर विचार किया जाय तो सहज ही समझ में आ जायगा कि आयेशा के चरित्र का जो भी ज्ञान मुझे था उसे देखते हुए मेरे उस ज्ञान पर बहुत अधिक बोझ डाला जा रहा था। मैंने सोचा, संभव है वह मुझे अन्धेरे गढ़े में गिराकर ही खत्म कर दे। पर जीवन में कभी-कभी विचित्रताओं पर भी विश्वास करना पड़ता है। इस समय भी वैसी ही बात थी।

उसने फिर चिल्लाकर कहा—"अपने को गिरा दो!" और दूसरा कोई रास्ता न देख मैंने वैसा ही किया।

मुझ ऐसा मालूम हुआ जैसे मैं एक दो कदम किसी चट्टान की ढाल पर लुढ़कता जा रहा हूँ, फिर अधर में जा रहा और समझा कि अब मैं खतम हुआ! पर नहीं! एक क्षण बाद ही मेरे पाँव चट्टानी फर्श से टकराये और मैं समझ गया कि किसी ठोस चीज़ पर खड़ा हूँ, जहाँ हवा की पहुँच नहीं है क्योंकि वह मेरे सिर के ऊपर की ओर गूँज रही थी। मैं वहाँ खड़ा हुआ, कृपा के लिए भगवान् का धन्यवाद कर रहा था कि उसी तरह घिसटता लियो भी मेरे पास आ खड़ा हुआ।

उसने कहा—"वाह ! आप भी यहाँ मौजूद हैं ! अच्छी दिल्लगी है। है न ?"

इसी समय एक भयप्रद चीख के साथ जाब हमारे सिर पर आ गिरा और उसके धक्के से हम दोनों गिर पड़े। ज़मीन से उठने पर हमने आयेशा को भी अपने बीच खड़ा पाया। उसने हमसे दीपक जलाने को कहा जिन्हें, सौभाग्य से, कोई नुकसान नहीं पहुँचा था।

एक मिनट में दोनों दीपक जल गए और उनके प्रकाश में विचित्र दृश्य दिखाई पड़ा। हम दस फुट वर्गाकार एक चट्टानी कमरे में खड़े थे। हम सब सहमे हुए-से लगते थे; केवल आयेशा ही इसका अपवाद थी। वह शांत हाथ बाँधे खड़ी दीपकों के जलने की प्रतीक्षा कर रही थी। इस कमरे का कुछ हिस्सा तो उसी कम्पनशील पत्थर से प्राकृतिक रूप से बना मालूम पड़ता था किन्तु पिछला कुछ हिस्सा आदमियों द्वारा तराशकर बनाया गया जान पड़ता था। कमरा सूखा और गरम था, और ऊपर के उस भयानक स्थान की तुलना में विश्राम के लिए आदर्श स्थान था।

आयेशा ने कहा—"चलो, यहाँ तक तो हम सब सकुशल पहुँच गए, यद्यपि एक बार तो मैं डरी थी कि कहीं वह हिलता हुआ पत्थर तुम्हें लिये-लिये नीचे के अनन्त गर्त्त में न गिर पड़े, जो मेरा विश्वास है कि पृथ्वी के गर्भ तक—पाताल तक—चला गया है। उस हिलते पत्थर को सँभालने वाली चट्टान उसके बोझ से टूट गई है। पर अब जब उसने—"जाब की ओर संकेत करके जो फर्श पर बैठा रूमाल से अपने माथे का पसीना पोंछ रहा था— "जिसे वे लोग ठीक ही 'सुअर' कहते हैं, तख्ते को गिरा देने की मूर्खता की है तो हमारे लिए लौटना बहुत कठिन हो गया है। मुझे इसका कोई उपाय करना होगा। खैर, अब थोड़ी देर यहाँ विश्राम कर लो और इस स्थान को देख लो। तुम क्या समझते हो कि यह क्या है ?"

मैंने कहा—"हम कुछ नहीं कह सकते।"

"होली ! क्या तुम विश्वास करोगे कि एक समय यह किसी आदमी का नित्य-निवास था ? वह यहाँ कितने ही वर्षों तक रहा। वह यहाँ से प्रति बारहवें दिन भोजन, पानी और तेल लेने के लिए बाहर जाता था। लोग ये चीजें भेंट चढ़ाने के लिए लाते थे और उस सुरंग के मुँह पर रख जाते थे,

जिससे होकर हम यहाँ आये हैं। भेंट में इतनी चीजें एकत्र हो जाती थीं कि सब वह ला भी नहीं पाता था।"

मैंने जिज्ञासापूर्वक उसकी ओर देखा और वह फिर कहने लगी—

"हाँ, यह सच्ची बात है कि यहाँ एक आदमी रहता था। वह अपने को 'नूत' के नाम से पुकारता था। यद्यपि वह बाद के जमाने में हुआ पर वह 'कोर' के पुत्रों के समान ही ज्ञानवान था। वह फकीर, तत्त्वज्ञानी और प्रकृति के रहस्यों का जानकार था। उसीने उस अग्नि का आविष्कार किया, जो मैं तुम्हें दिखलाऊँगी और जो प्रकृति का रक्त और जीवन है। यदि कोई उसमें स्नान कर लेता है और उसे पी लेता है तो उतने ही दिन जीता है जब तक प्रकृति जीती है। किन्तु ऐ होली! वह 'नूत' भी तो तुम्हारे ही समान विचार रखता था। उसने भी अपने उस ज्ञान से लाभ नहीं उठाया। उसका कहना था कि 'मनुष्य मरने के लिए ही पैदा हुआ है इसलिए उसका इस प्रकार दीर्घकाल तक जीना उचित नहीं है।' इसलिए उसने यह रहस्य किसी को नहीं बताया। वह इसीलिए यहाँ रहता था कि जीवन के अमृत की खोज करने वाला अगर यहाँ से होकर जाना चाहे तो उसे रोके। उस समय के अमाहजर लोग उसकी बड़ी भक्ति करते थे और उसे पवित्र तथा श्रेष्ठ साधु मानते थे।

"जब मैं पहली बार इस देश में आई—कालिक्रेटीज! तुम जानते हो कि मैं कैसे आई? खैर, किसी दूसरे समय तुम्हें बताऊँगी, बड़ी विचित्र कहानी है—तो मैंने इस तत्त्वज्ञानी की प्रशंसा सुनी और जब वह अपना भोजन लेने उस स्थान पर गया तो मैं उससे मिली और उसी के साथ यहाँ आई, यद्यपि पहले मुझे भी उस खड्ड को पार करने में बड़ा डर लगा। मैंने उसे अपने सौन्दर्य और बुद्धि से प्रभावित किया और अपनी जिह्वा से उसकी खूब चाटुकारी की। वह मेरी बातों में आ गया और मुझे उस अग्नि के स्थान पर ले गया तथा उसका भेद भी मुझे बता दिया। किन्तु उसने मुझे उस अग्नि का उपयोग न करने दिया, और मैं भी इस भय से कि कहीं वह मुझे मार न डाले, चुप बैठ रही। मैं जानती थी कि वह बहुत बूढ़ा हो गया है और शीघ्र ही मर जायगा। इसलिए संसार की अद्भुत जीवनशक्ति का वह सारा भेद जानकर, जो उसे मालूम था, मैं लौट आई। यह आदमी बहुत ही ज्ञानी और वयोवृद्ध था तथा अपनी पवित्रता, जितेन्द्रियता एवं निर्दोष मन की गहरी साधना के द्वारा उसने दृश्यमान तथा

उस अदृश्य सत्य के बीच के पर्दे को बहुत कुछ उठा दिया था जिसके डैनों का स्वर, इस इन्द्रियलब्ध जगत् में उड़ते हुए, कभी-कभी हमें सुनाई पड़ जाता है। ऐ कालिक्रेटीज़ ! इसके थोड़े ही दिनों बाद मेरी तुमसे भेंट हुई। तुम अपनी सुन्दर पत्नी मिश्रानी अमीनार्त्ता के साथ सैर करते हुए इधर आ निकले थे। मैंने पहली और अन्तिम बार प्रेम करना सीखा—एक बार और सदा के लिए मैं तुम्हारे प्रेम में पड़ गई। मेरे मन में यह बात समा गई कि मैं तुम्हें लेकर यहाँ आऊँ और हम तुम दोनों जीवन के अमृत से दीक्षित हों। इसलिए हम उस मिश्री महिला के साथ आये, क्योंकि वह किसी तरह तुम्हें अकेले छोड़ने को तैयार न हुई। और देखो तो ! हमने यहाँ आने पर उस वृद्ध साधु को मरा हुआ पाया। वह कुछ ही समय पहले मरा था। उस जगह उसका शव पड़ा हुआ था ; उसकी धवल लम्बी दाढ़ी उसके शरीर पर वस्त्र की भाँति फैली हुई थी" मैं जहाँ बैठा था उसी के पास के एक स्थान की ओर उँगली से संकेत करती हुई वह बोली—"लेकिन अब तो उसे मिट्टी में मिले बहुत दिन हो गए और हवा उसकी राख भी यहाँ से उड़ा ले गई होगी।"

मैंने आसपास अपने हाथों से जमीन में टटोला। मेरी अँगुलियों में कोई चीज़ लगी। यह एक मानवी दाँत था जो पीला पड़ गया था पर वैसे मजबूत था। मैंने इसे उठाकर आयेशा को दिखलाया। वह हँस पड़ी।

उसने कहा—"निस्सन्देह यह उसका ही दाँत है। देखो नूत और नूत के ज्ञान का क्या शेष रहा—एक छोटा दाँत ! फिर भी समस्त जीवनशक्ति उसके नियन्त्रण में थी, परन्तु अपने अन्तःकरण के लिए ; उसने उसका कोई उपयोग नहीं किया। खैर, वहाँ वह ताज़ा ही मरा पड़ा था, और मैं तुम्हें वहाँ ले गई जहाँ अब तुम्हें ले चलना चाहती हूँ। वहाँ अपना सम्पूर्ण साहस बटोरकर, जीवन का वह गौरव-मुकुट पाने की अभिलाषा से मैंने उस अग्नि-ज्वाल में पाँव रखा और वह कहने की नहीं अनुभव करने की बात है, मेरे अन्दर अभूतपूर्व जीवन-धारा बहने लगी और मैं उसमें से अमरणशील और अकल्पनीय सुन्दरी बनकर निकली। बाहर निकलकर मैंने तुम्हारी ओर अपनी बाहें फैला दीं कि कालिक्रेटीज़ ! अपनी अमर वधू को ग्रहण करो। किन्तु मेरे अनावृत सौन्दर्य से तुम्हारी आँखें चौंधिया गईं और तुमने मेरी ओर से मुँह फेरकर अमीनार्त्ता के गले में अपनी बाहें डाल दीं और उसकी छाती पर अपना सिर रख दिया।

मैं क्रोध से पागल हो गई और जो बरछा तुम्हारे हाथ में था उसे ही छीनकर तुम्हारे कलेजे में भोंक दिया। फलतः उसी अमर जीवन-स्रोत पर तुम मेरे पाँव के पास गिर पड़े और मर गए। तब मैं यह नहीं जानती थी कि मैं अपनी आँखों से, या अपनी इच्छा-शक्ति से भी किसी को मार सकती हूँ, इसीलिए मैंने बरछे से तुम्हें मारा।*

"और जब तुम मर गए, हाय! तब मैं बहुत रोई क्योंकि मैं अमर थी और तुम मर गए थे। मैं उस जीवन-कुण्ड पर ही बहुत रोई। अगर मैं पार्थिव एवं नाशमान होती तो निश्चय ही मेरा हृदय फट गया होता। और वह कलूटी मिश्रानी मुझे अपने देवों के नाम पर कोस रही थी। ओसिरिस, ईसिस, नेफ़थीस, अन्यूबिस, सेख्त तथा सेत का आवाहन कर-करके मुझे सराप दे रही थी। मैं आज भी उसका तूफान के समान भरा चेहरा अपने ऊपर झुका देख सकती हूँ, पर वह मुझे कोई हानि न पहुँचा सकती थी। मैं यह नहीं जानती कि मैं उसका कुछ बिगाड़ सकती थी वा नहीं। मैंने वैसी कोशिश नहीं की, क्योंकि मेरे लिए वह निरर्थक होती। इसलिए हम दोनों मिलकर तुम्हें वहाँ से लाईं। मैंने मिश्रानी

---

* यह ध्यान देने की बात है कि आयेशा ने कालिक्रेटीज़ की मृत्यु का जो वर्णन किया है वह अमीनार्त्ता द्वारा ठीकरे पर लिखे अभिलेख की बातों से भिन्न है। ठीकरे का अभिलेख कहता है कि—"तब अपने क्रोध में उसने उस पर अपने जादू से आक्रमण किया और वह मर गया।" हमने इसकी जाँच नहीं की कि इन दोनों में ठीक बात कौन-सी है, पर यह स्मरणीय है कि कालिक्रेटीज़ के शव पर छाती के पास एक बरछे का ही घाव था। इसलिए यदि मृत्यु के बाद वह घाव न हुआ हो तो आयेशा का ही वर्णन ठीक जान पड़ता है। उस समय हमने इस बात की भी खोज नहीं की कि दोनों स्त्रियाँ किस प्रकार उस आदमी का शव उस भयंकर खड्ड तथा हिलते पत्थर पर से ले आईं जिसे दोनों ही प्यार करती थीं। दो निराश एवं दुखी प्रेमिकाओं द्वारा अपने ही प्रेमी का शव ले जाने का वह दृश्य कैसा रहा होगा, इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है। जहाँ अकेले पार जाना भी भयप्रद था वहाँ एक मृत का शव लेकर चलना अवश्य भीषण रहा होगा। पर सम्भव है उस समय वह रास्ता इतना दुर्गम न रहा हो।

को दलदलों के पार भेज दिया। जान पड़ता है उसको एक पुत्र हुआ और वह अभिलेख लिखकर मरी जिसके संकेत पर तुम, उसके पति, मेरे पास लौट आए— उसके पास जो तुम्हारी हत्यारिन और उसकी प्रतिद्वंद्विनी थी।

"मेरे प्रियतम ! यह है मेरी कहानी। और अब वह समय निकट है जब मेरे जीवन पर मुकुट सुशोभित होगा। पृथ्वी की सभी वस्तुओं की भाँति इसमें शुभ और अशुभ—भलाई और बुराई का मिश्रण है, शायद बुराई की मात्रा भलाई से अधिक है। यह रक्त के अक्षरों से लिखा गया है। यह सच्ची कथा है और कालिक्रेटीज ! मैंने तुमसे कुछ भी छिपाया नहीं है। अब तुम्हारी परीक्षा के पहले एक बात और कह दूं। हम मृत्यु के सामने चल रहे हैं, क्योंकि जीवन और मृत्यु दोनों एक दूसरे के बिल्कुल पास-पास हैं, और कौन जानता है ?— कोई ऐसी बात हो जाय कि हमें पुनः युगों तक प्रतीक्षा करने के लिए अलग कर दे। मैं केवल एक नारी हूँ, और कोई भविष्यवक्ता नहीं और न भविष्य को जान ही सकती हूँ। पर मैं इतना जानती हूँ—मैंने इसे ज्ञानी 'नूत' के मुख से सुना था—कि मेरा जीवन केवल दीर्घ और अधिक प्रकाशमान हो गया है। यह अमर नहीं है—सदा रहने वाला नहीं है। इसलिए वहाँ जाने के पूर्व, हे कालिक्रेटीज ! मुझे बता दो कि तुमने सचमुच मुझे क्षमा कर दिया है या नहीं और मुझे हृदय से प्यार करते हो या नहीं। कालिक्रेटीज ! देखो। मैंने बहुत बुराइयाँ की हैं—अभी दो ही दिन पहले की बात है कि उस रात मैंने उस लड़की को मार दिया जो तुम्हें प्यार करती थी किन्तु उसने मेरी आज्ञा की अवहेलना की थी जिससे मुझे क्रोध आ गया। वह मेरे भावी दुर्भाग्य की बात कहती थी, इसलिए मैंने उसे नष्ट कर दिया। इसलिए जब तुम्हारे पास शक्ति आवे तो तुम सावधान रहना कि कहीं क्रोध में या ईर्ष्या-वश तुम भी ऐसा ही न कर बैठो क्योंकि त्रुटिपूर्ण मानव के हाथ में अजेय शक्ति एक भयंकर अस्त्र है। हाँ, मैंने पाप किया है—एक महत् प्रेम से उत्पन्न कटुता के कारण मैंने पाप किया है, फिर भी मुझे बुरे भले का विवेक है, मेरा हृदय भी बिल्कुल कठोर नहीं है। हे कालिक्रेटीज ! अब तुम्हारा प्रेम ही मेरी मुक्ति का द्वार होगा। क्योंकि गम्भीर प्रेम निष्फल होने पर श्रेष्ठ हृदयों को भी नरक में परिणत कर देता है, पर जब वही प्रेम प्रियतम के दर्पण पर प्रतिबिम्बित होकर लौटता है तब हमें पर लग जाते हैं और हम अपने स्वार्थों के बहुत ऊपर उठ जाते हैं और हमें जो बनना

चाहिए वह बन जाते हैं। इसलिए कालिक्रेटीज ! मेरा हाथ पकड़ो, और बिना किसी भय के जैसे मैं इस संसार की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी और बुद्धिमती नहीं बल्कि कोई कृषक कन्या हूँ, मेरा घूंघट उठा दो, और मेरी आँखों में आँखें डालकर देखो तथा मुझसे कहो कि "मैं तुझे अपने हृदय से क्षमा करता हूँ और अपने समस्त हृदय से तेरी पूजा करता हूँ।"

वह रुक गई और उसकी वाणी की असीम कोमलता, किसी मृतक की स्मृति के समान, हमारे चारों ओर मँडराती मालूम पड़ी। उसने मेरे हृदय को उसके शब्दों की अपेक्षा भी कहीं ज्यादा द्रवित कर दिया—वह अत्यन्त मानवीय, अत्यन्त नारी-सुलभ थी। लियो पर भी इसका विचित्र प्रभाव पड़ा। अभी तक अपने विवेक के विरुद्ध वह आयेशा की ओर आकर्षित था—जैसे कोई चिड़िया सर्प से मुग्ध हो। वह सब प्रभाव दूर हो गया और अब उसे ज्ञात हुआ कि वह सचमुच इस विचित्र एवं श्रेष्ठ नारी को प्यार करता है, जैसा कि अफसोस ! मैं भी उसे प्यार करता था। जो भी हो मैंने देखा कि लियो की आँखें आँसुओं से भर गई हैं। वह जल्दी से उठकर आयेशा के पास पहुँच गया, घूंघट घटा दिया और उसके हाथ को अपने हाथ में लेकर उसके मधुर मुख की ओर देखता हुआ बोला।

"आयेशा ! मैं तुझे अपने समस्त हृदय से प्यार करता हूँ। जहाँ तक क्षमा सम्भव है, मैं तुझे उस्तेन की मृत्यु के लिए क्षमा करता हूँ। शेष के लिए तू और तेरा निर्माता जाने ; मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानता। मैं तो केवल इतना जानता हूँ कि तुझे इतना प्यार करता हूँ जितना कभी किसी को नहीं किया, और तुम दूर रहो या निकट, मैं अन्त तक तेरा साथ दूंगा।"

गौरवपूर्ण विनय के साथ आयेशा ने उत्तर दिया—"जब मेरे स्वामी ऐसे शाही रूप में बोल रहे हैं, इस उदारता के साथ मुझे क्षमा-दान दे रहे हैं, तो मुझे भी दान में उनके पीछे न रहना चाहिए। देखो।" उसने लियो का हाथ पकड़ा और अपने सुडौल मस्तक पर रखकर नीचे झुकने लगी—यहाँ तक कि उसका एक घुटना जमीन को छूने लगा—"देखो ! आत्म-समर्पण स्वरूप मैं अपने स्वामी के आगे झुकती हूँ, देखो !" और उसने लियो के ओठों को चूम लिया—"पत्नी के प्रेम-स्वरूप मैं अपने स्वामी को चूमती हूँ, देखो !" फिर उसने अपना हाथ लियो के हृदय पर रख दिया—"जो पाप मैंने किए हैं उनकी

क़सम खाकर मैं कहती हूँ, उस प्रतीक्षा की एकान्त शताब्दियों की क़सम खाती हूँ जिसके कारण मेरे पाप का प्रक्षालन हुआ, जिस महत् प्रेम से मैं तुम्हें प्यार करती हूँ उसकी क़सम खाती हूँ और मैं उस शाश्वत सत्ता की क़सम खाती हूँ जिससे समस्त जीवन उद्भूत होता है ; और जिससे निकलकर फिर उसी में वह समा जाता है।

"आज इस परिपूर्ण नारीत्व के प्रथम पवित्र अवसर पर मैं क़सम खाती हूँ कि मैं शुभ को ग्रहण करूँगी, अशुभ को छोड़ दूंगी। मैं कसम खाती हूँ कि कर्तव्य के सीधे मार्ग पर मैं तुम्हारी वाणी का अनुसरण करूँगी। मैं कसम खाती हूँ कि मैं महत्वाकांक्षाओं का त्याग करूँगी और अपने अनन्त जीवन की अवधि में, सत्व एवं सद्ज्ञान की प्राप्ति के लिए विवेक को अपना पथदर्शक तारा बनाऊँगी। कालिक्रेटीज़ ! मैं यह भी क़सम खाती हूँ कि मैं तुम्हारा सम्मान करूँगी और तुम्हें प्रेम करूँगी—तुम्हें जो काल-प्रवाह में बहकर पुनः मेरी भुजाओं में आ गया है, जीवन के अन्त तक, फिर चाहे वह शीघ्र आवे या देर से। मैं क़सम खाती हूँ—नहीं, नहीं, अब और क़सम नहीं खाऊँगी क्योंकि आख़िर ये शब्द क्या हैं ? फिर भी तुम जान जाओगे कि आयेशा की जिह्वा झूठ नहीं बोलती।

"इस प्रकार मैंने शपथ ली है और होली, तुम इसके गवाह हो। आज हमारा विवाह हो गया। ऐ मेरे स्वामी ! इस वैवाहिक अन्धकार-वितान के नीचे आज मैं तुम्हारी होती हूँ, सदा के लिए। हम यहाँ अपनी वैवाहिक प्रतिज्ञाओं को हरहराती हवाओं के ऊपर लिखते हैं जो उन्हें स्वर्ग तक ले जायँगी और इस चलित विश्व के चतुर्दिक् उन्हें बार-बार पहुँचाती रहेंगी।

"और वधू द्वारा दिए जाने वाले उपहारस्वरूप मैं अपने सौन्दर्य का रत्नजटित किरीट तुम्हें पहनाती हूँ, अक्षय जीवन तथा असीम विवेक प्रदान करती हूँ, और वह धन देती हूँ जिसे कोई गिन नहीं सकता। देखो ! संसार के महान् लोग तुम्हारे चरणों में लोटेंगे और उसकी सुन्दरी स्त्रियाँ तुम्हारे मुख के प्रकाशमान ऐश्वर्य को देख अपनी आँखें ढक लेंगी ; इसके बुद्धिमान जन तुम्हारे आगे नत-मस्तक हो जायँगे। तुम मनुष्यों के हृदय को खुली पुस्तक के समान पढ़ सकोगे और अपनी इच्छानुसार उन्हें जिधर चाहोगे मोड़ दोगे। मिश्र के उस पुराने स्फिंक्स के समान युगानुयुग तक तुम्हारा मस्तक ऊँचा रहेगा और लोग तुम्हारी

नाशहीन महत्ता का रहस्य जानने के लिए तुम्हें पुकारेंगे और तुम अपने मौन से उनका उपहास करोगे।

"देखो ! एक बार मैं पुनः तुम्हारा चुम्बन लेती हूँ और इस चुम्बन के साथ मैं तुम्हें समुद्र और पृथ्वी के ऊपर अधिकार देती हूँ, झोंपड़ियों में रहने वाले किसान, महलों में रहने वाले बादशाह, मीनारों से भरे नगर और उनमें रहने वाले समस्त निवासी सब पर तुम्हें अधिकार देती हूँ। जहाँ तक सूर्य अपनी किरणों के बाण भेजता है, चन्द्र का प्रतिबिम्ब पानी में पड़ता है, जहाँ तूफ़ान आते हैं और आकाश में इन्द्रधनुष उगता है, हिमधवल उत्तर से संसार के मध्य भाग में होते हुए उस कामप्रधान दक्षिण दुनिया तक, जो एक वधू की भाँति समुद्र के नीले पलंग पर पड़ी हुई मृदु मलय गन्धपूर्ण श्वास लिया करती है, वहाँ तक तुम्हारी शक्ति और राज्य रहेगा। न रोग और न भय की बर्फ़-सी ठण्डी अँगुलियाँ तुम्हें छू सकेंगी ; मानवता पर सदा मँडराते हुए दुःख तथा मन एवं शरीर का क्षय अपने डैनों की छाया से भी तुम्हारी परछाईं छू न सकेंगे। तुम देव-तुल्य हो जाओगे और भलाई-बुराई तुम्हारी मुट्ठी में रहेंगी, और मैं भी विनीत होकर तुम्हारी बनी रहूँगी। प्रेम की शक्ति ऐसी ही है, और ओ कालिक्रेटीज़, यह है वह वैवाहिक उपहार जो, मेरे स्वामी और सब के स्वामी, मैं तुम्हें देती हूँ।

"बस, यह काम पूरा हुआ ; अब तुम्हारे लिए मैं अपना कुमारीत्व छोड़ रही हूँ ; और अब चाहे आँधी आवे, चाहे पत्थर पड़ें, प्रकाश आवे, चाहे अन्धकार, अच्छा आवे, बुरा आवे, जीवन आवे, मृत्यु आवे, यह टूट नहीं सकता। जो कुछ हुआ सदा के लिए हो गया और वह किसी तरह बदला नहीं जा सकता। मैं कह चुकी। और अब आओ हम चलें"—और एक दीपक हाथ में लेकर वह कमरे के छोर की ओर बढ़ी जिसके ऊपर उसी हिलते पत्थर की छत थी। वहाँ पहुँचकर वह ठहर गई।

हमने उसका अनुसरण किया और देखा कि शंकु की दीवार में सीढ़ी बनी हुई है। असल में वे चट्टान के बाहर निकले अंश थे जो सीढ़ियों के आकार में बदल गए थे। उन पर हिरन की भाँति खटाखट उछलती हुई आयेशा उतरने लगी। हम भी चलते रहे। जब हम १५-१६ क़दम नीचे उतर चुके तब हमने देखा कि वे उलटे चोंगे-सी एक चट्टानी ढाल में जाकर समाप्त हो गई हैं।

यह चट्टान बिल्कुल खड़ी थी पर कहीं भी अगम्य न थी और दीपकों की रोशनी के कारण हमें इस पर चढ़ने में विशेष कठिनाई नहीं हुई। मैं चलते हुए रास्ते को अपनी स्मृति में जमाता गया जो रास्ते की विचित्रता के कारण कोई कठिन काम न था।

काफ़ी समय तक हम इसी प्रकार चलते रहे। शायद आध घण्टा लगा होगा और जब हम कई सौ फुट नीचे उतर चुके तो एक दूसरा रास्ता मिला जिसकी ऊँचाई इतनी कम थी कि हमें झुक-झुककर चलना पड़ा। लगभग ५० गज़ चलने के बाद यह रास्ता एकाएक चौड़ा होकर एक गुफा में बदल गया। यह गुफा इतनी विशाल थी कि न इसकी दीवारें दिखाई देती थीं, न छत का ही कोई पता चलता था। उसके गुफा होने का पता तो हमारे पद-चाप तथा भारी हवा के पूर्ण सन्नाटे से चला। उस भयानक सन्नाटे में हम कई मिनट तक बराबर चलते रहे, जैसे भटकी हुई आत्माएँ अन्धकार की गहराई में चल रही हों। हमारे आगे-आगे आयेशा की धवल प्रेतोपम छाया उछलती हुई चल रही थी। अन्त में यह गुफा भी समाप्त हुई और एक दूसरा रास्ता मिला जो पुनः एक गुफा में जा निकला। यह गुफा पहली वाली से बहुत छोटी थी। इसकी दीवारें, महराब और दरारें साफ़ दिखाई देती थीं। आख़िर यह गुफा एक तीसरी सुरंग में जाकर मिल गई। यहाँ एक प्रकार की धुँधली रोशनी भी थी।

ज्यों ही यह प्रकाश हम पर पड़ा, आयेशा ने राहत की साँस ली। हमें यह पता नहीं था कि वह प्रकाश कहाँ से आ रहा है।

उसने कहा—"अच्छा, अब बिल्कुल पृथ्वी के गर्भ में चलने के लिए तैयार हो जाओ, जहाँ वह उस जीवन का निर्माण करती है; जिसे हम मनुष्य एवं पशु, फूल, पौधे में देखते हैं। तैयारी कर लो हे मनुष्यो! क्योंकि यहाँ तुम नये सिरे से उत्पन्न होगे।"

इतना कहकर वह तीव्र गति से चल दी और उसके पीछे गिरते पड़ते ठोकरें खाते हम भी जितनी तेज़ी से चलना हमारे लिए संभव था, चले। हमारे हृदय का प्याला भय और उत्सुकता से भर गया। पता नहीं हमें क्या दिखाई देगा? हम सुरंग में आगे बढ़ते गए, वह प्रकाश बराबर बढ़ता गया। अब वह किसी प्रकाशस्तम्भ (लाइट हाउस) से निकलने वाले किरण-जाल के समान आने लगा था। इतनी ही बात नहीं थी; इस प्रकाश के साथ ही विद्युत् गर्जन तथा वृक्ष-

निपात के समान हृदय को हिला देने वाली आवाज़ भी आने लगी थी। अब हम रास्ते पर थे—हे भगवान्!

अब हम एक और गुफ़ा में थे जो ५० फुट लम्बी, इतनी ही ऊँची और ३० फुट चौड़ी रही होगी। इसमें फर्श पर धवल वालुका की कालीन बिछी थी और इसकी दीवारें अग्नि वा जल के प्रभाव से चिकनी हो गई थीं। यह अन्य गुफाओं की भाँति अँधेरी न थी बल्कि एक गुलाबी प्रकाश की मृदु ज्योति से पूर्ण थी जो देखने में अकल्पनीय रूप से सुन्दर लगती थी। आरम्भ में हमें वह लपक न दिखाई दी, न किसी प्रकार का गर्जन ही सुनाई पड़ा। पर जब हम इस अद्भुत दृश्य को देखने में मग्न थे और इस बात पर आश्चर्य कर रहे थे कि यह गुलाबी ज्योति न जाने कहाँ से आ रही है, एक भयानक किन्तु सुन्दर बात हुई। इस गुफा के सुदूर छोर पर भयानक चक्की के चलने और पीसने की जबर्दस्त कड़कड़ाहट हुई। यह आवाज़ इतनी प्रबल एवं भयंकर थी कि हम सब काँप उठे और जाब तो घुटनों के बल गिर गया। फिर वहां आग का एक विशाल स्तम्भ या मेघ-समूह दिखाई पड़ा जिसमें इन्द्रधनुष के समान अनेक रंग थे और जिसमें मेघविद्युत् की चमक थी। लगभग ४० सेकेण्ड के वह कड़कड़ाहट और वह चमक रही होगी। वह अग्निस्तम्भ धधकता और गर्जता हुआ घूम रहा था। फिर धीरे-धीरे वह भयानक गर्ज धीमी पड़ती गई एवं अग्नि के साथ ही समाप्त हो गई और वह अग्निस्तम्भ न जाने कहाँ लुप्त हो गया। हाँ, अपने पीछे बड़ी सुन्दर गुलाबी ज्योति छोड़ गया जिसे हम पहले देख चुके थे।

पुलकित वाणी में आयेशा चिल्लाई—"निकट आओ! निकट आओ! देखो, यही अमृत-स्रोत है, यही प्राणतत्व है, यही जीवन-प्राण है जो इस महत् विश्व के हृदय में धड़क रहा है। देखो, इस मूल तत्त्व को जिससे सब पदार्थ शक्ति ग्रहण करते हैं, इस जगत् की शुभ्र चैतन्य शक्ति को—जिसके बिना हम जी नहीं सकते, जिसके बिना हम चंद्रमा के समान ठंडे और निर्जीव हो जाएँगे। नज़दीक आओ और उस जीवनमयी ज्योति-धारा में नहाओ जिससे उसका शुद्ध गुण, उसकी कुमारिका शक्ति तुम्हारे शिथिल शरीरों में भर जाय—उस दुर्बल रूप में नहीं जो सहस्रों जीवन-माध्यमों से छनती हुई तुम्हारे हृदय में, अल्प-मात्रा में, दौड़ रही है बल्कि पार्थिव जीवन के इस आदि-स्रोत से प्राप्त महती चिन्मयी शक्ति के रूप में।"

हम आयेशा का अनुसरण करते गुलाबी ज्योति के मध्य से होते हुए गुफा की छोर पर आए और उस स्थान के सामने खड़े हो गए जहां मूल नाड़ी ध्वनित होती थी और वह ज्योति-स्तम्भ घूमकर आया जाया करता था। जैसे ही हम वहां पहुँचे हमें एक ऐसे महान् पुलक और जीवन की प्रबल सघनता के ऐश्वर्य की अनुभूति हुई कि हमारी शक्ति के सबसे स्फूर्तिमय क्षण भी उसके सामने नक़ली और दुर्बल से लगने लगे। यह उसी प्रकाश तत्त्व का गुण था जो अग्निस्तम्भ के घूमते समय उससे निकलता था और जो हमारे अन्दर प्रवेश करके हमें प्रबल शक्ति और स्फूर्ति से भर रहा था।

गुफा के सिरे पर पहुँचकर हम एक दूसरे को, उस ज्योति में, देखने और उत्फुल्ल हृदय से ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे। हमारे हृदय हलके हो गए थे और हमारे दिमाग़ पर एक दैवी नशा छा रहा था। हम सब हँस रहे थे, यहाँ तक कि जाब भी हँस रहा था, जाब जिसके ओठों पर एक सप्ताह से कभी मुस्कराहट न आई थी। मुझे ऐसा अनुभव होता था कि मानव मस्तिष्क के लिए जितनी भी प्रतिभा की कल्पना की जा सकती है वह सब मुझ में आ गई है। उस समय मैं शेक्सपियर के काव्य-सौन्दर्य से युक्त पंक्तियों में बोल सकता था; अभिभूत स्वप्न, श्रेष्ठतम विचार मेरे मन में उठते थे। ऐसा लगता था मानो देह के समस्त बन्धन कट गए हैं और आत्मा मुक्त होकर अपनी अकलपनीय शक्तियों के साथ स्वर्ग की ओर उड़ी जा रही है। मेरी उस समय जो दशा थी उसका वर्णन करना असंभव है। एक गूढ़ जीवन-प्रेरणा, उच्चतर आनन्द को पाने की स्पृहा, सूक्ष्म चिन्तन का अमृत पान करने की अभिलाषा, जिस प्रकार उस समय मेरे मन में आई वैसी जीवन में कभी न आई थी। मैं पहले का होली न था; एक दूसरा ही उच्च मानव हो गया था और मेरे पार्थिव पगों के सामने जीवन की समस्त संभावनाओं का मार्ग खुल गया था।

जब मैं एक नवीन अनुभूत आत्मा की शक्ति के आनन्द में तन्मय था, दूर से भयानक चड़चड़ाहट की आवाज़ आई जो प्रलयंकर गर्ज में बदलती गई। उसमें शब्द की वह सब भयंकरता थी जिसकी कल्पना की जा सकती है फिर भी वह अद्भुत और प्रिय लगती थी। वह आवाज पास, और पास आती गई, यहाँ तक कि हमारे बिल्कुल निकट आ गई। ऐसा लगा जैसे बिजली के घोड़ों के पीछे स्वर्गिक गर्जन के पहिये घूमते आ रहे हों। वह स्तंभ आगे आता गया और

उसके साथ बहुरंगी ज्योतियों के शुभ्र मेघ, आँखें चकाचौंध करते, आते गए। वह धीरे-धीरे घूम रहा था। हमारे सामने आकर एक क्षण ठहरा और फिर घूमता निकल गया—अपने शब्द-ऐश्वर्य के साथ, न जाने कहाँ, न जाने किधर।

यह स्वर्गीय दृश्य ऐसा आश्चर्यजनक था कि आयेशा को छोड़, जिसने खड़ी होकर आग के सामने अपने हाथ फैला दिए थे, हम सब नीचे गिर पड़े और हमने अपने मुँह बालुका राशि में छिपा लिए।

जब वह चला गया तब आयेशा बोली।

"कालिक्रेटीज़ ! अब वह समय आ गया। जब वह महती ज्वाला इस बार आती है तो तुम उसमें अवश्य स्नान करो। पर अपने कपड़े उतार दो क्योंकि ये जल जायँगे यद्यपि तुम न जलोगे। जितनी देर तक तुम्हारी इन्द्रियाँ सहन कर सकें तुम उस अग्नि में खड़े रहना; और जब वह तुम्हारा आलिंगन करे तुम्हें अपने में लपेट ले तो उसके तत्त्व को खूब जी भरकर पीना। लपटों को अपने प्रत्येक अंग पर कूदने और खेलने देना ताकि उसका कोई गुण तुम में आने को रह न जाय। कालिक्रेटीज़ ! मेरी बातें सुन रहे हो ?"

लियो ने उत्तर दिया—"हाँ, मैं सुन रहा हूँ और मैं कायर भी नहीं हूँ पर उस हरहराती हुई लपक से मुझे डर लगता है। मैं कैसे जानूं कि वह मुझे पूर्णतः नष्ट नहीं कर देगी और मैं अपने को और तुम्हें भी खो न दूंगा ? फिर भी मैं करूँगा।"

आयेशा ने एक मिनट तक सोचा; फिर बोली—

"तुम्हारा सन्देह कुछ आश्चर्यजनक नहीं है। अच्छा कालिक्रेटीज़ ! यदि तुम मुझे इस ज्वाला में नहाते और कोई हानि न होते देख लो तब नहाओगे ?"

उसने कहा—"हां, तब अगर वह मुझे मार डाले तो भी उसमें मैं प्रवेश करूँगा। वैसे तो अब भी प्रवेश करने को मैं कह ही चुका हूँ।"

मैं चिल्लाया—"और तब मैं भी नहाऊँगा।"

जोर से हँसकर आयेशा बोली—"होली ! क्या कहते हो ? मैं तो समझती थी कि तुम दीर्घ जीवन की परवा न करोगे। क्यों ? अब क्या हो गया ?"

मैंने उत्तर दिया—"कैसे क्या हुआ, यह तो नहीं जानता। पर मेरा हृदय मुझसे कहता है कि ज्वाला का स्वाद लो और जिओ।"

वह बोली—"चलो अच्छा ही है। तुम बिल्कुल मूर्ख नहीं हुए हो। अच्छा

देखो । मैं इस जीवन-धारा में दूसरी बार नहाऊँगी और संभव हुआ तो अपने सौन्दर्य एवं जीवन की अवधि में वृद्धि करूँगी । यदि यह संभव न भी हुआ तो मुझे कोई हानि न पहुँचेगी ।"

एक क्षण रुककर उसने आगे कहा—"इसके अतिरिक्त मेरे दोबारा स्नान करने का एक और भी गम्भीर कारण है । जब पहली बार मैंने इसके सत्व का स्वाद चखा तब मेरा हृदय वासनाओं तथा मिश्रानी अमीनार्ता के प्रति घृणा से पूर्ण था इसलिए निराकरण की बड़ी चेष्टा करने पर भी मेरी आत्मा पर वासना एवं घृणा की छाप पड़ गई है जो आज तक बनी हुई है । पर अब स्थिति दूसरी है । अब मेरी चित्तवृत्ति आनन्द की है और मैं पवित्रतम विचारों से पूर्ण हूँ और सदा ऐसी ही रहूँगी । इसलिए कालिक्रेटीज़ ! एक बार और नहाकर मैं स्वच्छ एवं पवित्र बन जाना चाहती हूँ जिससे अधिक पवित्र रूप में तुमसे मेरा मिलन हो । इसलिए जब ज्वाला में नहाने की तुम्हारी बारी आवे तो तुम भी समस्त बुरी भावनाओं को मन से निकाल देना और सन्तोष एवं तृप्ति को ग्रहण कर सन्तुलित हो जाना । अपनी आत्मा के पंखों को उन्मुक्त कर दो, अपनी माँ के चुम्बन का विचार करो और तुम्हारे स्वप्नों के मौन पर शुभ-भावनाओं के जो रजत् पंख कभी उगे हों उन्हें बलवान बनाना । उस क्षण में जो तुम होगे उसी के बीज से जो तुम आगे होगे उसका निर्माण होगा ।

"अब तैयार हो जाओ, चाहे इसमें मौत ही क्यों न आ जाय । तैयार हो जाओ कालिक्रेटीज़ !"

अध्याय २६

हमने क्या देखा ?

इसके बाद कुछ देर के लिए नीरवता छा गई, जिसमें ऐसा मालूम पड़ा मानो आयेशा उस अग्नि-परीक्षा के लिए साहस एकत्र कर रही है । और मैं लियो को पकड़े हुए एकदम सन्नाटे में प्रतीक्षा करता रहा ।

आखिर, दूर से धीमी-धीमी कड़कड़ाहट की आवाज़ आने लगी। धीरे-धीरे आवाज़ बढ़ती गई, यहाँ तक कि थोड़ी दूर पर भयंकर गर्जन होने लगा। उसे सुनते ही आयेशा ने अपनी महीन ओढ़नी उतार दी और कमर से स्वर्णिम साँप की कर्धनी को खोल दिया। इसके बाद अपने लम्बे बालों को छिटकाकर, वस्त्र की भाँति, चारों ओर कर लिया। कर्धनी अपने सिर के बालों पर लपेट ली। अब वह वहाँ आदि नारी (ईव) सी हमारे सामने खड़ी थी। उसके शरीर पर सिवा बालों के और कुछ न था। मैं शब्दों से नहीं बता सकता कि उस समय वह कितनी मोहक, कितनी सुन्दर और कितनी दिव्य लग रही थी। अग्नि के गर्जते हुए पहिये निकट से निकटतर होते जा रहे थे। जब वे बहुत निकट आ गए तो अपने बालों के भीतर से एक गोरी बाँह निकालकर आयेशा ने लियो के गले में डाल दी।

उसने धीमे स्वर में कहा—"ओ मेरे प्रियतम ! मेरे प्रियतम ! क्या तुम कभी जान पाओगे कि मैंने तुम्हें किस तरह प्यार किया है ?" यह कहकर उसने लियो के माथे का चुम्बन लिया, थोड़ा हिचकिचाई जैसे सन्देह में पड़ गई हो, तब बढ़कर जीवन के मार्ग में खड़ी हो गई।

उसके अन्तिम शब्द हृदय को हिला देने वाले थे। लियो के माथे का वह चुम्बन बड़ा करुणाजनक था, जैसे वह माँ का चुम्बन हो और अपने साथ उसका समस्त आशीर्वाद लेकर आया हो।

कड़कड़ाहट और गड़गड़ाहट बढ़ती गई। मालूम होता था जैसे एक साथ ही जंगल का जंगल आँधी से कड़कड़ाकर गिर रहा हो या जैसे पहाड़ पर बिजली कड़कड़ाकर गिर रही हो। आवाज़ निकट से निकटतर आती गई। अब उस घूमते हुए अग्नि स्तंभ के पूर्व आने वाली लपटें दिखाई पड़ने लगीं; वे उस गुलाबी वातावरण में तीर-सी लगती थीं। अब स्तंभ का किनारा सामने आ गया। आयेशा उसकी ओर घूम गई और स्वागत में अपने हाथ फैला दिये। धीरे-धीरे लपटें उसके चारों ओर फैल गईं। मैंने देखा कि वे उसके शरीर पर दौड़ रही हैं। मैंने देखा कि आयेशा दोनों हाथों से उसे उठा-उठाकर पानी की भाँति पी रही है; फिर सिर पर डाल रही है। यह एक भयानक और अद्भुत दृश्य था।

उसके बाद वह थोड़ी देर के लिए रुक गई और अपनी बाहें फैलाकर

चुपचाप खड़ी रही। उसके मुख पर स्वर्गीय—दिव्य—मुसकान थिरक रही थी, मानो वह स्वयं उस ज्योति की आत्मा हो।

वह रहस्यमयी अग्नि आयेशा के काले एवं चारों ओर फैले हुए बालों से खेलने लगी। वह कलाबत्तू के धागे के समान कभी उनमें वँट जाती, कभी उनके चारों ओर लहरिया बनाती लिपट जाती! वह उसकी हाथी दाँत-सी छाती और कंधों पर चमक उठती, जहाँ से कि उसके बाल हटकर एक ओर को हो गए थे; कभी वह उसकी सुराहीदार गर्दन से होती उसके कोमल मुख पर पहुँच जाती और उसके कमल नयनों में घुस जाती जो चमकते थे कि बस चमकते थे; उनमें जलते हुए आध्यात्मिक आकाश-तत्त्व से भी अधिक तेज था।

आह! वह इस ज्वाला में खड़ी कितनी सुन्दर लगती थी! स्वर्ग की कोई देवी उससे अधिक सुन्दर नहीं हो सकती थी। जिस प्रकार नग्न अग्नि में वह नग्न खड़ी हमारे त्रस्त चेहरों की ओर देखती मुस्करा रही थी, उसे अब भी याद करके मेरे हृदय पर बेहोशी छाने लगती है और एक बार पुनः उसे उस रूप में देखने के लिए मैं अपना समस्त शेष जीवन दे सकता हूँ।

परन्तु अचानक—इतना अचानक कि मैं कह नहीं सकता, उसके चेहरे पर एक अकथनीय परिवर्तन दीख पड़ा—परिवर्तन जिसकी न कोई परिभाषा, न व्याख्या ही की जा सकती है, फिर भी जो परिवर्तन तो था ही। उसकी मुस्कराहट लुप्त हो गई; और उसकी जगह मुख पर एक प्रकार की कठोरता और शुष्कता आ गई; उसका गोल चेहरा बदरंग होने लगा जैसे कोई बड़ी भारी चिन्ता उस पर अपनी छाप छोड़े जा रही हो। सुन्दर आँखें निष्प्रभ हो गईं; और उसका सुगठित लम्बा सीधा कद झुक गया।

मैंने अपनी आँखें मींच लीं और सोचने लगा कि कहीं मैं किसी इन्द्रजाल का शिकार तो नहीं हो गया, या अत्यधिक एवं घनीभूत प्रकाश-दर्शन से मेरी आँखों में कोई खराबी तो नहीं आ गई। इतने में वह अग्नि-स्तंभ धीरे-धीरे ऐंठने लगा और गरजता हुआ पृथ्वी के गर्भ में न जाने कहाँ समा गया। केवल आयेशा पहले ही की तरह वहाँ खड़ी रह गई।

अग्नि स्तम्भ के जाते ही आयेशा लियो की तरफ़ बढ़ी—मुझे ऐसा लगा कि उसकी चाल में अब वह थिरक नहीं है—उसने उसके कंधे पर हाथ रखने के लिए अपना हाथ फैलाया। मैंने उसकी बाँह की ओर देखा। उसकी अद्भुत

गोलाई और सुन्दरता कहाँ चली गई ? वह पतली एवं बेडौल हो गई थी। और उसका चेहरा—हे ईश्वर—**उसका चेहरा मेरी आँखों के सामने बूढ़ा होता जा रहा था** ! मेरा अनुमान है कि लियो ने भी इसे देखा ; वह निश्चित रूप से लड़खड़ा गया।

"यह क्या बात है कालिक्रेटीज !" उसने कहा। पर अरे ! उसका आह्लाद-कारी, सुरीला स्वर कहाँ चला गया ? वह बेसुरा और फटा हुआ था।

वह घबराकर बोली—"क्यों, क्या बात है—यह क्या बात है ? अरे, मेरी आँखें तिलमिला रही हैं। अग्नि का गुण तो नहीं बदल गया ? क्या जीवन का सिद्धान्त भी बदल सकता है ? कालिक्रेटीज़ ! बोलो, क्या मेरी आँखों में कोई खराबी आ गई है ? मुझे कुछ स्पष्ट नहीं दिखाई देता" और उसने अपना हाथ अपने सिर पर रखकर अपने बालों को स्पर्श किया—और अरे ! भयानक, परम भयानक !—सारे बाल फर्श पर गिर पड़े।

"**अरे ! देखो ! देखो ! देखो !**" सहम कर जाब चिल्ला उठा। मारे डर के उसकी आँखें प्रायः बाहर निकल आईं और उसके मुँह से फेन—फेचकुर—निकलने लगा। "**देखो !—देखो—देखो !** वह सिकुड़ती जाती है। वह बँदरिया हुई जा रही है !" और दाँत पीसता तथा मुँह से फेन बहाता हुआ बेहोश होकर वह ज़मीन पर गिर पड़ा।

उस भयानक दृश्य के स्मरण मात्र से, इसे लिखते समय भी, मुझ पर बेहोशी-सी आ रही है। सचमुच आयेशा सिकुड़ रही थी। जो स्वर्णिम सर्प उसके सुन्दर बदन पर लिपटा हुआ था, सरककर ज़मीन पर गिर पड़ा। वह छोटी से छोटी होती गई; उसकी चमड़ी का रंग बदल गया और उसकी प्रकाशमयी धवलता लुप्त हो गई तथा वह भद्दी भूरी और पीली पड़ गई। जैसे कोई जीर्ण नष्टप्राय चर्मपत्र हो। उसने अपना सिर छू कर देखा ; उसका नाज़ुक हाथ चंगुल मात्र रह गया था। उसकी हालत बुरी तरह रखी मिश्री 'ममी' की भाँति हो गई थी। अब उसे भान हुआ कि किस प्रकार का परिवर्तन उसमें हो रहा है और वह चीख पड़ी—आह वह चीखी। आयेशा पृथ्वी पर गिर पड़ी और चीखने लगी।

पर वह छोटी और छोटी, बराबर छोटी होती गई—यहाँ तक कि एक बँदरिया से बड़ी न रह गई। उसकी चमड़ी पर लाखों सलवटें पड़ गई थीं और

उसके बेडौल चेहरे पर उसकी अकथनीय आयु की छाप थी। मैंने वैसी कोई चीज़ कभी नहीं देखी ; जो असीम आयु उसके डरावने चेहरे पर लिखी हुई थी, उसे मैंने क्या, किसी ने भी न देखा होगा। वह दो महीने के बच्चे जैसी हो गई थी, यद्यपि उसकी खोपड़ी वैसी ही बनी हुई थी; और जो अपने होश-हवास ठिकाने रखना चाहें वे ईश्वर से प्रार्थना करें कि ऐसा दृश्य उन्हें कभी देखना न पड़े।

अन्त में वह शान्त और स्थिर हो गई, केवल कभी-कभी ज़रा-ज़रा हिलती-डुलती थी। अभी जो दो मिनट पहले हम लोगों की ओर देख रही थी—सर्वोत्तम सुन्दरी, सबसे महती और सबसे विभूतिमयी स्त्री, जिसे आज तक दुनिया ने देखा था—वही हमारे सामने, अपने काले बालों की ढेरी के पास, ज़मीन पर पड़ी हुई थी, क़द में एक बड़ी वनमानुषी के समान, देखने में भयानक, वीभत्स—इतनी वीभत्स कि उसका वर्णन नहीं हो सकता। फिर भी सोचिए तो—और उसी समय मेरे मन में विचार आया कि यह वही स्त्री है !

वह मर रही थी ; हम देख रहे थे कि वह मर रही है। हमने ईश्वर को धन्यवाद दिया, क्योंकि जब तक जीवित रहती, उसमें अनुभूति रहती और यह अनुभूति उससे क्या कहती ? उसने अपने कंकालवत् हाथों पर अपने को कुछ उठाया और अंधी के समान अपने चतुर्दिक् देखा तथा कछुए की भाँति अपना सिर एक तरफ से दूसरी तरफ़ ले गई। वह देख न सकती थी क्योंकि उसकी धवल आँखों पर हड्डी का एक सूक्ष्म आवरण आ गया था। हाय ! दृष्टि-शक्ति की यह भयानक करुण स्थिति ! पर वह बोल सकती थी।

काँपती हुई, फटी आवाज़ में वह बोली—"कालिक्रेटीज़ ! मुझे भूलना मत। मेरी बुरी हालत पर तरस खाना। मैं मरती नहीं हूँ ; मैं फिर आऊँगी और एक बार फिर ऐसी ही सुन्दरी बनूंगी। मैं शपथपूर्वक कहती हूँ—यह सत्य है। आ—ह—ह" बस वह मुँह के बल गिर पड़ी और ठण्डी हो गई।

हाँ, उसी जगह, जहाँ बीस सदियों पूर्व उसने पुजारी कालिक्रेटीज़ को मारा था, आयेशा स्वयं भी गिरी और मर गई।

भय की प्रबलता से हम भी उस भयानक स्थान की बालुकामयी फर्श पर गिर पड़े और बेहोश हो गए।

मैं नहीं कह सकता कि कब तक हम लोग उस अवस्था में पड़े रहे। मेरा

अनुमान है कि कई घण्टे तक हम पड़े रहे होंगे। अन्त में जब मैंने अपनी आँखें खोलीं तब भी दूसरे दोनों वैसे ही ज़मीन पर बेहोश पड़े हुए थे। गुलाबी ज्योति अब भी स्वर्गीय उषा की भाँति झलक रही थी। और जीवन-स्तम्भ अब भी अपने गर्जनरूपी पहियों पर गड़गड़ाता उसी प्रकार आता और जाता था, क्योंकि जब मैंने आँखें खोलीं तब भी वह जा रहा था। और वहाँ ज़मीन पर वह भयानक बंदरिया पड़ी हुई थी, जिसकी सूखी चमड़ी सूखकर झुर्रियों से भर गई थी और पुराने चर्मपत्रक की भाँति जगह-जगह फट गई थी। क्या यही वह ऐश्वर्यमयी, परम सुन्दरी 'अवश्य-माननीया' है ? पर यह कोई स्वप्न नहीं था— यह एक भयंकर वास्तविक घटना थी !

ऐसा विचित्र और भयानक परिवर्तन कैसे हुआ ? क्या उस जीवनदायी अग्नि का गुण बदल गया ? या ऐसा तो नहीं है कि वह समय-समय पर जीवन-सत्त्व की जगह मरण-तत्त्व भी प्रवाहित करता हो ? या जिस शरीर पर एक बार उसका प्रयोग हो चुका हो वह पुनः इसे सहन न कर सकता हो और दुबारा प्रयोग करने पर उसका समस्त गुण लुप्त हो जाता हो ? हमें तो आयेशा के सम्बन्ध में यह अन्तिम बात ही जँचती है। मुझे ज़रा भी संदेह नहीं है कि जो शक्ल हमारे सामने पड़ी हुई थी वह ठीक वैसी थी जैसी किसी ऐसी स्त्री की होनी चाहिए जो असाधारण उपायों द्वारा जीवन को बाईस शताब्दियों तक रोके रही हो। २२०० वर्षों में शरीर जैसा जीर्ण होता, आयेशा का शरीर वैसा ही हो गया था।

पर कौन कह सकता है कि क्या हुआ ? हाँ, घटना सच्ची थी और उसका शरीर सामने पड़ा हुआ था। उस घड़ी से अनेक बार मैंने इस घटना पर विचार किया है, और बिना विशेष कल्पना के इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ, इसमें ईश्वरीय शक्ति का हाथ था। आयेशा अपने प्रियतम से मिलने की प्रतीक्षा में इतने दिनों तक अपनी देह की कारा में बैठी हुई कुछ सृष्टि के नियमों को थोड़े ही बदल सकी थी। यदि अपने प्रेम में सन्तुष्ट और शक्तिमान आयेशा, अक्षय यौवन, दैवी सौन्दर्य एवं शक्ति तथा सदियों के ज्ञान से विभूषित होकर जीती रहती तो समाज में क्रान्ति कर देती और शायद मानव का भाग्य ही बदल देती। इस प्रकार वह सनातन नियमों के विरुद्ध खड़ी हुई और शक्तिमान होते हुए भी

उसके द्वारा धूलि में मिला दी गई। मानो ईश्वरीय नियमों ने उसके प्रयत्नों का भयानक उपहास किया हो।

मैं कुछ देर तक यों ही पड़ा अपने मन में इन भयानक घटनाओं पर विचार करता रहा। धीरे-धीरे मेरे शरीर की गई हुई शक्ति फिर वापस आ गई। तब मैं दूसरे साथियों के बारे में सोचता उठ बैठा और उन्हें भी जगा देने का निश्चय किया। पहले मैंने आयेशा की कुर्ती और ओढ़नी उठाई जिनके द्वारा वह अपने प्रकाशमान एवं मोहक सौन्दर्य को मनुष्यों की आंखों से छिपाती थी। मैंने अपना मुँह दूसरी ओर फिराकर, जिससे उसका वह वीभत्स रूप न देख सकूँ, विभूतिमान मृतक के भयानक अवशेष पर तथा मानवीय सौन्दर्य और मानव-जीवन के उस डरावने स्मारक पर कुर्ती और ओढ़नी डाल दी जिस में वह ढक गया। मैंने यह काम बहुत जल्दी किया क्योंकि मुझे भय था कि कहीं लियो होश में न आ जाय और आयेशा को पुनः इस रूप में देख न ले।

उसके बाद आयेशा के काले सुगन्धित बालों को, जो उसी प्रकार ज़मीन पर पड़े हुए थे। मैं जाब के पास के गया। वह पेट के बल ज़मीन पर पड़ा हुआ था। मैंने उसे उलटा। मैंने हाथ पकड़कर उसे उठाना चाहा पर वह एक ओर झूल गया। मैं सिहर उठा और उसके चेहरे पर ध्यान-पूर्वक दृष्टि डाली। एक ही दृष्टि काफ़ी थी। हमारा पुराना और वफादार नौकर मर चुका था। जो कुछ उसने देखा और भोगा उससे उस पर बहुत बुरा असर पड़ा था। अन्तिम भयानक दृश्य को वह सहन न कर सका और उसके प्राण-पखेरू उड़ गए। उसकी ओर देखते ही मुझे यह मालूम हो गया।

यह दूसरी चोट थी; पर इससे पाठकों को कल्पना हो सकेगी कि वह दृश्य कितना भयानक रहा होगा। और यह कोई आश्चर्य की बात न थी कि जाब उसे देखकर ही मर गया था। जब दस मिनट बाद लियो कराहता और काँपता हुआ, थोड़ी देर के लिए होश में आया और मैंने उसे बताया कि जाब मर गया तो वह 'ओह!' करके रह गया। यह कोई हृदयहीनता की बात न थी क्योंकि दोनों एक दूसरे को बहुत चाहते थे और अब तक लियो बड़े प्रेम और दुःख के साथ उसकी याद किया करता है। बात यह थी कि उसका दिमाग़ अब ज्यादा बर्दाश्त न कर सकता था।

अब मैं लियो को होश में लाने का उपाय करने लगा जो केवल बेहोश हो

गया था, मरा न था। आखिरकार वह उठ बैठा। तब मैंने एक दूसरी भयानक बात देखी। जब हम इस स्थान पर पहुँचे थे तो उसके घुंघराले बाल लालिमा-युक्त सुनहले रंग के थे और दमकते थे; इस समय सफेद होते जा रहे थे। थोड़ी ही देर में वे बर्फ़ की भाँति सफेद हो गए। इसके अतिरिक्त वह बीस साल ज्यादा का दिखने लगा।

जब लियो के होश कुछ ठिकाने हुए और जो कुछ हो गया था, उसकी याद उसे आई तो उसने भर्राई और मरी-सी आवाज़ में कहा—"काका, अब क्या करना चाहिए ?"

मैं बोला—"और क्या करना है; दिमाग़ ठीक करो और यहाँ से चलो। हाँ, तुम उसमें नहाना चाहो तो बात दूसरी है।" और मैंने निकट आते हुए अग्नि-स्तंभ की ओर इशारा किया।

उसने दुःखभरी हँसी हँसकर कहा—"मैं प्रसन्नतापूर्वक नहाऊँ यदि मुझे विश्वास हो जाय कि वह मुझे मार डालेगी। यह मेरी उस अभागी हिचकिचाहट का नतीजा है जो आयेशा मरी। अगर मैंने सन्देह न किया होता तो क्यों मुझे दिखाने के लिए दोबारा नहाने जाती ? मुझे विश्वास नहीं है कि नहाने से मैं मर सकूंगा। अग्नि का मुझ पर बिल्कुल दूसरा असर हो सकता है। संभव है, वह मुझे अमर कर दे और भई मुझमें इतना धैर्य नहीं है कि मैं उसके लौटने की हज़ारों वर्ष तक प्रतीक्षा करूँ, जैसा कि उसने मेरे लिए किया। मैं तो अपने समय पर मर जाना ज्यादा पसन्द करूँगा, और मैं समझता हूँ कि वह बहुत दूर नहीं है। इस तरह मरकर मैं उसे जल्दी पा जाऊँगा। हाँ, आप चाहें तो खुद प्रयोग कर सकते हैं।"

मैंने अपना सिर हिला दिया; मेरी उत्सुकता मर गई थी, और दीर्घ जीवन के प्रति मेरी पूर्व अरुचि और प्रबल होकर लौट आई थी। फिर हम दोनों में से कोई नहीं जानता था कि जीवन-सत्त्व का क्या असर पड़ेगा। 'आयेशा' पर जो असर पड़ा था वह स्फूर्तिदायक न था, और किन वास्तविक कारणों से वैसा हुआ, इस विषय में हम निश्चित रूप से कुछ न जानते थे।

मैंने कहा—"बेटा! हम तब तक तो यहाँ नहीं रह सकते जब तक कि इन दोनों की तरह हम भी मौत के घाट न उतर जायँ", मैंने सफेद कपड़े से ढकी ढेरी और गरीब जाब के लकड़ाते हुए कंकाल की ओर दिखाकर कहा—"अगर

हमें जाना है तो जल्दी चल देना चाहिए । पर दीपकों का तेल तो समाप्त हो गया होगा ।" मैंने एक दीपक उठाकर देखा, उसमें तेल था ।

लियो ने उदासीनतापूर्वक कहा—"शीशी में भी कुछ तेल है । वह फूटी तो नहीं है ?"

मैंने शीशी उठाकर देखी । वह ठीक हालत में थी । काँपते हाथों से मैंने दोनों दीपकों में तेल भरा । सौभाग्य से उनमें अभी बत्ती भी थी । मैंने उन्हें जला दिया । इसी समय अग्नि-स्तंभ, अपनी अनन्त यात्रा में, पुनः आता हुआ जान पड़ा—पर क्या पता कि एक ही स्तंभ बार-बार घूमकर आता था या उनकी अनन्त संख्या थी ।

लियो ने कहा—"एक बार और देख लीजिए । ऐसी चीज़ पुनः दुनिया में देखने को न मिलेगी ।"

मुझे अब यह उत्सुकता व्यर्थ जान पड़ी ; किन्तु लियो की भाँति वह मुझ में भी थी । इसलिए हम तब तक प्रतीक्षा करते रहे जब तक वह अपनी धुरी पर घूमता, गड़गड़ाता और दहकता हुआ आकर चला न गया । मैं सोचने लगा कि न जाने कितने सहस्र वर्षों से यह तमाशा पृथ्वी के गर्भ में हो रहा है और अभी न जाने कितने सहस्र वर्षों तक होता रहेगा । मैं आश्चर्य करने लगा कि क्या फिर किसी मनुष्य की आँखें इसके आवागमन को देख पायेंगी या इसकी अद्भुत आवाज़ से पुनः किसी के कान आकर्षित और आह्लादित होंगे । मुझे तो यह संभव नहीं मालूम पड़ता । मेरा विश्वास है कि उस अपार्थिव दृश्य को देखने वाले हम ही अन्तिम आदमी हैं । ख़ैर, वह आकर चला गया और हम भी जाने को तैयार हुए ।

जाने के पहले हम दोनों ने जाब के ठंडे हाथ से हाथ मिलाया । यह एक दुःखदायी लोकाचार मालूम हुआ किन्तु उस वफादार सेवक के प्रति सम्मान प्रकट करने का यही एकमात्र साधन हमारे पास था । धवल वस्त्र के नीचे की ढेरी को हमने अनावृत नहीं किया । उस भयानक दृश्य को पुनः देखने की इच्छा हमें न थी पर भयानक परिवर्तन की यंत्रणा में जो सुन्दर बाल गिर गए थे उनके पास हम गए । हाय, वह यंत्रणा हज़ारों स्वाभाविक मृत्युओं से कहीं बुरी थी । हम दोनों ने चमकते बालों के एक-एक गुच्छे उठा लिये । वे बाल अब तक हमारे पास हैं और जिस ऐश्वर्यमय एवं परम सुन्दर रूप में हमने आयेशा

को देखा था उसकी एकमात्र यादगार हैं। लियो ने उन सुगन्धित बालों को अपने ओठों पर रखकर चूम लिया।

उसने भर्राए स्वर में कहा—"वह कह गई है कि मुझे भूल न जाना, हम फिर मिलेंगे। ईश्वर की सौगन्द ! मैं उसे कभी न भूलूँगा। मैं शपथ लेता हूँ कि यदि मैं यहाँ से जीता बचकर निकल गया तो जन्म भर किसी दूसरी स्त्री से कोई सम्बन्ध न रखूँगा और मैं जहाँ भी जाऊँगा, उसी प्रकार निष्ठापूर्वक उसकी प्रतीक्षा करूँगा जिस प्रकार उसने मेरे लिए प्रतीक्षा की थी।"

मैंने अपने मन में सोचा—"हाँ, यदि वह उसी सुन्दर रूप में आती है जिस रूप में हम उसे जानते रहे हैं। पर यदि वह **इस रूप** में आई तो ?"*

इसके बाद हम चले आए। चले आए और उन दोनों को जीवन के उस गुप्त स्रोत की उपस्थिति पर, मृत्यु की संगति में छोड़ आए। वे वहाँ पड़े कितने इकले और कितने बिखरे-से लगते थे ! वह लघु ढेरी दो हज़ार वर्षों से भी अधिक समय तक समस्त जगत में परम बुद्धिमती, परम रूपमयी और गौरवशालिनी जीव थी—मैं उसे स्त्री नहीं कहूँगा। वह अपने ढंग में दुष्ट थी ! आह ! दुर्बल मानव हृदय ! इस दुष्टता से उसके सौंदर्य में कोई कमी नहीं आई थी, बल्कि शायद कुछ वृद्धि ही हुई होगी। जो भी हो ; वह बड़े ऊँचे पाये की थी ; आयेशा में कोई तुच्छता या क्षुद्रता नहीं थी।

और अभागा जाब ! उसका दुःस्वप्न सत्य हो गया और बेचारा चल बसा। कैसे विचित्र स्थान में उसकी मृत्यु हुई और राजकीय 'अवश्य-माननीया' के अवशेष के साथ एक ही कक्ष में उसके अवशेष पड़े हैं !

हमने अन्तिम बार उनकी ओर तथा उस अवर्णनीय गुलाबी ज्योति की ओर नजर डाली जिसमें वे पड़े हुए थे। फिर दुःख से भरा हृदय लिये उनको छोड़कर रवाना हुए, बिल्कुल टूटे हुए ? इतने टूटे कि हमने अमर होने का सुयोग

---

* कैसा डरावना विचार है यह ! पर स्त्रियों के प्रति हमारा प्रायः समस्त प्रेम, (उनको छोड़ जो रक्त द्वारा हम से सम्बन्धित हैं), कम से कम प्रथम प्रेम, उनके रूप-दर्शन पर ही निर्भर करता है। अगर वह रूप नष्ट हो जाय या देखने में भद्दा लगे तो स्त्री के और बातों में वही रहने पर भी क्या हम उसे उसी प्रकार प्यार करते हैं ?

भी छोड़ दिया क्योंकि जो भी हमारे जीवन को मूल्यवान बनाता था वह सब हमसे छिन गया था, और उस समय भी इतना तो हम सोच ही सकते थे कि अपनी आयु को अनिश्चित काल तक बढ़ाने का अर्थ अपनी व्यथाओं की अवधि बढ़ाना ही है। हम दोनों ने अनुभव किया कि एक बार आयेशा के नयनों में नयन डालकर देखने के बाद हम उसे कभी भूल नहीं सकेंगे—कम से कम जब तक स्मृति और पहचान की शक्ति रहेगी। हम दोनों उसे उस समय और सदा के लिए प्यार करते थे ; वह हमारे हृदय पर चित्रित हो चुकी थी और उस छाप को कोई दूसरी स्त्री या दिलचस्पी मिटाने में असमर्थ थी।

पर मुझे उसके बारे में इस प्रकार सोचने का कभी अधिकार न था, न आज है और यहीं मेरे दुःख का डंक है। जैसा उसने मुझसे कहा था, मैं उसकी नज़रों में कुछ न था और काल की अज्ञात गहराई में कभी कुछ न हो सकूँगा, जब तक कि स्थितियाँ बदल नहीं जातीं और ऐसा दिन नहीं आता जब दो आदमी एक ही स्त्री को प्यार कर सकें और इस तथ्य को जानते हुए भी तीनों सुखी हों। मेरे विचूर्ण हृदय के लिए यही धुँधली-सी आशा है। इसके सिवा मेरे पास कुछ नहीं है। मैंने यह भारी क़ीमत चुका दी है जिसके योग्य मैं इस समय हूँ या बाद में हो सकूँगा। और यही मेरा एकमात्र पुरस्कार है ; मेरा एकमात्र सहारा है।

पर लियो का सवाल दूसरा है, और प्रायः मुझे उसके सुखी जीवन से ईर्ष्या होती है, क्योंकि यदि आयेशा का कथन सत्य था, और मैं मानता हूँ कि उसका ज्ञान और विवेक अन्त तक बना था, तो लियो का भविष्य बहुत अच्छा था। उसे भविष्य में कुछ आशा है पर मुझे तो कोई आशा भी नहीं है। इस पर भी, जरा मानव हृदय की दुर्बलता और दुराशा तो देखिए; और इससे दुर्बलों को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए, मैं बिना आशा किए नहीं रह सकता। मेरा आशय यह है कि मैं जो कुछ दे चुका हूँ और जो सदा देता रहूँगा, उस पर मुझे सन्तोष है। उसके बदले में मेरी स्वामिनी के टेबुल से जो भी टुकड़े गिर जायँगे, उन्हीं पर सन्तोष कर लूंगा : कुछ कृपापूर्ण शब्दों की स्मृति, सुदूर अज्ञात भविष्य में पहचान की एकाध मधुर मुस्कान, थोड़ी-सी स्निग्ध मित्रता, और उसके प्रति अपनी निष्ठा के लिए किंचित् आभार-प्रदर्शन—, बस। और लियो ?

यदि यह सच्चा प्रेम नहीं है तो मैं नहीं जानता कि फिर उसकी क्या

परिभाषा है । मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि उतरती अधेड़ अवस्था में प्रेम में पागल होने की यह मनःस्थिति बहुत बुरी है ।

अध्याय २७

हम कूदते हैं

हम गुफाओं को आसानी से पार कर गए किन्तु जब हम उस उलटे शंकु की ढाल पर पहुँचे तो दो कठिनाइयाँ सामने आईं । एक तो यह कि चढ़ाई बहुत मुश्किल और थकाने वाली थी; दूसरी यह कि रास्ते का पता किस प्रकार लगे । यह तो कहिए कि आते समय मैंने रास्ते की बहुत-सी बातें अपने स्मृतिपट पर जमा ली थीं नहीं तो हम निकल ही न पाते और उस ज्वालामुखी के भयानक गर्भ में भटकते फिरते और एक दिन निराशा और थकान से मर जाते । इतने पर भी कई बार हम गलत रास्तों पर भटक गए और एक बार तो एक भयानक खड्ड में गिरते-गिरते बचे । उस भयानक अंधकार और सन्नाटे में रेंगते हुए चलना, एक चट्टान से दूसरी पर चढ़ना और दीपकों की धुंधली ज्योति में उन्हें पहचानते हुए आगे बढ़ना बड़ा ही कठिन था । हम एक दूसरे से बहुत कम बात करते थे क्योंकि हमारे हृदय भरे हुए थे । किसी तरह गिरते पड़ते बढ़ते जाते थे । कभी-कभी बदन कट या छिल जाता । बात यह थी कि हमारे दिल तो बुझे हुए थे, इसलिए हमें अब क्या होता है, इसकी ज़्यादा परवा भी नहीं थी । यही इच्छा शेष थी कि जहाँ तक हो सके, हम अपने जीवन की रक्षा करें—एक स्वाभाविक प्रेरणा थी । हम चार घण्टे तक—ठीक तो कह नहीं सकता क्योंकि हमारे पास कोई घड़ी न थी—अन्धाधुन्ध चलते चले गए । आखरी दो घण्टे तो हम बिल्कुल ही रास्ता भूल गए और मुझे भय लगा कि कहीं हम दूसरे किसी शंकु में तो नहीं चले आये, किन्तु एकाएक मैंने एक बड़ी चट्टान को देखकर पहचान लिया जो आते समय हमें रास्ते में मिली थी । यही आश्चर्य है कि मुझे उसकी याद थी । हम उससे आगे गलत रास्ते पर बढ़ भी गए थे कि मुझे भूल मालूम हो

गई मैंने लौटकर उसकी परीक्षा की और ठीक रास्ते पर आ गए।

इसके बाद बिना विशेष कठिनाई के हमें प्राकृतिक चट्टानी सीढ़ियाँ मिल गईं और चलते-चलते हम उस छोटे कक्ष में पहुँच गए जिसमें 'नूत' रहा करता था और जिसमें उसकी मृत्यु हुई थी।

पर एक नया भय सामने आया। पाठकों को याद होगा कि जाब के भय और अनाड़ीपन से वह तख्ता, जिसके सहारे हमने टेढ़े दाँत जैसी चट्टान से हिलती शिला के बीच के खड्ड को पार किया था, गिर गया था।

अब बिना तख्ते के कैसे पार हों ?

इसका सिर्फ़ एक ही जवाब था—हम कोशिश करें और कूदें या फिर जहाँ हैं वहीं ठहरे रहें और मर जाएँ। बीच का अन्तर तो बहुत ज्यादा नहीं था ; ११–१२ फुट रहा होगा। मैंने कालेज में लियो को, जब वह किशोर था, २०–२० फुट कूदते देखा था। पर इस समय हमारी हालत दूसरी ही थी। दो शिथिल, थके आदमी, जिनमें एक ४० की उम्र पार कर चुका था, और एक हिलती शिला से दूसरी हिलती चट्टान पर जाना था और ज़रा चूकने पर नीचे के अथाह खड्ड में सदा के लिए विलीन हो जाने की संभावना थी। काफ़ी बुरी स्थिति थी पर जब मैंने इन बातों की ओर लियो का ध्यान आकर्षित किया तो उसने संक्षेप में यह उत्तर दिया कि यद्यपि चुनाव निर्दयतापूर्ण है पर इस कमरे में तड़प-तड़प कर इंच-इंच मरने की अपेक्षा खतरा उठाकर तेज़ी के साथ मिट जाना कहीं अच्छा है।

इस तर्क के विरुद्ध मैं क्या कह सकता था, पर इतना तो स्पष्ट था कि हम अन्धकार में कूदने का प्रयत्न नहीं कर सकते थे। इसलिए यही उपाय रह गया था कि हम वहाँ ठहरकर सूर्यास्त के समय पहाड़ी के छिद्र से रोशनी आने की प्रतीक्षा करें। सूर्यास्त से अभी हम कितने दूर या निकट हैं, इसका कुछ भी अन्दाज हमें न था। हम इतना ही जानते थे कि जब भी रोशनी आवे वह दो मिनट से ज्यादा न ठहरेगी। इसलिए हमें उसके आगमन के लिए बराबर तैयार रहना चाहिए। इसलिए हम लोगों ने उस कम्पनशील पत्थर के सिरे तक खिसक चलने और वहाँ तैयार रहने का निश्चय किया। हमने इसलिए भी यह मार्ग ग्रहण किया कि हमारे दीपक एक बार पुनः खत्म हो रहे थे; एक तो बुझ भी गया था, और दूसरा स्नेह के अभाव में दम तोड़ रहा था। इसलिए उस बुझते

हुए प्रकाश में हम छोटी कोठरी से रेंगते किसी तरह उस बड़ी शिला तक पहुँच गए।

ठीक इसी समय दीपक बुझ गया।

हमारी स्थिति भी बहुत बदल गई। नीचे की उस कोठरी में तो हम सुदूर ऊपर ही तूफ़ान की सनसनाहट भर सुनते थे, पर यहाँ उस कम्पायमान पत्थर पर नीचे की ओर मुँह किए पड़े हुए हम चारों ओर उसकी शक्ति और क्रोध का अनुभव कर रहे थे; कभी इस दिशा से, कभी उस दिशा से हरहराता हुआ तूफ़ान आता था और कभी खड्ड, कभी चट्टानी चोटियों से टकराता था—जैसे हज़ारों निराश आत्माएँ चीख रही हों। हम वहां ऐसे भय एवं मनोवेदना से पूर्ण पड़े रहे जिसका वर्णन करना असंभव है। प्रभञ्जन कभी इस चोटी पर, कभी उस चोटी पर अपने भयंकर वाद्य बजाता नाच रहा था और एक दूसरे का आवाहन पर आवाहन कर रहा था। हम वहाँ घण्टों पड़े रहे। भाग्य की बात इतनी ही थी कि ज्यादा ठण्डक न थी बल्कि हवा कुछ गरम थी, नहीं तो हम वहीं अकड़ गए होते। हम उस पत्थर से चिपटे हुए यह सब गर्जन-तर्जन सुनते रहे। इसी समय दैवयोग से ऐसी बात हो गई कि हमारा दुःख बढ़ गया; हमारा हरा घाव और हरा हो गया।

पाठकों को याद होगा कि आते समय आयेशा का काला लबादा हवा के झोंके से उड़ गया था। जब हम लोग पत्थर पर पड़े हुए थे तब वही लबादा अँधेरे में कहीं से उड़ता हुआ आकर लियो के ऊपर इस तरह गिरा कि वह सिर से पैर तक उससे ढक गया। पहले तो हम समझ ही न सके कि यह क्या बला है, पर टटोलने से हमें मालूम हो गया कि यह आयेशा का लबादा है। अब लियो फूट पड़ा और सिसक-सिसक कर रोने लगा। जान पड़ता है कि लबादा उड़कर किसी चोटी में फँस गया था और अब वहाँ से छूटकर उड़ता हुआ आकर लियो पर गिर पड़ा था। यह एक विचित्र और हृदय-द्रावक घटना थी।

इसके कुछ ही देर बाद, बिना किसी पूर्व सूचना के प्रकाश के लाल बाण अन्धकार का हृदय चीरते इधर-उधर दौड़ पड़े। प्रकाश उस शिला पर भी फैल गया जिस पर हम लेटे हुए थे तथा उसकी रेखा उस पार की चट्टान पर भी पड़ी।

लियो ने कहा—"अब उठ जाइए। तुरन्त या फिर कभी नहीं।"

हम उठ खड़े हुए। पहले हमने रक्तिम किरणों से रंजित, रक्त के रंग में नहाये बादलों की ओर देखा; फिर कम्पित शिला और हिलती चट्टान के बीच फैले अवकाश पर नज़र डाली और अपने हृदयों में निराश होकर मृत्यु के लिए तैयार हो गए—यद्यपि हम दुस्साहसिक निराशा से भरे हुए थे, पर उसे पार करना कठिन था।

मैंने पूछा—"पहले कौन जायगा?"

लियो ने कहा—"पहले आप जाइए। मैं इस हिलती शिला को उस छोर से दाब रखूँगा जिससे वह सीधी रहेगी। आप जितनी दूर से संभव हो दौड़कर आइए, और ऊँचा उठकर कूदिए; ईश्वर आप पर दया करें।"

मैंने सिर हिलाकर उसकी बात पर स्वीकृति दी। उसके बाद मैंने वह काम किया जो लियो के बचपन के दिनों के बाद कभी नहीं किया था। मैंने उसके गले में बाँह डाल दी और उसे छाती से लगाकर उसका माथा चूम लिया। यह बात बड़ी भावुकतापूर्ण मालूम होगी पर इस समय मैं एक ऐसे आदमी से विदा हो रहा था जिसे इतना प्रेम करता था कि मेरा अपना बच्चा होता तो भी न कर पाता।

मैंने कहा—"अच्छा बेटा! विदा। हम चाहे कहीं जाएँ पर हमें आशा है कि हम फिर मिलेंगे।"

बात असल में यह थी कि अगले दो मिनट और जीने का भी मुझे विश्वास नहीं था।

इसके बाद मैं चट्टान के पीछे बहुत दूर तक चला गया और जब मेरे पीछे हवा का एक भारी झोंका आया तब मैं लौट पड़ा और ३०-३२ फुट दूर से दौड़ा आया और जान हथेली पर रखकर हवा में उछला। उछलते ही मैंने अनुभव किया कि मेरी कुदान काफी नहीं है और श्रीहत करने वाला भय मेरी नसों में भर गया। ऐसा ही हुआ भी। मेरे पाँव उस पार की चट्टान पर नहीं पड़े; वे खाली जगह में पड़े; केवल मेरे हाथों और धड़ से उसका सम्पर्क हुआ। मैंने चीखकर हाथों से चट्टान को पकड़ लिया पर एक हाथ फिसल गया। मैं केवल एक हाथ से चट्टान को पकड़े हुए था; मेरा मुँह उस शिला की दिशा में था, जिससे कूदकर मैं आया था। मैंने गहरी यंत्रणा में अपना बायाँ हाथ फैलाकर चट्टान के नीचे निकले एक पत्थर को किचकिचाकर पकड़ लिया। अब मैं उस

भयावनी लाल रोशनी में हज़ारों फुट गहरे उस खड्ड के ऊपर हाथों के बल इस प्रकार लटका हुआ था कि मेरा सिर उस चट्टान के नीचे था, हाथ एक शिला के दोनों पार्श्वों को जकड़े हुए थे, इसलिए ज़ोर लगाकर भी मैं अपने को चट्टान के ऊपर नहीं ले जा सकता था। अब ज़्यादा से ज़्यादा यही हो सकता था कि एकाध मिनट मैं अधर में लटकता रहूँ और फिर उस अथाह खड्ड में गिरकर विलीन हो जाऊँ। क्या कोई आदमी इससे भी भयंकर स्थिति की कल्पना कर सकता है ? मैं तो इतना ही जानता हूँ कि उस आध मिनट की दारुण यंत्रणा से मेरा सिर फिर गया।

मैंने लियो की चीख सुनी और उसे हवा में उछलते देखा। मेरी भयंकर स्थिति देखकर उसने ऐसी अच्छी छलांग मारी कि उस खड्ड को पार करता हुआ चट्टान पर आ गिरा—जैसे उसके लिए इतना अन्तर कुछ भी न था। चट्टान के ऊपर पहुँचते ही वह मुँह के बल पड़ गया ताकि नीचे खड्ड में न जा रहे। उसके कूदने की धमक से मुझे अपने ऊपर की शिला कुछ हिलती-सी मालूम हुई। उधर लियो की छलांग से उस पार की वह शिला उलट गई और उलट कर कड़कड़ाती हुई नूत वाली उस कोठरी के ऊपर जा गिरी। इस प्रकार अमृत कुण्ड का वह मार्ग सदा के लिए बन्द हो गया। यह सब एक सेकेण्ड में हो गया और अपनी उस भयानक स्थिति में भी मेरे मन में यह विचार आया कि अब कोई इस रास्ते न जा सकेगा।

इसके बाद मुझे मालूम हुआ कि लियो अपने दोनों हाथों से मेरी दाहिनी कलाई पकड़ रहा है। चट्टान के सिरे पर पेट के बल लेटकर वह मुझ तक अपने हाथ पहुँचा सकता था।

लियो ने गंभीरतापूर्वक कहा—"अब आप ज़रा झूलकर इसके नीचे से निकल आवें।" और तब मैं आपको ऊपर उठा लूँगा या फिर हम और आप दोनों ही गिरकर नष्ट हो जायँगे ? क्यों आप तैयार हैं ?"

इसके जवाब में पहले बायें, फिर दाहिने हाथ से झूलकर मैं अपना सिर ऊपर निकाल पाया। अब बड़ी भयानक घड़ी थी। मैं जानता था कि लियो बहुत बलवान है पर क्या उसमें इतना बल है कि वह मुझे ऊपर उठा ले और जब तक मैं अच्छी तरह चट्टान के ऊपर न चढ़ आऊँ मुझे पकड़े रहे ?

कुछ क्षण तक मैं आगे पीछे झूलता रहा। इस बीच उसने सारी ताक़त

लगाकर मुझे इस तरह उठाया कि उसकी हड्डियाँ कड़कड़ा गईं। धीरे-धीरे मेरा बायाँ हाथ और सीना कगार से चिपट गया। आगे का क्रम तो आसान था। मैं २-३ सेकेण्ड में ऊपर आ गया। अब हम दोनों वहीं पस्त होकर गिर पड़े; हमारा शरीर पत्तियों के समान काँप रहा था और सारे शरीर से ज़ोरों के साथ ठंडा पसीना झर रहा था।

इसके बाद सूर्य की वह छनकर आने वाली रोशनी लुप्त हो गई।

हम दोनों प्रायः आध घण्टे तक बिना एक शब्द बोले चुपचाप पड़े रहे पर आखिरकार हमें उठना पड़ा और उस अन्धकार में हम चट्टान पर रेंगते हुए जितना बढ़ सकते थे बढ़ते रहे। जब हम उस चट्टान के मुँह पर पहुँचे जिसमें से यह चट्टान दाँत या खूँटी की भाँति निकली हुई थी, तब कुछ रोशनी दिखाई पड़ी किन्तु बहुत कम, क्योंकि रात हो गई थी। इसके आगे वायु के झोंके कम हो गए। अब हम लोग सरलतापूर्वक बढ़ने लगे और प्रथम गुफा या सुरंग के मुहाने पर जा पहुँचे। पर यहाँ बड़ी कठिनाई हुई; दीपक एवं तेल की बोतल तो कूदने के समय ही चूर-चूर हो चुकी थी; पर प्यास बुझाने के लिए भी हमारे पास एक बूँद पानी न था। हम वही 'नूत' की कोठरी के पानी पिये हुए थे। तब इस संकरी सुरंग में कैसे चलना होगा?

पर हमारे पास स्पर्शेन्द्रिय के पथ-दर्शन के सिवा और चारा ही क्या था? इसलिए विवश होकर हाथ-पाँव से टटोलते हुए हम आगे चल पड़े। यह भी भय था कि शरीर की दुर्बलता और थकावट ज्यादा बढ़ गई तो हम यहीं पड़े-पड़े मर जायँगे।

आह, उस अन्तिम सुरंग की वह भयानकता! जगह-जगह पत्थर निकले हुए थे; हम बार-बार टकराते थे; बार-बार ठोकर खाते और उन पर गिरते थे, यहाँ तक कि जगह-जगह घाव हो गए और खून रिसने लगा। हमारा एक-मात्र पथ-दर्शक सुरंग की दीवार थी और उस अन्धकार में हम इतने घबरा गए कि दो-तीन बार तो हमारे मन में यह बात आई कि हम उलटी दिशा में चले जा रहे हैं। हम आगे बढ़ते गए पर हमारी गति बराबर धीमी होती गई। घंटे पर घंटे बीत रहे थे और उनके साथ हमारी दुर्बलता भी बढ़ती जाती थी। थोड़ी-थोड़ी देर में हमें सुस्ताना पड़ता था। एक बार तो हम थककर सो गए और अन्दाज़ है कि कई घण्टे तक सोते रहे क्योंकि जब हम जगे तो हमारे

अंग-अंग लकड़ा गए थे, घावों का खून जम गया था तथा चमड़ी कड़ी एवं सूखी मालूम पड़ती थी। अब हम फिर घिसटते हुए चले, यहाँ तक कि जब हमारे हृदय निराशा से भर गए थे, हमें एक बार फिर दिन का प्रकाश दिखाई पड़ा। अब हम गुफा के बाहर चट्टानी-गली में पहुँच गए थे जो पहाड़ी की बाहरी सतह से इस ओर आती थी।

मधुर सुगन्धित वायु का स्पर्श और आकाश का दर्शन हमें बता रहे थे कि कि यह उषाकाल है। हम सूर्यास्त के समय इस यात्रा पर चले थे, और अब सबेरा हो रहा था। इस प्रकार हम रात भर रेंगते और चलते रहे थे।

मैंने हाँफते हुए कहा—"लियो, एक चेष्टा और, कि हम ढाल के नीचे बिल्लाली के पास पहुँच जायँगे ; अगर वह लौट न गया होगा। आओ, हिम्मत न हारो।" मैंने इसलिए कहा कि गुफा से बाहर निकलते ही लियो सिर नीचा करके पड़ गया था।

वह उठा और हम दोनों एक दूसरे को सहारा देते, गिरते पड़ते और लड़खड़ाते न जाने किस प्रकार ५० फुट की दूरी पार कर नीचे आये। मुझे सिर्फ इतना याद है कि हम नीचे ढेर होकर पड़े थे। चूँकि अब हम एक कदम खड़े होकर न चल सकते थे, इसलिए हमने अपने हाथों एवं घुटनों के बल पर रेंगना शुरू किया और उस कुंज की ओर चले, जहाँ ठहरने का आदेश आयेशा ने बिल्लाली को दिया था। इस तरह हम ४० गज़ भी न गए होंगे कि हमारे बाईं ओर के वृक्षों में से एक गूँगा निकला, जो शायद सुबह की सैर को निकला होगा। वह हमारे पास यह देखने के लिए दौड़ आया, कि कोई विचित्र जानवर तो नहीं हैं। उसने हमें देखा और देखा, खूब घूरकर देखा और फिर हाथ फैलाकर ज़मीन पर गिरते-गिरते बचा। अब वह तेज़ी से कुंज की ओर दौड़ा, जो कोई दो सौ गज़ दूर था। इसमें कोई आश्चर्य की बात न थी कि वह हमें देखकर डर गया क्योंकि हमारी सूरत-शक्ल ऐसी ही हो रही थी। लियो के सुनहले घुंघराले बाल बर्फ की भाँति सफेद हो गए थे ; उसके कपड़े फट-फटकर शरीर से झूल रहे थे ; उसका चेहरा, हाथ, क्या सारा शरीर ही लोहू-लुहान हो रहा था। मेरी दशा भी कुछ ठीक न थी। मुझे याद है कि दो दिन बाद जब मैंने अपना चेहरा पानी में देखा तो मैं अपने को पहचान नहीं सका। यह ठीक है कि मैं कभी अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध नहीं रहा पर कुरूपता के सिवा मुझमें

एक ओर बात पैदा हो गई थी। कुछ पागलपन भरे भय का भाव मेरे चेहरे पर था। सोते-सोते कोई भयंकर स्वप्न देखकर जग जाने वाले मनुष्य के चेहरे पर जो भाव होता है वही। और इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। आश्चर्य की बात तो यह है कि जो कुछ हम पर गुज़री थी उसके बीच भी हम अपने होश-हवास में थे।

जब मैंने बिल्लाली को तेज़ी से अपनी ओर आते देखा तो मुझे बड़ी राहत मिली, पर बिल्लाली के शानदार चेहरे पर भी घबराहट के चिह्न देखकर, उस हाल में भी मुझे हँसी आ गई।

वह चिल्लाया—"ओः! मेरे लंगूर! मेरे लंगूर! मेरे बेटे! यह क्या सचमुच तुम और शेर हो? उसके गेहूँ के पके दाने-से बाल बर्फ की तरह सफेद हैं। तुम कहाँ से आ रहे हो? वह सुअर कहाँ गया और 'अवश्य-माननीया' कहाँ हैं?"

मैंने उत्तर दिया—"मर गए, दोनों मर गए! पर मुझसे इस समय कोई सवाल न पूछो; हमारी मदद करो; हमें भोजन-पानी दो नहीं तो हम भी तुम्हारी आँखों के आगे ही मर जायँगे। देख रहे हो कि पानी के अभाव में हमारी जीभ काली पड़ गई है? तब हम बात कैसे करें?"

उसने हाँफकर कहा—"मृत! असम्भव! 'अवश्य-माननीया' कभी मरती नहीं; उन्हें मौत नहीं आती। यह कैसे हो सकता है?" पर यह देखकर कि गूंगे वहाँ आ गए हैं और उसका चेहरा पढ़ने की कोशिश कर रहे हैं, वह चुप हो गया और उन गूंगों को हमें पड़ाव तक ले जाने की आज्ञा दी। उन्होंने आज्ञा का पालन किया।

सौभाग्य की बात है कि जब हम आये शोरबा आग पर पक रहा था। बिल्लाली ने अपने हाथ से हमें शोरबा पिलाया क्योंकि हम इतने दुर्बल हो गए थे कि अपने हाथ से खा-पी भी नहीं सकते थे। इस प्रकार उसने भूख-प्यास से शिथिल होकर मरने से हमें बचा लिया। इसके बाद उसने हमारे ज़ख्मों को पानी एवं गीले कपड़े से साफ करने की आज्ञा गूंगों को दी। इतना कर लेने के बाद हम नरम घास के बिछौनों पर लिटा दिए गए और तुरन्त मौत जैसी गहरी नींद में खो गए जो मन और शरीर की गहरी थकान पर आती है।

अध्याय २८

पहाड़ के ऊपर

दूसरी बात जो हमें याद है, यह है कि जब मेरी आँख खुली तो मैंने अनुभव किया कि मेरा शरीर भयानक रूप से कड़ा होगया है। मैंने अपने बूढ़े मित्र बिल्लाली को देखा जो मेरे बिस्तर के पास बैठा अपनी लम्बी दाढ़ी पर हाथ फेर रहा था और चिन्ता में मग्न था। उसको सामने देख मुझे वे सब बातें याद आ गईं जो हम देख और भोग कर आये थे। मेरे सामने बेचारा लियो पड़ा हुआ था। उसका चेहरा ज़ख्मों और खुरचों से काला हो रहा था, और उसके सुन्दर घुँघराले बाल सफेद हो गए थे।[1] उस दृश्य को देख मैंने पुनः अपनी आँखें बन्द कर लीं और कराहने लगा।

बूढ़े बिल्लाली ने कहा—"मेरे लंगूर ! बहुत सो चुके।"

मैंने पूछा—"मेरे पिता ! कितनी देर ?"

उसने कहा—"एक सूरज और एक चाँद गया। तुम एक दिन और रात सोये। शेर भी ! देखो, वह अब भी सो रहा है।"

मैंने कहा—"नींद बहुत अच्छी चीज़ है जो सब स्मृतियों को निगल जाती है।"

उसने कहा—"अच्छा मुझे बताओ कि तुम लोगों पर क्या गुज़री और यह उसकी मृत्यु की क्या बात है जो कभी मरती नहीं। मेरे बेटे, अगर यह सही है तो तुम्हारे और शेर के लिए बड़ा खतरा पैदा हो गया है। घड़ा गर्म है जिससे तुम दोनों मारे जाओगे और तुम्हें खाने के लिए लोगों के पेट में अभी से चूहे कूद रहे हैं। तुम क्या नहीं जानते कि ये अमाहग्गर, मेरे बच्चे, ये गुफावासी

---

१. आश्चर्य की बात है अभी हाल में लियो के बालों का रंग फिर बदलने लगा है; पीलापन लिये भूरा हो गया है और आशा होती है कि कालान्तर में उसका पुराना सोनहला रंग लौट आएगा।

ollege
NAGAR

तुम्हें घृणा करते हैं ? वे तुम्हें परदेसी समझकर घृणा करते हैं और वे इसलिए भी तुम्हें घृणा करते हैं कि 'अवश्य-माननीया' ने तुम्हारे ही कारण उनके अनेक जाति-बन्धुओं को सज़ा दी। निश्चित समझो कि ज्यों ही उन्हें मालूम होगा कि अब 'हिया' (अवश्य-माननीया) से भय करने का कोई कारण नहीं रहा, वे गर्म घड़े से तुम्हें हलाल कर देंगे। पर मेरे लंगूर ! मैं तुम्हारा क़िस्सा तो सुनूं।"

तब मैंने उसे अपनी कहानी सुनाई—हर बात सुनाना मैंने वांछनीय नहीं समझा—और उसे बतला दिया कि आयेशा ज्वालामुखी की आग में जलकर मर गई क्योंकि सच्ची घटना बताने पर वह समझ न पाता। लौटते समय हम पर क्या-क्या मुसीबतें आईं यह भी हमने बता दिया जिसका उस पर बड़ा प्रभाव पड़ा। पर मैंने स्पष्ट देखा कि आयेशा की मृत्यु के बारे में उसे विश्वास नहीं हुआ। वह कहता था कि वह मरी नहीं है बल्कि कुछ समय के लिए कहीं लुप्त हो गई है। उसने बताया कि मेरे पिता के समय में भी वह १२ साल तक गायब हो गई थी, और इस देश में परम्परा से यह कथा प्रचलित है कि कई सदी पहले एक पूरी पीढ़ी तक वह लुप्त रही और लौटने पर एक स्त्री को, जो उसकी अनुपस्थिति में रानी बन गई थी, मारकर पुनः अपना अधिकार स्थापित कर लिया। मैंने इस पर कुछ नहीं कहा और दुःख से अपना सिर भर [illegible] रहा। हाय ! मैं भली-भाँति जानता था कि आयेशा अब लौटकर न [illegible]यगी—कम से कम बिल्लाली तो फिर उसे नहीं देख पायेगा। वह कहीं अन्यत्र [illegible] सकती है और मुझे विश्वास है कि ज़रूर मिलेगी, पर यहाँ नहीं।

[illegible]—"मेरे लंगूर ! अब तुम क्या करोगे ?"

मैंने कहा—"मेरे पिता ! मैं कुछ नहीं जानता [illegible] क्या करूँगा। पर हम इस देश से बचकर निकल नहीं जा सकते ?"

उसने अपना सिर हिलाया।

"यह बात कठिन है। कोर से होकर तुम जा नहीं सकते क्योंकि वे खूंखार लोग तुम्हें देख लेंगे और ज्यों ही वे देखेंगे कि तुम अकेले हो कि बस"—इसके बाद उसने अपना हाथ इस तरह उठाया मानो अपने सिर पर हैट रखने जा रहा हो; फिर मुस्कराते हुए बोला—"पर पहाड़ों पर से एक रास्ता है जिसके बारे में एक बार मैंने तुम से बात की थी, जिससे वे चराने के लिए पशुओं को खदेड़ देते हैं। इन चरागाहों के बाद दलदल हैं जिनको पार करने में तीन

...है। उसके बाद क्या है, मैं नहीं जानता पर मैंने सुना है कि वहाँ से सात दिन के सफर के बाद एक बड़ी नदी मिलती है जो जाकर काले पानी में मिलती है। अगर किसी तरह तुम उसके किनारे तक पहुँच जाओ तो निकल जा सकते सकते हो। पर वहाँ तक पहुँचोगे कैसे ?"

मैंने कहा—"बिल्लाली ! तुम जानते हो कि मैंने एक बार तुम्हारी जान बचाई थी। हे पिता ! अब तुम उस ऋण को चुका दो और मुझे तथा मेरे मित्र, शेर, को, बचा लो। जब तुम्हारी मौत की घड़ी आयेगी तो तुम्हें यह सोचकर आनन्द होगा कि जीवन के पापों के विरुद्ध तराजू पर रखने के लिए तुमने कुछ पुण्य भी किये हैं। फिर अगर तुम ठीक रहते हो और 'अवश्य-माननीया' ने अपने को सिर्फ़ कहीं छिपा लिया है, तो लौटने पर वह इसके लिए तुम्हें पुरस्कार भी देगी।"

बूढे ने उत्तर दिया—"मेरे लंगूर बेटे ! यह मत सोचो कि मैं कृतघ्न हूँ। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब मैं डूब रहा था और वे कुत्ते खड़े तमाशा देख रहे थे तब तुमने किस प्रकार मेरी जान बचाई थी। मैं अवश्य उसका बदला चुकाऊँगा, और बचा सकूँगा तो निश्चय ही तुम्हें बचाऊँगा। कल सुबह तुम ... । तुम्हें पहाड़ तथा उसके बाद के दलदलों के उस पार ले जाने के ... डोलियाँ मौजूद रहेंगी। मैं यह कर दूंगा और लोगों से कह दूंगा ... 'अवश्य-माननीया' ने यह आदेश भेजा है और जो इस आदेश को न मानेगा ... बघेरों की खुराक बना देगी। दलदलों को पार करने के बाद तुम ... अपना रास्ता ढूंढ लेना ; संभव है कि तुम्हारा भाग्य ... तुम ... पानी तक जीवित पहुँच जाओ, जिसकी बाबत तुमने मुझसे ... था। ... ो, अब शेर उठने ही वाला है ; मैंने जो भोजन तुम लोगों के लिए तैयार कराया है, उसे खा लो।"

अब लियो की हालत उतनी खराब न थी जितनी उसकी सूरत से जान पड़ती ... हम लोगों ने डटकर भोजन किया। इसके बाद जाकर सोते पर खूब स्नान किया और लौटकर सो गए तथा शाम तक सोते रहे। रात को फिर हमने छककर भोजन किया। बिल्लाली दिन भर गायब रहा—शायद डोलियों और कहारों का प्रबन्ध करने में लगा रहा होगा क्योंकि आधी रात के ... पड़ाव पर बहुत-से आदमियों के आने से हम जग गए।

उषाकाल में बुड्ढा स्वयं आया और बताया कि 'अवश्य-माननीया' के खौफनाक नाम का प्रयोग करने से सफलता मिल गई—यद्यपि आदमियों को राजी करने में काफ़ी कठिनाई हुई। उसने दलदलों के पार ले जाने के लिए दो पथदर्शकों का भी प्रबन्ध कर दिया था। उसने यह भी कहा कि फौरन रवाना हो जाओ। किसी प्रकार का विश्वासघात न हो इसलिए उसने खुद भी हमारे साथ चलने का इरादा प्रकट किया। दो बिल्कुल अरक्षित परदेसियों के प्रति उस जंगली बूढ़े की इस दयालुता का मेरे हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन दलदलों तक जाकर लौटने में छः दिन का सफर था जो उसकी उम्र के आदमी के लिए मामूली काम नहीं था किन्तु हमारी सुरक्षा के लिए उसने यह कष्ट उठाना खुशी के साथ स्वीकार कर लिया। यद्यपि अमाहज़र अपनी भयानक प्रथाओं और अपने मनहूसी चेहरे के कारण जंगलियों में मुझे सबसे क्रूर एवं भयंकर प्रतीत हुए पर बिल्लाली के व्यवहार ने सिद्ध कर दिया कि उनमें भी दयालु एवं कोमल हृदय लोग मौजूद हैं। संभव है कि आत्महित की भी इसमें कुछ भावना रही हो; संभव है, बिल्लाली ने सोचा हो कि 'अवश्य-माननीया' एकाएक कहीं से प्रकट होकर हमारे प्रति किए गए व्यवहार की सफाई न उससे माँग बैठे। पर इन सब बातों के बावजूद भी उन परिस्थितियों में यह उससे कहीं अधिक था जिसकी हम उम्मीद कर सकते थे। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि जब तक मैं जीवित रहूँगा बिल्लाली को उसके स्नेह एवं सद्व्यवहार के लिए याद रखूंगा।

तदनुसार नाश्ता करके हम डोलियों में सवार हुए और चल पड़े। काफ़ी नींद और विश्राम ले लेने के कारण, शारीरिक दृष्टि से, हम काफ़ी स्वस्थ हो गए थे। मन की दशा की बात क्या कहूँ; उसकी तो आप कल्पना कर सकते हैं।

तब पहाड़ी पर भयंकर चढ़ाई शुरू हुई। कहीं-कहीं चढ़ाई का मार्ग प्राकृतिक था पर अधिकांश टेढ़ा-मेढ़ा और घुमावदार था जिसे कोर के पुराने निवासियों ने काटकर बनाया था। अमाहज़र लोग अपने फालतू चौपायों को उस पार चरने के लिए साल में एक बार भेज देते हैं पर उन चौपायों के पाँव मजबूत होने चाहिएँ। यहाँ डोलियाँ बेकार थीं इसलिए हमें विवश होकर पैदल चलना पड़ा।

दोपहर तक हम पहाड़ की शक्तिमती दीवार के ऊपर, चपटे समतल स्थान पर पहुँच गए और वहाँ चतुर्दिक् देखा। बड़ा विशाल दृश्य था। एक ओर कोर का मैदान पड़ा था जिसके बीच में सत्यदेवी के मन्दिर के खम्बेदार भग्नावशेष स्पष्ट दिखाई दे रहे थे; दूसरी ओर दलदलों का असीम विस्तार था। यह दीवार डेढ़ मील मोटी थी। उस पर कुछ भी न उगता था; हाँ, कहीं-कहीं गड्ढे थे जिनमें पानी भरा हुआ था क्योंकि कुछ दिनों पहले ही वर्षा हुई थी। इस शक्तिमती दीवार के चौड़े पठार को पार करने के बाद उतराई शुरू हुई। यद्यपि यह चढ़ाई जैसी कठिन न थी फिर भी उसमें काफ़ी सावधानी रखनी पड़ती थी क्योंकि गिरने का भय रहता था। सूर्यास्त तक हम लोग नीचे पहुँच सके। वह रात हमने वहीं बिताई क्योंकि उसके बाद दलदल शुरू हो जाते थे।

दूसरे दिन ग्यारह बजे के लगभग दलदलों के असीम विस्तार में हमारी नीरस यात्रा शुरू हुई।

पूरे तीन दिन तक हमारे कहार बदबू और कीचड़ तथा ज्वर की सर्वव्यापी हवा में साँस लेते चलते रहे। तब पथदर्शक के बिना पार करने में बिल्कुल असंभव, उस निर्जन क्षेत्र को पारकर एक ऊँचे मैदान में जा निकले जहाँ सब तरह का शिकार उपलब्ध था, पर जो बिना जुता पड़ा था। यहाँ वृक्षों का भी अभाव था। यहाँ दूसरे दिन सुबह, भरे हृदय से, हमने बिल्लाली को विदा किया जिसने अपनी धवल दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए हमें आशीर्वाद दिया।

उसने कहा—"मेरे बेटे लंगूर! विदा, और ओ शेर! तुमसे भी विदा लेता हूँ। अब मैं तुम्हारी और ज़्यादा मदद नहीं कर सकता। पर यदि तुम अपने देश में पहुँच जाओ तो फिर किसी ऐसे देश की यात्रा को न निकल पड़ना जिसके विषय में तुम्हें कुछ ज्ञान न हो। क्योंकि हो सकता है कि तुम वहाँ से लौट न पाओ और अपनी सफ़ेद हड्डियों को यात्रा की सीमा के रूप में वहीं छोड़ना पड़े। एक बार फिर विदा। मैं प्रायः तुम्हारी याद किया करूँगा; और मेरे लंगूर! तुम भी मुझे न भूलना। तुम्हारा चेहरा कुरूप है परन्तु तुम्हारा हृदय सच्चा है।" इसके बाद वह घूमकर चला गया और उसके साथ ही वे मनहूस और लम्बे कहार भी चले गए। हमने उन्हें डोलियाँ लिये इस प्रकार लौटते देखा जैसे वे रणभूमि से किसी योद्धा का शव लिये जा रहे हों। धीरे-धीरे वे दलदलों से निकलने वाली गैस के कुहासे में छिप गए। और तब उस

विशाल निर्जन क्षेत्र में अकेले छोड़ दिए गए हम दोनों ने अपने चतुर्दिक् देखा और फिर एक दूसरे की ओर देखने लगे।

तीन सप्ताह पूर्व चार आदमियों ने कोर के दलदलों में प्रवेश किया था; इनमें से दो मर चुके थे और हम दो जो बच गए थे उन्होंने ऐसी मुसीबतें झेली थीं और ऐसे-ऐसे भयानक एवं विचित्र अनुभवों से गुज़रे थे कि स्वयं मृत्यु भी उनसे अधिक भयानक न होगी। तीन सप्ताह—और सिर्फ़ तीन सप्ताह! सचमुच काल का माप घटनाओं द्वारा करना चाहिए, बीते घण्टों द्वारा नहीं। ऐसा जान पड़ता था कि ह्वेलबोट से बन्दी बनाए जाने के बाद मानो तीस वर्ष बीत गए हों।

मैंने कहा—"लियो, अब हमें जम्बेसी की ओर चलना चाहिए; पर ईश्वर ही जानता है कि हम कभी वहाँ तक पहुँचेंगे या नहीं?"

लियो ने सिर्फ सिर हिला दिया; पिछले दिनों वह बहुत मौन रहने लगा था। इसलिए सिर्फ़ अपने तन पर पड़े कपड़ों के साथ हम चल पड़े। इनके अलावा हमारे पास कुतुबनुमा (कम्पास), हमारे रिवाल्वर, एक्सप्रेस राइफलें तथा दो सौ फायर गोली बारूद भी थे। इस प्रकार शाही कोर के भग्नावशेषों का हमारा भ्रमण-वृत्तान्त समाप्त हुआ।

इसके बाद हमारे सफर में जो घटनाएँ हुई तथा जो खतरे आये, विचार करने पर उन्हें न लिखने का निश्चय मैंने किया है। इन पृष्ठों में तो मैंने एक अघटनीय घटना का संक्षिप्त एवं स्पष्ट विवरण दिया है और यह भी कुछ तुरन्त प्रकाशन की दृष्टि से नहीं—सिर्फ़ इसलिए कि जब तक उनकी याद ताज़ी है मैं उन्हें काग़ज़ पर लिख लूँ।

मैं जानता हूँ कि यदि अपनी वापसी की यात्रा की ब्यौरेवार घटनाएँ एवं परिणाम मैं लिखूँ तो वे दुनिया के लिए मनोरंजक होंगे पर जब तक हम दोनों जीवित हैं तब तक ऐसा करने का विचार नहीं है।

और बातें जनता के लिए विशेष काम की नहीं जो एकाधिक मध्य अफ्रीकी यात्रियों के भ्रमण-वृत्तान्त से मिलती-जुलती हैं। यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त है कि अनेकानेक कठिनाइयाँ सहकर हम लोग जम्बेसी पहुँचे जो उस स्थान से, जहाँ बिल्लाली ने हमें छोड़ा था, एक सौ सत्तर मील का सफर था। वहाँ हम लोग एक जंगली कबीले के हाथों छः मास तक बन्दी रहे जिन्होंने हमें, विशेषतः

लियो के यौवनदीप्त मुख एवं सफेद बालों के कारण, अलौकिक प्राणी समझ लिया था। इनकी क़ैद से किसी तरह भागकर हमने ज़म्बेसी को पार किया और दक्षिण की ओर गए, जहाँ कई दिन भूखों मरने के बाद एक पुर्तगाली शिकारी से हमारी मुलाकात हुई जो हाथियों के झुण्ड के पीछे-पीछे इतनी दूर चला आया था। उसने हमारे साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया और बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ झेलते, उसकी सहायता से, हम डेलागोआ खाड़ी तक पहुँच पाए—कोर के दलदलों से निकलने के १८ मास बाद दूसरे दिन एक व्यापारी जहाज़ हमें मिल गया और अपनी दुस्साहिक यात्रा के आरम्भ से ठीक दो वर्ष बाद हम साउथेम्पटन के बन्दरगाह पर उतरे। इस समय मैं अपने कालेज के कमरे में बैठा ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ और लियो मेरे कन्धों पर झुका हुआ देख रहा है। यह वही कमरा है जिसमें २२ साल पहले अपनी मृत्यु की रात्रि में, मेरे मित्र विंसी ने लोहे का सन्दूक मुझे सौंपा था।

जहां तक विज्ञान और बाह्य जगत् का सम्बन्ध है, यह कहानी यहाँ समाप्त होती है। पर हमारे एवं लियो के लिए इसका अन्त किस प्रकार होगा, इसकी कल्पना मैं नहीं कर सकता। पर हम इतना ज़रूर अनुभव करते हैं कि अभी कहानी का अन्त नहीं हुआ है। जो कहानी दो हजार वर्ष से भी पहले शुरू हुई वह अपने को धुँधले और सुदूर भविष्य में भी बहुत दूर तक खींचकर ले जा सकती है।

अभिलेख में जिस प्राचीन कालिक्रेटीज का वर्णन है लियो क्या सचमुच उसी का अवतार है? अथवा किसी आनुवंशिक सादृश्य के कारण आयेशा को धोखा हुआ? फिर एक और सवाल है: इन अवतारों के अभिनय में क्या उस्तेन उस प्राचीना अमीनार्त्ता का कोई पार्ट पूरा करती है? इन सवालों पर तथा अन्य कई विषयों पर पाठक अपनी राय बनाएँगे। मेरी अपनी भी एक राय है और वह यह है कि जहाँ तक लियो का सम्बन्ध है आयेशा ने कोई गलती नहीं की थी।

प्रायः मैं रात में अकेला बैठा, अप्रादुर्भूत काल के अन्धकार में अपने मन के नयनों को गड़ाकर देखा करता हूँ और आश्चर्य किया करता हूँ कि इस महा नाटक का अन्तिम रूप क्या होगा और इसके दूसरे अङ्क में क्या दृश्य होंगे। और अन्त में जब वह **अन्तिम** विकास सामने आयेगा, और मुझे जरा भी सन्देह

नहीं कि वह आएगा अवश्य, तो उस नियति के आदेश से जो कभी टलती नहीं तथा उस प्रयोजन से जो बदला नहीं जा सकता, उसमें सुन्दरी मिश्रानी अमीनार्त्ता—फेरोओं की राजकीय जाति की राजकुमारी—का क्या पार्ट होगा, जिसके प्रेम के लिए पुजारी कालिक्रेटीज़ ने आइसिस देवी के प्रति अपनी प्रतिज्ञा तोड़ी और जिसका उस क्रुद्ध देवी ने ऐसा बदला लिया कि उसे लीबिया के तट की ओर भागना पड़ा, फिर भी कोर में जाकर उसका अन्त हुआ।

◇ ◇ ◇